पुतली में छेद पड़ गई हो, कुछ देर लिखने के पीछे आँखों के सामने धुँधला सा जाती हो अथवा चिनगारियाँ दिखाई पड़ती हों; आँखों के सामने चिनगारियाँ सी उड़ती हों, विशेष करके बाँई आँख के सामने। मोतियाबिन्द हो। धुँधला दीखना हो, आँख के पर्दों पर रसौली हो, आँसू की ग्रन्थियाँ बन्द गई हों।

कान और श्रवण शक्ति:—कान के पर्दे पर चूने के सदृश कोई चीज जम गयी हो। कान की हड्डी और हड्डी पर के झिल्ली के रोग।

नासिका और घ्राण शक्ति:—नकसीर फटना, नाक में घाव होना, पपड़ी निकलना, जुकाम बहना, पीनस गाढ़े हरे और पीले रंग के मवाद का निकलना, नाक की हड्डियों का विकार, सूखा जुकाम, नाक की हड्डी में रसौली होना, मस्तक में खुलनेवाले छेदों और नाक के मार्ग में रसौली होना।

चेहरा:—निचले जबड़े की हड्डी का सूजना, जुकाम न होने पर भी होठों पर छोटे छोटे व्रण होना, होठों का फटना, सख्त छिलके उतरना, दांतों को चबाने जबड़े में अधिक पीड़ा होना, नीचे के जबड़े में नीचे की ओर सख्त सूजन होना, जबड़ों और गाल की हड्डियों पर चूने की रसौली निकलना।

दन्त:—दांतों में चमकदार रंग का कम होना (छिलका उतरना) रंग (ईनेमल्) पतला खुरदरा और टूटनेवाला हो जाना। दांत का हिलना, ढीला हो जाना और दर्द करना। रंग उतर जाने से दांत का नष्ट हो जाना, अस्वाभाविक समय पर दांतों का हिलना, चाहे दर्द हो या न हो, दांत में खाने का पदार्थ लग जाने से दर्द होना।

मुंह:—गालों में व्रण होना, होठों का फटना, जबड़ों का सूजना, मसूड़े में सख्त् गांठ पड़ना, मसूड़ों का फूलना, मुंह और हलक का खुश्क रहना।

जिह्वा:—दरार-दार होना चाहे दर्द हो या न हो। जुबान लकड़ी सी हो जाय, सूजन के बाद सख्त हो जाय।

हलक:—दर्द होना, जलन होना-ऐसा मालूम हो कि मानो कोई हलक में सुई चुभाता है, दम घुटना, रात को तथा ठंडा पानी पीने से अधिक और गरम पानी पीने से अच्छा मालूम हो। खांसी के साथ छोटी छोटी गुठलीदार कफ निकलना, अथवा पीले कफ का निकलना, गले में ऐसा जान पड़े कि कुछ अटक रहा है, निगलने की चेष्टा करने से भी पीड़ा न हटना, दिन में कई बार हिचकी आना गले का ढीला पड़ जाना, जिससे, हलक में छूने से खांसी आना हलक में झिल्ली पैदा होना (डिफथेरिया), हलक का सूखना, आवाज बैठ जाना, गले में खुरखुराहट सी होना, और खांसी आना, हलक से नीचे तीन इंच तक ऐसा जान पड़ना कि कुछ है, जिसे निकालने की चेष्टा करना, हंसने अथवा चिल्लाकर पढ़ने से

गले का बैठ जाना; दमा होना जिससे मुशकिल से कफ की छोटी छोटी पीली गुठली निकले और खासते खासते रोगी का दुर्बल और कमजोर हो जाना, सास रुकना मानो श्वास की नाली बन्द हो गई है। जुकाम सा दर्द होना। स्वरघ्न या "क्रूप्" नामक खासी की मुख्य औषधि।

हड्डी:—हड्डियों पर सख्त् और खुरदरी गाठें। हड्डी की चोट, नाक की हड्डियो के रोग, फिरंग (सिफिलिस्) के कारण हड्डी पर के व्रण और पारा खाने के बुरे नतीजे।

आमाशय:—भोजन करने के पीछे ही सूखी खांसी उठना, कै होकर खाया पिया निकल जाना, पेट मे दर्द होना जिसमें दूसरी करवट लोटने से कमी होना, जिगर मे सवेरे ८ बजे चुभाने का सा दर्द होना, बैठने की दशा में अधिक। चलने से कम आधी रात को धड़ में दाहिनी ओर दर्द, जो निचली अर्थात् ११ वी पसली की जगह पर मालूम होता हो। यह दर्द रह रह कर होता है। दूसरी ओर सोने अथवा पेट से गाठ लगाकर लेटने से आराम आता हो। पेट मे दर्द होना जो रात को सोने के पीछे अच्छा हो जाता हो। पेट की हवा से नीचे की तरफ फूलना। घोडे की सवारी करने से तथा शाम के समय अधिक होना। रात को सोते समय आराम हो जाता हो। जिगर मे दर्द की अधिकता के कारण बेचैनी हो।

गुदा:—रात को कीडो के कारण खुजली उठना, और नींद न आना, खूनी बवासीर, मस्सों का बाहर निकल आना और उनमे खुजली उठना, भीतरी बवासीर, जिसमें ऐसा दर्द हो जो पीठ की रीढ के नीचे सिरे पर जान पडे, कब्ज ... पहले बधा हुआ आता हो और फिर पतला निकलता हो, गुदा के ... पड जाना. ऐसा कब्ज जिसके नतीजे से शिर मे दर्द और चक्कर आता ... ढीले होने से मल त्याग न कर सकना।

...न्द्रिय:—सवेरे ८ बजे से शाम के तीन बजे तक व रात को भी अधिक ...ले रंग का पानी सा मूत्र का आना, बार बार हाजत होना। धात ...कोशों में हरकत होने से, चिपकना पानी टपकना, स्वप्न-दोष, मूत्र मे दुर्गन्धि होना, थोड़ा मूत्र हो, परन्तु लाल और गाढा हो, पेशाब के मार्ग में चुभाने का सा दर्द अनुभव होता हो, दर्द मूत्रेन्द्रिय के सिरे पर पेशाब करते समय अधिक हो। फोतो का कड़ा होना। फोतो मे पानी भर गया हो, गोलिया कडी पड गई हो, व्रण हो, स्तनो मे गाठें पड गई हों, जधाओ और पीठ मे पीछे की ओर दर्द हो और जंघाओ तक जाता हो। मासिक धर्म अधिकता से हो, रुधिर-स्राव के साथ प्रसववेदना सा दर्द होता हो, (गर्भावस्था मे इस औषधि के व्यवहार से प्रसव कार्य सरलता से होता है)।

गर्दन और पीठ:—तीसरे प्रहर पीठ मे नीचे की ओर दर्द होता हो, थकावट जान पडती हो, बेचैनी हो। घोडे पर बहुत सवारी करने के पीछे पीठमे दर्द होना हो, किसी आसन से आराम न आता हो, पीठ के तानने और झुकाने मे कष्टानुभव होता हो। आराम करने से दर्द मे अधिकता, परन्तु टहलने तथा गर्मी मे आराम होता हो। गर्दन मे सख्त गिल्टियाँ पड गई हों। वेवा हो, कमर मे दर्द हो। गर्दन की जड मे दर्द हो।

हाथ पैर:—दर्द होना, सूज जाना, उंगली और जोडों की हड्डियों मे गांठ उठना, नसे फूल गयी हो, व्रण पड गये हो, (नसों के फूल जाने की दशा मे तो यह खास दवाई है।) कुहनी सूज गई हो, कलाई के पीछे रसौली हो। उंगलियों के जोड ढीले हो गये हों, घुटने के जोड मे सूजन हो, पानी भर गया हो, जोडों की करकराहट हो, हड्डियो मे पीप पड गयी हो, पैर की हड्डियों पर गांठे निकल आयी हो।

निद्रा:—दिनभर थकावट सी जान पडती हो, विशेषकर सवेरे अधिकता मे हो। स्वप्न मे अनेक बातें अधूरी रह जाने के कारण प्रातःकाल चित्त मे उदासी हो। भयानक स्वप्न देखना, चारपाई पर से सोते उठ पडना और खिडकी मे से भागने की चेष्टा करना।

ज्वर:—ज्वर का आना और एक सप्ताह या अधिक रहना, प्यास की अधिकता, जिह्वा सूखी और भूरी, अनिद्रा, बेचैनी, हड्डी की सूथ।

चमडी:—विसर्प "इरिसिपलस्" (चमडे पर फुंसिया निकलना और सुर्खी बढते जाना, ज्वर होना।) चमडा खुरदरा पड गया हो, सूज गया हो और ... हो। हाथों मे दरारें और व्रण तथा होठ सर्दी मे फट गये हो, गुदस्थान पर ... सी हो हो, नासूर हों, ऐसे व्रण जिनसे गाढी पीली पीप निकलती हो। उंगलियां ... हों व (विषैला फोडा) हुआ हो, नसो के ऊपर के व्रण, पुराने व्रण। ... क मे

रुधिर प्रवाह:—रुधिर की नालियो मे विस्तृत धमनी अर्थात् "एन्यूरि... गरम का आरभ हो, दिल फैल गया हो अथवा बढ गया हो। ... कफ

सूचना:—आवश्यकतानुसार औषधि खिलाना और लगाना चाहिये, पिचकारी तथा कुल्ली भी करानी चाहिये।

और पीछे इनकी विशेषता हो; कान की लौ के नीचे दर्द हो, कानों पर सूजन हो, जलन और खुजली हो। कान मे गाने की सी आवाज़ सुनाई दे। क्षीण स्वभाव के बच्चों की गिल्टियाँ गर्दन मे सूजी हुई हो। कानो से चिपकनेवाला मवाद निकलता हो। छूने से दर्द हो, गर्म कमरे में जाने से कान पर खुजली उठती हो और ददोरे पड़ जाते हो। कान का बहुत काल से बहना और साथ ही हलक का दुखना। कान ठंडे जान पड़ें, फिर गर्म हो जाय, कम सुनाई दे। दाहिने कान से काली मैल निकले, सबेरे कान पर फुंसी हो। भीतर बाहर कान सूज जाय, खुजली उठे। गरमी जान पड़े, बाहर से कान ठंडा जान पड़े, ठंडा लगे और दर्द हो। अथवा गरमी लगे और दर्द हो। कान से ऊपर और चतुर्दिक घाव हो। कान की लौ के नीचे भी घाव हों। कानों के चारो ओर फुंसियाँ हो। कानो से विशेष कर दाहिने मे भांति भांति के शब्द सुनाई दें।

नाक —बाएं छेद के अगले सिरे पर कटने का दर्द हो। फिर दाहिना छेद भी सहरावे, छींक आवे आँसू जमा हो, नाक से रुधिर निकले, तीसरे पहर को नकसीर फुटे। कंठमाला के रोगी बच्चों की नाक बहे, जुकाम जल्द हो जाता हो। नाक का अगला सिरा ठंडा रहता हो। ठंडे कमरे मे नाक बहने लगे। बाहर जाने अथवा गरमी होने से बद हो जाय। नकसीर चले जो तीसरे पहर अधिकतर हो। नाक की नोक बर्फ़ सी ठंडी जान पड़े। नाक मे रसौली हो। नाक में खुजली चले और छींकें आवें, जुकाम, सिर मे सर्दी लगे। नाक मे चिकना और गाढा सा मवाद बहे, नथनों मे घाव हो। कंठमाला की फुंसियाँ, नाक सूज गई हो, नथनो के किनारे लाल पड़ गये हो, फोड़े और घाव हो, नथनों के पिछले छेदों मे से हलक मे मवाद टपके। जिससे खासी हो और खखारि निकले। नाक मे (सी) पीनस हो।

चेहरा—बादामी रंग का हो, मैला हो, सफेद अथवा मटीला पड़ गया हो। चेहरे पर ठंडा पसीना आया करता हो। शरीर ठंडा रहता हो, शाम को चेहरा गरम हो जाता हो, सर्दी लगती हो, अन्य शिकायतें हो। चेहरे का रंग पीला हो, तांबे का सा हो, फीका पड़ गया हो, मुँहासे हो, जवान लड़कियो के चेहरे पर मुहाँसे हो। चेहरे पर दर्द जान पड़ता हो। रात्रि मे अधिकता हो, चेहरे पर कुछ रेंगता जान पड़े, ठंड का अनुभव हो, मुह पर मसे हों, चेहरे मे दर्द, विशेषकर ऊपर के जबड़े मे जान पड़े। दाहिनी ओर से बायीं तरफ को दौड़ता हो, अथवा चेहरे से शरीर के अन्य भागो तक फैलता हो। ऊपर का होठ सूज जाय और जलने का सा दर्द हो। नीचे के जबड़े के नीचे रसौली सूजी हो। ऊपर नीचे के होठ कड़े पड़ गये हो, दुखते हो। चेहरे पर सुर्ख दाने।

दांतः—दांत के सब रोग में यह खास दवाई है । यदि मसूड़े पीले पड़ गये हो, तो यह औषधि इसके लिये खास उपयोगी है । दांत खोखले पड़ गये हों, हवा न सह सकते हो । दांत में छेद करने का सा, फाड़नेवाला दर्द, रात को अधिकता से हो, ठंडी और गर्म और गर्म चीजों के व्यवहार से बढ़ता हो । चबाने में दर्द करते हों, दांत निकलने के समय बच्चा दुर्बल पड़ गया हो, रसौली निकल आई हो, दांत निकलने के समय की अन्य बीमारियाँ और कफ गिरता हो । बच्चों को होरे आते हों । दस्त लग गये हों, बुखार न हो, दांत देर में निकलें अथवा क्लेश से निकलें । दांत धीरे धीरे बढ़ते हों । दांतों में दर्द हो, मसूढ़े सूजे हों, दर्द करते हों । दांतों को बहुत जल्दी कीड़े ने खा लिया हो ।

जिह्वाः—सवेरे मुह कड़ुआ रहे, विशेषकर गेंहू की रोटी में कड़ुआ स्वाद मिले, सिर में दर्द रहे । जुबान की नोक पर छाले अथवा फुन्सियाँ हों । जगने पर मुह का स्वाद बिगड़ा हुआ हो, चिल्लाने से विशेषता हो । जीभ फूली हो, मीठा मुह रहे, बास आवे और बुरा स्वाद आवे, जीभ कड़ी हो, सुन्न हो, घायल हो, जीभ की नोक पर जलन हो और दर्द होता हो । जीभ सूजी हुई हो । कड़ुआ और खट्टा स्वाद हो । जीभ पर छोटी सुन्न और कड़ी फुंसी हो । जीभ सफेद हो, जड़ पर मैली हो, सबेरे यह लक्षण विशेष हों । निगलने में जीभ दर्द करे, जुकाम के साथ मुंह से लार भी गिरे, मुह और जीभ सूखी जाती हो; प्यास चाहे हो अथवा न हो ।

अ

हलकः—गले के भीतर घाव का सा दर्द हो, निगलते समय तथा सोते समय अधिकता हो, गरम पेय पीने से आराम हो । गले में जलन हो तथा अन्य स्थानों से गले की ओर दर्द का रुख हो, हमेशा गला बैठ जाता हो, निगलने में दर्द छाती तक जान पड़े बहुत दिन से (टन्सिल) गले की गिलटियाँ सूज रही हों, रात के समय मुह और हलक सूखते हों, प्यास लगती हो, गले की गिल्टी सूजी हो, निगलने में दिक्कत हो, दुर्बलता जान पड़े और हलक खाली सा लगे । गले में सुर्खी हो, कउआ सुर्ख हो गया हो । गरम पेय पीने से कष्ट न हो । थूक निगलने में हलक दुखता हो, खाना निगलने में दुख नहीं होता । स्वास की नाली और हलक में जलने का सा दर्द हो, घायल सा जान पड़े । नाक के पिछले सुराखों में से गले में नजला गिरता हो, ज़ोर से खाजते समय हलक में कफ अटक जाता हो, गले में घाव सा दर्द हो, विशेष कर निगलते समय, बैठा हो । गला फैल गया यो, व्याख्यान देने से गला पड़ गया हो, जिनका काम व्याख्यान देने का है उनको इस औषधि से विशेश फायदा है, अदल बदलकर फैरम् फासफारिकम् और इसका ... करना चाहिये ।

स्वास की नाली:—दम घुटता हो। छाती मे बाई ओर दाहिनी कनपटी में दर्द हुवा करता हो। गहरी सास लेने मे पीठ मे झटके सा दर्द हो। सास जल्द जल्द आवे, अथवा सांस लेने मे कठिनता जान पडे शाम से लेकर रात के १० बजे तक छाती कसी सी जान पडे, दर्द हो, तथा स्वास लेने मे कठिनता का अनुभव हो। लेटने से आराम मिले, जगने से फिर वही हाल हो। गहरी सास लेने की इच्छा रहती हो, ठंडी सास भरना चाहे, परन्तु छाती मे दर्द हो। जिगर में दर्द जान पडे। अनिच्छा ठडी सास निकल जाय; दूध पीने के पीछे बच्चो को सांस लेना कठिन हो जाय, रोने के पीछे तथा पाल से उठाने पर भी ऐसा ही हाल हो। छाती के निचले भाग पर गर्म जान पड़े, ऊपर का बाजू भी गरम लगे, खांसी हो। छाती मे जलन हो। क्षय रोगियो की पुरानी खांसी जिनके हाथ पैर ठंडे रहा करते हैं। कूकर खासी जिसको अनेक उपाय से भी लाभ नहीं हुआ हो। बुखार, खुश्की और प्यास रहती हो। ऐसी खांसी जिसमे पीला कफ निकले और विशेष करके सवेरे। दुर्वल रोगियो मे छिपा हुआ क्षयी रोग हो। बाई तरफ तनक सी जगह मे धडकन हो। छाती मे कफ बोलता हो। फेफडो मे दर्द हो। छाती मे दबाने का सा दर्द हो, जो नीचे विशेष हो और ऊपर की ओर फैला करे। क्षयी रोग मे बहुत पसीने का आना विशेषकर सिर और गर्दन पर छाती के रोग भगन्दर रोग के साथ हो।

छाती:—छाती की बीच की हड्डी अथवा हंसुली की हड्डी के ऊपर घाव होना, छाती की हड्डी के ऊपर सख्त् दर्द जान पडना। छाती कटती सी जान पडे पर दर्द न हो, फडकन हो और गर्मी का अनुभव हो। आठवी पसली के कोने पर हड्डी मे गांठ निकल आई हो, जहॉ पसलिया कुर्रियो से जडती है वहा पर दर्द जान पडे।

आवाज़:—गले मे जलन होना, और जीभ की जड मे भी ऐसा ही जान पडना, जिनके कठमाला अथवा नकरस (गॉंट) रोग का विष शरीर मे व्याप रहा है उनको जुकाम हो जाय और रुधिर पीला पड जाय। गला बैठ गया हो, सवेरे सूखी खासी उठती हो, बात करने मे खासी भी उठ आती हो, विशेष करके सवेरे।

दिल:—दुर्बलता मे, चिन्ता रहने से दिल धडकता हो, तेज नाडी हो, गर्दन के पीछे जान पडती हो, (बैठने मे) छाती में बाई ओर धडकन हो। दिल के मुकाम पर सख्त दर्द हो, जो सास लेते समय बढता हो। रुधिर प्रवाह धीमा पड जाय और हाथ पैर ठंडे जान पडे।

भूख और आमाशय:—क्षुधा न लगती हो, अथवा बहुत ही लगती हो, तरह तरह का मास खाने की रुचि हो, परन्तु खा लेने से तकलीफ बढ जाती हो। दिन ढले मुह और जीभ सूखा करे, प्यास लगे। ४ बजे शाम को भूख लगे। पेट बहुत फूल जाया करे। डकारें आना, खॉसना, खासी उठना, गले का घिरना,

सवेरे के खाने के पीछे जी मितलाना, कुछ भी खा लेने से पेट में दर्द होना; ठंडा पानी पीने या खाने से दर्द का बढ़ना। सेकने से आराम आना। खाने की चीजें पेट में गोले के रूप में जान पड़ना। पेट मे भारीपन और जलन जान पड़ना, शाम को मलाई की बर्फ़ खा लेने से पेट मे दर्द होना, और फिर सुबह उलटी हो जाना। रात को खाना खाने के पीछे सिर मे दर्द, उनींदापन, थकावट, खुजली, पेट पर धीमा दर्द, घाव की तरह दुखे अथवा दबा हुआ जान पड़े। दिल जले अथवा बद-हजमी के अन्य लक्षण, खाना खाने के २ घंटे पीछे जान पड़े। शाम को खाने के समय भ्रम और भूल जाना, या दस्त मारी जाय, काफी पीने अथवा हुक्का पीने से जी मितलावे, कै हो जाय हाथ पैर कांपे, पेट बैठा हुआ अथवा फैला हुआ जान पड़े। आराम करने के समय पेट भिचा जाता हो। मुह मे पानी आता हो, पेट में बड़ा दर्द, दुर्बलता, शिर दर्द अथवा दस्त लग जाय, खाना खाने से अधिक दु:ख हो, पेट का दर्द डकार लेने या पादने से कम हो जाय, जिगर और छाती के रोगो से जलंधर, शोथ हो जाय, दाहिनी ओर सख्ती जान पड़े, दुखे, मिचाहट जान पड़े और वहीं और भी ऐसे ही लक्षण जान पड़े। गहरी सांस लेने मे जिगर के ऊपर टांके से टूटें, दर्द हो। पित्त की पथरी हो, इस औषधि से नई पथरियाँ नही बनती। तिल्ली के स्थान पर दर्द हो। सब पेट मे जलन हो, जो छाती और गले तक जान पड़े। बच्चो का पेट बढ गया हो, दुर्बल मनुष्यो की आंत ऊपर आयी हो, तोंद में दर्द हो, शिर दुखे, कान दुखे, चेहरा गरम जान पड़े। जवाओं मे पीड़ा हो, आंते ढीली पड़ गई हों। टांगे थक सी गई हो, गर्भाशय मे दर्द हो। कमजोरी हो। पेट की खाल मे दर्द हो। खुरखुराहट हो शून्यता हो, फड़कता हो, पेट दुख और दस्त होने अथवा वायु निकल जाने से आराम हो, स्त्रियों के पेट का दर्द श्वेतप्रदर के पीछे हलका हो। बच्चो की नाभी से रुधिर सा निकले, नाभी के चतुर्दिक जलन हो, दर्द हो, घाव हो, दर्द पेट की बगलो की तरफ जाय। दुर्गन्धित वायु के निकल जाने से आराम हो। नाभी के चारो ओर या कुल पेट खाली सा जान पड़े दबाव मालूम हो। कभी सब पेट मे ऐसा ही हो। पेट की बाई तरफ कोई नोंचता हो, खींचता हो, ठोकता हो, अथवा भीतर कुछ चलता मालूम हो।

दस्त आना:—हरे अथवा रसीले फल खाने से दस्त लग जाय, पेट बैठा हुआ जान पड़े, दस्त होने से पहिले कूथने मे दर्द हो। दस्त जाने के पीछे खून आवे। स्कूल जानेवाली लड़कियो के दस्त के साथ शिर मे दर्द हो। बदबूदार, गरम, पतले, शब्द करके दस्त हों। सवेरे पतला बहुत सा दस्त हो, दर्द होकर दस्त होना, दांत निकलने के समय बच्चो को दस्त लगना। आंव मिले हुए दस्त अथवा और बदहजमी के शूल के साथ दस्त होना। बच्चो के दस्त जिनमे बच्चों को

मिट्टी आदि खाने की आदत होती है। जो बच्चे दूध पीने में रोते हो। कै के साथ जमा हुआ दूध निकलता हो। हमेशा दूध पीने के लिये रोते रहते हो और कई बार जल्दी उलटी कर देते हो।

कब्ज:—बार बार दस्त की ख्वाहिश होना, पर कुछ न निकलना, कब्ज रहना और कड़ा मल निकलना, यह बात बच्चों अथवा बूढ़ों में पायी जाय; नरम दस्त भी कठिनता से हो। गुदा के पीछे की हड्डी में दर्द हो; दस्त के पीछे शुरू हो और सारे दिन रहे, जब रात को सो रहें तब आराम हो। कब्ज के साथ शिर चकरावे और शिर मे दर्द रहे।

गुदा:—गुदा द्वार के किनारे फट जायँ, भगन्दर हो परंतु दर्द न हो। साथ ही श्वास संबंधी रोग हो, खुजली उठे और रात को अधिक हो। गुद स्थान में जलन हो, घाव सा जान पड़े और चुभोने का सा दर्द जान पड़े। मस्से बाहर निकल आये हो, दस्त जाने के पीछे दर्द हो। बवासीर हो जिसमे से अंडे की सफेदी के मुआफिक मवाद निकले, दस्तों मे पीप के धब्बे जान पड़े (कॅल्सियम् फास्फोरिकम् के व्यवहार से दुर्बल आदमियो मे पेट के कीड़ों की शिकायत नहीं रहती।)

मूत्रांग:—मूत्र लाल हो, बार बार जाने की इच्छा होती हो। बल करना पड़ता हो तो भी मूत्र न निकलता हो, मूत्र की नाली में जलन, चुभोने का सा दर्द होना हो। दुर्बलता के साथ ही साथ मूत्र अधिकता से आता हो। दुर्बलता से बिस्तर पर ही रात मे पेशाब हो जाता हो, पेशाब करने से पहिले मूत्राशय, गर्दन और लिंग के छिद्र के पास दर्द होता हो। मूत्राशय मे से पीप निकलती हो और मूत्राशय तक दर्द का आवागमन हो। मूत्राशय में बड़ा दर्द हो जो आसपास भी जान पड़ता हो। पेशाब की धार पतली पड गई हो, नाक छींकने से अथवा बोझा उठाने से गुर्दों के स्थान पर तीव्र दर्द का अनुभव होता हो, गुर्दों के रोग के कारण जलंधर हुआ हो। बूढ़ों के मूत्र मार्ग से चमकदार, चिकना मवाद जाता हो। काला मूत्र गर्म निकलता हो, बड़ी दुर्गन्धि आती हो। पेशाब मे शकर आती हो, मधुप्रमेह हो, और साथ ही फेफड़ो मे तकलीफ होती हो, मूत्र रोक न सकता हो, जिसका कारण, वृद्ध आदमियों की नसे ढीली हो जाना है, पेशाब करने से मूत्र मार्ग से तेज टीस होती हो, विशेषकर बाहिरी छिद्र के पास। पेशाब करते समय मूत्र की नाली मे जलन उठती हो, घाव (सूजन) सा मालूम होता हो, आत ऊपर आई हो, गुर्दों "ब्राइट् साहिब" का रोग हो पेशाब में से सफेदी जम जाती हो, रेत आता हो, पत्थरी हो। पत्थरी बनना रोकने के लिये भी देते हैं। दुर्बल आदमियों का पुराना सूजाक फोतो मे पानी भरना तथा सूज जाना।

जवान लड़कियों में शीघ्र मासिक धर्म होना या देर से आना। मासिक धर्म का रुधिर खूब लाल हो, और बार बार हो, ऋतुकाल में घुमरी आवे, कपाल भड़के, भूख न लगे, शिर में पीड़ा रहती हो, पेट दुखे, दस्त लगे, कमर दुखे, पैर भारी जान पड़े, सब शरीर में थकावट मालूम हो, सीढी चढ़ने में बहुत थक जाय। शिर गरम हो। हाथ पैर ठंडे हों। मासिक रुधिर निकलने से पहिले बच्चा जनने का सा कष्ट हो, टट्टी या पेशाव जाने से पीछे भी ऐसा ही दर्द हो। मौसिम बदलने से विशेषता हो, मासिक बंद होने से पीछे भूख न लगे, कमर दुखे नाभी की दाहिनी ओर का स्थान दर्द से फटा जाता हो, नीचे की अपेक्षा ऊपर अधिक हो। चिन्ता बहुत हो, श्वेत प्रदर से आराम हो। काला और गुठलेदार मासिक रुधिर हो, बच्चे को दूध पिलाने के वक्त मासिक धर्म हो। मासिक धर्म शुरु होने के पहिले पेट मरोडनेवाला दर्द हो, उसे ७ दिन पहिले ही शिर में दर्द होने लगा हो। जिन स्त्रियों को गठिया रोग हो उनमें विशेष करके काला रुधिर आवे; रुधिर थोड़ा आवे, श्वेत प्रदर में अंडे की सफेदी के समान रात दिन मवाद निकले, प्रातःकाल जगने के पीछे अधिक जान पडे, दस्त जाने के पीछे विशेषता हो, सफेद और बदबूदार हो। नींद न आती हो, मासिक रुधिर से पहिले सफेद पानी जाय; तीसरे पहर विना जाने मलाई सा सफेद जल बहे। स्नान करने से मासिक धर्म बन्द हो जाय। मासिक धर्म के पीछे शिर में बहुत दर्द हो। मासिक धर्म से पहिले बाई ओर का शिर फटा जाता हो। दाहिनी जाव से बाये कूल्हे तक दर्द का रुख हो, जैसे जैसे मासिक धर्म बंद होता जावे, वैसे वैसे श्वेत प्रदर बढता जावे। स्तनों में बढवारी अथवा कठोरता हो; भिटनी दर्द करती हो, या सूजी हो; दूध नमकीन और नीले रंग का हो और बच्चा न पीना चाहता हो। स्तनों में जलन और पीडा होती हो।

गर्दन और पीठ:—कंधों के पीछे की हड्डी के दर्मियान और नीचे दर्द होता हो, और बाजू तक जाता हो; पीठ खिची जाती हो, पीछे झुकाने से दुखती हो, शाम सवेरे दर्द की अधिकता हो, तथा हरकत करने से बढता हो। जरा हिलने जुलने से पीठ में बडी दर्द हो, गर्दन और छाती के पुराने घावों की गूथ सूज गई हो। और दुखती हो। पीठ की निचली हड्डी में विशेष दर्द हो। बच्चों की गर्दन पतली पड गई हो। गर्दन में पहिले एक ओर फिर दूसरी ओर दर्द हो। पीठ की नसें चटखती हों, रीढ टेढी पड गई हो, लगडापन हो, चूतडों के बीच की हड्डी दुखती हो, रीढ के ऊपर कमर में फोडा हो। गर्दन में भयानक रसौलियाँ हों, गर्दन अकड गई हो और दुखती हो। हवा लगने से विशेष पीडा हो, चूतड के पिछाडी का भाग फटा जाता हो (मानो जुदा किया जाता है।)

हाथ पैर:—काँख की खुजली के घावों से मवाद निकलता हो। उसमे नीली गाठें सी पड गई हो। बाहे और हाथ कांपते हो। बाजुओं में धीमा धीमा दर्द हो, जो कंधो से उँगलियों तक पहुचे या हंसुली की हड्डी से कलाई तक जाय, मौसिम बदलने से दर्द बढ़े। कधे के जोड से पूरी बाह तक चीरने का सा दर्द हो। बाहो मे अन्दर की तरफ जलन और खुजली चले। हाथ सुन्न पड जाय, बाजू और अगूठो की हड्डियाँ दुखे, हड्डियो के सिरो पर नकरस (गौट्) का सा दर्द हो। गठिया का दर्द जो रात को और खराब मौसिम में अधिकता से होता हो, कलाई, बांह और टखने मे दर्द हो, पैर की उंगलियो और घुटने मे गठिया का दर्द हो, दाहिने हाथ के नाखूनो के जोडो मे घाव के समान दर्द हो। दाहिने हाथ के अगूठे मे ऐसा जान पडे मानो उसमे मोच आ गई है, उँगलियों मे दर्द होता हो, बाह मे अन्दर की ओर फुँसियाँ निकल आई हो, जोड ठंड पड गये हो, और दर्द करते हो। बाजू मे गठिया का दर्द हो, उँगली और अँगूठे के सिरे पर सूजन हो, कुंहनी ऐसी दुखती हो मानो उनमे चोट लगी है। पेट, पैर और चूतड के बीच की हड्डी सी गई हो। उठना भी न बन-सकता हो। जाघे दुखती हों शिर और चूतड़ की हड्डियो मे दर्द हो। चूतडो मे जहाँ तहाँ काटने का सा दर्द हो, खुजली चले, जलन हो, जहाँ तहाँ छिल गया हो, टाग और पिंडालियों मे ऐठने का सा दर्द हो। एडी की हड्डी गल रही हो, टाग और चूतड की हड्डी दुखती हो, बच्चो की हड्डियाँ मुड गई हों, घुटने की हड्डियो मे घाव पड गये हो। बहुत दिन से घुटने सूजे हुए हो, जाघ से टाग और पैर तक बाई ओर चीरने का सा दर्द हो, टागे थक गई हो, कमजोर हो गई हो, फैलती न हो, झुनझुनाती हो। दाहिने घुटने मे कील ठोकने का सा दर्द हो, जो जोड़ को फैलाते तथा रात्रि के समय विशेषता से हो। तलुओं मे चींटी सी काटे, पैर की नसो मे तेज दर्द हो, भीगने से चूतडो और हाथ पैरों मे कभी कहीं, कभी कही दर्द होना, ज्वर सहित गठिया रोग, विशेषकर जाड़ो मे, होता हो, वसंत ऋतु मे दर्द कम होकर जाडो से पहिले ही फिर लौट आता है। उपदंश के विकार से हड्डी के परदे की सोजिश और व्रण।

आराम और आसन:—पीठ मे केवल लेटने मे बेचैनी हो, हाथ पैर चलाने से शिर मे दर्द बढे। झुकने से शिर मे अधिक रुधिर जावे, लेटने से पेट के दर्द मे आराम आना। किसी एक अग के चलाने से विशेष क्लेश होना, चढने मे थक जाना, हिलने जुलने मे जी मितलाना, खडे होने मे बेहोश हो जाना, चलने मे नाक बहना, हाथ पैरो का फडकना।

ज्ञानतन्तु—ज्ञानतन्तु सबधी रोगो की दुर्बलता मे लाभदायक है। बच्चा चलना न सीखे या न चल सके। कठमाला के रोगियो मे अथवा शीघ्र बढनेवाले बच्चो में मृगीरोग हो, हर तीन महीने पीछे बारी आती हो। बाई तरफ के अग

ऐंठते हो (सब तरह के ऐंठन में यह औषधि लाभदायक होती है, यदि मेगनेशिया फास्फोरिका ने अपना गुण न दिखाया हो।) दस्त लगना, और बेहोशी, जो बेहोशी खाना खाने के बाद होती हो । शारीरिक अथवा मानसिक काम करने की इच्छा न होती हो। रात को नसे फडकती हो। बच्चे बहुत चीखते हों, और हाथ चलाते हों माथे पर ठडा पसीना आता हो, सोते सोते उछल पडते हो । बहुत जमुहाई आती हो । ज्ञानतन्तु सबधी पीडा (न्यूरेल्जिया) जो रात को शुरु होती हो और समय समय पर आती हो । गहरा दर्द जो हड्डी तक जाता जान पडता हो। चीरने का सा दर्द, जो ऋतु परिवर्तन से बढता है, शरीर मे कुछ रेंगता हुआ सा जान पडता है। अग सुन्न और ठडा होता है। और बिजली के से धक्के मारते हो।

निद्राः—प्रात काल शीघ्र न जग सके, आधी रात से पहिले नींद उचट जाय, स्वप्न देखे, उनीदापन रहे विशेषकर बुड्ढों मे, चित्त उदास रहे और कुछ विचार न सके। बच्चे रात को रो उठे, कानो मे गाना सुनाई दे, मुँह फाडने से ऑखों मे आसू आ जायँ, बार बार जमुहाई और अगडाई आवे, दात के दर्द के साथ कॅपकॅपी मालूम हो।

ज्वरः—प्रात काल कपडा पहिनते समय ठड लगे, ज्वर हो जाय और नाक बहे। गर्भस्थान मे दर्द हो और जाडा लगे । शाम को विशेष गर्मी जान पडे श्वास गर्म निकले, दिल धडके । मुह और जीभ सूखे हो परतु प्यास न हो । कठमाला रोगवाले बच्चो को पुराना ज्वर हो अथवा बारी से ज्वर आता हो। ज्वर के समय जाडा लगे, चेहरा लाल हो जाय, और पेट दुखे। क्षयी के रोगियो को रात के समय बहुत पसीना आता हो।

रेसों के रोगः—पुरानी और जोडो की गठिया गिल्टियो की पुरानी सूजन, कब्ज, शिरपीडा, स्त्री और पुरुषो मे रक्त का अभाव, दुर्बल, ढीले, सूखे और ठठरी से बच्चे, हड्डियों का टेढा पड जाना टूटी हुई हड्डियो का न जुडना। नाक, गुदा और गर्भाशय मे रसौली होना, ठीक पालन पोषण न होना । हड्डियो का पतला पड़ जाना और सूख जाना, जलधर के समान रोग, जोड की झिल्ली की बीमारी. जोड और नसो के दर्द।

चर्मः—सूखे और छिलकेदार फोडो का दुर्बल मनुष्यो मे होना, पित्ती उछलने के समय की जलन और खुजली, चमडे का सूख जाना, विशेषकर हाथो पर। "ल्यूपस्" नाम का रोग। चमडे मे गाठे पडना, पुरानी ग्रंथो का घाव हो जाना, हाथों से भूसी सी उडना और छिलके उतरना, चमडे की खुजली, कठमाला और गठिया के रोगियो मे "एक्ज़ीमा" अर्थात् पानी बहनेवाली फुन्सियो का होना । खुजलीवाली फुसियाँ और गुदा के स्थान की खुजली।

केल्केरिया सल्फ़ूरिका (Calcarea Sulphurica)

"सल्फ़ेट्ट आफ केल्सियम्" "जीप्सम्" अथवा "प्लास्टर् आफ़ पेरिस्" शरीर में जितने अवयव है उन सबमे कई प्रकार का मल वहिर्गत हुआ करता है। यदि वह मल किसी कारण से रुक जाय और बाहर न निकले तो अनेक रोगो का कारण होता है। इस औषधि का यह काम है कि उस मल को सडने नही देती। जो मल दूर करने की शक्ति नष्ट हो जाती है, और वह सडने लगता है, वह इसी के अभाव से होती है। थकावट ज्यादा दिन तक रहती है, जुकाम और, फेफडे की बीमारियाॅ, फोडे फुन्सी और घावो का अच्छा करने मे यही पदार्थ सहायक होता है। सिलीका के व्यवहार से साधारण दशा मे शीघ्र पीप पडती व कम होती है परन्तु केल्केरिया सल्फ़्रिका यदि रुधिर मे वर्तमान हो तो पीप का बनना रुक जाता है।

अन्दर की झिल्लियो से मवाद निकलता हो तो केल्केरिया सल्फ़ूरिका के व्यवहार से उसकी उत्पत्ति रुक जाती है। क्षयीरोग के व्रण आंतो के व्रण और आँख के "कोर्नीया" पर्दे के व्रण इससे अच्छे हो जाते है।

सब प्रकार की पीप रोकने, फोडा, फुसी, नासूर तथा चेहरे पर के मुॅहासो के लिये उपयोगी है, वद के लिये, जले घावों के लिये, आँख के 'अल्सर' के लिये, सुजाक मे पीप आने के समय इसे देते है। इससे पीप आना रुक जाता है, यदि किसी स्थान से बहुत दिनो से पीप निकलती हो तो बद हो जाती है। इसके व्यवहार से पीप कदापि नही पडती।

विशेष लक्षण:—यदि रोग भीगने से बढता हो खुली हवा मे रहने से न्यूनता हो और खुली हवा मे रहने की इच्छा रहती हो। इस औषधि मे गर्म और सूखे मौसिम मे विशेष मदद मिलती है, और वर्षा मे तथा भीगी हवा मे लाभ नही होता।

योग्य लक्षण और सूचना

मन की दशा:—बेहोशी, किसी काम के करने की इच्छा होना परन्तु जब करने का समय आवे तब इच्छा न रहना, अचानक स्मरण शक्ति और विचार शक्ति का भोजन करने के पीछे नष्ट हो जाना, हसी खुशी सी तबीअत का रज और चिता मे अचानक बदल जाना सोते मे चीख मारकर जग पडना।

शिर:—शिर मे दर्द होना, आँखे लाल, धुँधली हो जाना, दुखना पेट मे शूल होना। दिमाग हिल जाना। आँखे ऐसी जान पडना मानो बैठी जाती है, मासिक धर्म के समय मे शिर और छाती मे दर्द होना, नगे शिर पर टोपी पहना सा

जान पडना, चलते में घुमेर आना, दुर्बलता होना शिर और पेट पर दबाव जान पडना, घुमेर आना और जी मितलाना, शिर फटा जाना अधकपारी दर्द शिर और दाहिनी तरफ के ऊपर के जबड़े मे होना, माथे में दर्द होना, माथे की बाई तरफ दर्द होना, और शिर का दुखना । कपाल मे दर्द हो । तीसरे पहर शिर दुखना और मूर्च्छित करनेवाली उबकाई आना, शाम को इन लक्षणों का बढ़ जाना । कंघी से बाल काढने मे बालो का उखड़ आना, माथे मे जलन और सुर्ख धब्बों का होना. बच्चो के शिर पर आँवले पडना, खोपड़ी मे फुन्सियाँ निकलना जिनमे से पानी बदबू-दार मवाद का बहना । बालों के किनारे खोपडी का सूजना और खुजाने से खून बहना ।

आँखे:—आँख के अगले पर्दे मे पीप पडना, ऐसा जान पडना मानों कुछ गिर गया है । कभी कभी दिखाई न देना, और आँखो का मिचकना, दाहिनी आँख मे बराबर धीमा धीमा दर्द रहना, दर्द का शाम को बढ़ना, गहरी सोज़िश फोड़े, आँख के "कोर्निया" नामी पर्दे पर धव्वे पड़ना, आँख के ज्ञानतन्तु की सोज़िश, पीले गाढे मवाद का बहना । आँख दुखकर उसमे से गाढे पीले मवाद का निकलना, बाई आँख के डेले पर दबाव सा होकर दर्द का होना, आँखो के डेलों का उभर आना, चीजो का आधा रूप नजर आना । कागज के टुकड़े की तरफ देखने मे दाहिनी आँख का दुखना । भौंह पर लगनेवाली नसो का फड़कना विशेषकर बाई आँख मे, बाई आँख से आँसुओ का बहना, बाई आख के ऊपर फोड़े का होना ।

कान और सुनने की ताकत:—दाहिने कान की लौ के नीचे दर्द जो चलने से अच्छा हो जाता है । सवेरे दाहिने कान मे काले भूरे रंग की मैल निकलना, कान मे थप्पड़ लगने पीछे उसमे सोजिश हो जाना । कान के पीछे छूने मे दर्द जान पडे और पीप पडने की शका हो, गर्म कमरे मे जाने से जलन हो जाय और खुजली चले । दाहिने कान के ऊपरी सिरे पर फुसी निकले, दाहिने कान मे गाने की सी आवाज सुनाई दे । कान मे से ऐसा मवाद निकले जो गाढा और पीला हो । कभी कभी खून भी मिला हो । सुनाई न पडता हो, कान के भीतर से मवाद निकले जिसमे कभी कभी खून मिला हो । (सीलीसीया के बाद ।)

नाक और सूंघना:—पुराना जुकाम, नाक से मवाद निकलना, जो नहाने से बंद हो जाय, सवेरे आराम रहना, खुले मैदान मे कम होना, नाक से खून निकलना । नहाने के बाद रुधिर मिश्रित श्लेष्म का निकलना । नाक के पिछले छिद्रो का बन्द हो जाना, पतला और गर्म मवाद नाक से निकलना, दिन मे दाहिने नकुरा से और रात को बाये से मवाद निकलना, गाढे, पीले और गुठलीदार मवाद का निकलना, कभी कभी उसमें रुधिर मिला होना । बाये नकुरा से कुछ पीला सा मवाद

झडना, साथ ही बाईं आँख से आंसू गिरना नाक की जड का फड़कना, और गालों तक जाना। नकुरो के किनारे सूज और छिल गये हो।

चेहरा:—चेहरा पीला और बीमारों का सा, गाल सूजे हुए, दांतों मे दर्द और मसूड़ों में पीप पडने का भय, चेहरे पर सख्त सूजे हुए और पीप भरे फोड़े, विशेषकर बायें गाल पर जवानो के माथो पर फुंसियो का निकलना, चेहरे पर फुंसियाँ निकलना गर्मी के दाने, दाढी के स्थान पर ऐसी फुंसियाँ जिनमें से रुधिर मिश्रित अथवा तेल सा मवाद निकलता हो, चेहरे पर सूजी हुई गिल्टियाँ नीचे के होठ पर छाले पड़ना और व्रण होकर रुधिर मिले हुए मवाद का बहना। ठोड़ी के दाहिने किनारे तक फैले हुए हो। निचले होंठ पर बाहर की तरफ खुरंड होना।

दांत और मसूड़े:—दांतुन करते समय मसूडो मे से खून निकलना, ठंडे पानी से दांतो मे दर्द होना, परंतु शीघ्र ही अच्छा हो जाना। दिन छिपे पीछे और सोते मे दातो का दुखना, मसूडे सूजे हुए होते हैं, दुखते है और झट खून निकल आता है। दाहिनी तरफ की निचली डाढ खोखली पड गई हो, ठंडे पानी और हवा से दुखती हो, दांतो की जड मे व्रण हो, दातो मे गठिया का दर्द हो। दांतो का दर्द जिसमें गाल सूज गये हो। ऊपर के दाहिने जबडे मे दर्द हो, मसूडे मे पीप पड गई हो।

मुंह:—खुश्की हो, ऊपर का होंठ अंदर से लाल हो गया हो, दाहिने गाल मे भीतर घाव हो। खाते मे तालू दुखता हो। होठों मे छाले पड़ गये हो।

हलक:—गले मे ऐसे रोग जिनमे पीप पड़ गई हो। गले मे ऊपर बाईं ओर घाव हो मानो कुछ खाने से जल गया यो। तालू मे रोहिणी "डिफथेरिया" रोग की झिल्ली हो। हलक सूज गया हो, लाल हो, दुखता हो, गले मे भीतर गिल्टियाँ सूज गई हो, और उनमे पीप पडने का डर हो।

जीभ और स्वाद:—खट्टा स्वाद, कडुआ और साबुन का सा स्वाद, जीभ की जड पर झुर्रियां सी जान पडे। जीभ मे पीप पड चली हो, जुबान में सोज़िश हो गई हो। जुबान पर गहरी लाल धारी दिखाई दे या जड पर पीली मैल हो।

साँस लेने का अवयव:—गाढ़ा सफेद या पीला मवाद, खाँसी जुकाम के साथ हो। दमा और गर्म ज्वर हो। दमे की बारी जब आवे तब दम घुटे, आँखे निकल आवे, बेहोशी हो जाय। बारी आने से पहिले मुँह मे खुश्की हो। क्षयी रोग की पुरानी खाँसी का आखरी दर्जा हो। मवाद मे पीप और खून हो। पानी मे मवाद डालने से पेंदे मे बैठकर फैल जाता हो, बहुत दिन से गला बैठ गया हो, छाती की झिल्ली मे पानी भर गया हो, और शिर दुखता हो, छाती मे दर्द होता हो। छाती की बीचवाली हड्डी मे दर्द हो, जिससे आदमी मुड जाता

हो । खाँसी ("क्रुप" कालिमूर के पीछे) हो. "निमोनिया" का तीसरा या आखरी दर्जा हो ।

हृदय (दिल):—दिल के सामने से दर्द शुरू होकर आंत के नीचे तक चला जाता हो ।

आमाशय:—भूख और प्यास बहुत लगती हो, भोजन न रुचता हो ; चाय, खट्टी, सब्जी और फल अच्छे लगते हों । खाने के पीछे बदहजमी जल्दी होती हो, दर्द से बचने के लिये सिकुड़कर सोने से आराम मालूम हो । शाम का खाना खाने के पीछे शिर मे दर्द और जी मितलाता हो, खाना खाने के पीछे सुस्ती आती हो, स्मरण-शक्ति मंद पड जाती हो । पेट मे दर्द शुरू होकर जिगर तक फैलता हो । जिगर के मुकाम पर सख्त दर्द होता हो । पेट मे जलन और कुछ रेंगता हुआ सा जान पडता हो । पेट के नीचे के हिस्से मे ऐसा जान पडे मानो चमडा बहुत कसा हुआ है । नाभी के चारो ओर हाथ लगाने से दुखे और दर्द हो । वायु निकलने से आराम मिलता हो । पेट मे शूल हो, गड़गड़ाता हो, दस्त लगते हों । आंतों में घाव हो, "टाइफस्" रोग हो । पेट के ऊपर बड़ी कमजोरी मालूम होती हो, जिसका आरंभ शिर से जान पडे । तेज बुखार और कब्ज हो, साँस लेने मे दिक्कत हो । दस्त लगते हो जिन मे आँव या खून मिला हो । ठंडी हवा लगने से दस्त लग गये हों, मौसिम बदलने से दस्त लग गये हो और पेट दुखता हो, प्रवाहिका जिसमे मवाद सहित मल निकलता हो । पुराना कब्ज भगंदर रोग के दर्द करनेवाले फोडे गुदा के आसपास हो । काच निकल आई हो ।

मूत्रेन्द्रिय:—मूत्रपिंड की वे बीमारियाँ जिनको "ब्राईटस् डिसीज" कहते हैं । मूत्रपिंड की पुरानी सोजिश । तेज बुखार मे लाल पेशाब आना । मूत्र मे रुधिर मिला होना । "प्रोस्टेट्" नाम की गिल्टियो में पीप पडना । पुरानी उपदंश, सुजाक मे पीप निकलना, बद निकलना, नामर्दी और धातुस्राव. स्त्रियो मे मासिक धर्म देर से आवे और देर तक रहे । शिर मे दर्द हो । ऋतु काल में पेड़ू दुर्बलता बहुत बढ जाय । श्वेत प्रदर मे गाढा पीला रुधिर मय मवाद गिरे । स्तनो मे सोजिश हो, या पीप पडनेवाली हो, इस औषधि के व्यवहार से पीप पडना रुक भी जाता है ।

गर्दन और पीठ:—गर्दन के पीछे और पीठ के निचले भाग मे दर्द होना, गुदा के ऊपर की पिछली हड्डी मे दर्द होना, कुबडा होना ।

हाथ पैर:—उंगलियाँ अकड गई हो सूजी हुई, और दुखती हो, फूल गई हो, यह लक्षण दाहिनी ओर होते हो । सवेरे बढे । उंगली की हड्डी के ऊपरवाली झिल्ली का फोडा "विटलो" जब पीप पडनेवाली हो । तेज बुखार मे जबकि पैरो के तलुए जलते हों । पैरो मे थोड़ी सूजन हो, और ज्वर हो, कूल्हे के जोड़ की सोजिश ।

इस रोग मे जब पीप पड़ चुकी हो, तो इस औषधि को "फेरम् फासफोरिकम्" के साथ दे, वातरक्त हो, घुटने मे चोट का दर्द हो, जोडो मे चोट हो । सवेरे स्नान करने में बायां घुटना अन्दर की ओर लंग करता हो । झुक कर चलने मे या दौडने मे लंगडाता हो । आखिर घुटना पिछली ओर से दुखने लगा हो । टागे दर्द करती हो और अकड गई हो, विशेषकर दाहिनी टाग । कुछ दिन पीछे यह दर्द ऊपर के हिस्से मे होता है, और शाम के वक्त विशेषता होती है । चलने से टागे थक जाती हो, छूने से दुखती हो । पैर कुछ सूज गये हो, चलने मे अगूठे दर्द करते हो ।

निद्रा:—रात को नीद न आती हो, और दिन मे उनीदा रहता हो ।

ज्वर:—बारी बारी का बुखार, जीभ मे पीछे की ओर सूखी मिट्टी सी रंगत हो । "टाईफस्" और "टाईफ़ाइड्" नाम के ज्वर जबकि दस्त लग गये हो । फुंसियां, "हर्पेटिक" ।

चर्म:—तलुओ मे खुजली, उगली के हड्डियो के फोडे, आग या पानी से जल जाना और पीप पड जाना, रसौली होकर उनमे पीप पड जाना । चमडे का रंग हरा अथवा सीसे के रग सा हो जावे । हरे, भूरे, पीले खुरंड तथा रुधिर मिला वा गाढा मवाद निकलना । नरम तालू का सूजना और छाले पड़ जाना । गिल्टियो का सख्त् होना वा पीप पड़ जाना । सब प्रकार के जख्म जिनमें पीप पड गई हो । (इस औषधि को पीप रोकने और कम करने के लिये देते है ।) ऐसे घाव हो जो चोट लगने वा कट जाने से हुए हो, मवाद निकलता हो और शीघ्र न भरते हो । आग या पानी से जले हुए घाव जिनमे पीप पड़ गई हो. दुष्ट फोडे जिनसे मवाद जारी हो, पीपदार घाव, शीतला के घाव जिनसे पीप निकलती हो ।

"टिश्यू" अर्थात् अंगो की बनावट:—इनमे फोडे हो जिनमे से गाढा, लचीला मवाद आता हो, खाँसी हो, श्वेतप्रदर वा सुजाक मे पीला, गाढ़ा, मवाद निकलता हो ।

फेरम् फ़ासफ़ोरीकम् (Ferrum Phosphoricum)

"फ़ास्फेट् आफ आयर्न" इस औषधि के विषय मे शुश्लर् साहिब कहते है कि इसकी बनावट मे लोह शामिल है। लोह खून मे मुरक्कब प्राणप्रद वायु के "ओक्सिजन्" अपनी ओर खींचता है, हमारे रुधिर मे फौलाद का जुज है और जब हम सास लेते है तो हवा मे से "ओक्सिजन्" रुधिर मे मिल जाता है और फिर उससे सब अगो का पालन होता है। रुधिर की बनावट मे गंधक भी शामिल है; जो "ओक्सिजन्" को सब अंगो मे पहुचने योग्य बना देता है। (१) जबकि किसी बाहरी पदार्थ के संयोग से रुधिर मे फौलाद का अश इतस्तत हो जाता है, तब नसें ढीली पड जाती है, यदि रुधिर बहनेवाली नालियो के रेशो मे यह विकार हो तो नालिया ढीली पड जाती है, और उनमे रुधिर ठहर जाता है। इसको जमाव कहते है जिससे सूजन शुरू हो जाती है। परतु जब रुधिर मे फौलाद का सयोग ठीक ठीक हो जाता है तब फिर पूर्ववत काम होने लगता है। और फौलाद रुधिर "लिम्फे-टिक्" नाम की नसो के द्वारा बाहर किया जाता है। (२) जब आतो के रेशे अपना कार्य नहीं करते तो दस्त लगने लगते है। (३) आत के जिन रेशो का काम मल को बाहर निकलना है, सुस्त पड जाते है, तब मल भीतर ही जमा होता रहता है। इनकी यह दशा फौलाद की कमी से ही होती है। "फेरम् फासफोरीकम्" देने से रुधिर की नसे मज़बूत होकर अपना काम ठीक ठीक करने लगती है। उनमे रुधिर का जमाव नहीं होता और सोज़िश बुखार दूर हो जाता है। इस औषधि मे निम्न लिखित रोगो को आराम होगा —

१　सब प्रकार की सोज़िशें, जो प्रारम्भ मे हो।

२.　दर्द
३.　रुधिर प्रवाह
} जो रुधिर के ठहर जाने के कारण हुए हो।

४.　ताजा घाव, चोट, मोच इत्यादि—क्योंकि इस औषधि से रुधिर का जमाव नही होने पाता। मास मे फ़ौलाद फासफेट की शकल मे पाया जाता है, इसलिये हमको फेरम् फासफोरीकम् के रूप मे फ़ौलाद का उपयोग करना पडता है। बुड्ढे आदमियो मे यह औषधि विशेष लाभदायक सिद्ध हुई है।

खासियत:—जो दर्द इस औषधि के उपयोग से अच्छे हो सकते है वे हरकत से बढते और ठड से कम होते है।

रुधिर प्रवाह—शरीर के किसी छिद्र से सुर्ख रग का लोहू निकले।

योग्य लक्षण और सूचना

मनः—अनोखी उत्तेजना, बेहद ख़ुशी जाहिर करना, वकना, जकना, मन को रोक न सकना, नाम या बात की याद न रहना, नींद आना अथवा न आना, हिम्मत और आशाएँ छोड़ देना, सोने के पीछे तबीअत अच्छी होना, छोटे काम पहाड़ से कठिन मालूम होना। छोटी बातों में घबड़ा जाना, दिमाग में ख़ून जमा होने के कारण अनाप शनाप बकना, अथवा पागल सा बन जाना, शराबियों का पागलपन अथवा बहुत बकवादी होना, चारपाई में से भाग जाने की इच्छा करना, यद्यपि ऐसा करने की शक्ति न होना।

शिरः—रुधिर की अधिकता के कारण शिर दुखना, शिर में ऐसा दर्द हो मानो चोट लगी है या शिर भिच गया है, या शिर के भीतर से लपलप करता है। हरकत करने से दर्द बढ़ता है। झुकने और शिर के हिलाने से भी यही हाल होता है। चलने में हर कदम पर सख्त दर्द शिर में होता है। ऐसा जान पड़ता है मानो कोई हथौड़े से ठोकता है। दाहिनी ओर दर्द में विशेषता होती है। दर्द पर ठंडी चीज लगाने में आराम होता है। (बच्चों के शिर दर्द में यह औषधि विशेष गुणकारी है।) माथे में ऐसा दर्द हो जो नकसीर फूटने अर्थात् रुधिर के कम हो जाने से अच्छा हो जाता हो। शिर में चक्कर आता हो। सब चीजें उसके चारों तरफ घूमती हुई जान पड़ें। शिर ऐसा जान पड़े मानो किसीने आग में ढकेल दिया है। दिमाग में जहाँ तहाँ रुधिर इकट्ठा हो जाने से घुमेर आती हो, लू लग गई हो, पीछे की तरफ से सामने को शिर में होकर सख्त् दर्द चलता हो, ठंडी हवा लगने से चुटिया का स्थान दुखे, आवाजें सुनाई दें, खोपड़ी का चमड़ा छूने से दर्द करे, बालों तक न छू सके। मासिक धर्म के समय धीमा और गहरा दर्द जान पड़ता हो, साथ ही रुधिर बहुत जाता हो। माथे और कनपटी में हथौड़े मारने का सा दर्द जो दाहिनी ओर विशेष हो, रोगी को मूर्छित हो जाने का भय रहे। शिर में दर्द होकर उलटी हो जाना, और अनपचा खाना निकलना (नेट्रम् फ़ोस्) भौंह के ऊपर दर्द होना।

आँखेः—सूजना, लाल हो जाना जिससे ऐसा मालूम हो कि पलक के भीतर रेत गिरी है। आँख हिलाने में बहुत दर्द हो। दाँत निकलते समय आँखें सूजी हों, अभी अभी आँखें दुखने में हों। आँखें लाल हों, दर्द करती हों परन्तु कीचड़ न निकलता हो। फुंसीदार बुखार में आँखें सूजी हों। देखने से बहुत दर्द होता हो, चकाचौंध हो। लैम्प की रोशनी न सुहाती हो, दाहिनी आँख की

निचली पलक में गुहेरी हो, झुकने से न देखता हो, आँख भारी हो। जलती हो। लाल पानी आँखों मे बहता मालूम हो। चोट लगने मे घायल हो गई हो, आँखो मे सोजिश हो, खून सी जान पडती हो कभी कभी पानी बहता हो, "कोर्निया" पर्दे मे फोडा हो, साथ ही सोजिश और दर्द हो, आँख के अंदरवाले कोयो और नाक मे टीस होती हो।

कान:—कान के जो छिद्र गले में खुलते है उनमें और कान में तथा अक्सर छाती और आंतो मे भी मवाद का जोर होना। कान के सोजिशी दर्द, कान का बहना। टीस मारना, कनफेर हो जाना, कानो मे जलन होना, और गोश्त के से रंग का सा लाल हो जाना। कान से पीप निकलना परंतु दर्द में कमी न होना, रुधिर प्रवाह का भय रहना, शिर की ओर अधिकता से रुधिर जाने के कारण, कानो मे पानी जाने की सी आवाज सुनाई देना। आवाज बुरी लगना। सुनाई न देना, कानो मे तेज दर्द होना, वा ढोल सुनाई देने और लपलप करने का सा दर्द होना। वाहिरी कान का सूज जाना।

नाक और सूंघना:—बच्चों की नाक से नकसीर फूटना, नकसीर होने से शिर दर्द मे कम होना। नकसीर फूटने की आदत पड जाना। नाक बहना आरंभ होना, नकुओ मे दर्द जो विशेपकर दाहिनी ओर हो और साँस लेने से बढे। जुकाम जिसमे नाक सहरावे।

चेहरा:—मासिक धर्म कम हो, और चेहरा सुर्ख हो, रुधिर मे सुर्खी न रहने के कारण चेहरा मटीला और पीला पड गया हो। चेहरा लाल हो, गर्म हो और दर्द करे, दात दुखे, और गाल गरम हो जाय। चेहरा सुर्ख हो जाय, और गर्दन के पीछे ठंडा जान पडे। चेहरा गरम हो, दर्द करता हो, और भीगा कपडा लगने मे आराम जान पडता हो। चेहरे मे टीसे मारती हो। ठुड्डी और माथे मे मुहाँसे निकले हो। विसर्प "इरीसिपलिस्" अर्थात् वह सोजिश जिसमे सुर्खी और दर्द मौजूद हो। भौह में दर्द होता हो।

दांत और मसूड़े:—दातो मे दर्द हो जिसको ठंड से आराम आवे, मुँह चलाने से दर्द बढे। दात निकलने के कष्ट, दात के दर्द से चेहरा गरम हो गया हो। दात मे ऐसा दर्द हो जो गर्म पेय पीने से बढे और ठण्डे से आराम पावे। खाना खाने के वाद दातो मे दर्द हो। चवाने से और वढे। दातो मे डक मारने का दर्द हो। मसूड़े सूज जाने के कारण दातो मे दर्द हो, मसूडे लाल हो, दुखते हो और सूज गये हों।

जीभ और सवाद:—जीभ सूज गई हो, साफ और गाढी लाल हो। तालू, गिल्टियाँ और जीभ मे सोजिश हो। सिर्फ जीभ मे लाली और दर्द हो।

हलक़:—हलक की गिल्टियो और जुबान मे सोजिश हो, जीभ लाल हो, दर्द करती हो परंतु कुछ मवाद न देती हो, गला दुखता हो, आवाज बैठ गई हो, गला सूख जाता हो, लाल, सूज गया और दर्द हो, व्याख्यानदाताओ का गला बैठ गया हो । जोर से चिल्लाने या ठड लगने से गला दुखता हो । तालू और हलक़ मे हमेशा सोजिश रहती हो, लाल हो गये हो, और दर्द करते हो । हलक की दाहिनी गिल्टी से मवाद निकलता हो । रोहिणी "डिफथेरिया" रोग हो । छोटे बच्चों के मुँह मे छाले पड गये हो या धाय के मुँह मे छाले हो । गले मे जख्म हो, दर्द और बुखार हो, हलक़ दुखता हो ।

खांसी:—सब तरह के जुकाम और खांसी में जबकि इनका आरभ हो इस औषधि को दे सकते है । जबकि तेज खासी ज़ोर से उठे, खासने में बहुत तकलीफे हों । जब खासी की अधिकता प्रात.काल हुआ करे और बाहर जाने से बढे । खांसते खासते खाने की कै हो जाय, खासी आने पर कफ़ न निकले, रातदिन खासी रहे । रात को विशेष हो, सूखी खासी हो और छाती घरघरावे, चोट लगने या गिर पडने से खून की कै हो, झुकने से खासी बढती हो ।

स्वास लेने के अवयव:—ज्वर के आरम्भ मे खासी हो, गर्मी रहती हो । अल्पस्थायी परंतु दु खदाई खासी हो, सास लेने मे तकलीफे हों, कफ न निकलता हो, थोड़ी देर ठहरनेवाली परंतु दर्द करनेवाली खासी हो । फेफडो मे तकलीफे हो और गला सुरसुराता हो । "निमोनिया", "ब्रोंकायटिस्" (खासी) फेफडे के पर्दे की सोजिश और हलक की सोजिश जिसमे ज्वर और दर्द भी हो । फेफडो से लाल खून की कै हो, ऐसी खासी जिनमे जल्दी जल्दी और रुक रुककर सांस आती हो, छाती दुखती हो, और घरघराती हो गले मे कफ हो । दमा जिसमे छाती दुखती हो, ऐसी खासी जिसमे बगलो की तरफ दर्द होता हो । शिर झुकाने या गला छूने से बहुत खासी उठती हो । "निमोनिया" की बीमारी मे जब खासी के साथ निरा खून आता हो, कूकर खासी से जब सोजिश का दर्जा हो ।

छाती और फेफड़े:—बच्चों की छाती मे पीड़ा हो, खासते मे साफ खून निकलता हो । "निमोनिया" और "प्लूरिसी" (फेफड़े के पर्दे की सोजिश) और खून की कै से तथा क्षयी रोग मे, खासी के साथ रुधिर आने मे और फेफडो से रुधिर निकलने मे । जबकि नाड़ी भरी हुई और तनी हुई हो, रुधिर का जमाव हो परतु मवाद न पडा हो । जबकि जरा सी मिहनत करने या ठडी हवा लगने से खासी के साथ खून आता हो । फेफडो मे पीछे की ओर सोजिश हो । छाती मे गठिया का दर्द हो, दाहिनी तरफ फेफडे मे साजिश हो । सॉस लेने और खासने से दर्द बढता हो, बाये फेफडे के ऊपरी टुकडे मे "निमोनिया" की बीमारी हो ।

आमाशय:—भूख न लगती हो, गोश्त न सुहाता हो। जी मितलाने के कारण खाया न जाता हो। मास के सिवाय दूध भी न सुहाता हो, चाय पीने से तबीअत अच्छी रहती हो। रोटी, काफी और खट्टी चीज़े खाने से तबीअत बिगड जाती हो। "ब्राडी" इत्यादि नसीली चीजो की इच्छा रहती हो। प्यास बहुत लगती हो, भोजन करते समय जाडा लगता हो। पेट मे सोजिश हो और दर्द करता हो। दर्द होकर कै हो जाती हो, और अनपचा खाना निकल जाता हो। बदहजमी के साथ चेहरा सुर्ख रहता हो, जरा सा खाना खाने पर ही दर्द मालूम होता हो। दिल जलता हो, आमाशय के ऊपर जलन और पीडा हो। पेट छूने से दर्द होता हो, दिल जलता हो, आमाशय के ऊपर जलन और पीडा हो। पेट छूने से दर्द होता हो, डकार मे खाने का सवाद आता हो, खाने के पीछे जी मितलाता हो, और कै हो जाती हो। कै मे अनपचा खाना या रुधिर आता हो। कै की हर चीज़ बहुत खट्टी हो और दात बिगड जाते हो, कलेऊ करने से पहिले कै होती हो। पेट के ऊपर टीस मारती हो। पेट फूल जाता हो। शाम के समय पेट कसा हुआ मालूम होता हो, और कपडे न सुहाते हो। खाना खाने से टीस बहुत होती हो। और पेट पर दबाव पडने से भी अधिक जान पडती हो। पेट फूला हुआ और तना हुआ सा जान पडता हो। आँतो से खून गिरता हो जिगर मे सोजिश शुरू हुई हो। लोहू इकट्ठा हो गया हो, मोटे आदमियो मे आँत उतर आई हो, आँत फस गई हो, और दुखती हो, पतले दस्त आते हो, और दर्द होता हो। दस्त जाने से पहिले पेट-शूल हो। पतले दस्त ऐठ के साथ हो। आँतो के ऊपर की झिल्ली मे सोजिश हो।

मल:—मल मे अनपचा हुआ अन्न पाया जाय, दस्त पतला हो, थोडा हो अथवा बहुत, मल निकलने मे कूखना पडता हो, प्रवाहिका के साथ तेज ज्वर भी हो। बच्चो के दस्त लगे हो, चेहरा पिचक गया हो, शरीर गर्म रहता हो, प्यास लगती हो, बच्चा शिर रगडता और रोता हो, आँखे आधी खुली रहती हो और सोते मे चिपक जाती हो। दिन रात यही हाल रहता हो, दस्तो मे आव और खून हो, गर्मी के दस्त हो, पतले और हरे रग के हो, मछली के खून का सा रग हो। दस्त लगे बहुत दिन हो गये हों और ज्वर रहता हो। प्यास हो और दस्त पीले तथा पतले हो, हैजे का आरम्भ हो, आँतो की दुर्बलता के कारण कब्ज़ हो, काच निकल आती हो, खूनी बवासीर हो. आँतो मे कीडे हो, बदहज़मी हो, और बेपचा खाना निकलता हो।

दिल:—दिल पर टीस चलती हो, उसके पर्दे मे सोज़िश हो, लाल और काली रग की नसो मे सोजिश हो। साथ ही बुख़ार व लोहू का जमाव हो। दिल धडकता हो, दिल फैल गया हो, खून की नालियाँ ढीली पड गई हो, दिल मे धीमा

धीमा दर्द रहता हो, जो कि पीठ और रीढ तक पहुँचता हो । मौसिम बदलने से होनेवाली कमज़ोरी (केल्केरिया फ़ासफोरीकम् के पीछे फेरम् फ़ासफोरीकम् का व्यवहार करें, क्योंकि ऐसा करने से खून लाल हो जाता है । रुधिर में "ओक्सि-जन्" मिलकर उसमें सुर्ख दाने बढ़ जाते है ।)

मूत्रेन्द्रियः—मूत्राशय अथवा मूत्र की नाली से रुधिर आता हो । पेशाब करने से पहिले दर्द होता हो, खांसते मे पेशाब हो जाता हो । और बहुत देर तक पेशाब जमा रहने के कारण मूत्र कोश सूज गया हो, ज्वर हो गया हो, पेशाब करते समय पीडा होती हो, अथवा कर चुकने के बाद जलन जान पडती हो । दिन मे बहुत दर्द हो । अथवा केवल दिन ही में दर्द होता हो, खडे होने मे दर्द बढता हो, मूत्र न निकलता हो, जलन हो, मूत्रपिंड मे दर्द हो, पेशाब का रंग लाल हो । बार बार मूतने की इच्छा रहती हो, इससे दर्द कम हो जाता हो । मूतने की आवश्यकता होने पर पेड़ू और लिंग के मुख पर अधिक पीडा जान पडती हो, कभी कभी मूत्र अधिक आता हो । मूत्राशय की निर्बलता से जब रात को बिस्तर मे पेशाब हो जाता हो । दिन में भी जबकि लेटने से पेशाब निकल जाता हो । मूत्र सदा दिन मे टपकता रहता हो, ज्वर के साथ बच्चो का पेशाब बन्द हो गया हो । मूत्र मे रुधिर आता हो, मधुप्रमेह तथा मूत्रपिंड के रोग जिनमें ज्वर और लोहू का जमाव हो, पेशाब बहुत आता हो, धातुक्षीण और निकलती हो । "प्रोस्टेट्ग्लाड" की सोजिश, फोते की नसो का फूलना, बद निकलना, अण्डवृद्धि और सुजाक जब इनके साथ ज्वर मौजूद हो, दर्द और गर्मी हो (उपयोगी औषधि केल्केरिया सल्फ़ूरिका, काली मुरी-याटीकम्, काली सल्फ़ूरिकम्, नेट्रम् मुरीयाटीकम्, नेट्रम् सल्फ़ूरिकम् ।) स्त्री मासिक धर्म दर्द से हो, चेहरा लाल, नब्ज़ तेज और रुधिर का रग चमकीला लाल हो । ऋतुकाल में कै हो जाती हो और खाना बिना पचे कै हो जाता हो । पेट मे शूल होता हो । शिर की चांदिया मे दर्द हो, मासिक धर्म जल्दी जल्दी हुआ करे । तीसरे हफ्ते ही खून आ जाता हो, पेट पर अथवा पीठ पर दबाव पडने से रुधिर बहुत निकलता हो । दर्द के साथ मासिक धर्म होता हो, नब्ज़ तेज़ हो जाती हो, चेहरा लाल, और कै होकर खाना निकल जाता हो । गर्भ के प्रारंभ मे कै होती हो, खाते ही कै हो जाती हो, चाहे मुह खट्टा जान पडे या नही । प्रसव काल के पीछे का दर्द (इस औषधि से स्तनो मे दूध की अधिकता का ज्वर नही होता ।) जब स्तनो मे सोज़िश हो, रोगी हलीम हो, गर्भकाल मे जबकि खासने से पेशाब निकल आता हो ।

गर्दन और पीठः—गर्दन और पीठ मे कडक, गुर्दों के ऊपर पीठ मे दर्द जो कमर तक जाता है, कमर का दर्द, पीठ का अकड जाना, चलने से ज्यादा होना, ठंड से गर्दन का अकड जाना ।

हाथ पैर:—हाथों का जलना, पैरो की उंगलियों मे जलन। दाहिने हाथ मुर्दार सा जान पडना उँगलियो मे सोजिश होना, विसार शुरु होना, उँगलियों में सूजन व दर्द, हथेलियाँ गरम रहना, दाहिने कधे और बाजू का फटा सा जाना। हिलने से दर्द का बढना, मोच के पीछे कुंहनी का सूज जाना। और असहनीय कष्ट होना, पहुँचे में गठिया का दर्द और चोट लगने की तरह लगडाना। दाहिने कधे के माग का दुखना, कपडो का बोझा न सुहाना, ज्वर और सोजिश के कारण जोडो में दर्द होकर लगड़ाना। गठिया का दर्द एक जोड से दूसरे मे बदल जाना, जोडों का सूजना, तेज बुखार होना परतु सुर्खी कम हो। जोड मे बाई का दर्द, घुटने से दर्द टाग तक जाना, नीचे और अन्दर की ओर मालूम पडना, पैर और टखने मे भयानक दर्द होना। टाग मे अदर की ओर और टखने मे चारो ओर पैर मे सख्त दर्द होना, चलने से दर्द का बढ जाना।

गठिया रोग:—जोडो मे जोर का दर्द खासकर कधो मे यह दर्द छाती तक दौडता है और एक जोड से दूसरे मे बदल जाता है। गठिया रोग की सोजिश, अवयवो मे गठिया का दर्द और फालिज, सर्दी की टीसे, और शिर में ऐसा दर्द मानो कोई मेख ठोक रहा हो। चेहरा लाल हो, बदन जला जाता हो और ज्वर वगैरह मौजूद हो।

ज्ञानतन्तु सबंधी लक्षण:—बडी दुर्बलता, थकावट, नशा पीने की जरुरत होना, खासकर रात को घबडा उठना, शिर मे रुधिर जाने से बेहोश हो जाना।

चर्मरोग:—फोडे, फुसिया, मुँहासे, कटोहरे दुष्ट फोडे इत्यादि मे जबकि सूजन के साथ ज्वर मौजूद हो। गर्मी दर्द और सुर्खी हो (फेरम् फासफोरीकम् के व्यवहार से अकसर पीप नही पडती) चमडे के ऐसे रोग जो ज्यादा मेहनत करने और गर्म घर मे रहने से बढ जाते है। ज्वर के साथ निकलनेवाली फुसियाँ जैसे शीतला, खसरा आदि। जब इनका आरम्भ हो, "फेरम् फासफोरीकम्" मे नीली नसो को फायदा होता है। और खून की रसौली जो छोटी और आरम्भिक दशा मे हो, फोते की नसो मे दर्द होता हो।

बनावट के रेशे (टिस्स्यूस्):—शरीर मे कही से खून निकलना और ऐसा रुधिर लाल चमकीला निकलना जो झट जम जाय।

ज्वर:—"फेरम् फासफोरीकम्" सब प्रकार के ज्वरो मे पहिली व खास दवा है। उदर विकार के कारण ज्वर हो वा "टाईफाइड्" नाम का ज्वर हो या ऐसा ज्वर हो जिसमे अनपचा खाना कै हो जाता हो। जब नब्ज तेज हो। हरारत हो, दर्द हो। गठिया बाई से बुखार अथवा सोजिश या कफ का बुखार हो, इनके लिये भी यही दवा है। शीतला और खसरा आदि के प्रारम्भ मे ज्वर के लिये इसका उपयोग करना

चाहिये। और जब तक ज्वर, सोजिश, जलन और गर्मी रहे, रक्तज्वर, ऐसा ज्वर जिसमें खासी हो, मूत्राशय मे सोजिश हो, पेट मे जलन हो, पेशाब बंद हो, गठिया हो, कै होती हो, हरारत हो परंतु प्यास कम हो। सबेरे ४ से ६ बजे तक पसीना आता हो। नियम समय पर विशेपकर एक बजे रात को जाड़ा लगता हो। प्लेग मे जब बुखार का आरम्भ हो गिल्टियों मे सोजिश हो और बद पक गई हो।

निद्राः—चिन्ताभरे स्वप्न जिनसे बेचैनी हो, रात को नींद न आवे, रुधिर की अधिकता मे आँख न लगे, पिछले पहर उनीदा, बैठे बैठे सो जाय, दर्द की अधिकता के कारण नींद न आती हो। दुर्बलता इतनी बढ गई हो कि लेटे विना कल न पडती हो। इस औपधि की कमी ताकतवाली मात्रा देने से नींद घट जाती है। और ऊँची ताकतवाली देने मे नींद आ जाती है।

दोनो जबड़े दुखते हो, होठो पर फुसियाँ हो, पारे के व्यवहार से होंठ और मसूड़े सूज गये हो।

दांत और ज़ुबान:—दांतो मे कीड़ा लगना और दर्द करना मसूड़ो के किनारो पर व्रण होना, मसूड़े के फोड़े मे पीप पड़ने से पहिले (फेरम् फ़ासफोरीकम के साथ बदलकर) देना चाहिये। मसूड़े सूजकर लाल पड गये हो, छूने मे दुखते हो, थूक बहता हो और मसूड़े दुखते हो, मसूड़े फूलकर स्पंज से हो गये हो, ऊपर के जबड़े मे दांत दुखते हो। मुँह कडुआ रहता हो, हलक और ज़ुबान ठंडी मालूम होती हो, सुबह शाम खाना खाने के पीछे आराम जान पड़ता हो, ज़ुबान मैली हो, सूखी हो, और उसके ऊपर भूरे रंग का सफेद मैल चढी हुई हो, मुँह का ज़ाइका कडुआ, नमकीन अच्छा न लगनेवाला और जलन सा व डंग सा या खट्टा सा हो। बच्चो के मुँह मे छाले हों, थूक खट्टा हो, और बदबू करे। बच्चो की ज़ुबान और गालो पर जख्म हो। होठो और गालो पर खाकी किनारो के जख्म हो। जीभ के ऊपर और होठो के अंदर की तरफ़ जख़्म हो। हलक मे छाले हो, घावों के कारण मुँह से बदबू आती हो, सही न जाती हो। मुंह दुखना हो। पनीर के सदृश मवाद निकलता हो। मुँह की झिल्ली से सफेद मवाद निकलता हो, होठो पर से चमड़ी उतरती हो, थूक की गिल्टियॉ सूज गई हो और दुखती हो। मुँह मे छाले हो और होठो से खून बहता हो। जबान सूज गई हो, और घाव पड गये हो, मुँह के ऐसे जख्म जिनसे गालो मे छेद निकल आये हो।

हलक़:—हलक की ऐसी सोजिश जिसमे से खाकी सफेदी मैल, मवाद आता हो, गले की गिल्टियॉ सूज गई हो और दुखती हो, गले मे खाकी धब्बे और जहा तहा ज़ख़्म हों, गले मे घाव हो, और दुखता हो, गले के नज़दीक गिल्टियाँ सूज गई हो, छाती में दर्द और हलक खुश्क हो गया हो, जोर से खाँसी चलती हो, मानो गन्धक की दुर्गन्ध आती हो, "क्रूप्" नाम की खासी अथवा "डिफथेरिया" का मवाद हो, निगलने मे दिक्कत हो, गले की "टानसिल्" गिल्टियॉ सूज गई हो, और उनपर सफ़ेद मवाद के घाव हो, (काली मुरीयाटीकम् को फेरम् फासफोरीकम् के साथ देना "डिफथेरिया" की सर्वोत्तम औषधि है, और २ X या ३ X १० से १५ ग्रेन तक एक ग्लास पानी मे मिलाकर कुल्ली करनी चाहिये) मुँह और हलक़ मे भूरे रंग के बहुत से घाव हो, मुँह से गाढ़ी और लगनेवाली लार गिरती हो, गले मे खुश्की और दर्द हो, आवाज बैठ गयी हो, खासी का तार लगा रहता हो, सास लेने मे कठिनता हो, मुँह से झाग आते हो, गले की गिल्टियॉ जब सूज गई हो "मम्स्" अर्थात कनफेर नाम के रोग मे (फेरम् फासफोरीकम् के साथ अदल बदलकर दे) उपदंश के दूसरे दर्जे मे जबकि गले मे खुश्की और खुरदरापन आ गया हो मुँह और

हलक मे उपदंश का माद्दा हो, निकलने मे दर्द हो, एक ओर विशेष। जब "टानसिल" गिल्टियाँ सूज गई हो और उनपर सफेद सफेद मवाद लगा हो (गले की सब तकलीफो मे इस औषधि की कुल्ली करनी चाहिये और २ X या ३ X "ट्रिचूरेशन्" के एक ग्लास पानी मे १०, १५ ग्रेन मिलाना चाहिये।)

स्वास लेने के अवयव:—स्वास प्रणाली के सब रोगो मे इसका व्यवहार कर सकते है, यथा, खासी, दमा, "निमोनिया" "क्रूप्" इत्यादि जब कभी बलगम गाढ़ा चिपकनेवाला और दूध सा हो जब खासने मे सख्त आवाज, झुकने की सी निकले रात को बेचैनी हो, गर्मी जान पडे, तबीअत गिरी सी रहे, जुबान पर सफेद मैल हो, आँखे निकल आई हो, स्वास की नाली से शुष्क बलगम आता हो, सूखी खांसी हो, गले मे सुरसुराहट हो खखार पीली और सुर्खी लिये हो, आवाज़ बैठ गई हो, बेचैनी हो, सास लेने मे दिक्कत हो "ब्रोंखायल अस्थमा" मे जबकि सफ़ेद खखार आती हो, खासकर निकलना मुश्किल हो, क्षयी रोग की खासी जिसमे गाढा कफ आता हो। तेज और ऐठनेवाली बहुत दु:खदाई खासी ऐसी खासी जिसमे बच्चा खासते समय गला पकड लेता हो। दूध सा सफ़ेद कफ गिरता हो, ऐसी कूकर खासी जिसमे सफेद बलगम अपारदर्शी के आता हो, बलग़म युक्त क्षयी रोग सास लेने मे आवाज़ होती हो, छाती ठोकने से डल जान पड़ती हो, चेहरा फीका हो, भिचा हुआ हो, थोडा बुखार रहा करता हो, खासी के साथ बलगम बहुत निकलता हो, दाहिनी ओर "निमोनिया" हो, छाती मे ठंड लग गई हो और गाढ़ी पीली खखार निकलती हो, फेफड़ो मे सोजिश हो, फेफडो से खून आता हो, ऐसा जान पड़ता हो, मानो किसीने फेफडे रस्सी से बॉध लिये हो। "प्लूरीसी" का दर्जा और जब फेफडे ठोस पड गये हो।

दिल:—दिल का जल्दी जल्दी चलना, छाती का दबा हुआ सा जान पड़ना नाड़ी का जल्द जल्द चलना या नरम और धीमा चलना और हृदय की गति के साथ गति न करना, दिल के मुकाम पर ठंड मालूम पडना, हृदय मे रुधिर की अधिकता के कारण धडकन बढ़ना। दिल के ऊपर की झिल्ली की सोजिश का दूसरा दर्जा।

आमाशय:—बदहजमी जिसमे जुबान पर सफेदी हो। खाना खाने के बाद दर्द हो, चर्बीला खाना पसद न आवे। कारण जिगर की सुस्ती के कारण अरुचि, अथवा ऐसी भूख लगना जो हर घटे खाने को मन करता रहे, खट्टी डकार आना तथा पेट और छाती मे दर्द होना, शराब का नशा थोडे ही में हो जाना। खून की कै करना अथवा सफेद खखार का गिरना और मुँह मे पानी भरा करना। शाम को हिचकी आना, मुँह मे खखार रुकना ठडा लगना पेट मे कष्ट होना, दाहिने कंधे के

नीचे दर्द जान पडना, छूने से पेट खाली मालूम पडे, डकार में तेल या कै का स्वाद मालूम हो, मसालेदार या, भारी खुराक खाने मे पेट मे जलन और दर्द होना; पेट की सोजिश का दूसरा दर्जा जिसमे जुबान के ऊपर सफेद या खाकी मैल का गिलाफ हो। जिगर के दाहिनी ओर भारीपन जान पडना, पेट फलना पेट से खून निकलना और कै के साथ जमा हुआ काला खून जाना। सर्दी से जिगर के रोग जिसके कारण पट मे पानी भर गया हो। और पीलिया रोग हो गया हो, तिल्ली और जिगर के मुकाम पर सख्त दर्द होता हो, वायु निकल जाने से आराम आ जाता हो, जिगर मे खून जमा हो, जिगर बढ गया हो, पेट खाली जान पडना हो, दाहिनी तरफ दर्द होता हो, दस्त का रंग फीका पीला हो, जुबान पर सफेद या खाकी रंग का गिलाफ हो, कब्ज हो, बवासीर हो, पीलिया रोग जिसमे मुँह कडुआ रहता हो, सख्त कब्ज रहता हो, पेट में दर्द हो, पेट मे छुरी सी चलती हो, हर पाव घंटे पीछे दस्त की हाजत हो, तो दर्द के मारे रोवे और मल मे केवल रुधिर निकले। गुदा के ऊपर उपदंश के लक्षण हो, पेट मे केचुए और सूती कीडों का होना, खूनी बवासीर। प्रवाहिका मे आव और खून का जाना।

दस्त:—पित्त के अभाव मे कब्ज रहना, जीभ पर गिलाफ आना, दस्तो का रग फीका, पीला, गेरुआ या भहीर के रंग का होना, सख्त सूखा आव मिला हुआ निकले। पेट मे हवा भरना, सूज जाना, गुदा में खुजली चले, और गुदा मे दर्द के मारे, रोगी रो पडे, गुदास्थान की रसौली। चिकनाई या मसालेदार चीजे खाने से दस्त लग जाना, सफेद आव के दस्त होना, "टाईफोइड्" बुखार मे दस्त लगना और खून समेत आव आना, दस्त जाने मे दर्द होना और आव के सिवाय कुछ न निकलना छोटे लम्बे सूती कीडे जो गुदा पर खुजली का कारण होते है (नेट्रम् फास्फ़ोरीकम्) प्रवाहिका जिसमे आव मिले दस्त होते हो, वार वार दस्त जाने की इच्छा रहती हो और कूखने मे दर्द होता हो। बवासीर जिसमे गाढा सा खून निकलता हो और जम जाता हो।

मूत्रेन्द्रियः—मूत्राशय की नई या पुरानी सोजिश, पेशाब मे लाल। "एलव्यूमन" हो। गरम करने से रेत जम जाती हो, जिगर के रोग के कारण (नेट्रम् सल्फूरीकम्) मूत्र मे पीले रंग की रेत हो, पेशाब का रंग काला या मैला हो, मूत्राशय मे सोजिश और साथ ही तेज बुखार भी हो, गुर्दों मे सोजिश हो, मूत्राशय की सोजिश का दूसरा दर्जा जबकि सूजन हो गई हो, और गाढ़ा सफेद मवाद निकलता हो। मधुप्रमेह जबकि पेशाब मे शकर अधिक आती हो, पेट और जिगर बिगड गये हो, जुबान भूरी और सफेद हो, दस्त कडे और हलके रंग के हो गुर्दों में दर्द हो, गुर्दों के विकार के साथ जलधर हो सुजाक की यह खास दवाई है, इसको पिलानी

भी चाहिये और ३ X ज़ख्म पर लगाना भी चाहिये। हरा तूतिया खाने के बुरे नतीजे, वट मे पीप पड गई हो, मूत्रेन्द्रिय पर घाव हो, छोटे बच्चो के फोतो की नसे सूज गई हो, इन्द्रिय के सिरे पर मस्से हों। सुजाक के साथ फुसियां भी हो, फोते और मूत्र मार्ग में खुजली होती हो, सुजाक के रुक जाने से फोते सूज गये हों, धातु गिरती हो, पुराना उपदश हो, मवाद सफेद हो और जबान सफेद या भूरी हो, स्त्रियों मे हलका श्वेत प्रदर हो, जिसमें दूध के मानिन्द सफेद गाढ़ा बेकिरकिराहट मवाद जाता हो, मासिक धर्म देर से होता हो व न होता हो, बहुत जल्दी हो जाता हो, बार बार होता हो, (केल्केरिया फ़ासफोरीका) बहुत दिन रहता हो (काली फ़ासफ़ोरीकम्) बहुत काला और जम जानेवाला गिरता हो। गर्भ काल मे "एल-ब्युमीनोरीया" होना, प्रसूत ज्वर का पहला दर्जा जिसमे दिमाग बिगडे। बच्चो का बुखार शुरू हो, पागलपन हो, घाव का ज़हर चढ़ गया हो, स्तनो मे सूजन हो परतु पीप न पड़ी हो, प्रात:काल के समय गर्भिणी स्त्री कै करती हो और सफ़ेद बलगम निकलता हो।

पीठ और हाथ पैर:—शरीर में कही गठिया का दर्द हो, सूजन हो, नीचे को हरकत करने से दर्द होता हो या दर्द बढ़ता हो, ज़ुबान पर सफ़ेद गिलाफ़ हो। रात को गठिया का दर्द जो कपडों की गर्मी से विशेष होता है। बिजली की सी कौंध कमर से पैर तक मालूम हो। बिस्तर मे कल न पडती हो और उठता बैठता हो, गर्दन की गिल्टी सूज गई हो। गर्म शरीर मे हवा लग जाने से गर्दन अकड गई हो, पैर गरम हो, गर्दन तथा पीठ मे सर्दी लगती हो, दाहिने बाजू में ठंड लग गई हो, हथेली के पीछे फुसी निकल आई हो, हाथो पर मस्से हों, कलाई में अन्दर की तरफ दर्द हो। लिखते लिखते हाथ अकड जाते हो, पैर ठंडे हो, दिल धडकता हो, दाहिने घुटने मे जाव सिकोडने के समय चबक उठती हो। पैर सूज गये हो, हाथ भी सूज गये हो, पाहिले सूजन नरम हो, फिर सख्त हो जावे, नाख़ून बढ़ कर गोश्त में घुसे जाते हो, टागे दुखती हो, घुटने से नीचे सूजी हुई हो, उनपर घाव हो, जिनके किनारे मोटे हो। पुरानी गठिया के कारण लंगडाकर चलता हो खुर्ष चमकदार सूजन हो, जोडो मे गठिया का दर्द हो, गठिया के कारण फालिज हो (औषधि को खाना चाहिये और लगाना भी चाहिये।)

ज्ञानतन्तु:—मृगी जो शरीर के ऊपर की फुन्सियाँ दब जाने के कारण हुई हो (यह औषधि इस रोग की खास दवा है, बहुत दिन तक खानी चाहिये।) पैर की नसे मारी गई हो।

ज्वर:—सब प्रकार के ज्वर जिनमें ज़ुबान के ऊपर मैल हो, ज़ुबान सूखी हो और सफेद खाकी गिलाफ हो, बच्चो का बुखार जब शुरू हुआ हो (फेरम्

फासफोरीकम् के साथ बदल कर दे,) तीसरे पहर जाडा लगा करता हो, हमेशा जाडा मालूम होता हो और हाथ अकडते हो, और सफेद बलगम की कै हो जाती हो। बिस्तर मे सोने से आराम आता हो। "टाईफायड्' बुखार मे जब कब्ज हो। बारी का बुखार जिसमे जबान भूरी हो। 'स्कारलेट्" बुखार में 'फेरम् फासफोरीकम्' के साथ बदल कर दें। इसके व्यवहार से यह ज्वर रुक भी जाता है। गठिया के बुखार मे जबकि जोड सूजे हो, और हरकत करने से अधिक दुखते हो। "टाईफस" बुखार में कब्ज के लिये दे। शिर मे बहुत गर्मी हो, पेट की झिल्ली, फेफडे की झिल्ली, दिमाग की झिल्ली, और दिल की झिल्ली की सोजिश मे दिया जाता है। जब रोगी बक बक करने लगता और उठ जाता हो।

चर्म:—चमडो की सब बीमारियॉ जिनमे सफेद जमनेवाला मवाद हो, और ऐसी फुसियॉ जिन पर से सफेद भुसी सी उडती हो। जब जलकर छाले पड गये हो, और उनमे पानी भरा हो, सोने मे सब शरीर में खुजली उठती हो। शीतला मे अथवा छोटी चेचक मे इसके व्यवहार से पीप नहीं पड सकती जबकि खराब मवाद मे टीका लगाये जाने के कारण घाव बिगड गया हो। मासिक धर्म के बिगड या बंद होने के कारण जब फुन्सियॉ निकल आई हो और फुंसियो से सफेद मवाद निकलता हो, सोजिश हो, और सूखे तथा आटे के रंग के खुरड हो। फुन्सियॉ, मुँह में पीप के दाने वगैरह जिनमे गाढा सफेद मवाद हो या सफेद खुरड हो, "इरीसिपलस" विसर्प के फोडे। चमडा छिल गया हो, नाखून फट गये हो और दुखते हो। पीले रग के भूरे मे या हरे से छिलके चमडे से उतरते हो, छोटे बडे और दुष्ट फोडे मे सूजन के लिये, उनमे मवाद बनना रोकने के लिये देते हैं। शिर और बच्चो के चेहरो पर जबकि चमडे पर से छिलके से उतरते हो। खसरा का रोग हो, डाढ़ी की फुसियों की यह खास दवाई है।

निद्रा:—जरा सी आहट से चौंक पडना। चैन से नींद न आना।

बनावट के रेशे (टिस्स्यूस्):—खून निकलना, खून का रग काला हो और जम जानेवाला हो। दिल, जिगर और गुर्दे की बीमारी के कारण पित्त की नाली रुक जाने से जब जलन्धर रोग हुआ हो, व्रण मे जब मोटे मोटे अकुर हो। कठमाला मे जब गिल्टियॉ बढ गई हो, उपदंश मे, मोच में "फेरम् फासफोरीकम्" के बाद दे।

काली फ़ासफोरीकम् (Kali Phosphoricum)

इसका नाम "पुटाशियम् फासफेट्" है। मस्तिष्क, ज्ञानतन्तु, मांस और रुधिर के दानो में यह पदार्थ पाया जाता है। इसके बिगडने से निम्न लिखित लक्षण पाये जाते है।

१. मस्तिष्क में जहाँ विकार हो उसके अनुसार न्यूनाधिक विकार उत्पन्न होते है।

(अ) मन गिरा रहना जो निम्न लिखित दशाओ मे देखा जाता है। छेडने से, भय से, नाराज़ होने से, स्वास आने से और भयभीत होने से।

(ब) मस्तिष्क का नरम और कमजोर हो जाना।

२. ज्ञानतन्तुओ के विकार से हाथ पैर चलाने मे लगडापन तथा दर्द, जो आराम करने से अधिक मालूम होता है, और धीरे चलने मे कम होता है। शरीर गिरा सा रहता है और थका हुआ जान पडता है।

३. मांस मे चर्बी बन जाती है। सडने लगती है, खून के दाने जल्दी ही बिगडकर फैल जाते हैं।

इसलिये निम्न दशाओ में यह औषधि लाभदायक होती है। सड़ जाने के कारण खून बहता हो, खून बिगड गया हो, कोई अग मुर्दार हो गया हो, मुँह में मुखपाक हो, बुरे घाव हो, फैलनेवाले व्रण हो, मुर्दार सा बदबूदार दस्त आता हो, शरीर की सब दशा बिगड गई हो, जब सन्निपात ज्वर आदि हो।

योग्य लक्षण और सूचना

मनः—मस्तिष्क और ज्ञानतन्तुओ के लिये यह बडी उपकारक औषधि है। मानसिक दुर्बलता और ज्ञानतन्तुओ की दुर्बलता मे जो बहुत काम करने से अथवा चिन्ता करने मे हुए हो और मस्तिष्क और ज्ञानतन्तुओ की शक्ति घट गई हो। मन सर्वदा उदास गिरा हुआ और चिडचिडा रहता हो, बडा असन्तोष हो, अस्थिरता हो, विचार बदला करते हों। बीमार सर्वदा हतसफलता से डरता हो, जरा सी बात मे बिगड़ उठता हो, याद न रख सकता हो, मन में वहम उठा करते हो, सोता हुआ काम करता हो। धन की चिंता बहुत रहती हो, डरता हो न जाने क्या हो जाय। धर्म का दुःख हो, बुरे अन्देशे उठते हो, विशेष चिन्ता रहती हो, चुपचाप बका करता हो, बैठे पीछे उठना अच्छा न लगता हो, बकता झूँकता हो ख़यालीपुलाव पकाता हो, जरा सी बात से डर जाता हो, बेचैन रहता हो, थोडी सी आहट से चौक पडता हो, घर से बाहर जाना बुरा लगता हो, पिछली बातो के ध्यान से

अनावश्यक दु खी हो, झूठमूठ खासता हो, रोता हो, जीवन मे घबड़ाता हो, परन्तु मरने से डरता हो । वेविश्वासी हो, बातें करना न सुहाता हो । और किसी के संग बैठना अच्छा न लगता हो । बच्चा जनमने के बाद स्त्री रोगाक्रान्त होकर पगली सी हो गई हो, अचानक वायुगोले का दौरान हुआ हो, जमुहाइयॉ आती हो, बिना इच्छा किये ही ठडी सासे भरती हो । बच्चा जनमने मे बहुत बड़े कष्ट का भय हो, पागलपन या दिमाग का बिगड जाना, शराब से पागल होना बच्चो का रोना और मचलना, डरना, चीखना, चिल्लाना, रात मे सोते समय चौक पड़ना, लज्जित होना और शर्माना । सोते मे बाते करना, झट नीद खुल जाना, सोने के लिये यहॉ वहॉ बिस्तर बदलना ।

शिर:—कमज़ोरी और थकावट के कारण शिर में घुमेर आना, झुकने मे शिर का चकराना, दिमाग का हिलना, मैदान मे चलने मे चक्कर आना विशेषकर जब कि सूर्य सामने हो । धीमा धीमा दर्द और बोझा सा शिर की गुद्दी मे मालूम होना, भोजन करते समय आराम आना, ऑखो के ऊपर शिर बंधा हुआ सा जान पडना, टीस मारना, आँख और गुद्दी के बीच दिमाग के पर्दे में तीक्ष्ण दर्द होना, रात को दर्द बढ जाना, खाने के पीछे तथा धीरे धीरे हिलाने से आराम आना, सुबह जगने पर शिर मे दर्द जान पडना, ज़्यादा काम करने से दिमाग मे वहम पैदा होना, आँखों के ऊपर धीमा धीमा दर्द होना, बाईं तरफ अधिक होना, बाहर जाने से आराम आना, शिर मे दर्द होना, और पेट तक जान पडना. शिर मे दर्द के कारण कुछ सोच न सकना, घबडा जाना, शक्तिहीन होना, थकना, अगडाई लेना, ऋतु काल मे शिर में दर्द होना, साथ ही भूख लगना, दु खानुभव होना, शिर मे टीस होना और आवाज न सुहाना, शिर के पीछे गुद्दी मे दर्द होना और थकावट जान पडना, शिर मे दर्द और कान मे आवाज आना, माथा दबा जाना, दर्द माथे से दोनो कनपटियो तक जाना, बहुत पढने और रात को न सोने से विद्यार्थियो के शिर मे दर्द होना, बाईं कनपटी पर तेज़ और फैलनेवाला दर्द होना, शिर पर पीछे की ओर ऐसा दर्द होना मानों कोई बाल उखाड रहा है, बाईं ऑख मे दर्द होना और बाईं ऑख से शिर तक जाना, शिर मे गठिया का दर्द जो गरम कमरे में और शाम को और अकेले मे तेज होता हो । खुली हवा मे और तबीअत खुश होने मे आराम आना । शिर मे दर्द साथ ही कै के साथ खट्टा कफ निकलता हो, और जी मितलाता हो । गज, शिर के चमडे का सूखापन तीक्ष्ण खुजली चलना, सवेरे तकलीफ ज्यादा होना, शिर मे पानी भर जाना ।

ऑखे:—ऑख के डेलो में ऐसा दर्द मानो चोट लगी हो, ऑख मे जलन हो, सूखापन मालूम हो । तिनका या रेत पडी जान पडती हो, पलके न खुलती हो,

गेयी टकटकी लगा कर देखता हो; पुतलियां फैली हुई हों, नीचे की पलक पर गुहेरी हो; पलकें भारी हों, बाईं आंख में दर्द होकर नींद खुल जाती हो, धूप से अधिक नकसीर होती हो, आंख के ज्ञानतन्तु दुर्बल हो जाने से नजर कमजोर हो गई हो। पलक न उठती हो। आंखों के डेलों में दर्द हो। पलक के किनारे खुजाते और लाल हों, जलन हो, मानों धुआं भर गया है। "डिफ्थेरिया" रोग के पीछे रोगी तिरछा देखता हो। आंख चलानेवाली नसें कमजोर हो गई हों, और पास की चीजें न देख सकता हो।

कान:– कान की नसों का सूख जाना अथवा उस हिस्से (अर्थात ज्ञानतन्तु) का दुर्बल हो जाना, और सुनाई न देना, कान में गहरा दर्द होना, लेटने समय खुजली चलना और टक की भी जलन होना। दिमागी कमजोरी से कानों में आवाज सुनाई देना और शोर, गाना और बाजे का सा आवाज अनुभव होना, कान ऐसा तेज हो जाय कि जरा आहट न सही जाय। बायें कान के छेद पर फुन्सियाँ निकल आना, कान के पर्दे में व्रण होना, पीपदार मवाद निकलना, जिसमें सड़ी हुई बदबू आती हो, कभी कभी खून मिला हो, बायें कान में ऐसा तेज दर्द हो कि गाल तक दुखता हो।

नाक:—नाक से पानी बहना (पतला जुकाम) सवेरे तेज होना, पीनस या नाक से बदबू आना, और पीले छिलके निकलना, बायें नकुरा में से सब्ज़ हरापन लिये पीले छिलके निकलना, छिलके के नीचे घाव होना, रात को नकुरा बंद हो जाना, सवेरे पीला बदबूदार मवाद निकलना, दाहिने नकुरा से थोड़ा थोड़ा मवाद जाना, बायें नकुरा का बंद हो जाना, छींकें आना, बाहर निकलने से जोर से छींके आना, दुर्बल आदमियों के नकसीर फूटना और पतला खून काले रंग का और जमनेवाला होना, नकसीर का बार बार फूटना।

चेहरा:— चेहरे में टीस मारना और गर्मी से आराम आना, पानी में काम करने से चेहरे का फ़ालिज होना, चेहरा, सूखा हुआ सिकुड़ा हुआ सा होना, आँखे सफ़ेद या पीली और चेहरे से रोगी जान पड़ना; डाढ़ी के नीचे खुजली जान पड़ना, फुंसी होना, चेहरे की नसों का कमजोर हो जाना मुख विकार हो जाना और फड़कना, और ऊपर ऊपर के दांतों से बायें कान तक टीस मारना।

दांत:— खोखले या भरे हुए दांतों में सख्त दर्द होना। नाज़ुक मिज़ाज लोगों के दांतों में टीस होना, कभी माथे में दर्द होना और कभी दांतों में बहुत काम और दिमागी मेहनत करने या नींद न आने से दर्द होना। दांतों का दुखना और बहुत थूक का आना, दांतों का बजना और दुखना। बच्चों का सोते में दांत चबाना। मसूड़े और ऊपर के होंठ का सूज जाना, मसूड़ों से झट खून निकल आना, छाले

पडना, सफेद हो जाना और सूज जाना, मसूडों का नरम पड जाना, जरा छूने मे दुखना और लाल किनारा होना, मसूडो का बिगड जाना दांतो की जडो में दुखना ठंड लगने के पीछे दांतो का दुखना, मसूडों का स्पंजी और रद्दी हालत मे होना।

जीभः—जुबान का बहुत सूखा होना, विशेषकर सवेरे के समय ऐसा मालूम होना मानो वह तालू मे लग जायगी, पीला. मैला और गई के से रंग का गिलाफ़ जीभ पर होना, जुबान बहुत सूखी और उस पर सोज़िश हो, किनारे लाल और घायल हो, सवाद सडा हुआ कडुआ और खट्टा हो।

मुँहः—मुँह से सास के साथ बदबू आती हो, मुखपाक हो, मुँह मे व्रण हों, होठो पर फुंसियॉ और घाव हो, चमडा उछलता हो। भयानक कंठरोहिणी "डिफ-थेरिया," मुँह मे सडन होना, गला पड जाना और बदबू आना, हलक का सूजना, दर्द होना, ऐसा जान पडना कि सूज गया है। हलक़ की गिल्टियॉ का बढ जाना और उन पर सफेद मवाद का लगा होना। बहुत थूक का आना और उसका नमकीन और गाढा होना, गले मे दाहिनी तरफ़ की गिल्टी का सख़्त दर्द करना, और निगलने मे विशेष कष्ट होना, हलक का सूखा होना और सर्वदा निगलने की ख्वाहिश रहना, गले मे से नमकीन मवाद का आना, और हलक़ की बाईं गिल्टी से कान तक दर्द होना।

स्वासांगः—"क्रूप" खासी का आखिरी दर्जा, अत्यंत कमजोरी, चेहरे का फीका पड जाना, गला बैठ जाना और आवाज़ न निकलना, जोर से चिल्लाने के कारण आवाज का बैठ जाना, कंठ की आवाज की नसो के फालिज के कारण से आवाज न निकलना, धीमी बोलना और उच्चारण शुद्ध न होना। थोडा भी खाना खाने से दम उखड़ना, दमेवालो के समान सास का कठिनता के साथ आना। (इस औषधि को अधिक मात्रा मे बार बार देना चाहिये।) सीढी चढने मे दम उखड जाना, खासने मे हवा की नालियो का दुखना, नाजुक मिजाज आदमियो से कूकर खांसी का उठना, और दुर्बलता बढ जाना, रात के समय गले मे खुजली चल कर खासी उठना, रात का खाना खाने के बाद गले का बैठ जाना, और खुश्की तथा खुजली चलना, सास की नाली मे जलन होकर थोडा गाढ़ा, पीला लिये सफेद कफ निकलना, पहिले गले पर दबाव जान पडना, खखार न आना परंतु गले मे घरघराहट की आवाज होना। क्षयी रोग मे गाढा पीला कफ गिरना। सब्ज रग का या साबुन के झाग के समान बलगम आना। छाती मे दर्द होना और बाईं छाती मे छूने से दर्द जान पड़ना और कधे तक दुखना, हरकत करने और दबाव से दर्द का बढना, छाती और बगलो मे छेदने का सा दर्द उठना, फेफ़डो का सूज जाना दम घुटना, ऐसी खासी जिसमे झागदार कफ हो, दुर्बलता और दबाव हो, चेहरा सफेद

पड़ गया हो, छाती में बाईं ओर दर्द हो और खांसने से बढ़ता हो, हलकी जुकाम खांसी हो, जुबान सूखती हो, नब्ज़ जल्द जल्द और ठहर ठहर कर चलती हो, भूख न हो, कमजोरी हो, दाहिनी ओर छाती से नीचे और कमर के पास सख्त काटनेवाला इधर उधर दर्द हो।

दिल:—सीढ़ी चढ़ने में दिल धड़के, और सांस रुके, बेचैनी, घबड़ाहट और अनिद्रा हो, जरा से आवेग से दिल धड़कता हो, नाजुक मिज़ाज आदमियों की नसों में खून की सुस्ती हो, अभाव हो, और खून फीका पड़ गया हो। दिल की कमजोरी से या डर अथवा थक जाने से बेहोशी हो जाती हो, नब्ज़ बेकायदे, धीमी और सुस्त हो, और मुश्किल से जान पड़ती हो। दिल धड़कने के साथ खून की कै होती हो, घबड़ाहट के समय फ़िक्र या चिन्ता हृदय की गति ठहर ठहर कर होती हो, और साथ ही धड़कन भी हो।

आमाशय:—मिठाई के सिवाय और कोई चीज अच्छी न लगे, सिरका अच्छा लगता हो, खा चुकने पर फिर भूख लग आती हो, खूब खाने पर भी तृप्ति न होती हो। कमज़ोरी के कारण प्यास बहुत हो और बुझती न हो, बहुत ठंडी चीज के पीने को मन करता हो, खाना खाने के बाद उलटी होने से दम घुटे, भोजन के बाद जी मितलावे और तबीअत बिगड़े, जी मितलावे और कै में खाई हुई चीज कडुवी और खट्टी निकले और खून भी हो। पेट फूले और दिल पर बाईं ओर पेट पर दर्द मालूम हो, पेट शून्य हो जाय, दिल बहुत जले और पेट दुखे जिसका कारण दुर्बलता अथवा थकावट हो। रंज, दिमाग़ी मेहनत, भय और चिन्ता, दुर्बलता के कारण हों। पेट में जलन हो, बदहज़मी जिससे पेट के मुकाम पर दबाव सा जान पड़े, बेहोशी भी हो, ऐसा दर्द हो मानो पिसा जाता है। खाना खाने से पसीना आवे तिल्ली में पकड़ने का व टक सा दर्द हो और चलने से दर्द बढ़े, पेट में हवा हो, और काटने का सा दर्द हो। दर्द दाहिनी तरफ़ हो और सब बदन की नसें अकड़ी जाती हों, नीचे की तरफ दर्द हो, टांग सिकोड़ कर (दुहरा होकर) सोना चाहता हो। बाईं ओर जंघा के पास दर्द बहुत हो। खाने के बाद और पानी पीने के बाद दर्द बढ़ जाता हो, आमाशय में व्रण हो, शाम को खट्टी डकारें आती हों, प्रातःकाल जलन हो, पेट में दर्द हो और कोशिश करने से भी दस्त न होता हो।

मल:—पेट में दर्द हो, और पतले दस्त आते हों। काम में लगे रहने से दस्त की हाजत न हो, मिट्टी के रंग का दस्त एकदम हो जाता हो, सवेरे खाना खाने के पीछे पेट फूलता हो और ऐंठता हो। दस्त की ख़्वाहिश न हो, कब्ज हो।

दस्त लगना:—काले भूरे दस्त जिस पर पीले हरे रंग का आंव लगा हो, दस्त और कै के साथ टांगों में ऐंठन हो, मल में सड़े गोश्त की सी बू आती हो, कठिन

प्रवाहिका, भय या दुःख से दस्त लग गये हों । बिना दर्द के पतले दस्त जिनसे बहुत कमजोरी हो जाय । पेट से फूला और उसमें गड़गड़ाहट हो, दस्त जाने की इच्छा बार बार हो परन्तु थोड़ी सी आंव से लिपटी हुई जावे । बवासीर जिसमें खुजली उठती हो, दर्द होता हो सूजन, जलन और गुदभ्रंश हों. बवासीर का "ओपरेशन्" कराया हो, हैजा जिसमें चावल की माड़ के से दस्त आते हों ।

प्रवाहिका:—जबकि बिलकुल खून के दस्त आते हों । दस्त लगने और संग्रहिणी में इस औषधि को गर्म पानी के साथ पिचकारी द्वारा भी लेना चाहिये ।

मूत्रेन्द्रिय:—मूत्राशय में काट चलती हो, मूत्राशय और मूत्रमार्ग में सुई चुभने का सा जान पड़े, मूत्रमार्ग में खुजली चले । "ब्राइटस् डिजीज" हो, नर्वसपन गिरी सी रहे, नींद न आवे और स्वभाव चिड़चिड़ा पड़ जाय, पेशाब करने में जलन हो. बच्चा बार बार पेशाब करे या बिस्तर में मूत दे । (यदि कीड़ों के कारण हों तो 'नेट्रम फास्फोरीकम्' का व्यवहार करो) मधुप्रमेह, नाड़ी दुर्बलता, श्वांस में बास की सी बू आवे, प्यास लगना, सूख जाना । कभी कभी बहुत भूख लगना, इन सबका कारण जब जिगर की खराबी हो । रात को जबकि बिस्तर में पेशाब हो जाया करता हो । यह मूत्राशय के फालिज होने के कारण हो, अथवा आम कमजोरी से, या नसों के ढीला पड़ जाने से जैसाकि बुड्ढे आदमियों में होता है । मूत्रयन्त्र में जब कि सूजन आ गई हो, और गाढा मवाद निकलता हो. लाल या केसरिया रंग का पेशाब हो, मिकदार में थोड़ी धार पतली हो. कुछ बू रहती हो, रंग पीला सुर्खी मायल हो और रेत जमती हो, उपदंश के घाव अथवा सुजाक के कारण जबकि रुधिर आता हो । स्वप्न दोष हो । स्त्री मासिक धर्म बहुत देर से हो, बहुत थोड़ा होता हो, या रुक जाता हो, रोगिन का रंग फीका, स्वभाव चिड़चिड़ा; चित्त अस्थिर और तबीअत नाजुक हो । मासिक रुधिर का अधिक मात्रा में आना और अति दुर्गन्ध-युक्त होना, खून का रंग गहरा लाल होना या स्याही लिये हुए होना. रुधिर पतला और जमता न हो । फीके रंग की नाजुक मिजाज स्त्रियों में ऋतुकाल के समय कष्टानुभव होना । थकावट, दर्द जिसका रुख नीचे की ओर हो, शरीर के फूलने का सा जान पड़ना । मासिक धर्म के समय स्तनों में सूजन और पीप पड़ जाना, ऋतुकाल से पहिले दुर्बलता बोध होती और रुधिर जाने के समय में थकावट और सुस्ती होना कमर में दर्द होना । चूतड़ों के बीच की हड्डी का दुखना, इन्हीं दिनों में बाईं टांग और जांघ में तथा जाव में और पेट में बाईं तरफ दर्द जान पड़ना, "हिस्टेरिया" अर्थात् वायुगोले का दर्द होना, इसमें ऐसा जान पड़ता है कि हवा का गोला पेट में से उठ कर गले की तरफ आता है । श्वेतप्रदर, पीला लिये हरे रंग का मवाद, तेजी लिये हुए निकलता है । प्रसूतावस्था में पागलों के से

खायल उठना। स्तनों में पीड़ा होती और फोड़े से बदबूदार मवाद निकलता हो। गर्भावस्था में भी मासिक धर्म जारी हो, झूठे दर्द चलते हो, गर्भ के दिनो में रात को दर्द होना हो, प्रसूत काल के ज्वर का दूसरा दर्जा हो। (यदि गर्भकाल मे "काली फास्फोरीकम्" का व्यवहार एक महीने तक प्रसव से पहिले किया जाय तो वेदना न हो।)

गर्दन और पीठ:—कमर के बीच मे दर्द होना, और कंधों के बीच मे पीछे की ओर. चलने मे आराम आना दुर्बलता के कारण रीड का कमजोर होना। पीठ और हाथ पैरों में दर्द होना। कंधो से नीचे पीठ का दुखना, गिल्टी सूज जाने से गर्दन का अकड़ना। बगल की ओर कान के नीचे की गिल्टियों का सूज जाना और दुखना। रीढ के भीतरवाले मादे का बिगड़ जाना। शक्तिहीन होना और चल न सकना, गठिया का दर्द, लगड़ापन, जोड़ो का अकड़ जाना, तेज चलने से दर्द और धीरे चलने मे आराम होना। पीठ मे गठिया का दर्द जो आराम करने के बाद बढ़ता हो और हरकत करने के आरंभ मे बढ़ता हो, बैठने उठने मे बड़ा ही क्लेश हो। फालिज होने का सा हाल जान पड़े।

हाथ पैर:—कंधे और गुदा मे दर्द हो और टहलने मे आराम हो। रात को टांगो में खुजली चले और बेहोश तथा कमजोर जान पड़े, हाथो मे अंदर की तरफ खुजली चले दाहिने बाजू और हाथ मे बेहोशी और अकड़ हो, उंगली के पोरए की नोक सो गयी हो। फालिज या गठिया से लंगड़ा हो गाया हो, पैरो के तलुओं में लंगड़ा कर देनेवाला दर्द हो, रंग नीला पड़ गया हो, पैरो मे बेचैनी जान पड़ती हो, तलुए जलते हो, गठिया के कारण अथवा टांग की नस के कारण दर्द हो और आराम करने से अधिक और धीरे धीरे चलने से कम हो। सर्दी से पैर की उंगलियाँ ज़ख्मी हो गई हो, गृध्रसी हो, मृगी हो, फालिज हो, अंग को लकवा हो, दर्द हो, शरीर के किसी भाग मे फालिज हो—सबमे यह औषधि लाभदायक होती है। शरीर के किसी अंग में ज्ञानतन्तु संबंधी पीड़ा हो, उदासी हो, निर्बलता हो. रोशनी और शोर से तबीअत घबड़ाती हो. खुशी की बातो और टहलने मे आराम आता हो, चुप रहने और अकेले मे दुःख बढ़ता हो, बिना कारण के घबड़ाहट हो, रोती हुई अपनी दुःख की कहानी सुनाती हो।

निद्रा:—बच्चे सोते में रो उठे और डर से चीख कर जग पड़े, सोते हुए चल पड़ें, जमुहाई ले और थकावट जाहिर करे, किसी चिंता मे फसे रहने व दिमागी काम करने से नींद न आवे, सोते हुए ऐसा जान पड़े कि शिर मे पटाके छूट रहे हो, हमेशा सोते मे भूतो को देखना, डाकुओ को देखना. आग लगते देखना और

गिरने का अनुभव होता हो, विषय वासना के स्वप्न देखना, सवेरे बिस्तर मे से उठने की इच्छा न होना, सोने मे नसो का फडकना ।

चमड़ाः—छिलको और खुरडो से तेल की सी बू आना, पित्ती उछलना, ऐसी फुसी होना जिनमे से खून मिला मवाद निकलता हो, शरीर मे ऐसी खुजली चले मानो कीड़े रेंग रहे है, सहराने से आराम आना, बहुत खुजाने से भी लाई व तकलीफ होना, हथेली और तलुए का खुजाना जहाँ चमडा मोटा है, शीतला के दाने जबकि सड गये हो । पैर की उगलियाँ सर्दी से घायल हो गई हो । हाथ और कानो मे खुजली और सनसनाहट हो ।

ज्वरः—"काली फासफ़ोरीकम्" "टाइफायड्" बुख़ार की अच्छी दवाई है । जबकि जुबान सूखी और भूरी हो, सडा हुआ दस्त होता हो, नब्ज कमज़ोर हो, सास से बू आती हो, दात काले पड गये हों, तबीअत मुरझा गई हो, बेहोशी की बाते करता (सन्निपात) हो, "स्कारलेट्" बुखार मे जबकि गले की हालत रद्दी हो । दुर्बलता और बेहोशी हो । अन्य ज्वरो मे भी जबकि रोगी की दशा बिगड गई हो और साघातिक लक्षण वर्त्तमान हो, नीद न आती हो, बेहोशी हो, अपने आप धीरे धीरे बकता हो, सन्निपात हो, शरीर मे बदबूदार बहुत सा पसीना दुर्बलता करनेवाला आ रहा हो ।

बनावट के रेशे (टिस्स्यूस)ः—बिगडे हुए दस्तो के कारण शरीर सूख गया हो, सब शरीर मे दुर्बलता, क्षीणता और थकन हो, दिन दिन शरीर सूखता जाता हो ।

काली सल्फूरीकम् (Kali Sulphuricum)

इसको "सल्फेट् आफ पुटाश" भी कहते हैं। यह चीज हमारे शरीर के चर्म के सब मे ऊपरवाले पर्दे मे मौजूद हैं। भीतर के अंगो पर जो गिलाफ है, उसमे भी मौजूद है, जब यह चीज़ शरीर मे घट जाती है, तो जुबान के ऊपर पीले कफ से रंग की मैल दिखाई देती है, और चमड़े और झिल्लीयो के पर्दों मे से पीले या हरे रंग की पतली रतूबत बहने लगती है, चमड़े और झिल्लियों के ऊपर का पर्दा (चमडी) उखड़ने लगता है, और यही सड कर और गल कर पीला रंग धारण करना है।

"सल्फेट्" और "ओक्सायड आफ आयर्न" स्वभावत. "ओक्सिजन्" प्राण-वायु को पहुँचानेवाले है, ये चीज़े जब मवाद से मिलती हैं, तो उनका "ओक्सिजन्" दूर हो जाता है, परंतु श्वास की वायु मे से "ओक्सिजन्" ग्रहण करके फिर लाभ-दायक बन सकता है, यह पदार्थ भी ऐसा गुण रखता है, और "ओक्सिजन्" ग्रहण करने की शक्ति रखने के कारण शरीर की बढवारी का कारण होता है, शरीर मे जब यह पदार्थ कम हो जाता है तब ये लक्षण होते है.—शरीर भारी होना, और थकावट जान पड़ना, शिर मे घुमेर आना, सर्दी लगना, दिल धडकना, भय लगना, बुद्धि ठीक न रहना, दात, शिर और हाथ-पैरो में दर्द होना, दर्द की जगह बदलता रहता है, बन्द कमरे मे गर्मी से और शाम के समय दर्द मे अधिकता होती है, और ताजी खुली हवा मे "ओक्सिजन्" की विशेषता के कारण आराम रहता है। जब चमडे और अंदर की झिल्लियों के ऊपरवाले पर्दे को काफी "ओक्सिजन्" नही मिलता, तो वह पर्दा बिगड जाता है, और टूटकर अलग हो जाता है, जब इस औषधि के सयोग से फिर "ओक्सिजन्" पहुंचता है तो पुराना पर्दा हटकर नया बनने लगता है।

विशेष लक्षण:—आँख, नाक, कान, फेफड़े, मूत्रेन्द्रिय, दांत, आते और चमडी से पीले रंग की या पीले हरे रंग की रतूबत निकलती हो, शाम को और गरम कमरे मे रोग का बढना और खुली हवा मे आराम आना।

जोडो मे गठिया का दर्द अथवा शरीर के किसी हिस्से मे दर्द जो बदल बदल कर कभी कही कभी कही होता हो।

जुबान के ऊपर पीला मैला गिलाफ हो, कभी कभी किनारों पर सफेदी हो, जायका फीका हो।

योग्य लक्षण और सूचना

शिर:—ऊपर की तरफ देखने से चक्कर आता हो, लेटे हुए से उठने मे ज्यादा हो, गिरने का डर लगा रहता हो। शिर मे किसी प्रकार का दर्द जो खुली हवा मे रहने से कम और गर्म कमरे मे जाने से और शाम को विशेष हो। शिर को आगे पीछे या इधर उधर हिलाने से दर्द हो, शिर पर फुसियॉ हो जिनमें से पतला पीला मवाद वहे, बाल गिरते हो, खोपडी पर से पीले रंग की भुसी सी उडती हो, खोपडी पर से पीले रग के छिलके उतरते हो (नेट्रम् मुरीयाटीकम् २ X के द्वारा शिर धोना चाहिये)।

ऑखे:—मोतियाबिद जिसमे ऑख का शीशा धुॅधला हो गया हो (नेट्रम् मुरीयाटीकम् के साथ बदल कर दे)। आखों से पानी आता हो। जबकि ऑखे दुखती हो और अधिक मात्रा मे गाढा पीला मवाद या पीला मैला मवाद अथवा पानी सा गिरता हो, पलको के किनारो पर जलन हो, और पलको पर से पतले पीले खुरड पपडियॉ निकलती हो, कोर्निया पर्दे में फोडा हो।

कान:—दाहिने कान से भूरे रंग का बदबूदार मवाद निकलता हो, कान के भीतर सूजन हो और गले मे खुलनेवाले छेद के सूजने के कारण बहरापन हो। कानो से पीला मवाद या पतला कुछ गिरता हो और शाम को बढता हो। पनीर या पीब सा बहता हो। कानों मे दर्द हो। सोजिश के पीछे पतला चमकदार पीला या हरा सा चमकनेवाला मवाद गिरता हो। कानो के नीचे तेज, काटने का सा दर्द हो, (काली सल्फूरीकम् २ X से एक बार पिचकारी लगानी चाहिए)।

नाक:—नाक से पीला सा या हरा या पानी सा बहुत दिन से मवाद निकले, गाढा, पीला, छिछडेदार मवाद जाय, बाये नकुरा से बहुत गिरे, नकुरा मे पीला मवाद इकट्ठा होकर रास्ता रोक दे। सूँघने की शक्ति मारी जाय अथवा कुछ का कुछ सूँघने से जान पडे। शिर मे सर्दी लगी हो, (जुकाम हो तो शुरू मे "फेरम् फास-फोरीकम्" के साथ बदलकर दे, जिससे पसीना बहुत आवे) रोग के लक्षण शाम को अथवा गरम घर मे रहने से बढ जाय, नाक मे कीडे पड जायँ, जुकाम मे पसीना लाने के लिये देते है। हरा मवाद बहुत हो तो "सिलीका" दे।

चेहरा:--दाहिने गाल पर नीचे की पलक से लेकर नकुओ के किनारे तक "एपीथैलीओमा" नामक रोग हो, घाव हो गये हो, जड सख्त हो, किनारे ऊँचे उठे हुए हों, चेहरे मे दर्द जो शाम को या गर्म घर मे जाने से बढता हो और ठंडी खुली हवा से आराम हो। चेहरा सुर्ख हो, शकल बिगड गई हो। होठ और मुँह मे

छाले हो । नीचे का होंठ सूज गया हो । नीचे के होंठ पर खुश्की हो, बडे बडे छिलके उतरने हो । मुँह मे गर्मी और जलन हो ।

दांतः—दांतों मे ऐसा दर्द जो ताजी खुली हवा मे अच्छा रहता और शाम को और गरम कोठरी मे बढ़ जाता हो ।

जुबानः—मुँह का ज़ायका फीका रहता हो । न भूख हो, न स्वाद हो । जीभ के ऊपर पीला कीचड सी मैल जमी हो, कभी कभी किनारे सफ़ेद हों । स्वास से बदबू आती हो, और मुँह मे छाले हो; जीभ और होंठ सूखे रहते हो । जुबान, मसूडे और होंठो का रंग सफ़ेद हो ।

श्वासांगः—दमे की खांसी, पीला कफ आराम से निकले, क्षयीरोग खासी इत्यादि स्वासेंद्रिय के रोग जिनमे खखार बिलकुल पीली अथवा पीलापन लिये हरी, कीचड सी, पतली छिछडेदार अधिक मात्रा मे निकले । खासी जिसमे कभी कभी छाती मे घरघराहट सुनाई दे । ऐसी खासी जो खुली ठडी हवा मे कम और शाम को तथा बन्द मकान मे अधिक हो । ठंड लगने से गला बैठ गया हो । गले में ऐसी तकलीफ हो जिससे बोला न जाय । ऐसी खासी हो जिसमे खखार ज्यादा बाहर न निकल जा सके । खखार उलटकर पेट मे चली जाय, कूकर खासी का वह दर्जा जिसमे सोजिश होती है और आखिरी दर्जा जिसमे बहुत क्षीणता हो जाती है, फेफडों की सोजिश का दूसरा दर्जा जबकि बलगम पतला पड़ गया हो और छाती मे बोलता हो । पीला बलगम मुश्किल से निकलता हो, अथवा पानी के समान थूक हो, "निमोनिया" में जबकि छाती घरघराती हो और पीले रग का बलग़म निकलता हो ।

आमाशयः—पेट मे सोजिश हो । ज़ुबान का रंग पीला मैला हो । बदहजमी हो, स्त्रियाँ मूर्छा सी अनुभव करती हो, पेट भरा रहता हो और उनको पागल होने का भय हो, पेट मे ऐसा बोझा मालूम हो, मानो किसीने सीसा भर दिया हो; पेट में दर्द हो, ज़ुबान पीली कफ सी मैली हो और "मेग्नेशिया फासफोरीका" देने से लाभ न हुआ हो, गर्म चीज़ खाना न सुहाता हो, प्यास न लगती हो, पेट फूल गया हो, छूने से पेट ठडा जान पडता हो । कमर की हड्डी के सिरे और नाभी के बीच के स्थान मे गहरा दर्द दाहिनी तरफ होता हो (डाक्टर बोकर) हमेशा की कब्ज हो । जिसमे जुबान मैली हो, कूकर खासी मे काला, पतला, बदबूदार दस्त आता हो । पेचिश जिनका रंग पीला हो, पतले हो, और बवासीर जिसके साथ जुबान का रंग पीला मैला हो, और पेट से पीला मवाद गिरता हो ।

मूत्रेन्द्रियः—सुज़ाक जिसमे पीले या हरे रग का मवाद निकलता हो और सुजाक रुकने से फोते सूज गये हो, ऐसा सुज़ाक अथवा गर्मी—फिरग—मौजूद हो

जिससे शाम के समय कष्ट विशेष होता हो। पेट भारी और फूला हुआ हो, ऋतुकाल मे शिर भारी रहता हो, श्वेत प्रदर मे जबकि मवाद का रंग पीला, सफेद, हरा या पनीला हो। मासिक धर्म अति शीघ्र या देर मे हो या कम हो। गर्भाशय में पीड़ा हो।

पीठ और हाथ पैर:—जोड़ो में गठिया का दर्द या शरीर मे जहाँ तहाँ दर्द हो और दर्द बदलता रहता हो, शाम को और गर्म कमरे मे विशेष हो, खुली ठंढी हवा मे जाने से आराम हो, पीठ मे दर्द हो, गर्दन और कमर में दर्द हो।

ज्वर:—गठिया का दर्द, "टाईफ़ाइड" बुखार, "स्कारलेट्" बुखार, विषम ज्वर "एन्टेरिक्" बुखार, बारी का बुखार, जिनमे जुबान के ऊपर चिकना पीले रंग का गिलाफ हो, ज्वर शाम को बढ़ा करता हो। रुधिर में विष मिल जाने के कारण जो ज्वर हो। (इस पदार्थ से पसीना बहुत आता है। और इसलिये ज्वरों के आरंभ में देना चाहिये, "फ़ेरम् फासफोरीकम्" के साथ अदल बदल कर।) "स्कारलेट्" बुखार मे चमड़े पर से छिलके उतर रहे हों।

चमड़ा:—चमड़ा जब अपना काम न करता हो। (गर्म पानी में मिलाकर रोगी को बिस्तर पर अच्छी तरह ढक कर पिलावें।) सब तरह की फुन्सियाँ जिनमे चमड़ा गरम और खुश्क रहता हो और ऐसी फुंसियाँ जिनसे पतला पीला पानी निकलता हो। बाजुओं पर छिलके उतरनेवाले ददोड़े हों और जो गर्म पानी के व्यवहार से अच्छे हो जाते हों। बगल मे, गर्दन मे और हाथों के पीछे फुंसियाँ हों, खोपड़ी पर से छिलके उतरते हों। दाहिनी टाग पर नस फूल गई हो, "एपीथीलियल केन्सर्" जिसमे से पतला पीला लसदार मवाद निकलता हो, चमड़े पर से छिलका उतरता हो, ऐसी फुंसियाँ हो जिनमे जलन हो। खुजली चलती हो और मवाद रसता हो, "एक्ज़ीमा" अर्थात ऐसी फुंसियाँ जिनसे पीला चमकदार मवाद आता हो, शरीर पर से केंचुल सी उतरती हो, पसीना न निकलने के कारण चमड़ा खुश्क गर्म और जलता हो। बच्चों मे खुजली की सी फुन्सियाँ हों। पित्ती उछली हो, फुंसी निकलनेवाले ज्वरों मे फुन्सी दब जाने के कारण चमड़ा खुश्क हो, "एक्ज़िमा" की फुंसियाँ अचानक दब गई हों, ऐसी फुंसियाँ जो महीन बार बार होती हों और लाल हों। खाल सूजी मालूम हो और उनसे बहुत सा खार की कैफियत का मवाद गिरता हो, फुंसियाँ दब जाने के पीछे चमड़े पर से भुसी उड़े और तेज खुजली चले, गर्म पानी के व्यवहार से आराम आवे। लता विशेष का विष जिसमे छोटी छोटी लाल फुंसियाँ निकलती है। पतला खुरंड आता है और कुछ पसेव आता है और खुजली चलती है, जब नाखूनों मे खराबी आ गई हो, बढ़ती न हों, तो (सिलीसिया के साथ अदल बदल कर दें)।

मेग्नेशिया फ़ासफ़ोरिका (Megnesia Phosphorica)

इसका नाम "फासफ़ेट् आफ़ मेग्नेशिया" भी है। यह पदार्थ ज्ञानतन्तु और मास के सफेद रेशो मे पाया जाता है। रेशे कई रंग के होते है। परन्तु "मेग्नेशिया फासफोरिका" का असर सफेद रेशो ही पर होता है। जब यह पदार्थ कम हो जाता है, तो इन सफेद रेशो की सिकुडन पैदा होती है, इससे शरीर ऐंठने लगता है। जिसका अर्थ यह है कि शरीर मे "मेग्नेशिया फ़ासफ़ोरीका" प्रवेश किया जाय, हम इस दशा का कुछ ही नाम रखे इस चिकित्सा मे नामो से कुछ बनता नही। जबकि पेट की मास पेशियो मे इस पदार्थ की कमी हो, तो सफ़ेद रेशो के सिकुडने से आमाशय भिच जाता है; इस दशा मे पेट के भीतर हवा भरकर पेट की भिचावट दूर करती है। परंतु "मेग्नेशिया फासफेट्" देने से सब विकार एकदम दूर हो जाते हैं। न्यूनता पूरी किये विना कष्ट का दूर होना असंभव है। कभी कभी ऐसा होता है कि खन मे से "केलसियम् फ़ास्फ़ेट्" अलग होकर कमी को दूर करता है। यह पदार्थ लगभग "मेग्नेशियम् फास्फे " के तुल्य है। जब यह औषधि गुण न करे तो दूसरी "केलसियम् फ़ासफेट्" दी जानी चाहिये। यह बड़ी ही अद्भुत औषधि है। और ऐठन को दूर करती है, नसो के बिगड जाने से जिनके हाथ पैर काम नही करते, कापा करते है, उनको लाभ होता है, २ से ४ हफ्ते तक आराम हो जाता है। जब पेट के फैल जाने से हृदय मे विकार आ जाता है, तब यह औषधि रामबाण के समान होती है।

विशेष लक्षण:—"फासफेट् आफ़ मेग्नेशिया" जिन दर्दों में उपयोगी पडता है वे बहुधा असहनीय, तीव्र, काटनेवाले, छेदनेवाले टुकडे टुकडे करनेवाले, और छुरी सी चलानेवाले जल्द आते और जल्द चले जाते है। बारी से आते हैं, पर जलन नही होती, इनमे शरीर कसा हुआ सा जान पडता है। वे कही के कही चले जाते हैं। बहुत करके दाहिनी तरफ होते है और अग मे ऐठन होती है, इसका असर श्वेत ज्ञानतन्तुओ और मास पेशियो पर होता है। इस पदार्थ की कमो के कारण वे सिकुडते है और ऐठन कॅपकॅपी होके पैदा करते है। इसी कारण से रोगी एंठ जाता है, मूर्छित हो जाता है, पेट में दर्द होता है, दात मे दर्द होता है, फालिज होता है। सीधा चल नही सकता, हाथ कापते है, दांतो मे टीस होती है। दाती भिच जाती है, हिचकी आती है तनाव होता है। रोगी नाचता हुआ सा चलता है। दर्द के साथ मासिक धर्म होता है। शुस्लर साहब का विश्वास है कि "फ़ासफ़ेट् आफ मेग्नेशिया" खून के दानो मे है। शिर के ज्ञानतन्तुओ मे, मास पेशियो मे और दातो मे मौजूद है. और जब वह कम हो जाता है, तो ऊपर लिखे बीमारी व दर्दो का कारण होता है।

ये विकार चलने से, ठंड से, हवा लगने से, हवा के ठंडे झोंकों से और ठंडे पानी से स्नान करने से, दर्द के स्थान को खोल देने से तथा जोर से दबाने से बढ़ता है। ठंडे पानी में खड़े रहने और तरीदार घर में निवास करने से पैदा होते हैं। जिन कारणों से इनको आराम होता है, वे ये हैं, गर्मी, गर्म पेय पीने से, सेंकने से, पेट से घुटने लगाकर (पेट के दर्द में) सोने से और धीरे धीरे दबाने से।

योग्य लक्षण और सूचना

मानसिक लक्षण:—ऊट-पटांग विचारना। जो मनुष्य थके हों, सुस्त हों, दुबले, पतले हों और नाजुक मिजाज के हों, या किसी बीमारी से कमजोर हो गये हों। कभी कभी बहुत पसीना होता है उनके लिये फायदेमंद है। ऐसे लोगों में यह औषधि ठीक पड़ती है। दिमागी बीमारियों में "काली फास्फोरीकम्" के साथ अदल बदल कर देना चाहिये। "काली फासफोरीकम्" खाकी रंग के ज्ञानतन्तुओं पर उपयोगी सिद्ध हुआ है और "मेग्नेशिया फास्फोरीकम्" सफेद रेशों पर असर करता है।

शिर:—गुद्दी के पीछे शिर में दर्द हो, गर्दन की जड़ में हो और शिर तक फैले, शिर में टीस हो और आँखों के सामने चिनगारियाँ सी दिखाई दें। स्कूल की लड़कियों के शिर में दर्द हो, जिसका कारण बहुत पढ़ना और सोचना हो अथवा मानसिक चिन्ता हो। यह दर्द सवेरे १० से ११ बजे तक और शाम को ४ से ५ बजे तक विशेष होता है, और गर्मी तथा हलके दबाव से आराम आता है। दर्द दौड़ता और काटता फिरता हुआ सा जान पड़ता है, कभी कभी बन्द भी हो जाता है, परन्तु दबाव और ठंडी हवा से बढ़ता है। और सेंक से आराम आता है। शिर का वह दर्द जो हर शाम को १० बजे होता हो, शिर में ऐसा दर्द जिसमें रीढ़ की हड्डी पर ठंड सी जान पड़ती हो, शिर अपने आप फटता व हिलता हो (काली फास्फोरीकम्) किसी कारण से मृगी हो, बुरी आदतों से हो। और वहमी स्वभाव हो। शिर के दर्द के बाद अक्ल सुस्त हो जाती हो। खोपड़ी खुरदरी मालूम होती हो और शिर पर से बहुत भुसी सी उड़ती हो।

आँखें:—एक की दो चीजें दिखाई पड़ती हों, आँखों के सामने चिनगारी और रंग सा जान पड़ता हो, पलकें गिरे पड़ती हों, (काली फासफोरीकम्) दृष्टि में विकार होने के कारण शिर में दर्द या चक्कर हो, और आँसू चलते हों। कुछ का कुछ दिखाई देता हो, आँखों में टीस मारती हो। दाहिनी आँख के ऊपर ११ बजे सवेरे बड़ी टीस हो। पलक फड़के। (केल्केरिया फासफोरीकम्।) नजर टेढी हो।

"मेग्नेशियम् फासफोरीकम्" आंखो की बहुत सी बीमारियो मे खाना भी चाहिये, लगाना भी चाहिये, गर्म गर्म लगाना विशेष लाभदायक होता है। आँखो में बहुत दर्द हो और आँसू बहे तो "नेट्रम् मुरीयाटीकम्" चाहिये; ज्ञानतन्तु की दुर्बलता से धुंधला दिखाई देता हो तो (काली फास्फोरीकम्)।

कान:—बारी का दर्द, ऐंठन और टीसें हो, जो गर्म से घटे और ठंडी हवा वा ठंडे पानी से मुँह धोने से बढे, कम सुनाई दे, सुनने की ताकतवाली नसो व रेशो की दुर्बलता से बहरा हो गया हो। (कान के भीतरी रोगो मे यह औषधि परम उपयोगी है।)

नाक:—कभी खुल जाय, कभी बन्द हो जाय, बहुत बहे, दर्द करे और बाये नकुरा मे कुछ जान पडे, सूघने से कुछ न जान पड़े अथवा कुछ की कुछ खराबी मालूम हो, जुकाम हो, कभी सूख जाय कभी खुल जाय।

चेहरा:—चेहरे मे बारी मे टीसें चलें, ऐंठन हो, बिजली सी लगे, दर्द उछले, चेहरा और भौहें सूज जॉय, माथे मे दर्द हो, जो छूने से बढे, ऊपर के जबडे मे टीस चले। मुँह खोलने मे दर्द हो, दाती भिच जाय, दाहिनी ऑख के ऊपर छेदने का सा दर्द, दाहिनी ओर सब चेहरे मे फैलनेवाला हो, ये सब लक्षण ठंड या ठंडी हवा छूने से बढे, सेंक से घटें, गर्मी या गरम कमरे मे रहने से आराम आवे, जिस ओर दर्द हो, उस ओर का चेहरा छूने से दुखे।

मुँह:—जुबान पर या तो हलकी पीली मैल हो या साफ हो परतु दस्त लगने में जुबान सफ़ेद हो। मुँह का ज़ायका खराब हो। रोटी खट्टी जान पडे, विशेषकर रात मे जगने के समय मुँह मे दर्द हो, और खाना मुश्किल हो जाय। मुँह मे पानी भर जाय और आलुओं का सा पानी जान पडे, जुबान ऐंठ जाने से हकलावे, दांत भींच कर बोले, धीरे धीरे बोले, दाती भिच जाय, मुँह और होठ खिच जाय, मुँह के कोने ऐंठ जाँय।

दांत:—दातो मे सोते समय, रात को दर्द हो, दर्द शीघ्र कहीं का कहीं हो जाय, खाना खाने और पीने के पीछे अधिक हो; विशेषकर ठंडे पानी और ठंडे खाने से। ज़रा छूने से दातो मे दर्द हो। दात निकलने के समय मे बच्चो को होरे आवे, ऐंठ जाय (केलकेरिया फास्फोरीकम् के साथ बदल कर दे।) बिना ज्वर हुए ऐंठन हो। दात की जड या भरे हुए दात मे टीस हो। ठंडी हवा से दांत बहुत दुखे। दर्द तेज और ऐंठन करनेवाला हो और गर्मी लगने से अच्छा हो जाय। यदि ठंड से आराम पडता है, तो "फेरम् फास्फोरीकम्" दे। यदि "मेग्नेशिया फासफोरीका" से लाभ न हो, विशेषत खोखले या भरे हुए दात मे तो "केलकेरिया फ़ासफोरीका" दे।

हलक:—जब ऐठन के साथ खांसी हो और हवा की नाली बन्द जाती हो, यह क्रिया कभी कभी हो तथा मवाद न निकलता हो और गला खिंचा जाता हो; पानी पीने से दम घुटता हो और बात करने या गाने में आवाज सीटीदार हो जाती हो (काली फास्फोरीकम)। कूकर खांसी जो रात को ज्यादा उठती हो और लेटने से क्लेश हो। गला सुर्ख हो छींकने से दुखता हो, नाक बहती हो, और कफ पिछले नकुओ से गले में गिरता हो।

दिल:—दिल का धडकना और ऐठना।

आमाशय:—पेट में दर्द या ऐठन होना। जुबान साफ होवे, दबाने और सेक से आराम आना। पेट में ऐठ होना, मानो किसीने रस्से से जकड दिया है। बदहजमी से पेट फूले, जी मितलावे और कै हो। हिचकियाँ आवे और कै हो। दर्द के साथ बदहजमी हो। खाना खाने के करीब तीन घंटे के बाद डकार आवे, जी मितलावे, जलन हो। गरम पानी से दर्द हट जाय, सेंकने से फायदा हो, खट्टी चीज़ या ठंडा पानी पीने से कष्ट बढ़े। इसी लिये दवाई हमेशा गरम पानी मे देनी चाहिये।

उदरशूल:—शाम को ३, ४ बजे दर्द उठे। पेट फूल कर ऐसा दर्द हो कि रोगी दुहेरा पड जाय और गर्मी आने से आराम पावे, डकार और मलने से आराम हो; आँतो मे कुतरने का सा दर्द हो, पेट फूला जाय और वायु सरे। बच्चों या हाल के जनमे बच्चे का पेट फूल जाय। दर्द हो, पेट फूला हुआ जान पडे, कपडे खोलने पडे, टहलने की आवश्यकता हो, और बार बार वायु सरे।

आमाशय मे "केन्सर" (Cancer) होना:—"मेग्नेशिया फासफोरीका" से "केन्सर" का तेज दर्द हलका पड जाता है।

दस्त:—सवेरे खाना खाने के बाद ही दस्त आना, जोर से दस्त निकलना, शुरू में दस्त गाढा हो, रग भूरा हो, कुछ समय पीछे सफेद हो जाय। पतला हो और खून मिला हो।

प्रवाहिका:—पेट मे ऐठन हो, पर तेज दर्द हो, गर्मी से, दबाने मे और मलने से आराम आवे।

गुदा:—बवासीर, जिसमे बहुत तेज काटनेवाला और उछलनेवाला दर्द हो। जिससे रोगी बेहोश हो जाय, खुजली चले, दर्द हो। दस्त पहिले सख्त हो, फिर मुलायम। बच्चो के कब्ज हो। हर मरतबा दस्त के समय ऐठ हो, जिसके मारे वे रो पडे। बहुत सरे "पेट फूले, दर्द हो, दस्त लगने, प्रवाहिका होने, आंतो मे टीस और सोजिश होने की वायु दशा मे बहुत सा गर्म पानी पिचकारी द्वारा पेट में पहुचाना चाहिये, इससे आंतो पर की सडी झिल्ली निकल जाती है, और पेट की

नसें ढीली पड़ जाती हैं। दर्द दूर हो जाता है, और रोगी अच्छा होने लगता है। गरम या ठंडा सेंक भी करना चाहिये।" (डाक्टर चेपमेन् का मत।)

ज्ञानतन्तुः—जगते समय सब शरीर का फड़कना, हाथ पैरों का कांपना; बुरी आदतों के नतीजे से मूर्छित हो जाना, ऐंठना, बिसूरना, दमा होना।

मूत्राशयः—रात्रि को जलन खुजली होने से पेशाब आना, रुक जाना, बार बार इच्छा होना और दर्द होना (फेरम् फासफ़ोरीकम् के साथ बदल कर दें।) फीके रंग का पेशाब, जिसके निकलने में बहुत कष्ट होना। पेशाब में "फ़ासफेट्" की कमी या ज्यादती होना। पेशाब के साथ पथरी की रेत निकलने में दर्द हो (नेट्रम् सल्फ़ूरीकम्) मूत्राशय, मूत्राशय की गर्दन और मूत्रमार्ग में, पेशाब करने से पहिले ऐंठन हो। सलाई चलाने के बाद दर्द हो। (फेरम् फासफोरीकम्, काली फास-फोरीकम्।) शीघ्र मासिक धर्म हो जाया करता हो। और लसदार काला खून जाता हो। ऋतुकाल में शूल होता हो और दाहिनी तरफ उछलनेवाला बिजली की तरह कौंधनेवाला दर्द हो, जो मासिक धर्म के पीछे कम हो जाय, ऋतुकाल में बड़ा कष्ट हो। दुर्बलता बढ़ जाय, गर्मी से अथवा टांग सिकोड़ कर सोने से आराम मिले। अंडकोश में दर्द जो विशेषकर दाहिनी ओर हो और औषधि के गरम सेंक से आराम आवे। मासिक-धर्म कठिनता में हो। मासिक-धर्म समय से बहुत पहिले हो जाय और काला छिछड़ेदार खून निकले। प्रसव काल की पीड़ा और टांगों में दर्द हो, प्रसव-काल के समय स्त्री ऐंठ जाय "प्लासेंटा" (जरायु) न निकले। बच्चा जनने के बाद अनियमित समय शिर में दर्द हो।

हाथ पैर और पीठः—शिर और गर्दन के पीछे और रीढ़ पर दर्द हो। पैरों में टीसें हो। टांग की हड्डी में, जांघ में रात को दर्द हो, दिन में नहीं हो। हाथ में कुहनी तक दर्द हो। बाजू तक टीसें हों, जोड़ और टांगें अकड़ जायँ, उंगलियाँ दुखें, और मुड़ जायँ, हाथ पैरों में बिजली के से धक्के मालूम हों। शराब से पागलपन हो। हाथ कांपते हों। दाहिने पैर और हाथ कांपते हों। कभी कहीं कभी कहीं दर्द हो। पसलियों के बीच के स्थान में टीसें चलें, फालिज हो जाय, पिंडली में ऐंठन हो, दाहिनी टांग की नस ऊपर से नीचे तक दर्द करे। शाम को पैर सुर्ख हो जायँ, और खुजली चले, पैरों को चुपचाप न रख सकें, गठिया की कठिन पीड़ा, और लिखनेवाले या बाजा बजानेवालों के हाथ कांपें। मृगी हो, चलने की शक्ति कम हो। पैर छूट न जायँ "मेग्नेशियम् फासफोरीकम्" जिस प्रकार के दर्दों में उपयोगी पड़ता है, वे ये हैं। तेज़, दौड़नेवाला, ठहर ठहर कर होनेवाला, और बिजली के से कौंधे मारनेवाला दर्द गर्मी और सेंक से आराम होता है।

ज्वरः—ठंड और कपकँपी देकर बुखार आता है। शीत अकसर शाम के ७ बजे लगता है, कभी कभी सवेरे ९ बजे और पीठ में ऊपर नीचे की तरफ दौड़ता है; रोगी कांपता है, दांती बजती है, हरारत और पसीना बहुत थोड़ा होता है, प्यास नहीं लगती; पिंडली और हाथ पैरों में दर्द होता है। पित्त ज्वर, पसीना बहुत निकलता है।

निद्राः—सुस्ती बहुत होती है, कुछ पढ़ना या याद करना चाहें तो नींद आने लगती है, सवेरे उठने में खुमारी सी रहती है; बुरे स्वप्न देख कर नींद उचट जाती है, ऐसा भ्रम होता है कि कोई घर में घुस आया है या चारपाई के पास आ गया है, नींद उचट जाती है, पीठ में और गर्दन के पीछे दर्द होने से, बेचैनी की नींद आती है। जमुहाई बहुत आती है, और ज़ियादा मुँह फाड़ने से किसी किसी का जबड़ा उतर जाता है।

नेट्रम् मुरीयाटीकम (Natrum Muriaticum)

अंगरेजी में इसका नाम "सोडियम् क्लोरायड" है। यह पदार्थ खाने का नमक है। मनुष्य के शरीर में ७० फी सदी पानी है, और इसकी बनावट में "फास्फेट् आफ लाइम्" के बाद दूसरा दर्जा अधिकता में "सोडियम् क्लोरायड" का है। शरीर के सब रग-रेशों में नमक है। दांत के अस्तर में भी शामिल है। इस नमक के प्रभाव से पानी शरीर के लिये उपयोगी पड़ता है। यदि यह नमक न हो, तो पानी किसी उपयोग में न आ सके। जब शरीर के पानी में से नमक कम हो जाता है, तो अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। कोई कोई झिल्ली तो बिलकुल खुश्क हो जाती है और किसी में से बहुत सा पतला रस निकलने लगता है, कारण इसका यह है कि पानी में नमक उचित मात्रा में नहीं है। "नेट्रम् मुरीयाटीकम" से पानी बराबर हो जाता है।

लू लगने के कारण शरीर के पानी में नमक की कमी हो जाती है और विशेषत. गर्दन में से बहुत सा पानी उड़ जाता है। दिमाग पर दबाव पहुँचता है। जिसका बहुत बुरा नतीजा होता है। इस दशा में नमक ३X या ६X मात्रा में देने से लू लगने के बुरे लक्षण तत्काल हट जाते हैं।

"डिलीरियम् ट्रीमेन्स्":—अर्थात शराबियों के बुद्धि विकार में जल का नमक ही कम हो जाता है, परंतु इस औषधि के प्रयोग से घंटे भर में ही सब कुलक्षण हट जाते हैं। औषधि किस प्रकार फायदा करती है यह जानना बड़ा जरूरी है, और यदि औषधि से ठीक उपकार हुआ है तो कारण बताना कुछ कठिन नहीं है। इस पुस्तक में जिन बारह औषधियों का वर्णन है, उन सब का लाभदायक होना समझ लेना चाहिये। इस औषधि की उपमा किसी राज या बढ़ई से दी जा सकती है, जिस तरह से राज ईंट और गारा पा कर दीवार बना देता है या लकड़ी और औज़ारों के द्वारा नया पदार्थ तैयार कर देता है, इसी तरह से नमक द्वारा शरीर की शक्तियाँ, शरीर की बनावट को आरोग्य दशा में रखने के लिये समर्थ होती है।

विशेष लक्षण:—रोग के लक्षण प्रातःकाल विशेष जान पड़ते है, शीत काल में और समुद्र किनारे भी ऐसा ही होता है। शाम को आराम रहता है। लक्षण रोग के समय समय पर हुआ करते है। जुबान चिकनी होती है, ऊपर झाग लगे होते है, और लार गिरती है।

योग्य लक्षण और सूचना

मानसिक लक्षण:—बेहोशी, भूला सा रहना, ऊटपटांग बकना, जगह ढूंढने का ज्ञान नहीं होना, गलतियाँ बहुत होती हैं। जल्दबाजी, तन्द्रा, अनिद्रा और वहम आदि उत्पन्न होते हैं। रोगी चुप रहता है। निराशता होती है, विचार में डूबा रहता है। किसी से बात नहीं करता, अकेला रहना चाहता है, अकेले में रोने को मन करता है। परन्तु यह नहीं जानता कि क्यों तबीअत बहुत उदास और गिरी हुई रहती है। दिन भर रो सकता है। युवा अवस्था में चिन्तित रहता है, निराशता भरी बातें सोचता है, उसे सब कामों के नतीजे बुरे ही जान पड़ते हैं। उसे डर लगा रहता है कि कुछ बुरा होनहार है। कब्ज रहता है, बेहूदा काम करता है, जल्दी करता है, निर्बलता के कारण चीजें हाथ से गिर पड़ती हैं। याददाश्त मारी जाती है, लडाकू हो जाता है। मामूली बात पर गुस्सा आ जाता है, समझाने से उसकी रिस और बढती है। क्योंकि उसे समझाना बुरा मालूम होता है। कुछ का कुछ बकता है, जुबान पर झाग होते हैं, "टाइफस" और "टाइफायड" बुखार में रोगी चुपचाप बकता है, बिस्तर चुनता है। और कुछ का कुछ सोचता और बर्राता है। डर जाने, गुस्सा होने, सताये जाने और परम दुखी होने की दशा होना, रोगी को ऐसा जान पडता है, कि सब कोई उसकी दशा पर आँसू बहाता है, याददाश्त मारी जाती है। और बुद्धि भी कम हो जाती है। और रोगी को स्मरण-शक्ति और विचार-शक्ति के मारे जाने का भय रहता है। मानसिक परिश्रम करने को दिल नहीं चाहता। पढने से तबीअत ज्यादा खराब हो जाती है। बीती हुई बुरी बातों को विचार करता है, बच्चा चिडचिडा हो जाता है, बात करने में रोता है, और कुछ बहाना मिलने से रो जाता है।

शिर:—शिर चकराना, आगे गिर जाने की प्रवृत्ति होना, आँखों के सामने चिनगारी दिखाई देना, शिर में मदापन रहना। ऐसा मालूम होना कि शिर में आंधी चल रही है। बवासीर रुक जाने से शिर में चक्कर आना, गर्भावस्था तथा बहुत शराब पीने से या आँखों को जमाने और किताब पढने की अधिकता से शिर में चक्कर आना। कभी कभी जी मितलाना और शिर में चक्कर आना साथ ही डकारें आना। कै होना और हाथ पांव ठंडे हो जाना। सुबह उठते समय, खिडकी के पास खडे होते वक्त चलने में शिर चकराना। बेहोशी सी जान पडना, चलने से तकलीफ ज्यादा होती है, लेटने से आराम आता है। शिर फटा जाता हो। माथे में आधा दर्द हो और सब शिर में फैले। एक कनपटी से लेकर दूसरी कनपटी तक फैले, अचानक आवे और अचानक जाय, ज्वर में माथा फटा जाता हो, उछलता

हो, फड़कता हो, और ऐसा ज्ञान पड़ता हो मानों हजारा हथौड़ों से दिमाग़ कूटा जा रहा है। जी मितलाना हो, कै होना हो और नींद से आसूदगी न हो। प्रात काल, गर्मी में चलने से, झुकने से, दुपहर का खाना खाने से रोग मे अधिकता होती हो और शिर ऊंचा करके लेटे रहने से तथा पसीने आने से आराम आता हो, पुराना शिर का दर्द जिसमें समय समय पर दर्द हुआ करता हो। शिर मे लपक चलती हो, ऐसा ज्ञान पड़ता हो, कोई शिर को हथौड़ो से कूट रहा हो। चेहरा फीका हो, ये रोग के लक्षण मासिक धर्म के पीछे, चाहे मासिक धर्म अधिक हो या कम हो, देखे जाते हैं। ऐसा ज्ञान पड़ता है, मानो रुधिर निकल जाने के कारण होते है। शिर के दर्द बहुत पढ़ने और पास में सिलाई करने के कारण जो आँखों पर दबाव पड़ने से होता हो, विशेषकर माथे में और सबेरे जगने पर। ज़ुबान सूखी रहती है, और तालू मे चिपटी रहती हो परंतु जब बाहर निकाली जाय तो चाहे तर मालूम होती हो। प्यास बहुत लगती हो, नाड़ी ठहर ठहर कर चलती है। रोगी को न शोर सुहाता हो, न प्रकाश; शिर का दर्द जो अंधापन के साथ शुरू होता है। स्कूल की लड़कियों को शिर का दर्द ऋतुकाल के समय हो और चढ़िया में जलन होती है, बदहज़मी के कारण शिर का दर्द और शिर का ऐसा दर्द जिसमें आँसू बहे, खाना उलट जाय (कै हो जाय), झागदार पतला बलगम निकले, मसालेदार खाना खाने से शिर में दर्द हो। दर्द का सबेरे प्रारम्भ हो, शिर का दर्द सुबह से शाम तक रहे और दुपहर को विशेष हो, दाहिनी आँख सुर्ख रहे, रोशनी से दर्द ज़ियादा हो। शिर में एक ओर दर्द बंद होकर दूसरी ओर जोर से होने लगे। १० बजे सबेरे दाहिनी ओर दर्द हो। माथे में खींचने का सा दबाव जान पड़े। शिर में ऐसा दर्द हो मानो कोई शिर को रस्से से कसता जाता है, दाहिनी आँख मे और ऊपर दर्द हो, सूरज निकलने से शुरू हो और छिपने से बन्द हो जाय। प्रकाश न सह सके; माथे में और आँखो के डेलों पर दबाव सा हो। पलक बड़ी कठिनता से और कष्ट से खुले, खोपड़ी के पिछले हिस्से मे दबाव सा जान पड़े। आँखे आपस मे खिंची जायँ, खाँसने में ऐसा जान पड़े मानो, माथा फट जायगा, बाई का दर्द जो नाक की जड़ से शुरू होकर माथे तक जाय। शिर की पुरानी चोट दुखती हो। शिर में बाई तरफ कील ठोकने का सा दर्द हो। शिर मे तीक्ष्ण झटका या धक्का सा लगता हो। गुद्दी मे गर्मी हो और धड़कती हो। आधासीसी जिसके साथ कै और खट्टी डकार हो, पेट फूलता हो, बेहोशी हो और हाथ पैर मुरझते हो। गुद्दी मे छुरी सी चलती हो। जरा मे जुकाम हो जाता और खोपड़ी भिंची जाती हो। हाथ लगाने से खोपड़ी दुखती हो विशेष करके खुली हुई हवा मे। खोपड़ी मे पतले और चिपचिपे मवाद की फुंसियाँ हो। बगल मे भी फुंसी हो और पतला मवाद

बहने रहते हो। उनीदापन हो, नाक भीतर से सुन्न हो गई हो और सूंघने मे कुछ न जान पडता हो। एक तरफ की नाक सुन्न हो गई हो, नाक के भीतर की झिल्ली ऊपरी हिस्से मे ऐसी सूज गई हो कि नाक से सास लेना मुश्किल हो गया हो। नाक से बात करता हो, नाक में कीडा सा रेगता मालूम होता हो। सूँघ न सकता हो या कुछ का कुछ सूँघता हो, छींके आती हो या आते आते रह जाती हों। शाम को कपडे उतारते समय बहुत छींके आती हो।

दांत और मसूड़े:—दात हवा लगने मे दुखते हो। छूने, चबाने या ठडी और गरम चीज़े खाने से दुखते हो। ठंडी हवा मे, खाने मे, छूने मे और दबाव से दर्द बढता हो। दातो मे जलन और छेद करने का सा दर्द हो। दात मे कीडे लगे, चीरन, छेदने का सा और टपकता हुआ दर्द हो। दातो का दर्द रात्रि को भोजन करने के पीछे कान और गले तक जाता हो। दात का दर्द आधी रात से पहिले और पीछे जोर से होता हो, दातो मे और चेहरे की स्नायु मे टीसें हो। एक दिन बीच मे दे कर दर्द होता हो (मासिक धर्म के आरम्भ में दात का दर्द विशेष होता हो)। दात के दर्द के साथ आँसू और थूक मे अधिकता होती जाय. बोलने मे दिक्कत हो, मानों बोलने के अवयव अधिक कमज़ोर जान पडते हो। दात लम्बे, हिलनेवाले, और मुरदा से जान पडते हो। जब रोगी भोजन करता हो, तो चबाने मे गाल की हड्डियाँ दुखती हो। गाल फूले हुए हो और उनमें सोजिश हो। दातो के नासूर, मसूडे बिगडने की बीमारी, ऐसे रोग जिसमे मसूडे नाज़ुक हो, झट खून निकल आवे और खून नमकीन हो। मसूडो के किनारो पर व्रण हो, टपकने और छेदनेवाला दर्द मसूडे के फोडो मे हो। नीचे के मसूडे में सामने की ओर नीलापन लिये सुर्ख़ सूजन हो, स्पन्जी बाई तरफ़ से शुरू होकर दाहिनी तरफ को बढती हो।

स्वाद और जीभ:—स्वाद मारा गया हो। सुबह को शिर दर्द के साथ मुँह कडुवा रहता हो। मुँह मे सडा हुआ या खट्टा स्वाद भूखे रहने के समान हो। ज़ुबान चौडी, फीकी सूजी हुई, सूखी, सफेद हो अथवा साफ ज़ुबान "गैस्ट्रैल्जिया" (आमाशय की पीडा) मे हो; अथवा ज़ुबान पर लाल लाल धब्बे हो। ज़ुबान मे छाले हो, नोक पर जलन हो, ज़ुबान भारी होने के कारण बोलना कठिन हो। बच्चे बोलना न सीखते हो। खाने-पीने मे स्वाद न हो। ज़ुबान पर खुश्की और बालू सा जान पडे। सामने ज़ुबान तर और साफ हो और पीछे की ओर उसपर कुछ मैल लगी हो। आधी ज़ुबान अकड़ गई हो और सुन्न पड गई हो, ज़ुबान नीचे से सूज गई हो और जलने का सा दर्द करती हो, ज़ुबान होठ और नाक खुजाती हो और सुन्न सी हो।

केल्केरिया फास्फोरिका (Calcarea Phosphorica)

केल्सियम् फास्फेट् या फास्फेट् आफ लाइम् यह पदार्थ दांत की बनावट में शामिल है। हड्डियों, जोडनेवाले रेशों और रुधिर कण में भी पाया जाता है। हड्डी में इसका भाग ५७ फी सैकडा है। इसके बिना हड्डी नहीं बन सकती। इसकी कमी से हड्डी नरम हो जाती है। सूखी मैली बच्चों को हो जाती है, मूत्राशय की बीमारी में, "ब्राईट्" साहब की बीमारी, नाक में जुकाम, खांसी, चर्म रोग और कंठमाला रोग भी उत्पन्न हो जाता है।

होरे और तान की बीमारी में जब मेग्नेशिया फास्फोरिका से लाभ न हो तब इस औषधी को देना चाहिये। यह बलकारक और सुधारक भी है। तीक्ष्ण व दु रोगों के पीछे इसका देना भला है। अन्य प्रकार से दुर्बलता हुई हो तो भी दे सकते हैं।

खासियत:—जबकि रोग का ध्यान करने से उसमें अधिकता, अधिक रात और बरसात तथा ठंडे दिनों में रोग बढे, या चलने फिरने, मौसम बदलने, भीगने से, बढे। गर्मी में तथा गर्म कमरे में या लोट जाने से आराम जान पडे। औषधी को अधिक खिलाने से उपयोग नहीं है।

योग्य लक्षण और सूचना

मानसिक लक्षण:—शोक अथवा निराश प्रेम से पैदा हुए, रोग, जो बच्चे बहुत रोते और मचलते हों, झगडा करने के पीछे की सुस्ती, अकेले की इच्छा, बेसमझी, अकल के काम को न कर सकना, ठीक ठीक प... सकना, जरूरी काम को करना भी मन को न रुचे, मन में एकाग्रता न हो मन भ्रमता हो, भूल जाना, याद न रहना, केवल थोडी देर याद रहना और चिढना, अनिच्छा से ठंडी सांसे भरना, किसी से लडाई-झगडा हो... से लंगडा सा चलना, आग को सपने में देखना, शराबियों क... (नेट्रम् मूर।)

सिर:—दर्द होना, खोपडी की पिछली हड्डी के उभारों के च... ठंडे जल के स्नान से सिर दर्द होना, सोच विचार के काम से सिर ... पडना मानो दिमाग खोपडी को दाबा रहा है, दिमाग में रुधिर... सिर की चोटी से पैर के अंगूठे तक जलन का दौडना, सिर दर्द वे... घबडाहट। मा के पेट से बडी खोपडी पैदा होना, चोटी के भाग... पीछे तक दर्द होना, गर्दन की नसों का तनना, आंखों के ऊपर का

ना, माथे मे दर्द जिससे सिर और बाजू फटे जाते हो, सिर भरा हुआ सा
बहते रहते हैं था हुआ सा, सिर पर टोपी पहिनने से दर्द बढता हो, जोडो मे दर्द जो खुली
जान पडता अधिक होता हो, झुकने से रात्रि के समय ऋतु बदलने पर अधिक हो,
हिस्से मे ऐसे नाक तक दर्द हो तथा खोपड़ी की हड्डियो के जोडो पर विशेष हो; सिर में
बात करत ा का सा दर्द सब तरफ हो, साथ ही जी मितलाता हो, दोनों तरफ सिर में
कुछ का लप करने का सा दर्द हो और जल्दी चलने तथा काम करने से बढता हो;
कपडे उ ान लडकियो के सिर मे दर्द होना, दस्त लगना, बेचैनी और घबडाहट होना,
ा सिर दर्द जिसमे तमाकू पीने की इच्छा उठना और तमाकू मे ही आराम आना;
और ग की हड्डी का खुल जाना और फिर न जुडना विशेषकर बुढापे मे, खोपडी की हड्डी
दर्द ब ा बीमारियाँ खोपडी की हड्डियो मे दर्द विशेषकर जोडो मे कर्णपटी की हड्डियो का
चीरन, , सिर मे ठंड का अनुभव होना, और छूने से ठडा जान पडना,—ऐसा जान
करने के ा मानो कोई सिर मे ऊपर को रेंग रहा है. ऐसा जान पडता है कि खोपडी
और पीछे ी पर बर्फ रखी है। गुद्दी पर दबाव सा जान पड़ना। सिर पर बालो की कमी
बीच मे ों, बाल उड़ गये हो, बाल की जडो मे दर्द, सिर सीधा नही रख सके और इधर
हो उधर हिलता रहे। सिर पर नयी व्रण सिर मे खुजली, सिर पर काले खुरंड जमे
दिक ो, सिर पर फुन्सियाँ, माथा जकडा हुआ सा जान पडे, अथवा थकावट का अनुभव
हिल 'सिर मे व्रण हो, शून्यता जान पडे, कुछ रेंगता हुआ सा बोध हो।

मे गाल आँखें:—आँख के ढेलों मे ऐसा दर्द हो, मानो चोट लगी है, मोतियाबिन्द
के न ौर पार्श्वांधता होना, टेढी नजर, दृष्टिभ्रम, आँख के सामने बाईं ओर से दाहिनी ओर
निक ा चिडियां सी उडती जान पडना, अक्षर गोल पैसे से जान पडे अथवा धब्बे से जान
और ः, पढ न सकना, रोशनी, विशेषकर मोमबत्ती और गैस की आँखो के लिये हानि-
नीला रक जान पडे। आँखो को चकाचौंधी हो, अग्निशिखा सी फिरती दिखाई दे आँखे
बढती द रखने से तथा दबाने से आराम मिले। आँख के पर्दे मे निर्मलता आकर कम
ाई दे अथवा अंधी हो जाय, आँखे दुखने लग जायँ, आँख की पुतलियाँ
कडुवा "कोर्निया" पर्दा धुधला पड जाय उस पर व्रण और धब्बे हो जायँ। आँखे
जुबान सी गई हों। दाहिनी आँख पर धीमा धीमा दर्द होता हो। आँख के ढेले कुछ
(आमा: आये हो। भौं और पलकों पर पसीना रहता हो, पलक गरम जान पडती हो,
छाले हे ती हो। आँखो मे कुछ गिर पडा हुआ जान पडे आँखो के सामने पर्दा सा पडा
बचे ओर ा हो। जमुहाई लेने से आँखों मे पानी भर आवे। दाने निकले, बाईं आँख
बालू सा कोर्निया" मे सोजिश हो, चकाचौंधी जान पडे।

कुछ मैल कान —कान की सब हड्डियो मे दर्द हो, दर्द का रुख ऊपर की तरफ हो।
से सूज ग भीतर और उसके चतुर्दिक दर्द हो, दबाव हो, कान फटा जाता हो, नीचे
और सुन

मुँह:—मुँह वास्तव मे सूखा न हो। परन्तु बहुत खुश्की जान पडे। मुँह के भीतर मसूडे, गाल और फुसियो के ऊपर व्रण हो। मोती से छाले सब मुँह में मौजूद हो। कभी कभी अच्छे हो जाते हों। खूनी छाले ऊपर के होंठ पर अदर की तरफ हो। होंठ फट गये हो, उनमे जलन और दर्द होता हो। होठ सूजे हो। होठ मुँह और जीभ मे सूखापन हो। पारा खाने से मुँह आ गया हो और थूक बढ गया हो। नमकीन थूक बहुत सा गिरता हो। मुँह मे ज़ख्म से जान पडे। ठोडी पर फुंसियाँ निकल आवे, जुबान और मुँह के भीतर छाले और घाव हो, जो खाना लगने से जलन व दर्द करे। मुँह के जोडो के पास गीले जख्म होते हो।

हलक़:—गले मे घेवा हो और पानी सा निकले। कनफेर हो और थूक बहे। मुँह से बदबू आवे। गले की गिल्टियाँ सुर्ख़ हो जायँ और कौए का बढ जाना और गला बैठ जाना।

शब्द और श्वासेंद्रिय:—सवेरे के समय गले मे पानी सा कफ जमा होवे। स्वास की नाली की नई या पुरानी सोजिश हो। श्वास की नालियों मे अधिक खुश्की होना। सूखी खांसी उठना, गले मे सुरसुराहट होना और पीला या खून मिला बलगम निकलना, सवेरे गला बैठ जाना और बलगम का बढ जाना। साम मुश्किल से आवे, ऐसा जान पड़े मानो गले में कुछ अटक गया है। हलक में खुश्की हो, लेटने से दोनो तरफ़ शब्दग्रथी दुखती हो, दाहिनी तरफ तकलीफ अधिक हो। बच्चे खासते घबडा जाते हो। दम का रोग हो और सीढियो पर चढते अथवा तेज़ी से चलने मे मुश्किल से सास आती हो। मुँह से बहुत सा झागदार पतला कफ निकलता हो। कभी कभी सास रुक जाती हो। कभी इतना दर्द हो कि सास रुक कर फालिज सा हो जाता हो, कसरत करने के बाद सास फूल जाती हो।

छाती और फेफड़े:—फेफडों की नई सूजन, ऐठन के साथ खांसी हो, चेहरा नीला पड जाय, छाती मे घाव सा अनुभव होवे। या ऐसा जान पडना मानो फेफडे कस दिये गये है। हाथों मे जलन होवे। छाती के ऊपर के मध्य भाग मे दर्द होवे। जो दाहिने कंधे तक जावे। खाना खाने के बाद, बातचीत करने से दर्द बढे। गहरी सास लेते समय और खासने से छाती और बगल दुखे। फेफडो मे सोजिश हो और उनमे खासते समय दर्द हो। आवाज होवे और चपकीला झागदार साफ बलग़म मुश्किल से निकले। बाई छाती मे कन्धे के पीछे काटने का सा दर्द हो, बाई पसलियाँ सीने सी दुखे, सामने की हड्डी के बराबर छाती मे दाहिनी ओर सख्त दर्द हो। फेफडे की झिल्ली की सोजिश हो, जिससे झिल्ली मे पानी भर गया हो।

खांसी:—ऐंठनेवाली खासी जिसमे चिपकनेवाला झागदार बलगम आता हो। ऐसी खासी जिसमे आँसू निकल पडे और पेशाब हो जाय। चलने और गहरी

सास लेने मे गले के भीतर सुरसुराहट होकर खासी हो, सूखी खासी जिसमे छाती मे बलगम की आवाज सुनाई दे, विशेषकर सवेरे। सफेद नमकीन बलगम या सुर्खीदार बलगम निकले। खासी जिसमे सास न जुटे, दिन रात रहे. कलेजा दुखे और खाने की कै हो जाय। खून मिला हुआ बलगम निकले या सफेद झागदार कफ निकले, और सवेरे गुठलीदार कफ निकले। प्रातःकाल दर्द रहे। ऐसा मालूम हो कि गले मे कोई डाट या लकडी अड गई है। ऐसा जान पडे कि गला बन्द हो जायगा और गला सूज गया हो और दुखता हो। कौआ सूज जाने और बढ जाने से खासी हो, विशेषकर लेटने मे। हलक की गिल्टियाँ सूज गई हो, उनपर व्रण हो और परदे मे कफ लगा रहता हो। खाना निगलना मुश्किल पड गया हो और केवल पतली चीज़े खा सकता हो, तमाखू पीनेवालो के गले मे पुरानी सूजन हो। खासते मे गला, सास की नाली, छाती, अण्ड और अण्ड की नसे दुखती हो। क्षयी रोग की पुरानी खासी जिसमे खून मिला हुआ झागदार कफ नमकीन स्वाद का निकलता हो। जब गले मे खाना गलत राह से जाता हो, या ऐसा मालूम होता हो कि गले मे अटक गया हो, और ऐसा जान पडता हो कि जख्मी जगह पर होकर जा रहा है। कूकर खासी जो गला या पेट सहराने से सवेरे या शाम को उठती हो। और पीला तथा खून के धब्बेवाला कफ निकलता हो। गहरी सास लेने से, सीधा अकड़ कर बैठने से, तेज़ी से चलने मे, निगलने मे हरकत करने से, मिहनत करने और चलने से, खट्टी चीजे खाने से. अथवा बिस्तर मे गरम होने से उठती या बढती हो।

हृदयः—चिन्ता रहे, दिल ज़ोर से धडके, जिससे सब शरीर कांप उठे। यह धडकन जरा सी हरकत या खडे होने या सीढियो पर चढने से होती है। सोने को जाने या जगने अथवा कोई अनोखी आवाज सुनने से हो जाती हो। नाड़ी तेज, शीघ्र और निर्बल या भरी हुई और सुस्त चलती हो। दिल कसा हुआ सा जान पडे और तेज नाड़ी जो हर तीसरी चाल पर ठहर जाया करे और ऐसा मालूम हो कि छाती का नीचे का हिस्सा दबा जा रहा है, और फेफडो को फैलने को जगह नही है। दिल व नाडी की धडकन कभी कभी ठहर जाती हो, और बाई करवट लेटने से इसमे विशेषता होती हो। खासकर कुनीन (क्विनिन्) की खराबियो से ऐसा ही होता है। कभी दिल धीरे धीरे हरकत करता है, कभी जल्दी जल्दी। दिल के द्वारो मे पुरानी बीमारी हो। मन से काम लेने मे दिल पर सर्दी सी जान पडती हो। दिल फैल गया हो और धौकनी की तरह आवाज देता हो। दिल का धडकना, कमजोरी और मूर्छा सा जान पडना विशेषकर लेटने मे। पुराना हलीमक। सवेरे शिर के दर्द के साथ दिल धडके, चिन्ता और उदासी रहे,

दिल के रोग के पीछे दिल का फैल जाना और पेट में पानी भर जाना। शाम को सोते समय दिल के नीचे भिंचाव सा जान पडना। जोर से पढने के बाद दिल के मुकाम मे दर्द होना।

भूख, प्यास, इच्छा और अनिच्छा:—भूख न लगना या बहुत भूख लगना। बहुत सा खाना, परतु सूखते जाना, अर्थात् मोटा न होना, प्यास बहुत ही लगना, तमाखू पीने की इच्छा न रहना। आटे की चीजे अच्छी न लगना, खासकर रोटी न सुहावे, रोटी, काफी और गोश्त अच्छा न लगे। चाहे इन चीजो को रोगी पहिले प्रेम से खाता रहा हो। शराब की इच्छा होना, कडुवी और खट्टी चीज, तेज, मसालेवाली खाने को मन करना, नमक और मछली खाने की इच्छा होती हो। खाने की सब चीजो मे नमक मिलाना। दुपहर या शाम का खाना खाते समय बहुत ही भूख लगे, और खाना खाने के पीछे थकन और नींद का अनुभव करे। भूख बहुत होना परंतु थोडा खाते ही से तृप्त हो जाना। **कमजोरी और पेट में दवाव का अनुभव मालूम होवे।** पीलिया हो और उसमे उनींदापन होवे। बदहजमी हो, जिसमें पतली कै और नमकीन सवाद मुँह मे जान पडे। लार टपके पर तेजाबी न हो। खाने-पीने के पीछे ही जी मितलावे। और डकारे आवें। पेट मे गहरा दर्द हो, विशेपकर दाहिनी ओर। स्त्रियो मे पेट से नोचने, काटने की सी ऐठन और जलन होवे। ठंड सी जान पडे, पेट से चूतड तक की चमडी खिची हुई होने से धोती आदि (कपडो) को ढीला करना पडता हो। जघाओ मे दर्द खासते समय हो और जो अडकोश मे पहुंचे और ऐसा जान पडे कि अडकोश की नसे फट जायंगी। ऐसा जान पड़ता हो कि पेट की ऑते ढीली पड गई है, और चलते मे खिचती है। मूत्राशय और कमर मे बोझ सा लटकता हुआ जान पडता हो, चलते मे विशेपता होती हो, रोगी झुक कर बैठता हो, डकार आना, जी मितलाना, मुँह मे खट्टा पानी आवे, दिल मे जलन होना, और खाना खाने के पीछे नींद मालूम होना, खाते मे मुँह पर पसीना आता हो। पेट खाली हो, तो आराम रहता हो, खाने के पीछे जियादती होती हो, पेट दर्द करता व फूलता हो। जिगर और आमाशय के ऊपर भारीपन व बेचैनी जान पड़ती हो, जिसमे जैसे जैसे हाज्मा होता जाय वैसे वैसे आराम होता जाता है। कै मे कडुआ, पित्त मिला, फटे हुए दूध सा खट्टा पानी निकलता है, जो पिसी हुई काफी के रंग सा दीखता है। कै का बलगम थूक के समान साफ और झागदार होता है। खाना खाने के कई घंटे पीछे आमाशय भिचा सा जान पडता हो और जलन व दर्द होता हो। पेट मे ऐटन होती है, और कपड़ा कस लेने मे आराम आता हो। कुछ रज की बात हो जाने के पीछे पेट में सख्त दर्द होता है। आमाशय के ऊपर लाल धब्बे मौजूद हो।

कब्जः—औषधि के लिये पथदर्शक लक्षण यहाँ लिखे जाते है। कब्ज जिसमे मल आँतो मे भरा हो, दस्त मामूली न होते हो, सख्त हो, दस्त जाने से तसल्ली न होती हो। ऋतुकाल के समय हो, दस्त बडी मिकदार मे होता हो। भेड की मेगनी के समान हो। गुदा की निचली आत काम न करती हो, गुदा सिकुड गई हो, या फट गई हो, खून निकलता हो, दर्द या जलन हो, गुदा मे रोग के कारण तबीअत बिगड गई हो। दर्द न हो पर उदासी बहुत हो, आतों मे तर न हो, झिल्ली पर कहीं खुश्की और कही तरी हो। दस्त निकलना कठिन हो। गुदा का किनारा फट कर खून बहता हो, घाव सा रह जाय और बडा दर्द हो। गर्भाशय टल गया हो बवासीर हो या "ऐडीसन्" साहिब की बीमारी (सूखा) हो। यह न समझना चाहिये कि कब्ज के कारण हर एक रोगी मे ये सब लक्षण पाये जाते है। परतु ये लक्षण कब्ज के कारण हुआ करते है। दस्त की बार बार ख्वाहिश होती है, पर निकलता नही या खुल कर नही होता। वायु अधिक सरती है, मगर यह नही मालूम होता की वायु सरती या दस्त आवेगा। दस्त जाने के पीछे पेट मे दर्द होता हो और वायु सरने से आराम आता हो। तिल्ली और जिगर के मुकाम पर दर्द होता हो।

दस्तः—पतला, और बिना दर्द के दस्त होते हो, कभी रोकने से नहीं रुकते। पेट की नसे कमजोर पड जाती है। दस्त झागदार होता है, उसमे चमकती हुई आँव निकलती हो। दस्त जाने के पीछे जलन होती हो। पेट मे दर्द और दस्त लगते हो। कभी दस्त कभी कब्ज होता हो। बच्चो का हैजा, पुरानी पेचिश जिसमे भूख, प्यास और शरीर की कृशता अधिक होती हो। बच्चो के हैजे मे गर्दन सूख जाती है। बवासीर के साथ कब्ज हो, टट्टी जाने के समय और पीछे से गुदा मे जलन हो। मस्सो मे दर्द हो। मलमार्ग ऐठने के समान भिच जाय और दर्द करे। काच निकल आवे। इस औषधि की पिचकारी गर्म पानी के साथ मिला कर लगाने से आराम होता है।

मूत्रेन्द्रियः—मूत्राशय से रतुबत निकलना, मूत्र करते समय जलन होना, पेशाब करने से पहिले मलद्वार और मूत्रमार्ग मे खिंचावट होना, पेशाब करने के पीछे पेट मे ऐठन के साथ दर्द होना। मूत्राशय मे पेशाब करते समय सुई सी चुभना और जलन होना। तथा पीछे से मूत्रमार्ग मे जलन और काटने का सा होना। काला मैला पेशाब काफी के मानिन्द या फीका पनीला हो, रुधिर मिश्रित पेशाब हो अथवा उसमे मवाद या ईट की सी रेत तहनशीन हो। पेशाब जाने की बडी प्रबल इच्छा उठा करती हो। जिसमे पेशाब का रोकना सभव न हो। खासते, हँसते, चलते या छीकने मे पेशाब निकल जाता हो। दूसरो की मौजूदगी बडी देर

ठहरने के पीछे पेशाब उतरता हो। पेशाब करने के पीछे पतली, गाढी, चिकनी चीज गिरती हो। नामर्दी, बहुमूत्र, बहुत प्यास और बहुत पेशाब होता हो। गुर्दों के मुकाम पर गर्मी और तनावट जान पड़ती हो। "स्कर्वी" रोग (जिसमे दात हलते, मसूडे दुखते है) मे पेशाब के बदले खून आना, पेशाब का बहते रहना, बैठते ही पेशाब निकल जाना, मूत्र अधिक मात्रा में होना, विशेषकर रात को, मुँह मे पानी आना, शरीर सूखते जाना, बडी देर तक बैठने के पीछे पेशाब उतरना। प्रति रात्रि को स्वप्नदोष, उसके पीछे सर्दी लगना, पीठ दुखना, रात को पसीना होना, दुर्बलता बढना। लिंग के सिरे पर और फोतो पर खुजली चलना, और चींटे के काटने का सा अनुभव होना। लिंग के सिरे पर पीप सी मैल लगी होना। सफेद मवाद सुजाक के रोगियो के समान होना। साफ पनीला मवाद, "नाइट्रेट् आफ़ सिल्वर" की पिचकारी करने के पीछे पुराना सुज़ाक जिसमें सफ़ेद पतला मवाद निकलता हो, पीला या काला मवाद निकलता हो। पुराना प्रमेह जिसमे साफ पतला मवाद आता हो, कभी पीला सा आता हो। पुराना फिरंग जिसके घावो मे मवाद गिरता हो। जाघ और फोतो के बीच मे खुजली, सुर्खी और फुसियाँ हो। फोतों मे पानी उतर आया हो, नामर्दी अथवा धातु-स्राव रोग हो। फोतो मे ऐसी खुजली हो कि रात को नींद न आवे। विशेष मैथुन करने से शारीरिक दुर्बलता, यहाँ तक कि फालिज हो गया हो। लिंग का घूघट पीछे लौट कर फस गया हो, फोते लटक पडे हो, मुलायम हो गये हो। फोते की गोलियाँ दुखती हो, सूज गई हों। यह बातें सुज़ाक के मवाद रुकने अथवा कनफेर रोग के कारण हुई हो। लिंग के सिरे पर चींटी सी रेंगे या खुजली उठे। मूत्रमार्ग से पतला मवाद निकले जिससे जलन हो, खुजली चले। "प्रास्टेटिक" गिल्टी (मूत्रमार्ग मे) से मवाद गिरे। मूत्रमार्ग से पीला, पीप का मवाद निकले, और कपडे पर सुजाक के से धब्बे पड जाँय। पेशाब करते समय दर्द हो। जघाओं की गिल्टियाँ दुखती हो परन्तु सूजी न हो।

मासिक धर्मः—देर करके हो अथवा रुक कर हो। चेहरा गर्म हो जाय। पेट भारी जान पडे और थूक में खून जान पडे। (कठिनता से मासिक धर्म होने की दशा में नमकीन पानी के अन्दर कमर तक बैठना चाहिये।) बहुत कम रुधिर एक दो दिन आवे, तब बहुत सा आवे या हर तीसरे महीने बहुत रुधिर आवे। कमर मे दर्द हो। गर्भाशय बाहर निकल आया हो। लेटने से आराम आ जाता हो। शिर मे दर्द, दात में दर्द, चिन्ता, उदासी, मूर्छा आने का उपक्रम होना, उदासी, मासिक से पहिले जूडी सी लगना, थूक के साथ खून थूकना। जलन होना, फाडने और काटने का अनुभव कमर मे जान पडे, गर्भाशय मे ऐठन हो। ये लक्षण मासिक धर्म से पहिले देखे जाते है। मासिक से पहिले या पीछे शिर मे लपक उठे, आँखे

दुखे। उदासी, शिर दर्द, दिल की धडकन और फूल का दर्द ऋतुकाल में हो। जब ठंडे पानी में पैर भीगने से तथा दुर्बलता और शिर दर्द या पीठ के दर्द से मासिक रुक गया हो। जब मासिक बहुत जल्द शुरू हो गया हो, बहुत हुआ हो, बहुत देर से और बहुत थोडा हुआ हो। "क्लोरोसिस्" (स्त्रियो मे रुधिर का फीका पडना,) नीचे की ओर जानेवाले दर्द सवेरे तेज़ हो और जिनके कारण रोगी को बैठ जाना पडे।

गर्भावस्था, प्रसवकाल, दूध पिलाना:—जब बच्चा दूध न पीवे, बुखार चढा रहे, मुँह मे घाव हो। सवेरे जी मितलावे, कै हो, झागदार पानी गिरे, गर्भावस्था मे बवासीर का रोग हो। इन्ही दिनो मे अपने आप पेशाब निकल जाता हो। बिना भूख के भोजन की इच्छा होती हो। प्रसव काल मे देर लगती हो। धीमा दर्द होता हो और चिन्तित विचारो का होना। बच्चा जनने या दूध पिलाने के समय मे बालो का झडना।

श्वेतप्रदर:—जलानेवाला, हरा सा मलाई सा, शहद के रग सा, पारदर्शक या पतला मवाद ऋतुकाल से पहिले निकले। चलने के बाद और रात को अधिक होवे। पेट शूल व दर्द के साथ और अधिक कमजोरी हो जाने के पीछे श्वेतप्रदर हो जावे।

गर्दन और पीठ:—पीठ मे ठड मालूम होवे, पीठ मे ऐसा मालूम होवे मानो किसीने मारा है, छिल गयी हो, पीठ मे और कमर के नीचे सीने का सा दर्द व लूलापन मालूम हो। ऐसा ही दर्द मालूम हो विशेषकर झुकते मे टूटी सी मालूम हो। पीठ और चूतडो मे तेज खिचावट जान पडती हो। रीढ और गर्दन के ऊपर दर्द होवे। रीढ दुखे, दबाने से पीठ के दर्द मे आराम मालूम होना, पीठ के बल लेटने या सख्त चीज पर लेटने से आराम आता हो। पीठ मे चोट लगने का सा अनुभव हो, सीधे होने मे विशेष दु.ख जान पडता हो। खासकर बच्चो की गर्दन, बगलो का पतला पड जाना। गर्दन और शिर के पीछे दर्द हो, गर्दन के पीछे बहुत अकडाहट और दर्द हो। रीढ की कमजोरी से लकवा दर्द और थोडा लूलापन (फ़ालिज) पीठ मे हो। उठते में पीठ दुखती हो। दबने और छूने से रीढ मे बहुत दर्द होता हो। कमर के पास बाई तरफ दबाव सा हो। चलने या दबाने से विशेषता हो। पीठ और कंधो मे बोझ जान पडता हो। कमर और कूल्हे फटे जाते हो, खासते मे गले की गिल्टियाँ सूज जाती हो, या बढ जाती हो। बग़ल की गिल्टियाँ फूली हुई हो। गले मे पुराना दर्द और घेघा हो।

हाथ पैर:—हाथो, टागों, उगलियो और अगूठो म ऐठन हो, बाजुओ पर फुंसियाँ निकली हों, हाथों और बाजुओ पर खुजली चले। उँगलियो पर पानीदार छाले पड कर पानी बहे। बाजुओं और हाथो से उँगलियो और अगूठो मे सुन्न और खुजली जान पडे, मलने से आराम हो। बाजू दुर्बल, भारी और गिरे से जान पडे।

बहुत कमज़ोरी और थकावट हो। उँगलियों के जोड़ का मुड़ना कठिन हो, मोटने में जोड़ कड़कड़ाते हों, लिखने में हाथ कांपते हों। हथेलियों में मस्से हों। हाथ फड़कते हों। जोड़ की नसों में अर्थात उन जोड़ों में जो अगूंठे और कलाई के जोड़ में हैं, खिचावट हो, जोड़ों में गठिया का पुराना दर्द हो। दाहिना हाथ सूज गया हो। टखने कमजोर हों और झट मुड़ जाते हों। टखनों पर पित्ती निकलती हो। चूतड़ों के बीच की हड्डी दुखती हो। कमजोरी हो, जाघ और गर्दन पतली पड़ गई हो। पैर की उंगलियों के बीच में बिवाई हो, बैठते समय घुटनों में, नीचे के अवयवों में हो, दाहिनी जांघ से घुटने तक खींचने का सा दर्द हो। पीठ में सख्त दर्द जो किसी सख्त चीज़ पर सोने से अच्छा हो जाता हो, पांव में जलन हो, या बहुत ठंडे हों। टाग और पैर भारी हो। हाथ पैर सो जाँय, और सनसनावे। घुटने में फटने का सा दर्द हो। समय समय पर गठिया का दर्द हो। कूल्हे में मोचने का सा दर्द हो। टांगों में अपने आप झटका सा लगने लगे और शांतता से बैठ न सके, नींद में टांग उछल पड़े। घुटने और पिंडलियों में कमजोरी हो। घुटने की पुरानी सूजन हो, टागों में बेचैनी हो। पंजे की हड्डियों में छिलने का सा अनुभव हो। मोड़ने में दर्द होता हो, मानों नसें बहुत छोटी है। जांघ की नसें फड़कती हों।

चमड़ा:—सब बीमारियाँ, जिनमें पतला मवाद निकला हो, चमड़ी सूख गई हो, चर्बीला चमड़ा हो, छोटे फोड़े, खूनी फोड़े, मस्से जो हथेली में हो। चमड़े से छिलके उतरते हों। मैला जान पड़ता हो। चमड़ा सूख गया हो। बारी के बुखार में पित्ती निकल आई हो, ऐसी पित्ती जिसमें अधिक खुजली हो। इस कारण से चमड़ा अधिक गर्म हो या अधिक मिहनत की है। सब शरीर पर फुंसियाँ हों, दाद हो, बहुत नमक खाने से फुंसी सूज गई हो, और छिलका उतर गया हो, आँख की भौंह में फुंसियाँ हो, "एगज़ीमा" की फुंसियों में से तेज़ मवाद निकले, बालों के किनारों, मूत्रेन्द्रिय और टागों में विशेष हो, डाढ़ी के बाल गिरते हो। कीड़ों की सोज़िश, मधुमक्खी का डंक लगा हो या कीड़ों ने काटा हो। मुँह, हाथ, गुदा और जांघों पर फुंसियाँ हो, ऐसी फुंसी या छाले हों, जिनमें साफ पतला पानी बहता हो। कुहनी और घुटने, फोते और जांघों के जोड़ों पर फुंसियाँ हों। चेचक में लार बहती हो, दानों में पीप पड़ कर मिल गये हों और सुस्ती रहती हो। खसरे की बीमारी जिसमें आँसू और लार बहुत गिरे, ऊपर के व्रण जो लाल हों, दर्द करते हों, जलन करते हों, उनके आसपास छोटी छोटी फुंसियाँ हों और चेपके हों, जोड़ों के मोटों पर फुंसियाँ हों, उनमें से तेज पानी सा निकले, खुरड हो। जोड़ के मोड़ों पर छिलकेदार धब्बे हों। शिर पर खुरड हो और बगल में पनीली

फुंसियाँ जिनमें फूट कर पतली भुसी सी रह जाय। सब बदन पर बहुत छोटे छोटे लाल धब्बे पड जाँय, और ऐसा होने से पहिले चेहरा गरम जान पड़े। गर्म मुर्दे हो और दर्द करें, चमडे पर ऐसे व्रण हों जिनमें से चिपकनेवाला पीला मवाद बहे। चमडी पर घाव हो, दर्द हो और छूने से दर्द होता हो, और आसपास चमडी पर के घाव जिनसे पीला चिपकनेवाला मवाद खास जगह से निकले। पतला पानी सा मवाद निकले, कभी कभी आसपास की जगह छिल जावे।

निद्रा:—दिमाग मे पानी रिसने से बहुत नींद आवे। सोने की इच्छा बहुत होती हो। जगने पर थका जान पडे। मामूली नींद से तबीअत खुश न हो। बेचैनी से नींद आवे। नींद न आती हो। दिल के धडकने से रात मे जग जाया करे, और बुरे ख्याल दिल में पैदा होने की वजह से फिर सो न सके।

ज्वर:—सब प्रकार के ज्वरों मे "टाइफायड्" बारी के बुखार मे, जबकि लक्षण भयानक हो, अर्थात उनींदापन, बेहोशी और पनीली कै वगैरह होती हो। ठंड दे के आनेवाले बुखार हो, जो तर और नीची जगह मे रहने से होता है। बगैर पसीना आये, कभी जाडा लगता हो, और कभी गर्मी, या सवेरे १० बजे से ठड लगे, और दुपहर तक रहे। उसके पहिले बडी गर्मी हो, पीठ मे दर्द हो शिर धमके, प्यास लगे, फिर खट्टा, कमज़ोरी का पसीना आवे, जिससे शिर का दर्द वगैरह जाता रहे। तिजारी का बुखार जो पुराना पड गया हो, प्यास और कै होकर जाडा दूर हो जाय। शिर मे तीव्र ऐठन के साथ दर्द हो। नाक से खून सवेरे के समय निकले। ज्वर के समय जिगर पर बडा दबाव हो, जो तिल्ली वगैरह मे अदल बदल कर होता हो। पुराने ठडे बुखार के साथ ही साथ जिगर और तिल्ली बढ गई हो। सर्वदा कॅपकॅपी बनी रहती हो और मामूली गर्मी न रहती हो, विशेषकर पीठ में। दुपहर से पहिले कब्ज रहता हो। गठिया का ज्वर हो। दूध पीनेवाले बच्चो को कंप-कॅपी (ठड) और खासी हो। ज्वर मे हाथ और पैर ठडे रहते हो, विशेषकर शाम को। चौथे दिन का बुखार जो खुजली दब जाने से हुआ हो। रात को बहुत पसीना आता हो। बीमार कॅपकॅपी ठंड से डरता हो। थकावट, शिर मे दर्द हो और प्यास रहती हो। "मलेरिया" के बुखार में खाने का नमक एक खास दवाई है। डाक्टर ब्रोक् एक समाचार पत्र मे लिखते है. "जब मैंने हगेरी देश के थेमिस् और मरोस के मैदान की यात्रा की, और जो "मलेरिया" से भरे हुये हैं, और बहुत दिन दक्षिण अमेरिका मे "मलेरिया" के स्थानो मे रहा, मै एक बहुत सस्ती औषधि को काम मे लाता रहा, जिससे हर प्रकार का "मलेरिया' बुखार एक या दो खुराक खाने से ही अच्छा हो जाता है, मैंने एक मुट्ठी भर साफ खाने के नमक को एक नई कढाई में या साफ कढाई मे धीमी आँच देकर भुनवाया, जबतक कि उसका रग काफी के

समान न हो गया, और इस भुने हुए नमक में से एक मेज का चम्मच या अधिक, मगर कम न हो, आदमी को एक गिलास गरम पानी में मिला कर एकदम दूसरे दिन खाली पेट व्यवहार किया। चौथैया के बुखार में बुखार उतर जाने के कुछ घंटे पीछे देता था। यह औषधि खाली पेट पर गुण करती है। इसलिये खाना पीना बन्द रखना चाहिये। यद्यपि अधिक प्यास लगती है, लेकिन रोगी को थोड़ा सा पानी दिया जाना था, मगर जब रोगी को भूख लगे तो खाने को नमक देने के ४८ घंटे बाद, सिर्फ थोड़ा सा शोरबा या चाय दी जाती थी, इस बात का खास ध्यान रखा जाना चाहिये कि रोगी कुछ न खाय और उसे ठंड न लगने पावे। मैंने यह दवा १८ बरस तक अनेक रोगियों को इस तरह से दी और सब को ही फायदा हुआ। हंगेरिया में सैकड़ों रोगी अच्छे हुए। मेरी क्यूनोग् एुअयर की जहाजी सफर में एक जहाज़ी मेट को वर्षों से "मलेरिया" का बुखार आता था, उसको एक ही खुराक से चौबीस घंटे में आराम हो गया, और फिर कभी नहीं लौटा। अमेरिका के शीतोष्ण प्रदेश में, जहाँ युरोपियन बसने जाते हैं, उनको अकसर मलेरिया सताता है, और जो दवा न की गयी तो मर जाते हैं। "स्टेप्" नमी जंगल में ४०० अँग-रेज़ मलेरिया ज्वर से मर गये, उनको खूब क्विनीन खिलाई गई थी और ब्रांडी भी पिलाई गई थी, और पास ही के एक जंगल में जर्मनीवालों की एक बस्ती थी, उनको भुना हुआ नमक खिलाया गया था, और उनमें से एक भी न मरा। **ऊपर लिखी दवा डॉक्टर की मौजूदगी में खानी चाहिये।**

ज्ञानतन्तुः—मांसपेशी और ज्ञानतन्तुओं की निर्बलता में नमक का व्यवहार ऊपर से किया जा सकता है, जबकि विकार के स्थान सुन्न हो गये हों। मन और शरीर के किसी परिश्रम में ज़्यादा थकावट हो गई हो। रीढ़ में दर्द हो जो छूने से या दबाने से ज्यादा होता हो। फालिज हो, टीस हो, हाथ पैर कांपते हों, (कुछ वायु हो) वायुगोला में कमजोरी हो गई हो, जबकि सवेरे विशेषता हो, वायुगोला से ऐंठन होती हो, सर्दी लगने का भय बना रहता हो।

बनावट के रेशे (टिस्स्यूस्)ः—बहुत नमक खाने से दुर्बलता हो गई हो। दुर्बलता चाहे किसी रस के बहने से हो, (China, Kali Carb.) ऋतुकाल के बिगाड़ से हो, Puls वीर्यक्षय से हो, (Phos. A. C China) मानसिक रोगों से हो, परन्तु शर्त्त यह है कि रोगी फीका पड़ गया हो, अच्छा खाना खाते रहने पर भी सूखता जाता हो, माथा धमकता हो, विशेषकर सीढ़ी चढ़ने में। मासिक रुधिर कम हो, थोड़ा बहुत क़ब्ज रहता हो, और तबीअत गिरी हुई रहती हो, नब्ज रुक रुक कर चलती हो; ख़ासकर गर्दन पतली पड़ गई हो। झिल्लियों से रेशा गिरता हो, और रेशा पारदर्शक, साफ, चिकना, लेई सा हो।

नेट्रम् फासफोरीकम् (Natrum Phosphoricum)

"फास्फेट् आफ सोडा" इसका अंगरेजी नाम है। मनुष्य के शरीर में तेजाब का जोर सर्वदा रहता है। तेजाब के विकारों को चाहे कुछ नाम दे; मगर तेज़ाब में बुरे लक्षण पैदा होते है, यों तो शरीर मे खार और तेजाब दोनों प्रकार के असर हैं, परन्तु तेज़ाब कभी कम नही होता, क्योंकि यह शकर सा पदार्थ है। "एलब्यूमिन्" की भान्ति, तेज़ाब भी शरीर में सर्वदा मामूली खाना खाने मे विद्यमान रहता है। जिस तरह "फास्फेट् आफ लाईम" के सूक्ष्म कणों का विद्यमान रहना चाहिये और वह "एलब्यूमिन्" के साथ काम करने, व तर्फमीय करने का, व उसमें से हड्डी और दूसरी "टिस्स्यू" बनावट में काम करता है, उसी तरह "फास्फेट् आफ सोडा" भी तेजाब के साथ काम करने के लिये आवश्यक है। "फास्फेट् आफ सोडा" जब उचित मात्रा मे नहीं होता, तो तेजाब फालतू रह जाता है. इसको तेजाब की जियादती नही समझना चाहिये। वरन् "फास्फेट् आफ सोडा" की कमी गिननी चाहिये। अतः शरीर की बनावट के लिये इस पदार्थ का होना परमावश्यक है।

यद्यपि दीवार ईंटो से ही बनती है, परन्तु बनानेवाला कारीगर न हो, तो वह नही बन सकती है, उसी तरह जब तक भीतर कोई कार्य न करे तब तक खान-पान से शरीर का पालन नही हो सकता, यह काम इन्ही औषधियो का है, जिनका इस पुस्तक मे वर्णन है। रोग की दशा मे खाने के पदार्थों की कमी नहीं होती, केवल उन पदार्थों की कमी होती है, जिनके द्वारा शरीर के अंगो की पुष्टि के लिये यथोचित रस छांटे जाते है, अर्थात ईंट पत्थर मौजूद है। लेकिन कारीगर नही हैं। आमाशय के रस मे ये नमक न हो तो पाचनक्रिया बिगड़ कर आमाशय की झिल्ली मे ख़राबी पैदा कर दे। पित्त गाढा होने लगता है और पित्त के दस्त लग जाते है, या पित्त सबन्धी और विकार हो जाते है। ऐसी दशाओं मे "नेट्रम् सल्फ़ूरीकम्" भी देना चाहिये, यद्यपि "नेट्रम् फ़ासफोरीकम्" देने से भी विकार रुक जायगा। अब यह बात दुपहर के सूर्य के समान प्रत्यक्ष है कि बुरे लक्षण किसी नमक-पदार्थ की कमी से हुए है। परन्तु पुराने विकार के डाक्टर लोग जिगर को उत्तेजित करनेवाली ही दवाई दिया करते है, आश्चर्य है कि पित्त मे तो "सोडियम् फास्फेट्" या "सोडियम् सल्फेट्" की जरूरत है, और औषधि दी जाती है जिगर को उत्तेजित करने की, जैसे किसी भूखे आदमी को और भूख लगाने की दवा दी जाय। भूखे को तो हमेशा खाना देते हैं, जब यह सिद्ध है कि जिगर मे अमुक

नमक की कमी है, तो वही नमक क्यों नहीं देते? क्यों "बाईक्लोराइड्" आफ् "मर्क्युरी" दिया जावे। जबकि "फास्फेट् आफ सोडा" की जरूरत हो।

योग्य लक्षण और सूचना

मानसिक लक्षण:—सुस्ती या याददाश्त की कमी, विचार न कर सकना, मोह न होना, उत्साह न रहना, जरा सी बात पर चिडचिडाना, क्रोधी घबडाना, बुरा मानना, रात को जग कर यह समझना कि घर की चीजों के बदले आदमी खडे हैं, और दूसरे कमरे मे आदमी चल रहे है।

शिर:—घुमेर आना, और पाचन मे विकार रहना, कपाल या खोपडी मे दर्द होना, और खोपडी का बहुत भारी सी जान पडना। प्रात काल जगते समय शिर में दर्द होता हो। शिर की चँदिया मे गर्मी और दबाव मालूम होना और ऐसा जान पडना कि चाद खुल जायगी। कनपटियो मे शिर का दर्द होवे। ऋतुकाल मे तीसरे पहर शिर में दर्द होवे, दही या छाछ खाने से शिर मे दर्द होता हो। शिर मे दर्द के साथ पेट मे दर्द होवे व खट्टी झागदार कै होती हो। जुबान के पिछले हिस्से पर मलाई सी जमी हो, तो इस पदार्थ की कमी सिद्ध होती है।

आँखें:—सुबह जगते वक्त आँखो की पलक मलाई के से मवाद से चिपक जाती हो। आँखों मे जलन, खुजली और बहुत सुर्खी हो। पलक भारी जान पडे और किनारो पर खुजली हो। खसरा निकलने के पीछे बहुत चकाचौंध लगे। धुंधला दिखाई पड़े और आँखो के सामने पर्दा सा जान पड़े, चीजे हिलती दिखाई पडे। बाई आँख के डेले मे खुश्की हो और दर्द हो, मानो चोट लगी हो। आँखो से पीले रग का मलाई सा मवाद निकलता हो। गरम गरम आँसू गिरते हों, गैस की रोशनी से आँखो में तकलीफ होती हो। पलको पर लाल दाने हो और चौंधिया सी हो। पढते में आँख दुखती हो। आँखो के सामने चिनगारी दिखती हो। कीडों के कारण भेगा हो गया हो।

कान:—दाहिने कान मे दर्द और खुजली हो, कान के बाहर जलन और खुजली हो। दाहिने कान की लौ मे जलन हो और इतनी खुजली चले कि खुजलाने से खून निकल आता हो। एक कान सुर्ख और गर्म हो और अकसर खुजाया करे, साथ ही पचन मे विकार हो, और लेटते मे ऐसा जान पडे कि ऊँचे पर से लम्बी सॅकडी गर्दन के वर्त्तन मे पानी गिर रहा है। कान मे से गले मे जानेवाले सूराख मे मवाद टपकता हो, कान भरे से जान पडते हो। बाहरी कान पर खुरंड हों, और उनका रंग मलाई सा पीला हो। कान मे से मलाई सा मवाद निकले।

नाकः—बाया नकुआ दुखता हो, और घाव छिलको से भरा हो, और सदा नकुओं से खुरड निकलता रहता हो। नाक मे कुछ चुभाने स आंखे मे आँसू आ जाया करे, नाक की जड भरी हुई हो। नाक से बदबू आवे। नाक मे खुजली होना और चुभाने का सा हो इसका कारण कीडे या पेट की तेजाबी हालत होने से होता हो। जुकाम होकर नाक से मलाई सा पीला मवाद निकलना हो।

चेहरा:—चेहरे का रंग नीला लिये फीका हो और धब्बे से पैदा होते और मिटते है। चेहरे में टीस होना और तीर का सा दर्द हो और सुई के चुभाने का सा दर्द हो। नाक और मुँह के पास सफेदी हो, जो कीडो के रहने के लक्षण है। निचले जबडे के दाहिने बाजू के कोने पर दर्द होवे और कभी कभी दौडनेवाला दर्द होता हो। आतो मे कीडे होने के कारण चेहरे की नसे फटकती हो। चेहरे में बहुत खुजलियाँ चले, खासकर नाक मे।

दांतः—पेट मे कीडो के कारण बच्चे सोते मे दात पीसते हो।

जुबानः—जुबान के पिछले हिस्से पर गाढा, पीला मलाई के रंग का मैल लगी होवे; किसी बीमारी मे जब ऐसा हो, तो "नेट्रम् फासफ़ोरीकम्" की आवश्यकता सिद्ध होती है। सुबह जगने पर स्वाद कसैला हो जाता हो। जुबान पर छाले हो, जिनका बीच काला भूरा हो। जुबान के किनारो पर थूक के झाग होवे। मैलापन लिये सफेद गिलाफ जुबान पर हो, ऐसा मालूम हो कि गले मे कुछ अडा जाता है, और बोला नहीं जाता हो। जुबान के ऊपर बाल सा जान पडता हो, तेजाबी स्वाद हो। सुबह उठते समय पतला, भीगा सा गिलाफ होवे जुबान ऐसी जान पडे मानो उस पर कच्ची या पीली शक्कर लगी है।

मुँह और हलकः—गले की गिल्टियो से पानी निकलता हो, मसूडे सूजे हो। तालू मे पीछे की तरफ पीली मलाई सो लगी होवे। गले मे घाव हो, गला कच्चा मालूम होता हो। गले की गिल्टियाँ सूजी हो और उनपर मलाई और पीली सी मैल हो, गले के विकार, जिन मे कडी चीजे निगलने से आराम आवे और पनीली निगलने से दर्द बढता हो। जुबान साफ हो, नाक के पिछले छेदों से सफ़ेद बलगम निकले। रोहिणी "डिफ्थेरिया" रोग से गले से पीड़ा हो। नाक के पिछले छेदों से गले मे पीला मवाद गिरे, रात को जियादती होती हो। बीमार जाग पडता हो, और उसे बैठ कर गला साफ करना पडता हो। ऐसा मालूम होता हो कि सुई छिद रही है। हलक की बाई गिल्टी दुखती हो। ऐसा जान पडता हो कि गले मे गोला अटका है। मुँह और गले मे शून्य सा और सुई सी चल रही हो।

भूखः—भूख न लगती हो या बहुत लगती हो। 'बीयर' शराब या "आल्काहाल्" पर मन चलना, या मसालेदार खाना खाना चाहता हो। रोटी और

मक्खन अच्छा न लगता हो। जी मितलाता हो, और कै करने में खट्टा पानी और फटी हुई चीजें निकलें, मगर अन्न न हो। पेट की सब बीमारियों में, जिनमें खट्टी तेजाबी डकार व पानी आता हो। जबान पर मलाई सी पीली मैल लगी रहती हो। ऐसी दशा में "नेट्रम् फासफोरीकम्" गुणदायक होता है।

आमाशयः—पुराना अजीर्ण (बदहज़मी)। खाना खाने के दो घंटे पीछे पेट में दर्द होता हो, बहुत चिकनाई खाने से पेट में बदहजमी हो, तेज़ाब का अधिक बढ़ जाना, खट्टी डकारें आना, और खट्टी कै होना, या पिसी हुई काफी के रंग का पानी कै में निकलना, पेट में दर्द होना व अधिक तन जाना। प्रतिदिन कई बार आंतों में और पेट में टीसें चलें। पेट में व्रण होना, और खाना खाने के पीछे पेट में एक ही जगह दर्द होवे। कीड़ों के कारण पेट दुखे, जिगर के रोग और जिगर के कारण बहुमूत्र रोग, खासकर जब फोड़े बहुत निकलते हों। आंतों में दर्द, बेचैनी की नींद, सख्त क़ब्ज़, पेट का फूलना और दुखना। पेट में दर्द और दबाव हो और तेज़ाब की ज्यादती। चलते में पेट में शूल सा दर्द होना। बच्चों के पेट में शूल हो और तेजाब की अधिकता जान पड़े, विशेषकर कै में फटा हुआ दूध सा होवे। पेट खाली सा जान पड़े, पित्त की कमी से चिकनाई न पचे।

दस्तः—तेजाब की अधिकता से हरा अथवा मटीले रंग की खट्टी बूवाला दस्त आता हो। एक दिन कब्ज हो, दूसरे दिन दस्त लग जाते हों; कीड़ों के कारण मलद्वार पर खुजली चलती हो (चाहे लम्बे कीड़े हों या सूती।) रात्रि के समय बिस्तर में शरीर गर्म हो जाने से खुजली विशेष चले, मलद्वार दुखे और कच्चा पड़ जावे, और तेजाबी के लक्षण भी हों, नाक खुजावे, आँख टेढ़ी होवे, और चेहरे की पेशियाँ फड़कें। पतले दस्त होवें। और वायु सरा करे, मलद्वार निर्बल मालूम हो, अचानक दस्त आ जावे और रुक न सके। दाहिनी जंघा के भीतर दर्द होवे। पेट के शूल के साथ दस्त लगे। वायु सरते में दस्त निकल जाने का भय होता हो। गर्मियों में दस्त लगते हों, चाशनी के मानिन्द दस्त होना, नाक खुजाना, या नुकाना, ये पेट में कीड़ों के रहने के लक्षण हैं। आंत के सब प्रकार के कीड़ों में उपयोगी है। जो नाक खुजावे व मलद्वार पर की खुजली होवे और बेचैन होवे, और नींद न आती हो। "नेट्रम् फासफोरीकम्" कीड़े हटाने के लिये अच्छी दवा है, खाना भी चाहिये व पिचकारी भी देनी चाहिये।

मूत्रेन्द्रियः—मूत्राशय की कमजोरी, बहुमूत्र, बच्चों में पेशाब का न रुकना, जोकि आमाशय की तेजाबी हालत होने से होती है। बहुत पेशाब जाना अथवा थोड़ा और काले रंग का जाना, जोड़ों में दर्द होना। पेशाब की इच्छा बनी रहे अथवा ठहर ठहर कर होवे, जोर लगाने से होता हो, पेशाब का बार बार होना और

रोक न सकना और पेशाब करने मे जलन होना। विना स्वप्न से वीर्यपात होना, वीर्य पतला पानी सा होवे। अंड और वीर्य नाली मे तनाव होवे।

जबकि गर्भाशय से तेजाबी, खट्टा, पतला मलाई सा, पीला सा, मवाद निकले, तो "नेट्रम् फासफोरीकम्" का व्यवहार करे। श्वेतप्रदर मे जबकि मलाई सा या शहद के रंग का सा, तेजाबी और पतला बहाव हो, ऋतुकाल मे फीका, पतला, पनीला रुधिर जाता हो, मवाद मे खट्टी और तबीअत बिगाडनेवाली बदबू आती हो। ऋतुकाल नियमानुसार न होता हो और कपाल में दर्द रहता हो, ऋतुकाल पीछे ऐसा जान पडे मानो घुटने की नसे खिच गई हो, ऋतुकाल से पहिले घबडाहट होती हो और नींद न आती हो, ऋतुकाल के दिनो में, दिन मे पैर ठडे रहते हों और रात को जलन होती हो, पाखाने जाते समय दुर्बलता मे गर्भाशय बाहर निकल आता हो, प्रात काल की बीमारी हो। कै के मादे में खट्टा तेजाबी मवाद या पानी निकलता हो, जी मितलाता हो और खट्टा डकार आती हो।

आवाज़:—गले मे सोज़िश होवे, और जोर से आवाज निकालने के कारण गला बैठ जावे। क्षयी रोग मे जबकि थूक से होठो मे घाव पड जाते हो या जुबान और मुँह कच्चे पड जाते हो।

दिल और छाती:—हृदय के स्थान पर फडकन हो। ऐसा जान पडे कि दिल से गोला या बबूला सा उठ कर रगो मे जा रहा है। सीढियाँ चढने या अजीब आवाज सुनने से दिल धडकने लग जाय। हृदय की तली मे दर्द हो, तो हाथ पैरो और अगूठों मे दर्द कम होता जाय, शरीर मे जहाँ तहाँ नब्ज़ फड़कती हुई जान पड़े। पसलियो के बीच का गोश्त खिचा हुआ सा मालूम हो। छाती मे दर्द हो, जो दबाने और गहरी सास लेने से विशेष होता हो।

गर्दन और पीठ:—रीढ के मोहरो में कमर के स्थान पर दर्द जान पडे, घेंघे का रोग हो। गर्दन मे दोनो ओर ऐठन हो, हाथ पैर और पीठ मे कमजोरी जान पडे, गर्दन की गिल्टियो की सूजन जो छाती तक फैले, रीढ मे खून की कमी, पैरो मे फालिज की सी कमजोरी होवे।

हाथ पैर:—कलाई दुखती हो, दाहिनी कलाई और बायां टखना कमज़ोर हो गया हो। गठिया का दर्द विशेषकर उँगलियो के जोडो मे हो। जोडो मे दर्द होना, दुखना और चरचराना। बाजू के पीछे की नसो का सिकुड जाना। अचानक दर्द दिल तक पहुँच जाया करे, सुबह के समय बायें बाजू के गोश्त मे खिचावट होवे। दाहिने कन्धे के जोड और हाथ से गठिया का दर्द होवे, बाजुओ मे थकान जान पडती हो। लिखते समय हाथ कापते हो, पिडलिया ऐसी जान पडें मानो कस कर बंधी हुई है। टखने, टागो और घुटने मे दर्द होता हो। एड़ी और तलवे मे दर्द

होता हो। जांघों मे अन्दर की तरफ़ खिचावट सी होती हो, दाहिनी जांघ की नसों मे दर्द होता हो। उठने में कड़कन मालूम होती हो व खिंची हुई सी मालूम होवे। चलते चलते टांग बहक जावे, और ऐसा जान पड़े कि फालिज हो जावेगा, सीधा खड़ा न हो सकना। दाहिने अंगूठे का नाई तरफ को मुड जाना। सीटी चढते मे थक जाना। रात को पैरों मे जलन होना। पसीने मे तेजाब, खट्टी बू आना, नये या पुराने गठिया रोग में जब तेज़ाबी कैफियत पाई जाय, तो "नेट्रम् फ़ासफोरीकम्" परम उपयोगी है।

निद्रा:—दिन भर उनींदा सा रहना, पर नींद न आना। बैठे बैठे नींद आ जाना। झट जग पडना, बादल गरजते मे घबड़ा उठे। पेट मे कीडे होने की बेचैनी हो, नींद में दांत पीसना, चिल्ला उठना, मलद्वार खुजाना और नाक नोचना। ख़्वाब देखना, और मुर्दों को देख कर डर जाना।

ज्वर:—पसीने में बहुत खट्टी बास आती हो। ज्वर के साथ के मे खट्टी चीज़ें निकलती हो। जाड़ा लगकर फिर अधिक गर्मी। ऋतुकाल मे छाती के स्थान पर ठंड जान पडती हो। दिन मे पैर ठंडे बरफ से रहते हो और रात को जलते हो। प्रतिदिन तीसरे पहर बदहज़मी के कारण गर्मी की सी लहरें अनुभव होती हो। और माथे मे दर्द होता हो, कीडो के कारण ज्वर आया हो। बारी के बुख़ार मे खट्टी, माद्दे की कै होती हो।

चमड़ा:—"एगज़ीमा" शरीर के ऊपर ऐसे घाव व फुँसियाँ निकलना, जिनका मवाद तेजाबी, मलाई सा, पीले रंग का हो। शरीर पर पिस्सुओ के काटने के से ददोरे पड़े हो, और उनमें अधिक खुजली हो, शरीर पर कई प्रकार के फोडे फुँसियों का निकलना, खुरड उछलना, लाल हो जाना और दुखना, विशेषकर छोटे बच्चो मे ("फेरम् फासफोरीकम्" के साथ बदल कर दें) फोते, घूंघट और गुदा मे खुजली हो।

बनावट के रेशे (टिस्स्यूस):—बच्चो को "मेरासमस्" सूखा मर्ज हो।

नेट्रम् सल्फूरीकम् (Natrum Sulphuricum)

इसका अंगरेज़ी नाम "सल्फेट् आफ सोडा या ग्लावर्स साल्ट" है। यह एक प्रकार का नमक है, जो शरीर की बनावट के कणो मे पाया जाता है, अग मे जितनी वनावटे है उनका नाम टिस्स्यू है। यह नमक सब टिस्स्यूओं, रुधिर और शरीर के रसों मे पाया जाता है। इसका काम है टिस्स्यू और खून मे यथावश्यक पानी पहुँचाना और निकालना। जब यह नमक कम हो जाता है तो "टिस्स्यू" मे से वह पानी जो वहाँ अधिक रहता है नही हट जाता है और टिस्स्यू मे विकार उत्पन्न हो जाता है। यह हम पहिले कह चुके हैं, कि टिस्स्यूओं मे यथावश्यक पानी पहुँचाना "सोडियम् क्लोराइड्" नामक पदार्थ का काम है, और इस औषधि मे यह ताकत है, कि आवश्यकता से अधिक पानी को दूर कर दे, शरीर मे जब "लेक्टिक ऐसिड्" "फासफ़ेट आफ सोडियम्" के साथ मिलता है, तो पानी पैदा होता है, इस फालतू पानी को बाहर निकालना "सोडियम् सल्फ़ेट" का काम है। यदि उचित मात्रा मे "सोडियम् सल्फेट" वर्तमान नहीं है, तो फालतू पानी विकार पैदा करेगा। गर्मीयो के दिनो मे पानी सूरज की गर्मी से भाप होकर हवा मे मिल जाता है, और वह हवा स्वास के द्वारा फेफडे मे प्रवेश करती है। उन लोगो को, जोकि कमजोर है, या जिनकी पचन-शक्ति बिगडी हुई है, उनको मलेरिया ज्वर हो सकता है। क्योकि उनके रुधिर मे फेफडो द्वारा जो फालतू पानी पहुचा और "सोडियम् सल्फ़ेट" के अभाव से वे उसको रुधिर मे से निकाल नही सकते। रसायनिक क्रिया से समझाने के लिये यह कहा जा सकता है, कि "सोडियम् सल्फेट" का एक कण, पानी के दो कण ग्रहण करने मे समर्थ है। मै चाहता हू कि सब लोग इस बात को अच्छी तरह समझ जायें। जीवन रसायन शक्ति से सिद्ध हो गया है, कि जाडा ज्वर, हैज़ा, पीत ज्वर, अधिक गर्मियो के दिनो की बीमारी, रुधिर मे जल की अधिकता के कारण होती है। कदाचित आन्तरिक रसो मे भी पानी की अधिकता हो जाती है, और जब पचन विकार से "सोडियम् सल्फेट" प्राप्त नही होता, तो स्वास के द्वारा खून मे मिला हुआ जल अलग नही हो सकता। एक जूडी का उदाहरण लीजिये, किसी डाक्टर ने परिभाषा ठीक ठीक नही लिखी। वे जो कुछ लिखते है, उसका कुछ अर्थ नहीं समझ पडता, मै जूडी की परिभाषा इस तरह लिखता हूँ—जब रुधिर में पानी की मात्रा अधिक हो जाती है, तो शरीर के अवयवो का पूर्ण पालन नही होता और वे सब घबड़ा उठते है। अब क्योकि रुधिर मे से इस पानी को निकालनेवाले भिश्ती यथावश्यक मात्रा मे मौजूद नही है, प्रकृति का यह काम होता है कि रगो, पट्ठो और मास के द्वारा इस पानी को

बाहर निकाले, यही कारण है कि जूडी मे पसीना खूब आता है। यदि "नेट्रम् सल्फूरीकम्" फालतू पानी को दूर करने को न दिया जायगा, तो फिर ४८ घंटे पीछे जाडा लगेगा और पसीना आवेगा, क्योंकि उतना पानी भरने मे उतनी देर लगती है। यदि कोई जूडी के लिये "नेट्रम् सल्फूरीकम्" (३X) देगा, तो उसको मालूम हो जायगा कि इसके द्वारा मलेरिया का "मच्छरों द्वारा" होने का कारण झूठा हो जायगा, अथवा मच्छरों का वह विष शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। एक और बात है, यदि रोगी किसी ऐसे स्थान मे पहुँचा दिया जाय, जहाँ शीत के कारण पानी भाप हो कर हवा मे नही मिल सकता, वहाँ पहुँचते ही जूडी आना रुक जायगा। ऐसा क्यो होता है? क्योकि ऐसे स्थान पर "आक्सिजन्" बहुत मिलता है और शरीर में फालतू पानी नही रहने पाता। दो और बाते हैं, पहिली यह है कि हम चाहे जितना पानी पिये, उससे रुधिर पतला नही पडता, खोखलीवाली नसे उसमे से उतना ही पानी लेती है जितना कि आवश्यक है। दूसरी बात कि गर्मी द्वारा हवा मे केवल जल ही भाप बन कर जाता है। गन्दे तालावो की मैल या विष उसमे शामिल नही होता। सूर्य केवल शुद्ध जल को ऊपर उठाता है। इसी तरह से शरीर मे "सोडियम् सल्फेट" केवल जल को ही हटाता है, और पित्त इत्यादि रसो को नहीं बिगाडता। रसो मे जितना जल रहना चाहिये उतना रखता है, और रुधिर मे से फालतू पानी निकाल देता है। यह सब उसी दशा मे सभव है जब "सोडियम् सल्फेट" उचित मात्रा मे वर्तमान हो।

विशेष लक्षण:—इस औषधि का कार्य उन दशाओ के समान है, जो "यूरिक एसिड्" वाली तबीअत और आमाशय तथा पित्त विकारवालो मे और मलेरिया के रोगो मे होते है। दर्द के कारण एक आसन नही बैठ सकते। बाईं करवट लेटने मे ज्यादा तकलीफ होती है। बरसात में और नीचे तर मुकामात में रहने से तकलीफ बढ़ जाती है। पानी किसी शकल मे हो, नुक़सान कर देता है। इनके बरखिलाफ हालतो मे आराम रहता है। जुबान मैली, हरियाली लिये हुए खाकी या भूरी पीछे की तरफ़ होती है।

योग्य लक्षण और सूचना

मानसिक लक्षण:—चिन्ता, भयभीत, उदासी, बेचैनी, हिम्मत हारना, विशेषकर प्रात काल अच्छा बाजा सुनने से तबीअत उदास हो जाती है, और उदासी के साथ आँखो मे आँसू भी आ जाते है, कुछ सोच नही सकता। शारीरिक या मानसिक काम करने को दिल नही करता। पित्त के जोर से स्वभाव चिडचिडा हो जाता है, न बोलना अच्छा लगता है, न बुलाना। दिमाग़ मे सोजिश होती है।

कभी कभी पागल हो जाता है। चित्त मे दृढता नहीं होती। उदासी बढ़ जाती है। पागल होकर आत्मघात की इच्छा करता है; जिससे रोकने मे कठिनता होती है। पतले दस्त जाने से तबीअत खुश जान पडती है। शिर मे चोट लगने के पीछे ऐंठ जाना, भारी और चिन्तावाले भयानक स्वप्न देखता है। बेहोशी मे बकता है।

शिरः—पित्त की अधिकता व पचन विकार से शिर में घुमेर आना, साथ ही मुँह का स्वाद कडुआ रहना और पसीने से आराम आना। मस्तिष्क के पेंदे मे सख्त दर्द होना, शिर मे दर्द, चक्कर और तन्द्रा। गिर पडने के बुरे नतीजे और साथ ही मानसिक विकार होना। चलते समय दोनो कनपटियो का बजना। शिर की चंदिया का धमकना, जलना और शिर फटा जाना। पित्ताधिक्यता से दस्त लगता, पित्त की कै होना, पित्ते पर दर्द जान पडना। शिर मे रुधिर का अधिक इकट्ठा हो जाना। नकसीर फूटने से भी शिर का भारीपन न दूर होना। शिर के भीतर दिमाग हिलता जान पडना और झुकने में ऐसा बोध होना कि बांई कनपटी की ओर दिमाग गिर पडता है। खासते मे माथा फटा सा जाता है। सूर्यास्त के समय शिर की चंदिया पर गर्मी और दबाव बोध होता है। शिर मे दर्द, जो हाथ से दबाने, लेटे रहने और ख़ामोशी से घटता है। सोच विचारने से बढता है। मलेरिया के साथ शिर मे धीमा दर्द होना, पढते समय शिर मे दर्द होना, गरम जान पडना, और पसीने आना, शिर मे दाहिनी ओर को झटका लगना। शिर के पीछे गुद्दी मे दर्द होना। पेट मे जलन, मुँह कडुआ और उदासी होना, इसके पीछे शिर मे कील ठोकने का सा दर्द होना। ये लक्षण रात को या सवेरे होते है। शिर पर दबाव सा जान पडना, खाना खाने के बाद विशेष होना। दिमाग के पेंदे मे तेज कुचलने, और कुतरने का सा दर्द होना, और शिर का पीछे की ओर झुक जाना, शिर मे खून इकट्ठा होना, रोगी का बकना। चोट का असर रहना, चंदियों मे कुछ रेंगता हुआ सा कंघी करने मे जान पडना। शिर का चमडा दुखना। शिर के ऊपर लाल गाठे निकलना।

आँखे:—पलको के भीतर फुंसियाँ निकलना, हरा मवाद बहना, रोशनी से बहुत डर लगना, सवेरे पलक चिपक जाना, दाहिनी आँख मे जलन होना। आँखो से आँसू बहना, और पलको के किनारे जलना। पलकों पर अन्दर की ओर छाले से पड जाना, गरम आँसू निकलना। धुंधला नजर आना, सुबह शाम और आग के नजदीक विशेष क्लेश जान पडना। आँखे कमजोर होना, आँख के पर्दे का पीला पड जाना, पलको पर दाने होना, और बहुत दिन से आँखे दुखते रहना। हरा मवाद निकलना, और चकाचौंध होना। आँखो मे कुछ रेंगता हुआ सा जान पडना, आँखे गरम रहना। कठमाला के रोगियो की आँखें दुखना, आँखो मे रेत सा

जान पडना; नजर के सामने पर्दा सा होना, नाक सींकने के पीछे आँखो के सामने चिनगारियाँ सी उड़ना।

कान:—ऐसा जान पडना कि कानो मे से कोई चीज़ निकली आ रही है, अथवा पर्दे पर ज़ोर दिया जा रहा है। कान में घंटी बजने की सी आवाज़ सुनाई देना। ऐसा जान पडना कि कोई दाहिने कान को अन्दर की ओर से छेद रहा है। कान में दर्द होना, कान के भीतर की झिल्ली मे किरकिरी, कान मे बिजली के से कौंधा मारना। बरसात मे अथवा तर जगहो मे लेटना या ठंडी हवा में से गर्म कमरे मे जाना विशेष कष्ट बढ़ाता है।

नाक:—नाक की दीवार में खुजली चलने से नाक रगडनी पडे। नाक के भीतर से बहुत मवाद निकले। जुकाम के साथ छींके आवें और नमकीन मवाद निकले, नाक मे खुश्की और जलन हो; नाक रुक गई हो। नाक की जड मे भारीपन और दर्द होना, सवेरे के समय हरे रंग का छिलका छींकने से निकलता है। ऋतुकाल से पहिले नकसीर फूटती है। नाक से बदबू आती है। अन्दर घाव होते हैं। उपदंश के कारण नाक मे कीडा लगा हो। बलगम रोशनी से हरा पड जाता है। हलक में जख्म होते है। मैदा के समान खाकी रंग का बलगम सवेरे और दिन मे निकलता है। नाक के पिछले सूराखो से पानी टपकता है। गाढा, पीला मवाद नाक से निकलता है।

चेहरा:—पित्त की खराबी से चेहरा पीला या फीका सा हो गया हो। चेहरे पर विसर्प "इरीसिपेलॅस्" की सोजिश से सुर्खी, चमक और सूजन हो। चेहरा खुजाता हो, नीचे के होठ पर फुंसियाँ हो, ठोडी पर ऐसी फुंसियाँ जो छूने से जलन करें। ऊपर का होठ सूखा हो। खाल पर से छिलका उतरता हो। मिर्ची की सी चुनचुनाहट जान पडती हो। रात को मुँह के किनारे मे जलन हो। खाना खाने के बाद चेहरे पर पसीना आ जाय।

दांत:—दांतो मे दर्द, जो ठंडे पानी, ठंडी हवा, और तमाखू पीने से कम हो, और गरम चीजें खाने से ज्यादा हो। ऊपर के मसूडो मे फलके हो, आग की तरह जलें, और मवाद बहे। नीचे के मसूडे पर हिलनेवाली और दर्द न करनेवाली रसौली हो। दांतो मे उछलनेवाला दर्द हो, और गर्म चीज पीने से विशेष हो।

मुँह:—मुँह का जायका कडुआ हो। जुबान की जड पर मैला भुरा गिलाफ हो। मुँह मे सदा चिपकनेवाला, गाढा, हरियाली लिये हुए सफेद थूक भरा रहता हो। जुबान के ऊपर जलन और डक से दर्द करनेवाले छाले हो। गालो के भीतर भी ऐसा ही हो। जुबान की नोक पर जलन हो। जबान की जड पर मैला, हरा खाकी या पीला खाकी गिलाफ हो। जुबान और मुँह सूखा हो। स्वाद का ज्ञान न

रहे। खाने के पीछे बहुत थूक बहे। खाँसने से गाढा, चिपकनेवाला सफ़ेद थूक निकले। मसूडे सुर्ख हो। हलक और मुँह सुन्न और खुरदरा जान पडे। भीतर मुँह छूने से दुखे, तालू में ज़ख़्म हो। चलने से गला भिंचे, गला सूख जाय, पर प्यास न हो। निगलने में कठिनता जान पडे। सवेरे नमकीन खखार निकले। नकुओं से गाढ़ा पीला मवाद टपके, रात को विशेषता हो। नींद उचट जाय, गले में से मवाद थूकने के लिये उठना पडे। हलक के भीतर चीरने या सुई चुभाने का सा दर्द हो। हलक़ में ज़ख़्म हो, गाढ़ी चीज गले में अटके। हलक के भीतर की गिल्टियाँ और कौए में सोजिश हो, निगलने से दिक्कत हो, गले की गिल्टियों पर व्रण हो। ठंडे पानी के लिये बडी प्यास लगती हो। प्यास तो हो, पर पीने को मन न करे।

छाती:—बच्चों को तर दमा हो, जिसकी बारी बरसात से आने या जुकाम के साथ हो, तर दमा जिसमें छाती के भीतर बहुत गरगर होती हो, दम घुटता है, विशेषकर बरसात में, ज़ोर से बारी आती है और बहुत सा मवाद हरे रंग का पीप मिला हुआ निकलता है। वर्षा में अधिकता होती है। काम करने से ज्यादा होता है। जब बारी नहीं होती, हवा की नालियाँ बोला करती हैं। खाने के पीछे उलटी होना और सवेरे पतले दस्त होना। लंबी सांस लेने की इच्छा बनी रहना, परंतु ऐसा करने में दाहिनी तरफ छाती में कष्ट होना। फिर बाईं तरफ भी ऐसा ही बोध होना। सांस लेने में इतना कष्ट हो कि आँखें निकली आवें। घर के दरवाजे और खिडकियाँ खोलनी पडें। जब आंधी चल कर बादल गरजे, मेह पडे, उसी समय ऐसा विशेष हो। बाएं फेफडे के निचले भाग में सोजिश हो। खांसते में छाती अधिक दर्द करे। रोगी बैठ कर दोनों हाथों से छाती को सुहरावे, तब आराम आवे। "डिफथेरिया" का रोग जिसमें हरे पानी की कै हो।

आमाशय:—मांस और रोटी अच्छी न लगे। "बीयर" पान करने की बडी अभिलाषा हो। शाम को बहुत प्यास लगे। ठंडी चीजें खाने पीने, सब्जी और फल व्यवहार करने से दस्त लग जाय। खाना खाने से पहिले उबकाई आवे। हरा पानी उलटना या खट्टी आलाइश निकलना, पेट में दर्द अनुभव करना। खाना खाने के पीछे हिचकी आना और शाम को भी। हमेशा जी बिगडा रहे। पित्त की उलटी होना, और मुँह का कडुआ, खट्टा सा बना रहना। घुमेर और शिर दर्द, आमाशय के विकार के साथ ही साथ तेजाबी क़ैफियत रहना। सुबह उठने के पीछे पेट में जलन होना, और नोचने का सा ज्ञान होना। सुबह का खाना खा लेने के पीछे आराम जान पडना। पेट का फूल जाना और भारी सा रहना। कडुई अथवा फीकी डकारों का दिन में खाना खाने के पीछे आना। पेट में चोट सी लगना, जी

मितलाना, मुँह मे पित्त का स्वाद बना रहना। पेट मे घाव होना। खाना खाने के पीछे किसी खास जगह दर्द होना। जिगर मे ऐसा दर्द होना मानो वह फट जायगा। जिगर के स्थान का दुखना और कटा सा जाना। बाईं तरफ की करवट से सोने मे विशेष होना। जिगर के स्थान पर सूजन जान पड़ना, छूने से दुखना, और गुड़-गुड़ाने से, लंबी सांस लेने से जिगर मे पीडा होना। कमर मे तंग कपडा न सह सकना। निचली पसली से ऊपर के स्थान मे दर्द होना। खुली हवा मे फिरने से बाईं ओर दर्द होना। पीलिया रोग, पित्त के कारण शूल, पित्त की कै, चिडचिडाने के कारण कडुआ कफ, कामला होना। विशेष पढने अथवा मानसिक परिश्रम करने से जिगर मे जलन सी जान पड़ना। पेट मे दबाने और जलन होने का सा दर्द होना। दर्द का छाती तक जाना। मास घुटना और दस्त लग जाना। पेट मे ऐंठन और मालिश करने से आराम आना। धीमा और भारी भारी काटने का सा दर्द पेट मे से उठ कर पीठ की ओर जाना। पेट फूलना और गडगड़ाना। पेट मे ऐसा दर्द जो पीठ की ओर जान पडे, मानो चोट लगी है और थकावट का अनुभव हो। आतों मे चोट लगने का सा दर्द होना। दाहिनी जंघा में से दर्द होकर सब शरीर मे फैलना। रात को नाभी के चतुर्दिक फाडने का सा दर्द होना। पेट मे बडी गडगड़ा-हट होकर बदबूदार वायु का निकलना। बाईं जंघा मे से बगल तक दर्द होना। नीचे की आतों मे गर्मी सी जान पडना, हरे रंग के पित्त मिले दस्त होना। दाहिनी ओर पेट फूला जान पडना। सीने के विशेष कारण पेट मे दर्द (इसमे औषधि कई बार और हलका "ट्रिचुरेशन्स्" देना चाहिये।) जी मितलाना और दाहिनी ओर छेदने का सा दर्द होना। चर्बी का विकार पेट मे होना। शराबियों को कमज़ोरी और बदहजमी का पाया जाना।

मलाशय:—कब्ज, पाखाना जाने पीछे। जलन और चबक मलद्वार की खुजली, जैसा कीडो से। मलद्वार और जाघों पर गाठदार गिल्टियाँ निकलना। काच निकलना। दस्त होने मे कुछ दर्द। दस्त हो जाने के पीछे दर्द मे आराम। आतो मे सर्वदा बेचैनी सी रहना तथा दस्त जाने की इच्छा बनी रहना।

दस्त:—सबेरे बिस्तर मे से उठने पर चलने, फिरने उपरान्त पित्त भरे काले हरियाले रंग के दस्त होना। बिना दर्द हुए दस्त लगना, पहिले वायु सरना। दस्तो का रंग पीला, मटीला होना, दस्त पतला और थोडी मात्रा मे होना। बर-सात मे अथवा भीगी जगह में काम करने के कारण सबेरे बिस्तर से उठते समय खडे होते ही अचानक ज़ोर से दस्त लगना और वायु सरना। टट्टी जाने के पहिले पेट मे और जंघाओ मे नोंचने का सा दर्द होना। दस्त अपने आप निकल जाना, नर्म होना, परन्तु कठिनता से निकलना। वायु सरने की आवश्यकता हुआ करती

है। परतु कभी कभी साथ ही दस्त भी निकल जाता हो। "टाइफ़स्" रोग में दस्त लगना। बच्चो के दस्त पुराने पड जाना। खानदानी दस्त बुढ़ियाओं को लगना।

मूत्रेन्द्रियः—"नेट्रम् सल्फ्यूरीकम्," "साइकोसिस" चर्म रोग मे यदि "काडीलोमेटा" विकार ही साथ ही साथ हो, तो यह औषधि गुण करती है। पेशाव के रहते समय कमर मे दर्द होना। पेशाव मे पित्त होना, रेत होना, ईट का सा चूर्ण अथवा रेत का जमना। सवेरे के पेशाव मे पीला या सफेद तहनशीन होना। पेशाव मे पीप या मवाद होना। पेशाव करने के पहिले और पीछे दर्द जान पडना। बार बार मूतना। (बहुत मूत्र की खास दवाई) दोनों जवाओं में दर्द मूतने की अभिलाषा के साथ होना, ऐसा दुपहर पीछे होना, जबकि बाहर चलना पडे। बहु-मूत्र, रात को बहुत मूतना। "गौट" (नकरस) के रोगियो के पेशाव मे पत्थर का चूर्ण (लिथिक) जमना। पुराना सुज़ाक, जिसमे हरे रंग का पीला और गाढा मवाद निकले, दर्द न हो। जननेन्द्रिय मे खुजली चले। लिंगेन्द्रिय का सिरा खुजावे, फोतो में खुजली हो। मलद्वार और फोतो के मध्य मे तथा पेडू मे खुजली चले। फोते और फूचट मे सूजन हो। "प्रोस्टेट्" नाम की गिल्टी सूज गई हो। फोतो मे पानी हो। (औषधि को लगाना भी चाहिये और खिलाना भी चाहिये।) स्त्रियों को प्रातःकाल दस्त लगे, पेट मे दर्द और कब्ज़ हो साथ ही प्रदर का व मासिक धर्म का बहुत सा मवाद जलन करता हुआ निकले। बच्चे जनने के पीछे प्रदर रोग हो जाय। चलने में मासिक धर्म होना। ऋतुकाल से पहिले नकसीर फूटना। पेट मे दर्द तथा ठहर कर और अल्प मात्रा मे मासिक रुधिर होना। देर मे ऋतुधर्म होना, और रुधिर ऐसा तेज हो कि जाघे छिल सी जाँय, दस्त भी लग जाय। दस्त गुठली सा हो, और थोडा तथा रुधिर का रग ऊपर लगा हुआ हो। सवेरे कै होती हो, मुँह का जाइक़ा कडुआ हो, और कै मे कडुआ पानी का सा निकले। बच्चा जनने के कई सप्ताह पीछे ज़ोर का बुखार चढे, जिससे बड़ी कमजोरी हो जाय, बेचैनी हो। नींद न आती हो। भूख मारी गई हो, मुँह का ज़ाइका बिगड गया हो, प्यास हो। जीभ लाल पड गई हो, शिर मे दर्द हो। प्रसव के बाद पैर का सूजना।

पीठः—कपडा खोलने के पीछे पीठ खुजाती हो। बहुत दिन से गले की गिल्टियाँ सूज गयी हो। घेघा हो। गर्दन के पीछे बहुत दर्द रहा करता हो। कधो के पीछेवाली हड्डियो के मध्य तथा चूतडो के मध्य की हड्डी मे छेदने का सा दर्द हो। रात को पीठ मे बहुत दर्द हो। रीढ मे विकार होने के कारण गर्दन का पीछे मुड जाना और रीढ़ का ऐठना (इसके लिये खास दवाई है), रीढ और गर्दन मे दर्द होना।

हाथ पैर:—बाजू और हाथ मे चीटी सी चलना और उनका शून्य सा जान पडना। बाजू पर और बगल के नज़दीक फुंसियाँ होना। गठिया का दर्द विशेषकर उंगलियो के जोडो मे। दर्द दिल तक पहुँचता है। बाई ओर की बगल, बाजू की हड्डी, हाथ के पीछे हथेली से, उंगलियो और नाखूनो मे कील ठोकने का सा दर्द होता है। बगल की गिल्टियाँ सूज जाती हैं, पीप पड जाती है, और उंगलियो का भी यही हाल होता है। उंगलियाँ अकड़ जाती है, सूज जाती है, पजा निर्बल पड जाता है। कोई चीज पकडने मे दर्द होता है। जगने पर और लिखते समय उंगलियाँ कापती हैं। हथेली दुखती है, लाल पड जाती है, उनमे से पानी सा रिसता है। नाखूनो की जड़ो में घाव और दर्द होता है। अंगूठे और पहिली उंगली के बीच मे फलके पडे हो। गरमी के पीछे दोनो जाघो पर अन्दर की ओर भूरे रंग के धब्बे हो, तलुए जलते हो और जलन घुटनो तक जान पडती हो। रात को पैरो मे सूखी हरारत जान पडती हो। पैर की उंगलियाँ खुजाती हो। हाथ पैरो पर सूजन हो, पैरो मे गठिया का दर्द हो, कूल्हे मे दर्द हो, और घुटने तक फैलता हो। घुटने अकड गये हो, और जोड चलने में चिडचिडाते हो। बाये कूल्हे मे दर्द हो, और सीढी पर चढ़ना अथवा बैठना, उठना कठिन हो जाय। रात मे आँखे खुल जायँ। अचानक दर्द हो और अचानक चला जाय। गिरने से बायें कूल्हे मे चोट आई हो, और संगीन मारने का सा दर्द हो। जाघ और टागे थकी सी और कमजोर जान पडे। टाग की नस का दर्द, जो बैठने से, उठने मे, सोते हुए करवट बदलने मे होता हो, और किसी तरह आराम न होता हो। बाजुओ पर और जाघो के बीच मस्से से निकले। सोते मे हाथ पैर फडके, थकावट मालूम हो, विशेषकर घुटनो के पास पैरों मे दर्द होने के कारण बार बार आसन बदलना पडे। हाथ पैर कापे, कब्ज़ रहे, बाई तरफ को शरीर ऐठे, दाहिनी तरफ को ऐंठे, तीसरे पहर को मुँह ऐठ जाय। (रोगी को शराब न पीनी चाहिये।)

निद्रा:—उनीदापन और थकावट। पित्त बढने के लक्षण, पश्चात पीलिया रोग का हो जाना। सवेरे सुस्त सोता हुआ सा और मूर्ख सा जान पडना, शाम को सचेत रहना। बहुत स्वप्न देखना, जिनके बोझ और चिन्ताओ से नींद न आना। रात को बेखबर जगना, पित्त की अधिकता होना। सोते हुए डर कर चौंक पडना और फिर सो जाना। स्वप्न मे उड़ना, पानी की बढवारी देखना और उसमें डूब जाना। स्वप्न मे गाली सुनना और लडना। स्वप्न मे किसी लडती हुई जगह मे शामिल हो जाना। पेट मे फूल और दर्द होकर जग पडना।

ज्वर:—बारी का बुखार, साथ ही जिगर की खराबी, पीलिया रोग और पित्त के कारण दस्त लगना। बरसात के दिनो में जूडी आना, पित्त की कै करना, जिसमें

भूरे, काले रंग का द्रव जाना। मुँह कडुआ होना। भीतर ठंड लगना ऊपर चमड़ी गर्म जान पडना। बगैर प्यास पसीना आना, शाम को जाड़ा लगना, और बुखार आना। बरफ के मानिन्द, ठंडे हाथ पैर पड़ कर जाड़ा चढ़ना, कंपकंपी लगना और बुखार आना, जमुहाना और अकड़ना, तथा जाड़ा बोध रहना, [illegible] में जाड़ा लगना। मलेरिया ज्वर के लक्षण होना। पित्त के कारण ज्वर रहना और पीत ज्वर होना; विशेषकर जबकि जुबान मैली हो और उसके ऊपर हरा या भूरा गिलाफ हो।

चमड़ाः—ये सब चर्म रोग, जिनमे पानीदार फुन्सी हो, जो कि पित्त की अधिकता के कारण हुआ करती हैं, और पीला मवाद निकलता है। आँख, शिर की खाल, चेहरा, छाती, और मलद्वार पर मसे निकलने का सन्देह हो। हर बसन्त ऋतु में निकलनेवाली फुंसियाँ, पित्त की अधिकता से बच्चों के शरीर में खुजली चलना, चमड़े के ऊपर पीले रंग के तर खुरंड और छिलके होना। चमड़े पर सोजिश होना, और पीला सा पानी निकलना, चिकना, लाल, चमकदार, और दर्द करने वाला चमड़ा "विसर्प" रोग के कारण हो जाना। कपड़े उतारते समय शरीर में खुजली उठना। पुराने नासूरदार फोड़ों में से पतली पीप निकलना, नाखूनों की जड़ मे पीप पड़ना, मस्से होना। (चमड़े की बीमारियों मे यह दवाई हलके "ट्रिचूरेशन्" मे देनी चाहिये।)

सिलीसिया (Silicea)

यह एक पत्थर की किस्म की चीज है। मनुष्य के शरीर मे यह क्या कार्य करती है, सो अभी तक निश्चय नहीं हुआ। जीवन रसायन शास्त्रज्ञ कहते हैं कि यह बाल, नाखून, चमड़ा, हड्डी के ऊपर की झिल्ली और ज्ञानतन्तुओं के पटे और हड्डी मे पाया जाता है। यह औषधि इन हालतों मे दी जाती है, जबकि कहीं पीप पड़ गई हो और शारीरिक क्रिया मवाद के निकलने की चेष्टा कर रही हो। जब कही सूजन हो, तो पहिले दर्जे मे "फेरम् फासफोरीकम्" और "काली मुरीयाटीकम्" देना चाहिये, परतु जब इनसे सोजिश न रुके, तो "सिलीसिया" का व्यवहार करना चाहिये। मेरा ख़याल है कि "सिलीसिया" के दाने तेज किनारे के होते हैं, और मुर्दार मवाद के निकालने मे अन्दर से चमडे वगैरह को काट कर छुरी का काम करते है। परतु इसकी सहायक शारीरिक क्रिया ही होनी चाहिये। जबकि शरीर मे "सिलीसिया" उचित मात्रा में वर्तमान है, तो पीप पड़ने का काम ठीक दशा पर रहता है; परंतु जब उसमे कमी होती है, तो मवाद बनने का काम रुक जाता है। दर्द और सूजन बनी रहती है। मवाद बाहर नहीं आ सकता। "कारबंकल्" अर्थात दुष्ट फोडों में सूजन और दर्द का रहना और पीप न पडना यही कारण है। दिमाग़ की झिल्लियों मे, जोकि छोटे बडे दिमाग के दर्मियान है, "सिलीलिया" की कमी हो जाती है। तब मनुष्य की विचारशक्ति घट जाती है, क्योंकि "सिलीसिया" की कमी से दिमाग अपने विचार बाहर नहीं पहुचा सकता, जब "सिलीसिया" का उपयोग किया जाता है, तो फिर खयालात ठीक हो जाते है।

यह औषधि "ट्रिचूरेशन्" की रीति से ६X, १२X और ३०X की ताकत की तैयार की जाती है।

विशेष लक्षण:—शिर पर बहुत बदबूदार पसीना आना, विशेषकर बच्चो मे। हाथ लगाने से दर्द होना, अधिकतर शरीर के एक ओर होता है, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता पाई जाती है। रोग की शिकायत रात को अधिक होती है। अमावस के, अकसर पूर्णमासी के दिन भी, खुली हवा मे, सर्दी से, पैरो मे पसीना न आने से, चलने फिरने से रोग बढता है। दबाने से, शोर गुल से और रोशनी से तबीअत घबडाती है। गर्मी और हरारत से बहुत आराम आता है।

नोट:—डाक्टर केरी ने औषधि का जो वर्णन लिखा है, उसीके अनुसार अधिकतर वृत्तान्त इस पुस्तक मे दिया गया है।

योग्य लक्षण और सूचना

मानसिक लक्षण:—चिन्ता, उद्विग्न, बेचैनी, दुर्वलता होना, लेटने को मन करना, सोच न सकना, लिखने पढने से थक जाना, शीघ्र निरास हो जाना, चित्त गिरा हुआ रहना, जिन्दगी अच्छी न लगना। रोगी चेष्टा करके सभलता है, परंतु फिर थक जाता है, आराम नही पाता। दिमाग की कमजोरी।

शिर:—रीढ की खराबी से शिर मे दर्द, विद्यार्थियो और इन्तज़ाम करनेवाली स्त्रियो तथा बुरे खयालवाले मनुष्यो मे शिर दर्द हुआ करता है। गर्दन के पीछे से शुरू होकर खोपडी पर होता हुआ, शिर के सामने होकर आँख मे पहुँचता है। विशेषकर दाहिनी आँख मे। शोर, रोशनी, हरकत, पठन-पाठन, शिर खोलने और हवा का झोका लगने से बढता है। शिर लपेट लेने से गर्मी और दबाव पहुँचने के कारण आराम आता है। सोते सोते रात को चलना, सोते हुए उठ बैठना, चलना फिरना और फिर सो जाना, ये भी लक्षण हैं।

शिर पर पसीना आना (केलकेरिया फासफोरीका), बच्चो का शिर बहुत बडा होना, **खोपड़ी की खाल का छूने से दुखना**, खोपडी के ऊपर मटर के दानो के समान छोटी छोटी गांठ निकलना। दर्द करनेवाली फुंसियाँ, जिनसे गाढा, पीला मवाद निकलना, शिर के बाल झडना, रीढ की कमजोरी से शिर चकराना, पीठ से चक्कर उठ कर सर तक जाना, और ऐसा मालूम होना कि वह आगे गिर पडेगा, ऊपर की तरफ देखने से चक्कर आना।

आँखें:—गुहेरी होना, आँखो मे से मवाद आना, आँसू की नली का बहना (इस नासूर के लिये यह ख़ास दवा है)। पलको मे से गाढा, पीला मवाद ख़ारिज होना। आँखों के चारो ओर फोडा, फुसी होना, **पैरो का पसीना रुकने या फुंसियाँ बन्द हो जाने से मोतियाबिंद होना**। आँख के पर्दे मे व्रण, माता निकलने के पीछे आँख मे सफेदी आ जाना। दाहिनी आँख मे टीस होना। आँख के डेलो मे दबाव सा जान पडना और दुखना। आँख की हड्डियो मे नासूर होना। पढते समय अक्षरों का आपस मे मिल जाना।

कान:—**गाढ़ा, पीला मवाद निकलना**, कम सुनना, कान मे तरह तरह की आवाज़ आना, जैसे भिनभिनाहट, फट्ट फट्ट, चुहचुहाना आदि ऐसा जान पड़ना। मानो कानो मे रुई ठूस दी है। आवाज बहुत तेज सुनाई देना। नहाने के पीछे कान मे सोज़िश होना, गले मे खुलनेवाली कान की नाली का सूजना और बहना। कान के चारो ओर फोडे और गिल्टियो का होना। बहिरा होना और कभी कभी

भारी शब्द होकर कान का खुल जाना। डाक्टर केरी कहते हैं कि इस औषधि से रोज़ पिचकारी करनी चाहिये।

नाकः—नाक बहना और गाढे, पीले, बदबूदार मवाद का निकलना। नाक में व्रण होना, नकुओं के किनारों पर फुंसियाँ होना। दुखना और खुश्की रहना, बहुत खुजली चलना, नाक की नोक का सुर्ख रहना और इतना खुजाना कि सहा न जाय, नाक की हड्डियों पर व्रण होना, बदबूदार मवाद निकलना और जुकाम के साथ छींकें चलना।

चेहराः—फीका, मटीला, चेहरे पर फोडे, फुंसी, व्रण, और गाठे, चेहरे की हड्डियों में व्रण, और उनसे गाढे पीले, बदबूदार मवाद का निकलना, होठों पर गाठे उठना "ल्यूपस्" रोग का होना।

मुँहः—गिल्टियों में पीप पडना और मवाद बहना। मुँह के कोनों पर व्रण, ज़बान पर व्रण, जुबान पर बाल होने का खयाल।

दांतः—दांत की जड में पीप पडना, नासूर होना, ऐसा दर्द, जो रात को बहुत बढे, पैरों में ठंड लगने और पसीना रुकने के कारण हुआ हो, दांत उखाडने के पीछे आराम मिले, सेकने या ठंड पहुंचाने से कुछ न हो, बच्चों के दांत निकलने में तकलीफ, जबडे पर मसूडे में फोडा और व्रण, मसूडों का दुखना और छाले होना।

हलक़ः—गले की गिल्टियाँ सूज गई हों, फोडा होकर पीप न बन्द होती हो, "थाईरोइड्" नाम की गिल्टी बढ गई हो। घाव में से गाढा, पीला मवाद निकलता हो। सांस रुकती हो और सांस लेने के लिये बाहर हवा में जाना पडता हो।

खांसीः—ठंडी चीजें पीने से अधिक होती हो। बलगम बदबूदार हो।

छातीः—फेफडे के फोडों में "निमोनिया" में जब पीप पड जाय, जब बलगम गाढे, पीले या हरे रंग का, पीला, बहुत सा निकलता हो। रोज शाम को बुखार हो जाता हो। बडी कमजोरी और रात को बहुत पसीना हो। इन सब लक्षणों के साथ क्षयी रोग हो। पुरानी खांसी।

आमाशयः—बडी कमजोरी, जिसके दूर करने के लिये भोजन की इच्छा होना। न खाने से कमजोरी बढ़ना। पुरानी बदहज़मी, खट्टी डकारें आना, दिल जलना, ठंड लगना। भोजन से घृणा, क्षुधा नष्ट होना, अल्पाहार से तृप्ति, बच्चों को कुछ खिलाने से कै कर देना, शराब मुआफिक न आना, बच्चों के पेट बढ़ते जाना।

कब्जः—मासिक-धर्म से पहिले और मध्य में। मलाशय के काम न करने के कारण दस्त न होना। मलाशय में सख़्त सुद्दे रह जाना। दस्त होते होते

मलद्वार का रुक जाना। दस्त का बाहर आ कर फिर लौट जाना, मलद्वार में नासूर होना। बहुत दर्द करनेवाली बवासीर और साथ ही छाती में रोग होना।

दस्तः—गाढे, पीले, बदबूदार, मवाद समेत दस्त होना। बच्चों को चेचक का टीका लगाने के पीछे दस्त लगना, पेट फूलना, सख्त होना, गरम लगना, शिर पर खट्टा पसीना आना, पेट फूलना, कीड़ों के कारण पेट में दर्द होना।

मूत्रेन्द्रियः—गुर्दों में पीप पडना, पेशाब में पीप मिली होना। लाल रेत "यूरिक एसिड्" का तहनशीन हो जाना। पुराना उपदंश "प्रोस्टेट्" गिल्टियों की सोजिश, फोतों में पानी उतरना, पुराना सुजाक, जिसमें पीला, गाढा मवाद निकलना, मलद्वार खुजाना और बहुत पसीना आना, वीर्यपात होना। ठंडे पानी में खडे रहने के कारण ऋतुकाल का नियम से न होना। बदबूदार रुधिर निकलना, कब्ज रहना, बर्फ से ठंडे पैर और दुर्गन्धित पसीना। ऋतुधर्म नियमित समय से पहले, लेकिन थोडा, एक एक बार ज्यादा भी। बन्ध्या दोष, भिटनी फनेल की शकल में हो जाना, स्तनों में गाँठे पड़ना और पीप पडने का डर रहना, स्तनों में सोजिश होना, कुचाग्र का तडक जाना और घायल हो जाना, एडी दुखने के कारण गर्भकाल में लगडापन। श्वेतप्रदर में बदबूदार, गाढा, पीला मवाद आना, तेज और खुजली पैदा करनेवाले पानी का अधिक मात्रा में जाना।

हाथ पैरः—हाथों, उंगलियों और पैरों से बदबूदार पसीना निकलना, अधिक मात्रा में पैरों से पसीना निकलना और बुरी बास करना, कूल्हे के जोड में बीमारी होना, घुटने दुखना, हड्डी गलना और पतली पीप के साथ हड्डी के टुकडे निकलना, हड्डी के ऊपर की झिल्ली में सोजिश होना और दुखना। हड्डियों का सूजना, सडना, कन्धों के बीच में दर्द होना, लिखते में हाथ कंपना। उंगलियों के नाखूनों का मास की ओर बढना। घुटने का सूज जाना और अकड जाना। गहरे घाव, जिनमें से बदबूदार, गाढे, पीले मवाद का निकलना, "पौट्" साहिब की बीमारियाँ, कंठमाला के रोगवाले बच्चों में चलने की शक्ति देर में होना। हाथ पैर थके रहना, दूर चलने से पैर और उंगलियों का कापना, हाथ पैरों में सख्त दर्द होना, जोड़ों का चटखना, दर्द करना, रीढ के रोग के कारण फालिज के से लक्षण होना। कुबडा होना। हड्डियों का दुखना।

मांसपेशी और ज्ञानतन्तुः—छुरी चलाने, फाडने या चोट लगने का सा दर्द जोडों तक में होना, विशेषकर शाम को यह दर्द होता है, चलने, ताजी हवा लगने और मौसिम बदलने से विशेषता होती है। इसको न गर्मी से आराम आता है, न सर्दी से। सूतिकोन्माद की बीमारी और शरीर के जिन स्थानों में टीस का दर्द होता है और दुःखित स्थान ठंडे जान पडते हैं। तरी नहीं सही जाती। जरा कारण होने से ऐंठन शुरू हो जाती है। कमजोरी बढ कर लेटने को दिल करता है।

मृगी:—जबकि रात को बारी आती हो। अमावस के समय जुबान पर बाल का खयाल होता है, रीढ बीच में से दुखती है. रीढ में सोजिश और दर्द होता है। शरीर के मुख्तलिफ स्थानों में दर्द होता हो।

चमड़ा:—गुहेरी, फोड़े, नाखून के नीचे का फोड़ा, घाव, रीढ पर का दुष्ट फोडा, मवाद, बदबूदार, गाढा और पीला, नाखून टूटे हुए और उंगलियों पर सफेद धब्बे, और हड्डियों पर गांठ। चमडे की ऐसी दशा कि फौरन व्रण पड जाय, पीप बहने लगे और मुश्किल से अच्छा हो, तो सिलीका से फ़ायदा होता है। "केल्केरिया सल्फूरिका" से पीप बंद हो जाती है, और अंकुर आ जाता है, 'सिलीका' में नीचे की ताक़तवाली दवा से पीप पड जाती है और उच्च ताकतवाली (३०)में रुक जाती है। दुष्ट फोडा, साधारण फोड़ा, और नाखून के नीचे का फोड़ा, इसके प्रयोग से जज्ब हो जाता है। कंठमाला और गरमी के कारण जो बहुत सी बीमारी होती हैं, जबकि चमडा फट जाता है। गाढा, पीला मवाद निकलता है। बहुत तकलीफ और घाव होते हैं। लाल धब्बों के ऊपर साफ पानी की फुंसी हो जाती है। दाद और टक पड जाती हैं। इन सब में सिलीसिया से फायदा होता है। घातक घाव और रसौलियों में इसके व्यवहार से दर्द को बहुत आराम होता है। कोढ में नाक के घावों के लिये, गाठों के लिये और तांबे के रंगों के धब्बों के लिये देते हैं। बिगडे हुए टीके को फायदा करता है (काली मुरीयाटीकम्।)

गिल्टियाँ:—स्तन, थूक की गिल्टियाँ, गर्दन की गिल्टियाँ, रान की गिल्टियाँ, इनकी बीमारियों में, सोजिश, सूजन, पीप पडने में, कान के नीचे की गिल्टियाँ, कंठमाला और अन्य गिल्टियों की बढवारी में देते है।

ज्वर:—रात को बहुत पसीना आना, भूख न लगना, क्षयी रोग की कमजोरी, पैरों से बदबूदार पसीना आना, ठंडी हवा का सहा न जाना, तीसरे पहर गर्मी लगना, रात भर पैरों का जलना, शिर पर बहुत पसीना आना।

निद्रा:—नींद न आना, बुरे और डरावने सपने देखना, हाथ पैरों का फडकना, दिन में नींद आना, दिल धडकना, सोते में नब्ज का तेज चलना, सोते में बातें करना।



ताज़ा, विश्वासनीय

शुस्लर साहिब की बारह दवाइयाँ

किफ़ायती भाव से! सस्ते भाव से!!

मिलने का पता :—

होमियोपेथिक पूअर डिस्पेन्सरी,

कन्कनाडी, साऊथ इंडिया ।

नोटः—इन दवाइयो को बेचने के वास्ते हमारे एजन्टस नही है ।

SECOND PART

TREATMENT OF DISEASES

WITH THE

TWELVE TISSUE REMEDIES

बारह दवाइयों के द्वारा रोगों की चिकित्सा

अरुचि (भूख मर जाना) Loss of Appetite

फेरम फ़ास—भूख न लगना, थोडा बुख़ार रहना।

नेट्रम फ़ास—भूख न हो, तेज़ावी कैफियत हो, खट्टी डकार आवे, जुबान के पीछे के हिस्से में पीला, चिकना गिलाफ हो। दिल जला हो।

केल्केरिया फ़ास—भूख न लगे, जब पचन-शक्ति कम हो। भूख बढ़ाने के लिये बहुत अच्छी दवाई है। विशेषकर फीके रुधिरवाले आदमियों में।

काली फ़ास—"टाइफाइड" बुख़ार के पीछे बहुत भूख लगना अथवा अन्य कठिन रोगों के अच्छा होने पीछे, जिनमें रुधिर फीका पड़ गया हो। खाना खा चुकने पर भी भूख लगा रहना, पेट रिक्त सा मालूम होना।

सूचना

जब रोगी की तबीअत खाना नहीं मांगती हो, तो जबरदस्ती खाना मत दो। भूख पैदा करने की कोशिश करो। बिना भूख के खाना खिलाना बीमारी बढ़ाना है। बहुत समय की बीमारी के पीछे जब ज़ोर की भूख लगे, तब थोडा थोडा खाना देने में हर्ज नहीं है। ग्रंथकर्ता ने "टाइफाइड" बुख़ार के ऐसे केसों का इलाज किया है, जिनमें एक खीरा खाने की इच्छा रखता था, दूसरा अंगूर और नासपाती

चाहता था, दिन में इनको १०, २० दस्त हो जाते थे। इनको भी यह चीज मिलने से नुकसान नहीं पहुचा, अच्छे हो गये। परतु इस बात की जांच कर लेनी चाहिये कि भूख सच्ची है या झूठी, जब तक सच्ची भूख न हो, तब तक अधिक खाना दे कर पचन-शक्ति नष्ट न करना चाहिये।

भूख मारे जाने की दशा मे "फेरम फास्फोरीकम" का व्यवहार:—जबकि एकदम मरने का सा सकट हो, कै हुआ करती हो, यहा तक कि सोते सोते भी कै हो जाती हो। भूख कम लगना। "फेरम फास्फोरीकम" का ३X की मात्रा में व्यवहार करने से रोग चला जाता है, भूख लगने लगती है।

अंड की सूजन Orchitis

काली मुर—मुख्य औषधि। मेह सबध से सूजे हो। अन्ड सूजे हो।

फेरम फास—सूजन की दशा मे, ज्वर गर्मी, और दर्द हो।

केल्केरिया फ्लोर—अन्ड जब बडे हो गये हो।

नेट्रम मुर—फोते सूजे हो (नेट्रम सल्फ) के साथ। अन्ड में दर्द हो, फोते मे खुजली हो।

केल्केरिया फास—पुराना दर्जा हो, सब बीमारियो मे फायदा। बाहर भी औषधियो का व्यवहार करो।

असबी दर्द

(टीस देखो)

आमातिसार

(प्रवाहिका देखो)

आंखों की बीमारियां Diseases of the Eye

फेरम फास—आख दुखने के पहिले दर्जे मे सुर्खी और दर्द के लिये दे। जब आखो मे जलन हो। आखो से बहुत काम लेने के कारण डेला दुखता हो। ठडे पानी से आराम आता हो। जब पलको पर रोहे निकल आये हो, तो दवा से दर्द और सोजिश को आराम होता है। जब आखे सुर्ख हो, तब दे।

काली मुर—दूसरे दर्जे मे जब सफेद या भूरा सफेद मवाद निकलता हो। पलको पर सफेद मवाद के चिन्ह हो। पलको पर रोहे हो। आखो मे रेत सा गिरा जान पड़ता हो, "फेरम फास" के साथ बदल कर दे।

काली सल्फ़—सोज़िश के तीसरे दर्जे मे, जबकि पीला या हरा सा मवाद निकले। पलकों पर पीले खुरंड हो।

केल्केरिया सल्फ़—जब सोजिश के साथ गाढा, पीला मवाद हो।

सिलीसिया—जब सोज़िश के साथ गाढा, पीला मवाद "केल्केरिया सल्फ़" के समान गुण करता है, जब गुहेरी हो (इसका भी लोशन लगावे)। जब पलकों के पास फुन्सियाँ, रसौलियाँ हो। पैरो का पसीना रुक जाने से जब नजर कमज़ोर पड गई हो। मोतियाबिंद हो।

नेट्रम फ़ास—जब सोज़िश के साथ सोने का सा पीला, मलाई के समान मवाद निकले। सवेरे पलके जुट जाया करे। ज़ुबान की जड पर मलाई सी जमी हो। कीड़ो के कारण भेंगापन हो। आखे खून की तरह लाल हों। और गरम पानी निकलता हो।

नेट्रम मुर—जब आंखो से पीला मवाद या आसू निकलते हो। मवाद से चमडा लाल पड जाय अथवा छोटी फुन्सियां निकल आवे। आखो में रोहे होने से अन्य औषधियों के साथ बीच बीच मे दे। टीस हो और आंसू बहे, कोर्निया पर छाले हो। मोतियाबिन्द शुरू हो।

काली फ़ास—कठिन रोग की दुर्बलता से जब नज़र कमजोर हो गई हो। जब ज्ञानतन्तु के रोग मे दिखाई न देना हो। पुतलिया पीली हुई हो। "डिफथेरिया" रोग के पीछे पलके उठ न सकती हो, या भेंगापन हो अथवा मास पेशियो की कमजोरी इसका कारण हो। आँख मे रेत पडने का सा जान पडे। डेले मे दर्द हो।

मेगनेशिया फ़ास—पलकें न उठती हो, तो "काली फास" के साथ बदल कर दे। पुतली सिकुडी हो, रोशनी न सुहाती हो, नजर के सामने चिनगारी, चमक और रंग नजर आते हो। आख के ज्ञानतन्तु की कमजोरी से धुंधला दिखाई दे। टीस हो। गरमी से आराम पड़ता हो। आखे खिचती हों, पलक फडकती हो।

केल्केरिया फ़ास—तगनुजी हालत मे "मेगनेशिया फास" के साथ जबकि उससे आराम न होता हो, दे। जिन मनुष्यों का रुधिर फीका पड़ गया है, या कठमाला रोग का विष है, उनकी जब आखे दुखनी आवे, तो और दवाइयो के साथ बीच बीच मे इसको भी दे।

नेट्रम सल्फ़—जिगर मे खराबी आने के कारण जब आखे पीली पड गई हों। और आखो मे दर्द हो, पलकों पर दाने निकले हो।

इनफ्लुएनज़ा

(ज्वर (शीत) देखो)

उदर विकार (बदहज़मी वगैरह)

Stomach Derangements

फेरम फास—पेट मे सोजिश हो, बड़ा दर्द हो, सूजन और छूने से दर्द हो। खाना बिना पचे उलट जाता हो, बदहजमी हो, चेहरा सुर्ख रहता हो। भूख न मालूम हो, पेट फूला हो।

काली मुर—जब पित्त की अधिकता हो, सुबह ज़ुबान सफेद या भूरी सफेद हो, जिगर के मुकाम पर भारीपन जान पड़े, कब्ज हो। घीवाली या मसालेवाली चीज़ खाने के बाद तबीअत बिगड़ती हो। आमाशय शोथ। जिगर काम न करते हो, बदहजमी के साथ कब्ज हो।

नेट्रम फास—मुह का स्वाद खट्टा हो, खट्टी डकारे आती हो, खाना खाने के पीछे पेट मे बहुत दर्द होता हो, दिल जलता हो। भूख मारी गई हो। पेट मे केचुएं हो। ज़ुबान के पीछे पर मलाई सी पीली मैल लगी हो।

केल्केरिया फास—जरा सा खा लेने से ही पेट मे दर्द हुआ करता हो, या ठडे पानी से तकलीफ़ होती हो, आतो मे हवा भरी रहती हो। मुंह का स्वाद सुबह खट्टा हो, नमकीन चीज खाने को मन करे।

काली फास—पेट रीता सा जान पड़े, खाना खा लेने पर भी इच्छा बनी रहे, डरने या उत्तेजित होने से पेट मे दर्द हुआ करता हो। पेट फूलता हो, जिससे दिल मे दर्द और थकावट मालूम पड़े।

काली सल्फ़—पेट भरा हुआ और दबा हुआ सा जान पड़े। पेट मे ऐठन उठे, पेट में पुरानी सोज़िश हो, ज़ुबान चिपकनेवाले पीले रग से रंगी हो। जब मेगनेशिया फास से आराम न मिले।

मेगनेशिया फास—पेट दुखे और ऐठा हो, और ऐसा जान पड़े कि सख्त हो गया है, पेट खाया जाता है, और कटा जाता है, हिचकियां तशन्नुज के रूप से हों। गरम चीज़ से आराम मिले।

नेट्रम सल्फ़—मुह कडुआ रहता हो, पित्त की कै होती हो, काले पित्तवाले दस्त हों, शिर मे दर्द रहता हो, चक्कर आता हो, कमजोरी हो, जिगर दुखता हो। ज़ुबान पर पीली व हरी तह हो।

सूचना

भोजन कूंच कर और अच्छी तरह थूक मिला कर निगलना चाहिये। ठीक वक्त पर धीरे धीरे खाना चाहिये। बहुत ज्यादा न खाय। जो लोग खाना अच्छी तरह से न पचा सके, उनको ताजा बना गोश्त देना चाहिये। सूखी चीजें जैसे-सूखी मछली, सख्त गोश्त, लावन्द कीगे न खाय, ताजी रोटी और काफी भी नहीं खाना चाहिये। शराब न पीये। ताजा पानी फायदेमंद है, मगर थोड़ा पीना ठीक है। मरीज को जल्दी सोना और उठना उचित है। सुबह ठंडे पानी से नहाना चाहिये; टहलना फायदेमंद है। खाना ऐसा खाय, जो हजम हो जाय, और खाना खूब पका होना चाहिये।

बदहज़मी का वर्णन देखो

"नेट्रम फ़ास" खाना खाने के पीछे पेट में जलन होने की दशा में:—

रोगी के पेट में खाना खाने के पीछे बहुत जलन हुआ करती थी और दूसरे वक्त खाना खाने तक रहती थी, खाने से २ घंटे पीछे दर्द बढ़ जाता था, जुबान हलकी भूरी, जाइका मामूली, दस्त मामूली, दबाने से दर्द नहीं, मल मामूली, प्यास नहीं, परंतु जलन इतनी होती थी, रात को नींद न आती थी। "नेट्रम फास" 3X ने आराम कर दिया।

"काली फ़ास" अद्भुत क्षुधा में:—

एक आदमी को बड़ी भूख लगती थी, घंटे घंटे खाता ही रहता था। इतनी भूख लगने पर भी वह थका हुआ और उदास रहता था; साथ में और दूसरे लक्षण कुछ न थे। जुबान साफ थी, पेशाब मामूली था, दस्त मामूली थे। "काली फ़ास" ३X देने से रोगी दो दिन में अच्छा हो गया। (डाक्टर चास मासे)

उदर शूल Colic

मेगनेशिया फ़ास—यह मुख्य औषधि है। बच्चों के पेट में जब शूल हो घुटने पेट में लगा लेते हों। पेट फूलने से दर्द हो, जिसको सेकने और वायु सरने से आराम आता हो। ऐंठन। गरम पानी में देना।

नेट्रम सल्फ़—पित्त के शूल में जबकि पित्त की कै होती हो, मुंह कड़ुआ रहता हो, जुबान की जड़ पर हरी सी भूरी मैल हो, सीसे के विष के कारण दर्द हो, तो १X या २X कभी कभी देना चाहिये।

नेट्रम फ़ास—कीड़ों के कारण बच्चों के पेट में दर्द हो, टट्टी हरी खट्टी बू करती हो, दूध फट कर उलट जाता हो। आम्ल-पित्त हो।

फेरम फास—ऋतुकाल का दर्द, जिसमें हरारत के साथ नब्ज तेज हो। अदल बदल कर मेगनेशिया फास दे।

काली सल्फ—पेट मे दर्द हो, इच्छा हो, पर दस्त न हो। पेट ठंडा रहे, आतो से निकली हुई हवा मे गन्धक की बू आवे। पेट मे दर्द होने के बाद जाडा लगे।

केल्केरिया फास—अगर चिन्ह मेगनेशिया फास बतलावे और देने से फायदा न हो, तो इसे दे। जब बच्चो मे दात निकलता हो।

सूचना

पेट पर गरम फलालेन से आराम आता है। सब्जी, तरकारी और ऐसी चीजे, जो मुआफिक नही आती, न खानी चाहिये। पेट पर फलालेन की पट्टी बाधनी चाहिये और पैरो को भीगने से बचाना चाहिये।

मेगनेशिया फास और नेट्स सल्फ पित्त शूल मे —

एक स्त्री को पित्त शूल था। मुझे रात को बुलाया गया। परतु किसी ख़ास कारण से उस समय नही गया, मुझे विश्वास था कि सवेरे अच्छी हो जायगी। परन्तु उसके पति ने आकर कहा कि उसकी तकलीफ कम नही हुई है, और वह बहुत दु खी है। मैने उसको एक दवाई भेज दी, और कह दिया कि जबतक मै आऊ तबतक दो। ८॥ बजे मैने जाकर देखा, तबतक उसे भारी दर्द था। मैने मालूम किया कि कै मे पित्त गिरा है और मुँह कडुआ है। मेगनेशिया फास और नेट्रम सल्फ अदल बदल कर देना शुरू किया, थोडी ही देर मे स्त्री ने बडा आराम बतलाया, उसे रात के ११ बजे से तकलीफ थी। ५ मिनट मे खुल कर दस्त हुआ। वह अच्छी होने लगी और दूसरे दिन खडी हो गई।

—(रडल्फ वान रूमर, एम० डी०)

उलटी (क़ै) होना Vomiting

फेरम फ़ास—जब बिना पचा खाना कभी कभी खट्टे पानी कै के साथ निकले। मासिक के समय पर सिर के दर्द के साथ कै हो, कै जब खून से मिली हो, और वह खून जल्दी जम जाता हो।

काली मुर—जब कै का मादा गाढा, सफेद या काला और जमे हुए रुधिर का हो। जुबान पर सफेद तह हो।

केल्केरिया फ़ास—अनपची खुराक की कै हो। कभी कभी रात के समय खाने वक्त पर। जो बच्चे ठंडी चीज पीने से अक्सर झट कै कर देते है।

नेट्रम मुर—कै खट्टी, पतली और साफ हो, बदहजमी हो, कै कभी नमकीन हो। कै मुँह में अटके।

काली फ़ास—काफी की तरह कै हो।

नेट्रम फ़ास—दही की तरह खट्टी कै हो, पेट में जलन हो, (दिल में जलन हो।)

नेट्रम सल्फ़—पित्त की कै हो या तेजाबी कैफियत हो।

खुराक

कै के बाद खिलाना बड़ी गलती है। २४ घंटे तक कुछ न दें, अगर तभी तक कै जारी हो गरम पानी या ठंडा पानी बर्फ के साथ या दवा के साथ बहुत कम देना चाहिये। प्यास बुझाने के लिये गरम पानी से कुल्ली करें। बुरी हालत में दूध २ औन्स गरम करके अंडे की सफेदी के साथ आंत में पहुचाई जाय। अगर थकावट हो, तो थोड़ी सी ब्रन्डी दूध में मिला लें और ३ व ४ घंटे बाद पहुचावे।

उल्टी सवेरे Morning Sickness

नेट्रम मुर—जब सवेरे झागदार, पनीला मवाद गिरता हो। मुँह में पानी भरा रहता हो। भूख से पेट खाली सा रहता हो, परन्तु खाया कुछ न जाता हो।

नेट्रम फ़ास—जब सवेरे के समय कै होकर खट्टा माद्दा निकला करता हो।

ऐंठन होना Cramps

मेगनेशिया फ़ास—जब किसी कारण से रोगी का शरीर ऐंठता है, तब यह औषधि ठीक उतरती है, गरम पानी में देना चाहिये, जब रोग कठिन हो, तो कई बार दें। "केल्केरिया फास" का भी इसके समान ही गुण है। जब 'मेगनेशिया' से लाभ न हो, तो केल्केरिया दें, अथवा दोनों को अदल बदल कर दें, जबकि निदान में सन्देह हो।

सूचना

जब रोगी का शरीर ऐंठे, तो ऐंठनेवाले अंग पर खूब दबाव पहुंचावे, अथवा पैर को चारपाई पर दबावे। ऐंठनेवाले शरीर अर्थात हाथ या पैर को खींच कर सीधा रखना बहुत लाभदायक होता है। एक और चिकित्सा है, जिसको किसी बड़े डाक्टर ने निकाला है कि एक ताली को बिस्तर के पाए की ओर रख दें। समझा जाता है कि धातु के असर से ऐंठन रुक जाती है।

कनफेर Mumps

फेरम फास—प्रारंभ में जबकि हरारत, दर्द, सुर्खी, बुखार आदि हों।

काली मुर—सूजन के लिये खास दवा है। "फेरम फास" के साथ बदल कर दे। इससे बहुत से रोगी जल्द अच्छे हो जाते हैं।

नेट्रम मुर—जबकि थूक बहुत निकलता हो, साथ हो अण्ड में सूजन हो।

सूचना

रोगी को गरम कमरे में रखना चाहिये। सूजी हुई गिल्टियों को दिन में कई बार गरम पानी से सेकना चाहिये। ऊपर से रेशमी रूमाल या फलालेन की बेंडेज बधी रखे। पतली खुराक, जो आसानी से निगली जा सके, खानी चाहिये। उत्तेजना का कोई काम न करे, क्योंकि बिलकुल शान्ति पूर्वक रहने से शीघ्र आराम आता है। सर्दी से बचना।

"फेरम फास" और "काली मुर" का कनफेर में प्रयोग—

मैंने पिछले वर्ष कई दर्जन बीमारों की दवाई की। किसी दवाई से इतना फायदा नहीं हुआ। एक रोगी को तीव्र ज्वर था। यहाँ तक कि बकने लगा था; बड़ी सूजन और दर्द था। औषधि प्रयोग से ५, ६ घंटे में बुखार चला गया, और ३, ४ दिन में सूजन और दूसरे लक्षण दूर हो गये। इनमें "फेरम फास" ३X और "काली मुर" ३X अदल बदल कर दिये गये। एक घर में दो और बीमार थे। उनका भी यही हाल था। ऊपर लिखी रीति से चिकित्सा करने में शीघ्र अच्छे हो गये। —(एस० पावैल बराडिक, एम० डी०)

कब्ज़ Constipation

काली मुर—कब्ज़ के साथ हलके रंग के दस्त हों, जुबान सफेद या भूरे से रंग की हो, घी और मसाले की चीज़ें अच्छी न लगती हों।

नेट्रम मुर—आंतों में खुश्की हो, आंखों से पानी बहता हो, कै से पानी गिरता हो, सुस्ती और शिर भारी हो, सख्त मल निकालने में कठिनता हो। टट्टी जाने के बाद गुदा में चीरने का सा दर्द होता हो। झपकी हो।

नेट्रम सल्फ़—जबकि सख्त, गांठदार मल हो, कभी कभी गांठों पर खून लगा हो, नरम मल निकालना कठिन हो। पित्त का उपद्रव हो।

सिलीसिया—जबकि दस्त निकल कर फिर लौट जाता हो, अच्छी तरह पालन न होनेवाले बच्चों में कब्ज़ हो। मलद्वार में खुजली, और चुभती दर्द हो।

केल्केरिया फ्लोर—मल निकालने की ताकत न हो।

काली फ़ास—मल भूरा, पीला या काला हो। नीचे की आंत में फालिज़ हो। दिमागी काम करने में कब्ज़ हो।

नेट्रम फ़ास—बच्चों में कब्ज़ हो और कभी ज्यादा दस्त हो।

सूचना

भोजन नियमित रूप से करना चाहिये; मांस बहुत कम खाना चाहिये। लेकिन पक्के फल और तरकारी खूब खांय, सफेद रोटी से भूरी रोटी अच्छी है। खाना खूब चबा कर खाय। शराब न पिये, मसालेदार चीज़ें और बेवक्त खाना न खाय। सवेरे टहलना अच्छा है। पेट को हाथ से मलने में आराम रहता है। टट्टी ठीक वक्त पर जाय। जब कब्ज़ में मल खुश्क होकर आंतों में जम गया हो, तो गरम पानी की पिचकारी से तत्काल फ़ायदा दरसेगा। यह उपाय औषधियों से अच्छा है, क्योंकि दवाओं से आंतों पर ज़ोर पड़ता है और उनकी हालत बिगड़ जाती है। मछली खा सकते हैं। ज्यादा पानी पीना चाहिये, क्योंकि कब्ज आंतों की खुश्की के कारण होता है।

काली सुर अमीर लोगों के कब्ज में'—

एक आराम-तलब सज्जन, जिनकी उमर ३९ वर्ष की थी, कई हफ्तों से कब्ज की शिकायत करते थे। जबतक पिचकारी या सख्त जुलाब न ले, दस्त न होता था। मल सख्त था और अल्प मात्रा में होता था, निकलना कठिन था। जान पड़ा कि जिगर का विकार है, और पित्त की कमी है। काली सुर ६X १० ग्रेन की पुड़िया हर शाम को दी गई, दूसरे दिन मामूली दस्त हुआ। औषधि जारी रखने से मनमाना नतीजा प्राप्त हुआ।

कमज़ोरी (दुर्बलता) Debility

या तो कठिन रोग से अच्छे होने पर शरीर में दुर्बलता रह जाती है, अथवा कोई जन्म के ही दुर्बल होते हैं। जीव रसायन के अनुसार यह "फास्फरस" की कमी है। इससे रोगी फीका पड़ जाता है और पचन शक्ति बिगड़ी होती है। "केल्केरिया फास" इस रोग की खास औषधि है। और इसी के व्यवहार से रोगी अच्छा हो जाता है। यदि साथ ही ज्ञानतन्तु अथवा मानसिक विकार भी मौजूद हो, तो "काली फास" देना चाहिये। स्त्रियों की रुधिर-हीनता में "नेट्रम सुर" देना चाहिये। यदि पाचन विकार है, तो वैसी चिकित्सा करें। सवेरे ठंडे पानी में नहाना और शरीर को रगड़ कर सुखाना अच्छा है। खाना अच्छा खाना चाहिये। खुली हवा में चलें, फिरें, तथा नियत समय पर टट्टी जाय।

कमर का दर्द Lumbago

केल्केरिया फ़ास—जब जगने पर सवेरे कमर मे दर्द होता हो।

फेरम फ़ास—यह ख़ास दवा है, जबकि ज्वर और दर्द हो, चलने पर दर्द बढ़ता हो।

केल्केरिया फ्लोर—मोच से कमर मे दर्द हो।

नेट्रम फ़ास—जो दर्द सख्त चीज पर लेटने से कम हो। दर्द चोट लगने का सा अधिक देर झुके रहने के कारण होता हो। कमर की कमजोरी हो, विशेषकर सवेरे।

कान के रोग Diseases of the Ear

फेरम फ़ास—जब कान मे सख्त दर्द हो, सेंकने से फायदा होगा। बहुत दिन कान फूला रहने से बहरा हो जाय। कान मे आवाज हो। ज्वर, सूजन और दर्द हो।

काली मुर—कान के दर्द के साथ गिल्टियां या हलक और कान की झिल्लियां सूज रही हो। अन्दर के कान मे से मवाद निकले। बहरापन इसटिशियन टियूब के सूजने मे हो, कान मे सांय सांय की आवाज़ सुनाई दे। कान मे बहुत दिन से सोजिश हो।

मेगनेशिया फ़ास—उत्तेजित होनेवाले चिड़चिड़े और नाज़ुक मिजाज आदमियों के कान में दर्द हो। साथ ही चेहरे मे टीसे चलती हो।

केल्केरिया फ़ास—गठिया दर्द के साथ कान मे दर्द हो, कंठमालावाले बच्चों की गिल्टियां सूजी हो। बहुत दिनो से बच्चो के कान से मवाद निकलता हो और साथ ही दांत भी निकलता हो।

काली फ़ास—आवाज से कान बहरा हो गया हो। कान मे फोड़ा हो और उसमें से बदबूदार मवाद निकलता हो।

काली सल्फ़—कान से पीला हरा समेत पतला मवाद निकले, कान के नीचे सख्त दर्द हो।

सिलीसिया—कम सुनाई दे। बाहर कान सूजा हो। कान में से बदबूदार मवाद निकले।

नेट्रम मुर—कान का छेद सूजने से पतला मवाद निकलता हो, बहरापन हो, क्विनीन खाने के बाद कान मे आवाज हो।

कामला
(जिगर के रोग देखो)

कीड़े होना (पेट में) Worms

नेट्रम फास—सब प्रकार के कीडो मे खास दवाई है। जब बच्चो में तेजाबी कैफियत हो, पेट मे दर्द हो, नाक खुजाते हों, मलद्वार मे खुजली हो, बेचैनी की नींद आवे, दांत पीसे। (३X की ताकत मे देना अच्छा है।)

काली मुर—छोटे सूती कीडे, जिनमें मलद्वार मे खुजली और जुबान की रंगत सफ़ेद होती है, "नेट्रम फास" के साथ बदल कर दे।

केल्केरिया फ्लोर—आतो मे लम्बे, गोल और तानों की तरह कीडे हो। और दर्द भी हो। नींद में बेचैनी हो, मलद्वार में खुजली हो। बच्चे दात पीसते हों। आलपीन के इतने बडे कीडे हो।

सूचना

नेट्रम फास इसके लिये खास दवा है (३X देना चाहिये)। ऐसे कुछ समय तक देते रहना चाहिये। आलपीनवाले कीडो में इसीसे इन्जेक्शन देना उचित है (२० ग्रेन आधा पाइंट पानी में घोलना चाहिये)। मलद्वार मे खुजली बाज मरतबा बवासीर से होती है, इसलिए केचुआ नही समझना चाहिये। खाना ऐसा नहीं खाना चाहिये, जिससे तेज़ाबी कैफ़ियत बढे, जैसे दूध, मिठाई, शक्कर पेसटरी वगैरह।

एक बच्चे के पेट मे कीडे न रहे —

५ वर्ष का लडका था, तशन्नुज होता था। कितने ही इलाज किये, आराम न हुआ। पीला पड़ रहा था और बीमार नजर आता था। आखो के नीचे स्याही थी, चिड़चिड़ा स्वभाव था, पेट में दर्द, नाक खुजाता था और द्वार में खुजली थी, सोते मे बेचैनी और दात पीसता था। मैने "नेट्रम फास" ३X की चार गोलियाँ हर चार घंटे पीछे दीं। बहुत से केंचुए निकले, शीघ्र ही कमजोरी दूर हो गई और मजबूत लडका बन गया।

कीड़ों का काटना Bites of Insects

नेट्रम मुर—लगावे और खिलावे। इस दवाई का लोशन जितनी जल्दी हो सके, काटने के मुकाम पर लगावे या जगह को भिगो कर सूखी दवाई रगडे, बडी जल्दी आराम होता है।

कुचाग्र दुखना

(भिटनी देखो)

कूकर खाँसी

(खाँसी देखो)

खसरा Measles

फेरम फास:—पहिले दर्जे में जब सोज़िश के लक्षण वर्तमान हों, दर्द हो, आँख लाल हो आदि।

काली मुर—दूसरे दर्जे में। खखरानेवाली खाँसी हो। गिल्टी सूज गई हो। जुबान सफेद और भूरी सफेद हो। रोग के पीछे दस्त हो, हलक की सोजिश हो या बहरापन हो।

काली सल्फ—यदि फुसिया अचानक गायब हो गई हो। चमडा सख्त और खुश्क हो गया हो।

नेट्रम मुर—जब आंसू बहे, तो बीच बीच से देना चाहिये, अगर जुबान पर सफेद थूक की तह हो।

सूचना

ठंडा पानी, गोंद का पानी, जौ का पानी बरते। शराब न दें। जब ज्वर कम होने लगे, तो दूध पीने को दे, फिर धीरे धीरे मामूली खाना दे। रोगी को बिस्तर से न उठने दें। आँखो को चकाचौंध से हानि न पहुँचे, इसके लिये कमरे को पर्दों से अंधियारा रखें। परंतु कमरे की हवा का आना जाना न रुके। गर्मी कमरे में "फेरहैट थर्मामीटर" के ६० दर्जे पर रहे। जब रोग चला जाय, तो रोगी को अच्छी तरह कपडे पहिना कर हवा में निकाले। मौसिम खुला हुआ होना चाहिये।

खांसी (श्वास नली की सोज़िश) Bronchitis

फेरम फास—यह औषधि आरंभ में देनी चाहिये, जबकि ज्वर, हरारत, दर्द और खून का जमाव हो। थोडी देर रहनेवाली दु खदाई खासी हो, सांस उथली और कठिनता से ली जाय, बलगम न निकले। छोटे बच्चो की खाँसी, जो सूक्ष्म-नली की सोजिश के कारण हो।

काली मुर—जबकि बलगम गाढा, सफेद, चिपकनेवाला हो, और जुबान के ऊपर सफेद या भूरापन लिये हुए गिलाफ हो। खांसी व बुख़ार का दूसरा दर्जा हो।

कालीसल्फ—जबकि बलगम कुछ पीला, पनीला और अधिक मात्रा मे हो। जब खांसी व बुख़ार का तीसरा दर्जा हो।

सिलीसिया—जबकि गाढ़ा, पीला और भारी बलगम हो, ठंडी चीज़ पीने से खांसी बहुत उठती हो, और गरम से आराम मिले। सुबह खांसी आवे।

नेट्रम मुर—जोर की खासी हो, बलग़म साफ पनीला, झागदार और गले में बोलनेवाला हो। थूकने मे तकलीफ हो। पुरानी खॉसी ज्वर समेत हो। सूखी नई खाँसी हो।

नेट्रम सल्फ—जबकि बलगम से गला दुखे या सुर्ख़ पड जाय, रोगी छाती को पकड कर खासे, सर्दी, तरी और वर्षाकाल मे तकलीफ बढ जाय।

केल्केरिया फ़ास—अन्डे की सफेदी के समान थूक निकले। फीके रुधिर-वालों मे ज्वर, खासी हो।

केल्केरिया सल्फ़—थूक के साथ खून मिला हो।

सूचना

भोजन हलका और पतला होना चाहिये, जैसे जौ का पानी, दलिया आदि। पसीना आने के लिये विशेष कबल ओढना चाहिये, और बार बार थोडा थोडा पानी पीना चाहिये। कमरे की गर्मी "फेरहैट थर्मामिटर" की ७० डिगरी पर हो। और भाप के लिये पानी उबलता रहे, जिससे हवा तर बनी रहे। कठिन रोगो मे छाती के ऊपर गरम पुलटिश बाधनी चाहिये। जो बच्चे खासी से दुर्बल हो गये हो, उन्हे "काड लिवर आइल" दें।

"काली मुर" और "फेरम फास" पुरानी खांसी में:—

एक आदमी को पुरानी खासी थी, उसे "निमोनिया" भी हो चुका था। लुहार होने के कारण उसे आग के सामने रहना पडता था। एक दिन वह पसीने की हालत में बाहर बेच पर सो गया; ठंड लग गई, दाहिने फेफडे मे सोजिश हुई, हवा की नालियों मे भी रोग होकर बीमारी बढ गई, बुख़ार बहुत था, खासने मे तकलीफ़ होती थी। दाहिनी तरफ़ गहरा दर्द था, बलगम चिपकनेवाला और जंग के रंग का था। "फेरम फास" "काली मुर" के साथ बदल कर दिया गया, पहिले २४ घंटे तक आध आध घंटे पीछे दवाई दी गई और फिर हर घंटे कमज़ोरी दूर करने और नींद न आने के लिये जबतब "काली फास" की चंद खुराके दीं। दो दिन मे ही बड़ा आराम हुआ। जब बलगम पीला आने लगा, तो "काली सल्फ़" "काली मुर" के बजाय व्यवहार हुआ, जब यह हालत ठीक हो गई तब "नेट्रम मुर" और "केल्केरिया फास" दिया गया। इन औषधियों के व्यवहार से कुछ ऊपर १० दिन मे रोगी अच्छा हो गया। —(पी० जोन्स, यम० डी०)

खाँसी Cough

काली मुर—बडी आवाज करनेवाली पेट की खाँसी, जिसमें बलगम गाढा, दूध सा सफेद, और सख्त हो। बलगम निकालने के लिये जोर से खासना पडे। जुबान सफेद हो अथवा भूरापन लिये सफेद हो। कूकर-खाँसी सी खाँसी हो।

फेरम फास—अल्प कालवाली, तेज और दुखदाई खाँसी हो। फेफडों मे दर्द हो और गले मे सुरसुराहट जान पडे, छाती दर्दनाक हो। रात में दुख बढे।

मेगनेशिया फास—बारी से खाँसी आवे, तशन्नुज हो, बलगम न निकले, फेफडों मे दर्द का अनुभव हो। कूकर-खाँसी हो।

काली सल्फ—खाँसी के बलगम का रंग पीला और चपकीला हो। सख्त खरखराहटवाली खाँसी उठे और गले मे थकावट सी जान पडे। गरम कमरे मे और शाम को बढवारी हो। ठंडी और खुली हवा मे आराम रहे।

नेट्रम सल्फ—खाली सी छाती जान पडे; बलगम गाढी, रस्सी सी, पीली हरियाली लिये हो। पित्तवाले लोगो मे खाँसी हो।

सिलीसिया—सुबह के वक्त खाँसी उठे। ठंडा पानी पीने से बढे, थूक बदबूदार, ज्यादा पीला, हरा समेत हो।

नेट्रम मुर—बलगम पतला और पनीला हो। नमकीन स्वाद हो, खाँसी पुरानी पड गई हो। खाँसी खुश्क हो।

केल्केरिया सल्फ—खाँसी हो और थूक पतला हो। कभी कभी खून मिला हो।

केल्केरिया फास—थूक अन्डे की सफेदी के समान हो, नयी खाँसी मे अन्य दवाइयो के साथ बदल कर दे।

केल्केरिया फ्लोर—थूक के साथ पीला मवाद हो और खाँसने मे सुरसुराहट हो।

"मेगनेशिया फास" तशन्नुजी खाँसी मे —

डाक्टर एफ० डब्ल्यू० सौथवार्थ तशन्नुजी खाँसीवाले दो रोगियो के विषय मे लिखते है। उन्होंने लक्षण देख कर "मेगनेशिया फास" का ३X के रूप मे दिया। खाँसी रात को सोते वक्त अधिक उठा करती थी। ठडी हवा मे सास लेने से रोग बढता था, बैठने से आराम था, छाती कसी सी रहती थी। दूसरे रोगी की खाँसी इतनी जोर की थी कि खासते खासते पेशाब कर जाता था।

खाँसी (कूकर-खाँसी) Whooping Cough

मेगनेशिया फ़ास—खाँसते खाँसते जब आख़िर में हूप शब्द निकलता हो। नये और पुराने रोग में। देर तक दवा का प्रयोग करना चाहिये।

काली मुर—जब ज़ुबान सफ़ेद हो और सफ़ेद, गाढा बलगम निकलता हो। दूसरी ख़ास दवा है।

काली फ़ास—कमज़ोर तबीयत के रोगियों में, जबकि थकावट के लक्षण पाये जाँय।

कैल्केरिया फ़ास—बुरी खाँसी में; थूक के साथ अलबुमिन मिला हो। कूकर खाँसी दांत निकलनेवाले बच्चों मे, और कमजोर बच्चों की हो।

काली सल्फ़—थूक पतला हो, सूत का सा हो, पीला और लारदार हो, जो गले में वापिस चला जाय।

सूचना

"ओलिव आइल" (जैतून का तेल) छाती और रीढ पर मलना चाहिये। गरम कमरे में सुबह और रात को दस पन्द्रह मिनट मलने से आराम आता है। गरम कपड़ा पहिनना चाहिये। जब रोगी अच्छा होने लगे, तो हवादार जगह में रहे। गिजा जल्दी पचनेवाला, पतला होना चाहिये।

एक भारी बीमार जल्द अच्छा हो गया:—

एक १० महीने का बच्चा बीमार था, फ़ेमिली डाक्टर ने इलाज छोड़ दिया, यह बात बच्चे की माँ ने बडे दुःख के साथ सुनाई। वह कहती थी कि दिन मे ८ बार खाँसी उठती है और चेहरा सफेद होकर नीला पड जाता और सूज जाता है। मैने "काली फास" ३X और "मेगनेशिया फास" ३X अदल बदल कर दिये, दवा की ३ टिकिया चम्मच भर गरम पानी मे मिला कर दी जाती थी। तीन चार ख़ुराक में ही खाँसी ढीली पड गई, और कम बार उठने लगी। दो दिन इलाज करने से सब तकलीफें हट गईं, इसके बाद उस घर मे मै कई बार बुलाया गया, जिसका कारण उक्त औषधियो की सफलता है।

—(सी० एम० होयद, एम० डी०)

खाँसी (क्रूप) Croup

काली मुर—जबकि हवा की नालियो का अन्तर खाँसी से आक्रान्त हो जाय और उसमे बलग़म निकले। ज्यादातर (३) मे देना चाहिये।

फेरम फास—ज्वर के लिय जबकि जल्द जल्द और झटक कर खाँसी चले।

केल्केरिया फ़ास और केल्केरिया फ्लोर—का व्यवहार करना चाहिये, अगर फेरम फास और काली मुर से न फायदा हुआ हो।

काली फ़ास—जबकि इलाज करने मे देर हो गई तथा मूर्च्छा हो जाने का भय है। मानसिक दुर्बलता, फीका और नीला चेहरा पड गया हो। "काली सुर" के साथ बदल कर दें।

सूचना

रोग की बारी में केवल पानी पीने को दे, और वह भी बहुत थोडा। बारी टलने पर शोरवा, दूध, पानी और दाल दे। दुर्बल बच्चो और उस दशा मे जबकि रोग अचानक हो उठता है, शोरबा पिलावे। थोडा थोडा और नियत मात्रा मे। बच्चो को सावधानी के साथ सर्दी और सील से बचाना चाहिये।

चन्द खुराकों से खाँसी जाती रही—

सात बरस के एक लडके को "क्रूप" खाँसी लगी। जब तेज उत्तर-पूर्व की हवा चलती थी, तब साधारण खाँसी उठती थी, परतु कुछ वर्षों से सचमुच "क्रूप" खाँसी हो गई। रात को बडी कठिनता होती थी। बेचैनी, खाँसी इतनी सख्त थी कि माँ बाप घबडा उठते थे। खुश्की, हरारत और बडा कष्ट था। मैने उसे "काली सुर" ३ X हर घटे दी। कुछ खुराक लेने पर ही बलगम आसानी से निकलने लगा। खाँसने मे जो झखने का सा शब्द होता था, सो न हुआ। रात को निद्रा भी आई, दूसरे दिन बिलकुल अच्छा हो गया और खेलने लगा। सात-आठ खुराक ली गई थी। ४ महीने तक फिर खाँसी का दौरा नही हुआ।—(एस० जे० होलम्स, एम० डी०)

खून बहना (रुधिर प्रवाह) Haemorrhage

फेरम फ़ास—जब बाहर निकला हुआ खून सुर्ख हो और फौरन जम जाय, तब यह ठीक दवा है। खून चाहे किसी कारण से और कही से निकला हो, फेफडो से खून बहता हो, सुर्ख खून की कै हो अथवा जब खून निकलने की आदत पड गई हो, जैसे नाक से खून निकला करता हो। रोगी फीके खूनवाला हो, "काली फास" और "केल्केरिया फास" भी देते है। यदि घाव से खून निकलता हो, तो "फेरम फास" का भीतर और बाहर इस्तेमाल करना चाहिये। जरूरत पडने पर जर्राह की सहायता ले सकते है।

काली फ़ास—जब कमजोर, कोमल शरीर के मनुष्यो मे दुर्बलता से काला व काला सुर्ख, पतला खून न जमनेवाला निकले। दुर्बलता मे अर्थात् फीके खून-वाले रोगियो में "फेरम फास" का व्यवहार करे। जब रुधिर सडा हुआ और बदशकल हो, इसे दे। गर्भाशय से खून निकले।

फेर्कोरिया फ्लोर—गर्भाशय से रुधिर निकले और नसों को सिकोड कर रुधिर प्रवाह रोकना हो "काली फास" के साथ बदल कर दे। बवासीर से खून जाय और मस्से ढीले पड गये हो।

काली मुर—ऐसे रुधिर प्रवाह, जबकि रुधिर काला, जमा हुआ या गुठलेदार निकलता हो। दोपहर के बाद नाक से खून निकले।

नेट्रम मुर—जब रुधिर पतला, कम लाल और पनीला हो, जमता न हो। खाँसने से या झुकने से नाक से से खून निकले। अग दुखते हो।

केल्केरिया फास—जबकि रुधिर फीका पड गया हो। ऐसे मनुष्यो मे इस औषधि का व्यवहार अन्य औषधियो के साथ बीच बीच मे करना चाहिये।

सूचना

इन दवाइयो को जहाँ हो सके वहाँ खिलाना और लगाना दोनो तरह से चाहिये। बुरी हालतों में औषधि का चूर्ण छिडक कर मोटी तह के ऊपर पट्टी बाध देनी चाहिये। जब फेफडो से बहुत सा खून निकले, तो रोगी को साधारण नमक खाना अच्छा है। वह सीधा बैठ जाय, यदि उसमें ताकत हो। अगर दुर्बलता बहुत हो, तो तकियों का सहारा लें, बिलकुल खामोश रहे। बोले या खाँसे नहीं। "फेरम फास" हलकी ताकत का देना चाहिये। गिजा हलका और निरुत्तेजक हो।

गठिया Rheumatism

फेरम फास—रोग के पहिले दर्जे मे, जब शरीर के किसी हिस्से मे गठिया का दर्द हो। सब शरीर मे अकडाहट और दर्द हो। कमर मे दर्द हो, सर्दी से गर्दन अकड गई हो। जब हरकत करने से दर्द बढता हो। जोडो मे गठिया हो और हाथ सूजे हों।

काली मुर—पुरानी गठिया मे जब सूजन हो। जुबान पर जब सफेद मैल हो। हरकत मे दर्द बढता हो। जोडों मे सोजिश हो।

नेट्रम फास—जोडो मे दर्द हो। कहीं नया कही पुराना; खट्टी बू का बहुत पसीना आता हो। जुबान का रंग पीला हो। मलाई सी लगी हो। वातरक्त का ज़ोर हो। जोडो की गठिया के लिए यह खास दवा है।

मेगनेशिया फास—दर्द जोर से तेज और तशन्नुजी हो। जब जोडो मे दर्द हो, जब दर्द बहुत ही जोर पर हो।

काली सल्फ़—जब दर्द ऐसा हो, कि कभी कही और कभी कहीं चला जाता हो। एक जोड से दूसरे मे बदल जाता हो, जब पीठ, गर्दन और हाथ पैरो मे दर्द हो। दर्द रात मे बढता हो।

काली फ़ास—जब जोड अकड गये हों। हरकत करने में दर्द विशेष हो, आरभ मे, फिर चलने से कम हो। पैर की नस मे दर्द हो, दर्द खिंचता हुआ सा जान पडे। सुस्ती, अकडाहट, बड़ी बेचैनी और तबीअत की थकावट जान पड़े।

नेट्रम म्युर—बहुत दिनो की पुरानी गठिया, जिसमें पानी से सोजिश हो।

केल्केरिया फ़ास—इसको बीच बीच मे देना चाहिये। दर्द रात मे बढे, और मौसिम बदलने मे भी बढे। गठिया, जिससे सुन्न हो जाय, पिन्डली और घुटने मे पानी से सोजिश हो।

नेट्रम सल्फ़—पुरानी गठिया की ख़ास दवा है, तेजाबी कैफियत हो। नमी (गीले) मौसिम मे ज्यादा हो। उठने या बिस्तर मे करवट लेने मे दर्द हो।

केल्केरिया फ्लोर—वातरक्त या गठिया से जोड बढ़ गये हो।

सूचना

गठिया के रोगियो को फलालेन या गरम कपडा पहिनना चाहिये। पैर न ठडे हो, न भीगे। जोडो के ऊपर भीगा कपडा लगा कर ऊपर से सूखी फलालेन बाध दे। ऐसा करने से जोडो को आराम आता है। पुराने दर्द मे जोडो के ऊपर "हाइमोसाल्व" आयिटमेंट की मालिश हर रात को करनी चाहिये। भोजन अच्छा हो, जो जल्द हज़म हो जाय। शराब न पीवे। गोश्त और तीक्ष्ण भोजन न खावे।

"काली सल्फ" ऐसे गठिया मे, जो भीगने से हुआ था —

३४ वर्ष का एक मनुष्य झील के किनारे रहता था। उसे अनेक बार पानी मे जाना पडता था, मछली मारने और शिकार करने मे उसे भीगना भी होता था। दो वर्ष से उसको दर्द ने सताया, कभी कभी इस जोड मे, कभी उसमे चला जाता था। बडी तकलीफ हुई। काम बन्द हो गया। अब उसे दवाई की फिक्र पडी। मैने उसे "काली सल्फ" की ३X की कई पुडियॉ दी, और एक एक पानी मे घोल कर दिन मे ४ बार पीने को कहा। इससे चन्द हफ़्तो ही मे उसका सब कष्ट हट गया, और एक वर्ष से अधिक हो गया है। उसको कोई तकलीफ नही हुई।

—(सी० टी० एम०)

"फेरम फास" और "नेट्रम सल्फ" टाग के दर्द मे.—

एक स्त्री, जो बाहर किसी सभा मे गई हुई थी। जब घर पहुंचाई गई, तो इसकी टाग की नस मे बडा दर्द था, कुछ बुख़ार भी था, टाग छूने और हिलाने से दुखती थी। ज़रा सी हरकत करने मे दर्द के मारे रो पडती थी, जुबान का रग हरियाली लिये हुए पीला था। "फेरम फास" ३X और "नेट्रम सल्फ" ३X अदल बदल कर दिया गया। दूसरे दिन वह हरकत करने लगी, अब दर्द बहुत

न था. अब वह अपने आप करवट बदलने लगी, तीसरे दिन बैठने लगी, और शीघ्र ही अच्छी हो गई। —(इ० एच० होलब्रूक, एम० डी०)

गरमी (फ़िरंग) Syphilis

फेरम फ़ास—गिल्टी की सोज़िश, गरमी, चमड़ा नर्म, नाज़ुक और ज्वर से हों।

काली मुर—मुख्य दवा। घाव, गिल्टियाँ, बहुत पुराना उपदंश हो। बाहरी प्रयोग करें। गरमी से मसूड़े सड़े।

नेट्रम सल्फ़—मस्से हों। बाहर भी लगाना चाहिये।

नेट्रम मुर—पुराने उपदंश से पानी सा निकलना।

काली फ़ास—ऐसे घाव, जिनमें से दुष्ट मवाद निकलता हो।

काली सल्फ़—उपदंश के विशेष लक्षण में। पुराना उपदंश हो।

सिलीसिया—पीप पड़ने के लिये है। पुराना उपदंश हो, गाढ़ा मवाद आता हो।

केल्केरिया सल्फ़—पीप रोकने के लिये, बहुत दिनों से मवाद निकलता हो।

केल्केरिया फ्लोर—कड़े और सख़्त घाव हों।

सूचना

दवा के अलावा अच्छा खाना देना चाहिये। पनीर, नमकीन गोश्त, काफी, तमाखू व शराब नहीं पीना चाहिये। ठंडा पानी, जौ का पानी, चाय वगैरह पीना चाहिये। ठंडे पानी से अथवा समुद्र में नहाना और ठीक वक्त पर पाख़ाना करना चाहिये। सफाई बहुत अच्छी तरह से होना जरूरी है।

गला बैठना Hoarseness

फेरम फ़ास—जब बहुत बोलने या गाने से आवाज़ बैठ गई हो या सर्दी लगने से गले में दर्द हो। गला सूखा मालूम हो।

काली मुर—आवाज़ न निकलती हो, रोगी कंठ से बोलता हो, रोग अच्छा होने में न आता हो, तो काली सल्फ देना चाहिये।

काली फ़ास—जब थकावट हो, मानसिक दुर्बलता हो और गले में थकन सी जान पड़े। लकवा में भी देना लाभदायक है।

गुहेरियाँ Styes on the Eyelids

फेरम फ़ास—यह दवाई शुरू मे देनी चाहिये, जब ज्वर, हरारत और रुधिर का जमाव हो; आरंभ मे देने से पीप न पटेगी।

सिलीसिया—जब पीप पड़ जाय, तो इससे शीघ्र सूख जायगी; गुहेरी शीघ्र पक कर अक्सर बिना चीरे फूट जाती है।

सूचना

आरंभ मे गरम पानी से सेकना चाहिये। सूजन बहुत हो, तो पुल्टिस रात के समय बांधे, जल्दी आराम मिलेगा। अगर गुहेरी न फूटे, तो सुई मे छेद कर मवाद को सहारे से दबा कर निकाल दे।

डाक्टर ए० पी० नोर्टन, एम० डी० लिखते है "फेरम फास" गुहेरी के आरंभ मे इस्तेमाल करने से सोजिश कम हो जाती है, पीप नहीं पटती और जो गुहेरी को हुए देर हो गई है, तो सिलीसिया देने मे जल्दी पीप पड जायगी और फूट कर अच्छी हो जायगी। इस रोग के लिये मैं इन्हीं २ दवाओ को लगाता हूं।

गुर्दों की सोज़िश
Inflammation of the Kidneys

गिरना या झटक जाना, बहुत शराब पीना, पथरी का होना, चोट लगना, दवाइयों का बुरा असर। मासिक धर्म या बवासीर का खून रुकना। ठंड लगना आदि। पीठ मे जकडन और भारी दर्द होना, जो गुर्दे के मुकाम पर रीढ़ के एक तरफ या दोनो तरफ। दर्द मूत्राशय की तरफ जाता है। पेशाब करने मे कठिनता और दर्द होता है। पेशाब गरम या लाल होता है और कभी कभी बिलकुल बंद हो जाता है। अक्सर जी मितलाता है, कै होती है, दर्द होता है और पेशाब के लिये जोर लगाना पड़ता है। पीठ के बल लेटने से या हरकत करने मे दर्द बढ जाता है।

फेरम फ़ास—जब सोज़िश के लक्षण अर्थात् ज्वर, हरारत, दर्द और खून का जमाव बाहर और भीतर हो।

काली मुर—दूसरे दर्जे मे दे, या "फेरम फास" के साथ बदल कर शुरू ही से दे। जब सूजन हो। पेशाब मे सफ़ेदी तहनशीन होती हो, ज़ुबान पर सफेद मैल हो।

काली फ़ास—जबकि ज्ञानतन्तु सम्बन्धी लक्षण देखने में आवे, दे।

नेट्रम फ़ास—पेशाब लाने के लिये, जबकि बिलकुल न होता हो।

केल्केरिया फ़ास—रोग की दशा मे अन्य दवाइयों के साथ बीच बीच में दिया जा सकता है; और जबकि रोग की तेजी घट गई हो, इसके देने से कमज़ोरी दूर हो जाती है।

सूचना

यदि उचित समय पर बार बार दी जाय, तो "फ़ेरम फास" और "काली मुर" काफी होती है। मूत्राशय की सोजिश हमेशा थोड़ी बहुत मौजूद होती है। भोजन, ज्वर और अन्य सोजिशों के समान देना चाहिये।

घाव

(चोट देखो)

घुमेर (शिर चकराना) Vertigo

फ़ेरम फ़ास—जब शिर मे चक्कर आते हों, जिसका कारण शिर मे खून का जमाव हो। लपकता हुआ दर्द हो, चेहरा सुर्ख हो। कै करने के बाद हो, या बैठ कर उठने मे और खाना खाने मे हो।

काली फ़ास—जब मानसिक दुर्बलता से घुमेर आवे, साथ ही दुर्बलता हो। उठने और ऊपर की ओर देखने में शिर चकरावे।

नेट्रम सल्फ़—जब पित्त के कारण शिर में चक्कर आवे, ज़ुबान पीली हो, मुह का जाइका कड़ुआ हो, पित्त की अधिकता हो।

नेट्रम फ़ास—जब उदर विकार और तेजाबी कैफियत से चक्कर आवें।

चर्म-रोग Diseases of the Skin

काली मुर—ऐसी फुंसियां, जिनमें गाढी, सफ़ेद पीप हो। युवतियो के चेहरे पर के मुहासे। बहुत किस्म के रोग, जैसे चटा, मसा, भयासा, और फुंसियां।

काली सल्फ़—"एकजीमा" अर्थात् ऐसी फुंसिया, जिनसे पीला, पनीला मवाद निकले। चमडे पर से छिलके उतरें। कियास अर्थात् पीले या सफेद रंग की भुसी सी उखडे। फुंसिया बहुत जल्द गायब हो गई हो।

नेट्रम मुर—जिन फुन्सियों मे सफेद पानी हो। बच्चो की बगल या जाघ रगड खा कर लाल पड़ गई हो। किसी कीडे ने डंक मारा हो। छोटे छोटे छाले, जिनमे पानी भरा हो। ज्वर के कारण छाले उठे हो। उस जगह पर भी लगाना चाहिये।

नेट्रम फ़ास—ऐसे चर्मरोग, जिनसे मलाई के रंग के सुनहरी पीले खरंट अथवा मवाद हो। शरीर में खुजली हो, शरीर पर चकत्ते, जिनमे से ऊपर खाम रूप का मवाद निकलता हो।

काली फ़ास—एकजीमा और फुंसी हो, अगर छूतवाली हो। बदबूदार हों। पसीना निकलने के बाद थकावट हो, घबराहट, घाव और खून मिला मवाद हो।

केल्केरिया सल्फ़—मवाद गाढा, पीला हो। सफेद फुंसी हो। बच्चों के सिर पर फुंसिया हो।

सिलीसिया—आख के किनारों और चमडे पर छोटी छोटी फुंसिया हो; मवाद मे खून मिला हो, बदबू हो। पैरों से पसीना निकले। बच्चो के सिर मे पसीना निकले।

नेट्रम सल्फ़—फुंसियां हों, जिनमे से पतला व पीला मवाद निकलता हो। चमडे की ख़राबी, जिससे चमडा भीगे, पीले छिलके उतरें। चमडों मे खुजली हो।

केल्केरिया फ़ास—जव दुर्बलता के साथ साथ शरीर पर फुंसिया हों। बुड्ढे लोगो मे शरीर खुजाया करता हो। जवान आदमियो के चेहरे पर फुंसिया हो।

केल्केरिया फ्लोर—चमडा छिल गया हो, फट गया हो। हथेली पर दरारें पड गई हो। चमडे का रग सीग के समान हो गया हो और बहुत दुखता हो।

सूचना

चमडे पर जब फुंसी हो, तो उस स्थान को साफ पानी से धोना चाहिये। यदि अच्छा पानी न मिले, तो पानी को उबाल कर तब काम मे लावे। एक गेलन पानी मे दो मुट्ठी भुसी डाल कर उबाल लेने से वह पानी लाभदायक हो जाता है। इससे रोग के स्थान को धोवे और साफ कपडे से सुखा दे। रगडे नहीं, साबुन या लोशन के व्यवहार से जलन बढ जाती है। उनका व्यवहार न करे, भोजन मे साग, सब्जी, शामिल करे, ऊपर जिन औषधियों का वर्णन किया गया है, उनके उपयोग से सब प्रकार के चर्म रोग शीघ्र दूर हो जाते है।

चेचक Small-pox

फेरम फ़ास—ज्वर और सूजन के लक्षण मे। सिर दर्द, प्यास और छाती के दर्द मे।

काली मुर—मुख्य दवा। उससे फुंसिया नहीं बनती।

काली सल्फ़—नया चर्म बनने और छिलके उतरने मे सहायक होते है।

काली फ़ास—बेहोशी हो। खून विष बनने की दशा हो। सड़ना, बदबू होना, तंद्रा और दिमागी खराबी हो।

नेट्रम मुर—बाजितंद्रा हो। उनींदापन हो। ("काली फास" के साथ) मुंह सूखा हो। फुंसियाँ जुड़ जाती हो।

केल्केरिया सल्फ़—मवाद निकलना रोकना हो।

सूचना

ठन्ड और ताज़ी हवा होनी चाहिये। सब की सफाई ज़रूरी है। कमरे में रोशनी न हो, खासकर जब फुंसी निकल रही हो, ताकि दाग न पड़े, खाना हलका हो। जब मर्ज अच्छा होने लगे, तो उमदा खाना देना चाहिये। खुजलाना नही चाहिये।

चोट, मोच और घाव इत्यादि

Bruises, Sprains, Wounds, etc.

बहुधा दुर्घटना होने से जख्म हो जाते है, चोट लग जाती है, अग कट जाता है, इनकी चिकित्सा तत्काल करनी चाहिये। अगर समय पर खबर ली जाय, तो फिर बुरा नतीजा न हो।

फेरम फास—कटने चोट लगने, घाव होने, मोच आने, छिल जाने मे यह पहिली दवाई है। तत्काल पिलानी चाहिये और लगानी चाहिये, जब तक कि दर्द और सोज़िश दूर न हो।

काली मुर—इसे दूसरे दर्जे मे देते हैं, जब सूजन वगैरह आ गई हो।

काली सल्फ़—जब घाव बिगड कर पीला, पतला मवाद निकलने लगे, सोज़िश के तीसरे दर्जे मे हो।

सिलीसिया—जबकि मवाद गाढ़ा और पानी मे बैठ जानेवाला हो।

सूचना

"फेरम फास"—शरीर की सब प्रकार की चोटो से तत्काल बरतना चाहिये। घाव और चोटो मे इस औषधि की विशेष आवश्यकता पडती है, क्योंकि खून मे यह चीज़ मरम्मत के लिये काफी नहीं होती, चोट के अच्छा करने के लिये ज़ियादा खून आता है और चोट की जगह पर एकत्र रहता है। "फेरम फास" के देने से आवश्यकता पूरी हो जाती है और खून इकट्ठा नहीं होता। दवाई लगाने का सहल तरीका यह है कि पानी मे मिला कर नरम कपडे के टुकडे को भिगो कर चोट की जगह पर रखे। मोच लगी हो, तो दुःखित अंग को बिलकुल आराम दे।

एक बुरा जख्म तत्काल अच्छा हो गया—

एक महाशय की उंगली शीशे से कट गई, घाव हड्डी तक पहुचा, ज्यादा जख्म था। तत्काल "फेरम फास" लगाया गया। ३ दिन पीछे सिर्फ कटने की लकीर रह गई और दर्द तो दवा लगाते ही दूर हो गया था।

छोटी माता Chicken-pox

फेरम फ़ास—इस रोग के शुरू मे जो ज्वर होता है, उसमे दे। साथ ही जुबान और दानो की जो कैफ़ियत हो, उसके अनुसार दवा तजवीज़ करके बदलते रहे।

काली मुर—दूसरे दर्जे मे, जबकि जुबान सफेद या भूरापन लिये हो।

नेट्रम मुर—जब साथ ही जलदोष हो, सुस्ती हो, बेहोशी हो, इत्यादि मे।

केल्केरिया सल्फ़—जबकि फुसियो से गाढी, पीली पीप निकले।

काली सल्फ़—जब ज्वर के बाद माता न निकली हो। पसीना आने के लिए अदल बदल कर फेरम फास दे।

जलना या झुलसना Burns and Scalds

जलने और झुलसने के लक्षण सब जानते हैं, लिखने की जरूरत नहीं है।

फेरम फ़ास—मुख्य औषधि है। पानी मे मिला कर लगाना चाहिये। हलके लोशन से दर्द, गर्मी और सुर्खी दूर होती है, पिलाना भी चाहिये, जब दर्द दूर हो जाय, तो "काली मुर" दे। नया रेशा पैदा करने की यह ख़ास दवाई है। रेशा (टिस्यू)।

काली मुर—जलने से शरीर के जो कण नष्ट हो जाते है, इस औपधि के प्रभाव मे उनकी जगह नये बनते है। इसको लगाना चाहिये और जब दर्द दूर हो जाय, तब खिलाना चाहिये। इस औषधि के तेज पानी को लिंट के द्वारा लगावे और फिर लिंट को बिना हटाये तर रखे।

केल्केरिया सल्फ—इसको "काली मुर" के बाद या बिगडे हुए घावो में, जबकि पीप पड गई हो, व्यवहार करे।

नेट्रम मुर—जब छाले पड गए हो।

नेट्रम फ़ास—जबकि घाव से मलाई सा सुनहरा, पीला मवाद निकलता हो, यह दवाई फायदेमद है।

सूचना

जब कोई अग जल जाय या छाला पड जाय, तो उस स्थान को एक-दो मिनिट सेकना चाहिये। इसमे जरा तकलीफ तो होती, परंतु पीछे का कष्ट और घबडाना बहुत कम हो जायगा। लेकिन जब बहुत स्थान झुलस गये हो, तो दवाई तत्काल लगानी चाहिये। जले हुए स्थानो मे हवा का बचाव ज़रूरी है और एक बार दवा में भीगी हुई लिंट लगा कर उसे फिर अलग न करे, उसी पर दवाई

लगाते रहे। अन्य शारीरिक दु खो का उचित इलाज करें। हलका खाना दें, जैसा कि ज्वर और अन्य सोज़िश मे बताया गया है।

जलोदर

(शोथ देखो)

जिगर के रोग Affections of the Liver

(पित्तोपद्रव देखो)

फेरम फ़ास—जब जिगर मे रुधिर की अधिकता हो, तो सोज़िश के पहिले दर्जे मे दिया जाता है।

काली मुर—जब जिगर ठीक काम न करता हो, ज़ुबान पर सफेद मैल जमा हो। दस्तो का रंग सफेद हो। जिगर के मुकाम पर दर्द होता हो। क़ब्ज़ हो और साथ ही फीके रग के दस्त हो। जब सर्दी के कारण पीलिया रोग हुआ हो।

नेट्रम सल्फ़—पीलिया रोग, जिसमें पित्त मिले हरे दस्त होते हो। चमडा पीला सा हो। आँखे पीली पड गई हो। रुधिर की अधिकता के कारण जिगर मे तेज दर्द होता हो। तेज़ाबी कै हो। मुँह में कडुआपन हो।

नेट्रम मुर—जब आमाशय के विकार से पीलिया हो। सुस्ती रहती हो। पानी मुँह मे भर आता हो। जिगर के आसपास दर्द हो।

केल्केरिया सल्फ़—जिगर मे फोडा हो। दर्द हो, कमज़ोरी या जी मितलाता हो। इसके व्यवहार से पीप नहीं पडा करती।

"काली मुर" से पीलिया रोग चला गया.—

पिछली गर्मियो मे मेरी लडकी "न्यू जरसी" शहर से लौटी। उसके हाथ पर बडा मस्सा था। कुछ दिन पीछे उसे ज्वर आने लगा। ज्वर को मैने पित्त के कारण समझा। और "नेट्रम सल्फ़" ३x दिया। उसको पीलिया रोग हो गया और उसकी दशा बिगड गई। मैने औषधि बदल कर "काली मुर" ३x दिया। तत्काल आराम होने लगा और कुछ दिन मे अच्छी हो गई। चन्द खुराको ही में पीलिया रोग घटने लग गया, और मस्सा भी सूख कर गिर पडा। (ई० एच० होलब्रूक, एम० डी०।)

ज़ुकाम Catarrh

फेरम फ़ास—शुरू के दर्जे मे, जबकि शिर भारी होता है। ज्वर हो, सिर, छाती या हाथ-पैरों मे दर्द हो, नाक भरी रहती हो।

काली मुर—जबकि बलगम सफेद, गाढा और चिपकनेवाला हो, सिर भरा हुआ सा मालूम पडे और जुबान के ऊपर सफेद और भूरे रग की मैल हो। जुकाम के दूसरे दर्जे मे। सिर मे सूखी सर्दी।

नेट्रम मुर—पनीला और साफ पानी गिरता हो, खासी भी हो, और झाग-दार बलगम निकलता हो। छीके आती हो। "इनफ्लुएनजा" हो।

केल्केरिया फास—पुराने जुकाम और फीके खूनवाले आदमियो में उपयोगी है। जब बलगम साफ अंडे की सफेदी के समान निकले। छींकना, नाकुर मे दर्द।

काली सल्फ—जब बलगम पतला, पीला और चिपकनेवाला हो। शरीर ऊपर से खुश्क और गर्म हो, गरम कमरे मे या शाम को रोग बढता हो। जुकाम के तीसरे दर्जे मे।

केल्केरिया फ्लोर—भरा हुआ जुकाम या सूखा जुकाम हो, नाक की हड्डी सड गई हो और बुरी बू आती हो। श्वास-नली मे जुकाम, जिसके कारण पीले बलगम की छोटी छोटी गॉठ निकले।

केल्केरिया सल्फ—गाढा, पीला मवाद निकलता हो और खून भी मिला हो। नाक से भी खून निकले।

मेगनेशिया फास—सूघने की शक्ति नष्ट हो गई हो, कभी नाक बहती हो, कभी बन्द हो जाती हो। नाक के सिरे पर बलगम।

सिलीसिया—जब नाक से सडा हुआ, बुरा जान पड़नेवाला मवाद निकलता हो, नकुओ के किनारे सूखे रहते हो, नाक की नोक खुजाया करती हो, जो कीडो से नही।

नेट्रम सल्फ—सर्दी मे नाक से हरे रग का मवाद निकलता हो। ठंडे मुल्क के जुकाम।

सूचना

जुकाम का सादा अच्छा इलाज, जबकि हड्डी मे विकार न हो, साधारण नमक है, एक चाय का चम्मच भर नमक एक बोतल पानी मे डाल कर नकुओं को धोना चाहिये। हथेली मे रख कर नाक से पानी को चढावे, या ऐसा करे कि चार-पाच फीट लम्बी रबड की नाली को लेकर उसका एक सिरा नमकीन पानी मे डाले, बर्तन ऊचा रहे, फिर दूसरे सिरे के जरिये मुह से पानी को चूसे। जब पानी आना शुरू हो जाय, तो रबड की नाली के सिरे को नाक मे रखे। इस समय रोगी मुंह खुला रखे। ऐसा करने से दूसरे नकुए मे होकर पानी निकल आवेगा; नाक बिलकुल साफ हो जायगी।

"काली सल्फ" ने जाइका और सूघने की शक्ति फिर पैदा कर दी:—

रोगी की नाक से गाढा, पीला, बदबूदार, पतला मवाद जाता था, १८ महीने हो गये, न ज़ुबान मे स्वाद था, न सूघने की शक्ति। बाये नकुए का बुरा हाल था। हर ३ हफ्ते में मासिक धर्म होता था, चट सर्दी लग जाती थी। ३ वर्ष पहिले एक मरा हुआ बच्चा हुआ था। एक महीने मे औषधि के व्यवहार से ज़ुकाम बिलकुल अच्छा हो गया। औषधि ३X की मात्रा मे पानी मे मिला कर दी गई थी। इसके व्यवहार से चखने और सूघने की खोई हुई ताकत फिर आ गई।

—(डब्लू॰ पी॰ वैसलहोफट, एम॰ डी॰)

ज़ुकाम, शिर में

(शिर में सर्दी लगना देखो)

ज्वर (सामान्य) Fevers

फेरम फास—सब प्रकार के ज्वरो मे मुख्य है। जब नाडी तेज़ हो, हरारत हो, गरमी जान पडती हो, तो पहिले इसे दे। जब सोजिश, मवाद बहने अथवा गठिया आदि के कारण ज्वर हो, तो अन्य औषधियो के साथ बदल कर दें। ज्वर की सब दशाओं में दे सकते हैं।

काली मुर—ज्वर के लिये दूसरी दवाई है। ज़ुबान पर मोटा, सफेद ग़िलाफ़ हो और कब्ज़ हो।

काली फास—जब ज्ञानतन्तुओं के विकार से ज्वर हो। हरारत बहुत हो। नब्ज बेकायदे जल्द चलती हो। उत्तेजना और दुर्बलता हो। "फेरम फास" के साथ बदल कर दें। थोडे से बुख़ार में दे। दिमाग बिगडा हो।

काली सल्फ—जब शाम को हरारत अधिक हो जाती हो। यदि "फेरम फास" से पसीना न आवे, तो इसको दे। जब खून ज़हरीला हो जाने के कारण ज्वर हो।

नेट्रम मुर—"हे फीवर," जिसमे आख और नाक से पानी बहता है। "फेरम फास" के साथ ज्वर के लिये बदल कर दे।

केल्केरिया फास—जब बीमार अच्छा होता हो।

गिज़ा

हर किस्म के ज्वर मे खाना पतला होना चाहिये और कम देना चाहिये। उबाला दूध, पानी मिला हुआ, आरारूट, साबूदाना, जौ का पानी दूध के साथ या

अकेले, पसावन, जिसमे चावल न हो, खाना चाहिये। उबाला पानी प्यास मे देना चाहिये। गोश्त न खाना चाहिये। जब ज्वर उतर जाय, तब खाने शोरबा खाय। जब तक खास ज़रूरत न हो, ज्वर मे शराब न दे। जब बीमार अच्छा होने लगे, तो दिया जाय, और ठोस गिजा थोडी थोडी देनी चाहिये।

ज्वर-सन्निपात (सियादी ज्वर) Typhoid

फेरम फ़ास—शुरू मे हो, और सोज़िश के लक्षण हो, खून मिला दस्त हो। शक्तिपात हो।

काली मुर—मुख्य औषधि। "फेरम फास" के साथ बदल कर दे। भूरे रंग की और सफेद मैल जुबान पर हो। आन ढीली पड गई हो। मल पीला सा हो। सूजन और मृदु पेट हो।

काली फ़ास—सावातिक लक्षण वर्तमान हो। शक्तिहीन हो, मल की दशा बिगड गई हो, सास से बू आती हो, हृदय की गति दुर्बल हो। दात काले पड गये हो। जीभ सूखी हो, राई के से रग का गिलाफ हो। बडबडाता हो, नींद न आती हो। बदबू हो।

नेट्रम मुर—जबकि लक्षण भयंकर हो, पानी की सी कै हो, जीभ सूखी हो, उनींदापन हो।

काली सल्फ़—सध्याकाल मे रोगाधिकता हो। नाडी सुस्त हो, खून में जहर बतलाता हो।

मेगनेशिआ फ़ास—तशन्नुज हो। हाथ पैरों में झटकन हो। पेट मे दर्द हो। जीभ पर पीली और चमकदार तह हो।

नेट्रम सल्फ़—पित्त विकार हो। जीभ मैली और हरी हो।

केल्केरिया फ़ास—रोग की सब दशाओं मे बीच बीच मे दे। तशन्नुज हो, तो बहुत समय तक दे।

सूचना

अनुपान पतला होना चाहिये, और बुखार की दशा मे अथवा एक महीने तक ऐसा खाना चाहिये। पनीली चीजे अर्थात् दूध, आरारूट, अथवा साबूदाने का पानी, खूब पकाया हुआ चावल की खीर (Conjee), ऐसा पदार्थादि। साधारण गरम पानी से शरीर एक दो बार स्पज से धोने से ज्वर मे कमी होती है।

मुर्गी का शोरबा, पेनोपेपटान वगैरह देना चाहिये, मगर ख्याल रहे कि दस्त न आने लगे। जब मरीज अच्छा होने लगे, तो देना चाहिये।

शराब वगैरह नहीं देना चाहिये। बहुत बुरी हालत मे दूध के साथ मिला कर दे।

बुखार के बाद भूख बहुत लगती है। ऐसी हालत मे ठोस खाना नहीं देना चाहिये, और १ महीने तक बचाना उचित है। खाना बहुत कम देना चाहिये, वरना बीमारी बढ जायगी।

तेल न लगाना चाहिये। जबतक कि दो या तीन महीने न बीत गये हो।

ज्वर (शीत) इनफ़्लुएनज़ा Influenza

इनफ्लुएनजा होने पर सर्दी ज्वर, नाक बहना, छींक आना शुरू होता है। ठडक, बेचैनी, तेज़ गठिये का दर्द, पीठ, हाथ-पाव, सिर मे और माथे पर दर्द हो, चक्कर हो, कान दर्द करे, आखे लाल हो और आसू बहाऐ। बदबूदार पसीना बहुत निकले। गला सूख जाय, खासी हो, कभी तेज़ाबी कैफ़ियत हो और चमडे का रंग पीला हो जाय, जिगर मे दर्द हो, कै हो, जीभ पर पीली तह हो, बीमारी ३ से १० रोज मे बढती है।

फेरम फ़ास—पहिले दर्जे मे ख़ास दवा ह। जबकि गरमी, ज्वर, सर्दी, सिर दर्द हो, हलक सूखा हो, कान में दर्द और सोजिश हो।

नेट्रम मुर—आँखो से पानी बहे, नाक बहे, छींक आवे. गला सूखा हो, तेज़ दर्द हो।

नेट्रम सल्फ़—तेजाबी कैफियत हो। तेज़ाबी कै हो। जिगर मे दर्द हो, चमड़ा पीला पडा हो, दस्त आते हो। ख़ास दवा है।

काली सल्फ़—पसीना पैदा करने के लिये।

काली मुर—गले मे दर्द हो, जीभ पर सफेद तह हो। स्वास लेने में तकलीफ हो।

मेगनेशिया फ़ास—बहुत तेज चुभनेवाला दर्द हो, असबी दर्द हो।

काली फ़ास—इनफ्लुएनजा के पीछे असबी कमजोरी हो। सुबह थका मालूम हो, मास मे ऐठन हो और असबी दर्द हो।

सूचना

बीमार को बिस्तर से नही उठने देना चाहिये, और दवा देनी चाहिये। एनिमा से दस्त लाना चाहिये। जुलाब न दे, शुरू मे पैर सेक कर पसीना लाना उचित है। सीने मे दर्द के लिए तीसी की पुलटिश व सरसो का पलास्टर बाधना चाहिये, इसे ज़रूर करना चाहिये।

भोजन हलका और पतला होना चाहिये, जैसे दूध, काफ़ी, जौ का पानी, खीर वगैरह। गरम पानी दिया जा सकता है, ज्वर के समय गोश्त नही खाना चाहिये। कमजोरी की हालत मे शराब दे सकते हैं।

ज्वर—जूड़ी Ague, Malaria

(बकफ़ेदार ज्वर मलेरिया)

नेट्रम सल्फ—बारी के आनेवाले बुखार की सब दशाओं में इसे दे सकते हैं; पित्त की अधिकता में यह खास दवाई है। पेट में दर्द हो और आन ढीली मालूम पडे।

फेरम फ़ास—ज्वर की उग्र दशा में, जबकि कै के साथ बिना पचा खाना निकलता है, तब इसको "नेट्रम सल्फ" के साथ बदल कर दे।

काली फ़ास—जब दुर्बलता बहुत हो और पसीना अधिकता से आता हो।

काली मुर—जब जुबान पर मोटा सफेद या भूरा सफेद गिलाफ़ हो, अन्य औषधि के साथ बदल कर दे।

नेट्रम मुर—जब बहुत प्यास हो, ज्वर हो, होंठ के आसपास छाले हों और जब कुनिन से नुकसान पहुचा हो।

मेगनेशिया फ़ास—बारी के ज्वर में जब पिडलियों में ऐंठन हो, "नेट्रम सल्फ" के साथ बदल कर दे। जाडा पीठ के ऊपर और नीचे मालूम पडता है।

नेट्रम फ़ास—जबकि खट्टी कै होती हो और तेजाबी पानी गिरता हो।

सूचना

जूडी के रोगियों को सन्ध्याकाल में या बडे सवेरे घर से बाहिर न जाना चाहिये। जायँ, तो कुछ खाकर जाँय। थकावट का काम न करना चाहिये, और हवा के झोंको मे न ठहरना चाहिये। जिस दिन जाडा चढनेवाला हो, उस दिन हलका खाना खाँय, जैसे दलिया, आरारूट, साबूदाना, शोरबा वगैरह। बुखार के बाद "नेट्रम मुर" और "नेटम सल्फ" ३०X जादू का असर रखता है।

कुनीन के गुण न करने के बाद "नेट्रम मुरीयाटीकम" ने किया —

मिस्टर ला को ३ महीने से जाडा और बुखार था। कुनीन और अन्य औषधियां दी गई, हर दूसरे दिन ११ बजे बारी आती, हाथ पैरो मे बडा दर्द होता, २ घंटे तक जाडा रहता, इस समय प्यास न लगती। तीसरे प्रहर ज्वर चढता, दर्द से शिर फट जाता और इतनी प्यास लगती कि बहुत सा ठडा पानी पिया जाता। पसीना थोड़ा या बिलकुल नही होता। खाता पीता अच्छी तरह, और बीच के दिन में अपना काम करता। "नेट्रम मुरीयाटीकम" ३X हर ४ घटे पीछे दिया गया। दूसरी बार हलकी जूडी आई और फिर न आई।

—(एच० सी० एलेन० एम० डी०)

ज्वर (प्रलापक) फेफड़ों की सोज़िश
Pneumonia

फेरम फ़ास—पहिला सूजन का दर्जा हो. बहुत पसीना आता हो, और ज्वर कम रहता हो। खाम्मी सूखी और खून मिली अथवा ख़राब कफ मिली हो, तो बार बार दो।

काली मुर—दूसरे दर्जे मे। जीभ का रंग देखना। थूक मे सफेद कफ मिला हो।

काली सल्फ़—पसीने का अभाव हो, तो "फेरम फास" के साथ बदल कर दो। चित्त धरधराता हो। पतला, पीले रग का बलगम निकलता हो। सर मे दर्द हो और आसू निकले।

नेट्रम मुर—छाती धरधराती हो, और पतला बलगम चिपकीला, साफ, झागदार हो। मुह मे झागदार पानी निकलता हो। आसू और शिर दर्द के साथ खासी हो।

केल्केरिया सल्फ़—झागदार पीप और चीजे निकलती हो।

काली फ़ास—आख़िरी दर्जे में कमजोरी हो। ताकत घट गई हो, बदबू आती हो।

केल्केरिया फ़ास—बीच बीच में देना चाहिये, और जब आराम होने लगे, तब देना चाहिये।

सूचना

बीमार को खूब आराम दो, पोलटिस या फलालेन से, जो "फेरम फ़ास" से तर किया हो, दर्द की जगह पर सेकना चाहिये। खुराक के लिये ज्वर देखो।

टीस होना (असबी दर्द) Neuralgia

(अर्थात् ज्ञानतन्तुओं के विकार से रोग होना)

फेरम फ़ास—जबकि सर्दी लगने से शिर मे सख्त दर्द हो, मानो कोई शिर मे नाखून गडा रहा है। चेहरा सुर्ख़ हो, जलन, हरारत और बुखार हो। भौह के ऊपर और औरतो के स्तन मे दर्द हो।

मेगनेशिया फ़ास—दर्द तेज होता हो, दौडता हुआ और प्रबल रूप से। गरम कमरे मे आराम जान पडे। खुली जगह मे विशेषता हो। पाजड मे दर्द हो।

विना ज्वर के ठन्डक से ऐठन हो। चेहरे मे दर्द हो। टीस के लिए यह खास दवा है। सेकने से आराम हो।

काली फास—जब टीसो के साथ उदासी हो, थक गया हो, कोलाहल और प्रकाश अच्छा न लगता हो। दुबले आदमियो की टीस हो।

केल्केरिया फास—जबकि टीस नित्य समय पर आती हो, रात्रि के समय ऐसा जान पडता हो कि कीडे रेग रहे हैं। स्थान ठडा पड गया हो और सुन्न हो गया हो।

नेट्रम मुर—दौडनेवाला दर्द, साथ ही आँखो से आसू बहते हो। चेहरे मे दर्द हो।

काली मुर—सख्त टीसे हो, और साथ ही जुबान का रग सफेद या भूरा हो।

सूचना

जबकि दर्द बहुत तेज हो, तो दर्द के मुकाम पर "क्लोरोफार्म लीनीमेंट" लगावे। जिन लोगो को अक्सर दर्द रहा करता हो, उन्हे चाहिये कि "काडलिवर आइल" मक्खन, मलाई आदि खूब खाय, जितना वे पचा सके। गिजा पौष्टिक हो। ठंड से बचना भी जरूरी बात है। गर्म कपडे, जिनमे फलालेन भी शामिल है, पहिनने चाहिये। स्नान करना नियम पूर्वक उचित मात्रा मे। खुले मैदान मे व्यायाम करना चाहिये। आराम से रहना भी जरूरी है।

"मेगनेशिया फास" चेहरे की टीस में:—

एक २४ वर्ष की लड़की, जो रंग मे काली, नाजुक मिजाज और तबीअत, लेखक का काम करती थी। वह दो हफ्ते चेहरे में टीस चलने के लिये इलाज करती रही। मुख्य दवा "मारफिया" दिया गया, परतु उससे आराम न आया। जब मैने उसे देखा, तब वह बहुत कमजोर पड गई थी। दाहिनी तरफ का चेहरा और कोयो के ऊपर का स्थान सूज गया था। दर्द बहुत सख्त था, जो कि कष्टदायक और उछलनेवाला था। छूने से भी बड़ा दर्द होता था, दर्द बारी से होता था, कभी चेहरे में। "मेगनेशिया फास" ३X ने रोगी को १० घटे मे आराम कर दिया।

—(एच० बी० जोन्स, एम०डी०)

"मेगनेशिया फास" शिर की टीसो मे:—

शिर मे बडी टीसे चलती थी। एक स्त्री ६० मील चल कर गाना सुनने आई थी, दर्द से उसको चारपाई पकड़नी पडी। कई घटे तकलीफ सह कर, मुझे बुलाया। "मेगनेशिया फास" ३X हर दस मिनिट बाद देने से घटे भर मे उसे बिलकुल आराम आ गया।

—(डाक्टर एडिंबगटन०)

तशन्नुज (ऐंठना) Spasms, Convulsions etc.

मेगनेशिया फास—हर तरह के तशन्नुज मे, चाहे वह शरीर मे कही हो। अंग फड़कना, ऐंठन होना, खिच जाना, लिखने में हाथ कांपना, निगल न सकना, मुँह के किनारों का फड़कना या चेहरो का फड़कना, इस औषधि के प्रयोग से दूर होता है। हनुस्तंभ।

केल्केरिया फास—तशन्नुज से बच्चो का दांत सूजा हो। ("मेगनेशिया फास" के साथ बदल कर दें।) बेहोशी हो।

काली फास—बेहोशी डर से हो, चेहरा पीला हो, वायुगोले से बेहोशी हो और मरीज़ बकता हो।

काली मुर—मृगीवालों में बेहोशी, मृगी से बचाने के लिये। (मृगी देखो।)

फेरम फास—अगर ज्वर हो। बच्चों मे दात निकलते वक्त बेहोशी हो।

सूचना

जब मनुष्य को तशन्नुज हो, तब छाती, गर्दन और शरीर के कपड़े ढीले कर देने चाहिये। चेहरे पर पानी छिड़के, और ताज़ी हवा लगने दे। "फेरहैट" के ९८ दरजे का गरम पानी स्नान के लिये अच्छा है। शिर पर पतला कपड़ा बार बार पानी में भिगो कर रखे। जब तशन्नुज के साथ साथ नीचे लिखी बाते मौजूद हो, जैसे आतों की बेतर्तीबी, चीखना, चिल्लाना, बेचैनी, मुँह से बुरी बू आती हो, तो दूध मे "लाइम वाटर" मिला कर पिलावे। एक बोतल में एक मेज का चम्मच "लाइम वाटर" मिलना चाहिये। ऐसा करने से अक्सर तशन्नुज न होगा। "मेगनेशिया फास" ऊपर लिखे लक्षणों में तशन्नुज रुक जायगा।

दमा Asthma

दमा के अनेक कारण हैं। यथा सीने मे खून का ज्यादा जाना, बेतरह मासिक-धर्म, सांस के साथ गर्द व गुबार जाना, मन विकार होना, वायुगोला, जुकाम रुक जाना, पेट फूलना, बवासीर का रुक जाना, शारीरिक व्याधियाँ।

काली फास—श्वास के रोगों के लिये ख़ास दवाई है। बड़ी खुराक मे बार बार देना चाहिये (३X) वाजिबी दवा के साथ बदल कर देना चाहिये। ज्ञानतन्तुओं के विकार का दमा, थोड़ा खाना खाने से बारी आना, मन उदास रहना। घास-फूस के कारण होनेवाला दमा।

केल्केरिया फ़ास—हवा की नालियों का दमा। जबकि मवाद साफ और चिपकनेवाला हो या गाढा और पीला हो। जिस बच्चे को चारपाई से उठाने से उसका दम घुटता हो। (नेट्रम फास)

केल्केरिया फ़्लोर—जबकि बलगम में पीली, छोटी गुठलियां हों और मुश्किल से निकलता हो। साँस मुश्किल से चलती हो।

काली सल्फ़—हवा की नालियों के दमा में, जबकि पीला, नीला और आसानी से निकल जानेवाला बलगम हो। गरम कमरे में शाम के समय और गर्मियों में रोग की जियादती, और ठंडी हवा में आराम हो। खाने के बाद ज्यादा हो।

काली मुर—ऐसे दमा में, जबकि आमाशय ठीक न हो, जुबान पर सफेद मैल हो, कब्ज हो और जिगर काम न करता हो। बलगम गाढा और सफेद, चिपकनेवाला, ऐसा कि मुश्किल से निकलता हो। मालूम हो कि दिल और फेफडा सिकुडा है।

नेट्रम मुर—ऐसा दमा, जिसमें साफ, झागदार बलगम हो। आंख और नाक से पानी बहे।

मेगनेशिया फ़ास—पेट फूलता हो, दर्द हो, और सीना जकडा रहता हो। नाडियों की कमजोरी के कारण दमा, जिसमें ऐंठन हो।

नेट्रम सल्फ़—जवान आदमियों के दमा की दवाई है। जो दमा बरसात में ज्यादा होता है, तरी में बढता है। जुबान मैली, हरी, भूरी होती है। मुँह का स्वाद कडुआ रहता है। सवेरे पतला दस्त होता है।

सिलीसिया—जब सास लेना मुश्किल हो, और ताज़ी हवा के लिये रोगी छटपटावे।

सूचना

दमा की जब बारी आवे, तो हाथ पैरों को गरम पानी में डालने से बडा आराम आता है। काफी खूब तेज और खूब गरम बगैरह चीनी या दूध डाले पिलाना कभी कभी बडा लाभ पहुँचाती है। शोरे के पानी में "ब्लोटिंग पेपर" भिगो कर सूखने पर उसका धुआँ सुंघाना फायदा करता है। बहुत खाना, शाम को खाना, पैर भीगे रखना, भीगे कपडे पहिनना, अचानक सर्दी, गर्मी में जाना निषेध है। मसालेदार चीजे खाना और शराब पीना मना है। खाना नियत समय पर खाना चाहिये।

"काली मुर" का सदुपयोगः एक जमीन्दार का लडका, जो कई वर्ष से दमा से दुःख पाता था, अनेक प्रकार की औषधिया व्यर्थ हो चुकी थी। तब उसने शुस्लर की दवाई की। उसकी बहिन लिखती है— 'मेरी मा ने जर्मन की दवाइयां

मंगाई, और मेरे छोटे भाई को, जिसे दमा उभडा करता था, शनीचर के दिन और कल "काली मुर" दिया गया। बड़ी सफलता हुई। सब दवाइयो की अपेक्षा जल्दी फायदा मालूम हुआ। वह मेरे माँ-बाप के साथ बाहर जाता है, और दवाइया साथ हैं, जो वारी के समय बहुत उपयोगी होंगी।

दर्द

(पीठ का दर्द, टीस, गठियाइत्यादि देखो)

दस्त लगना Diarrhoea

फेरम फ़ास—पतले दस्त बार बार हो। प्यास और ज्वर हो, सर्दी से दस्त हो, और भोजन न पचता हो। एकदम पतला दस्त हो। कभी कै भी हो।

नेट्रम फ़ास—खट्टी बू आती हो, दस्त का रंग हरा हो, दांत निकलने के समय बच्चों के दस्त हों; कभी कभी कीडे भी निकलते हों। गर्मी मे जब कच्चे फल खाने से दस्त लग गये हों। मलद्वार मे खुजली और दर्द हो, खट्टी कै हो।

केल्केरिया फास—आमाशय के विकार से गोद के और बडे बच्चों को दस्त लग जाँय। दस्त गरम, पतले, दुर्गन्धित, बहुत और वायु के साथ जोर से निकले।

काली मुर—दस्तों का रंग फीका, पीला, मटीला, मसालेदार या कडाई की चीज़ खाने से हुआ हो। दस्त मे खून या आव हो। टाइफाइड ज्वर के साथ हो।

काली फ़ास—बदबूदार दस्त हों, दस्तो का रंग चावल के पानी के समान हो। तबीअत गिरी सी हो जाय व थकावट जान पड़े, निचली आँतो में जलन और पीडा हो।

नेट्रम सल्फ़—पुराने दस्त, जिसमे प्रातःकाल पतला दस्त हुआ करे। तरी मे रहने अथवा वर्षा ऋतु मे रोग बढ जाय। बूढे लोगो को दस्त हों।

सिलीसिया—गोद के बच्चों के दस्त दुर्गन्धित और खट्टे। शिर पर पसीना आना। पेट सख्त, गर्म और फूला रहे।

काली सल्फ़—मल पीला, पतला और ज़्यादा हो। जीभ पर पीली तह हो। अगर मेगनेशिया फास से फायदा न हो, तो तगन्तुज मे दे।

नेट्रम मुर—ज़्यादा मल, चपकीला और साफ हो, टीस उठती हो, दस्त और क़ब्ज दोनो हुआ करें, बच्चों का पुराना दस्त।

मेगनेशिया फास—आँतों में तशन्नुज हो, पेट फूला हो और शूल का दर्द हो।

केल्केरिया फास—मल में खून मिला हो।

सूचना

खाने को दलिया, चावल, "टेपीओका" इत्यादि दें। मांस किसी प्रकार का न खावे। चिकने लुआब की चीजें, यथा जौ का पानी, गोंद मिला पानी, अलसी की चाय इत्यादि बहुत ठीक है। दूध और चूने का पानी अच्छा है। हाथ पैर गरम रखे। सर्दी अथवा तरी न सतावे। दर्द के लिये पेट पर "फलालेन" की पट्टी बाधनी चाहिये। रात की हवा तथा देर से जगना रोग के कारण होते हैं।

"नेट्रम सल्फ" पुराने दस्तों में, जो सवेरे प्रबल होते थे।

डाक्टर टी॰ एफ॰ ऐलन ने एक बुढिया को पुराने दस्तों से आराम कर दिया। दस्त के दिनों में सवेरे विशेषता होती थी। "नेट्रम सल्फ" 3X दिया गया था। डाक्टर का कहना है "पुराने दस्तों में, जबकि सवेरे का दस्त बहुत बढा होता था, इस औषधि में लाभ पहुंचा। जहा कहीं किसी और झिल्ली में मवाद गिरता हो, वहाँ भी इस दवा से फायदा पहुचा।"

दांत निकलना Dentition

केल्केरिया फास—मुख्य औषधि। दात सुगमता से निकलने की सहायता करती है। दात देर में निकले, और धीरे धीरे बढते हों। दात निकलने के समय में होने की अन्य बीमारियाँ, बच्चो में दात की बीमारियाँ, गर्भकाल में देने से दूर हो जाते है।

मेगनेशिया फास—होरे और ऐठन हो। (केल्केरिया फास्र के साथ अदल बदल करें।) गर्म पानी के साथ कभी कभी देना चाहिये।

फेरम फास—ज्वर हो। आँखे चमकती हों, पुतली फैली हो और आराम न मिले।

सिलीसिया—पसीना ज्यादा शिर पर हो। उन बच्चो मे, जिनका सिर और पेट बडा हो, बहुत फायदा होता है।

नेट्रम मुर—मुँह से बहुत थूक टपकता हो।

केल्केरिया फ्लोर—इससे दात जल्दी निकलता है। दात निकलते समय क़ै हो, बच्चा रोता हो, और बेहोश होता हो।

दांत का दर्द Toothache

फेरम फास—जब मसूडो की सोज़िश के दर्द हों, मसूडे लाल हो, दुखते हों और सूजे हुए हो। दात लम्बे मालूम हो।

काली फास—जब इन आदमियों के दांतों मे दर्द होता है, जिनका मुंह पीला पड गया है। मानसिक चिन्ताओ ने जिन्हे खा डाला है, जिनके मसूडो से झट खून निकल आता है। दात पीसते हों।

केल्केरिया फास—जब दातो मे कीडा लगने से दर्द हो, और दात जल्दी खोखले पड गये हो, दात मे रात मे दर्द करं।

सिलीसिया—ऐसा दर्द हो, जब मसूडे मे फोडा बन गया हो, दांत की जड मे दर्द हो, दांत उखाडने से आराम आता हो, और रात को दर्द मे अधिकता हो।

काली मुर—जब मसूडे और गाल सूजे हो, और दात में दर्द हो।

मेगनेशिया फास—दात मे बाई का दर्द हो, सेकने से आराम हो। ठंड से दर्द बढता है। ज्ञानतन्तु की नलियो के किनारे दर्द हो।

नेट्रम मुर—दात मे दर्द हो, और आसू बहे। थूक बहुत निकले।

केल्केरिया फ्लोर—दात हिलते हो, और दर्द भी हो। खाने में दर्द हो।

सूचना

दर्द से बचना हो, तो दात साफ रखे, साफ ठंडे पानी से कुल्ली करो। साधारण नरम ब्रुश से दातों को रोज़ सवेरे साफ़ करो। दात साफ करने के लिये जर्मन की नई दवाई "सेनीटौल" बहुत अच्छी है। खूब मुह शुद्ध और खुशबूदार हो जाता है। गरम चीज़े न खाना चाहिये। तमाखू चबाना, गरम गरम चाय पीना दात बिगाडनेवाले है।

"काली फास" और "सिलीसिया" ने दात मे दर्द और पीप निकलना बंद कर दिया —

दो वर्ष हुए, मैने एक दलाल के दातो का इलाज किया था। वह अब एक दिन फिर मेरे पास आया। उसके दांतों मे बडा दर्द था। उसकी प्रकृति बडी नाजुक थी। मानसिक चिन्ताएँ उसे घेरे रहती थीं। मैंने दात मे कोई खराबी न पाई, लेकिन दाहिनी डाढ की जड मे सूजन थी। गहरा दर्द होता था। दात दबाने से आराम आता था। मसूडो को छूने से खून निकल आता था। "काली फास" ३X और "सिलीसिया" ६X अदल बदल कर, हर दो घटे पीछे चार चार टिकियाँ दी गई। तीन दिन पीछे दवाइयो की बड़ाई करता हुआ और हँसता हुआ मेरे पास

पहुँचा। उसने कहा कि चन्द खुराक में ही दर्द चला गया था, और 'सिलीशिया'' के व्यवहार से पीप पड़ना बन्द हो गया। —(डॉ० स्मिथ, डी० डी० पृ० ८०)

दिमाग की अवस्था

(मानसिक लक्षण देखो)

दिमाग़ी कमज़ोरी Brain-fag

केल्केरिया फ़ास—ज्ञानतन्तुओं की दुर्बलता, नर्वसपन का घिरा रहना, रात को बहुत पसीना आना, फीका और सूखा सा चेहरा, पौरुष की हीनता, दुर्बलता के कारण पैरों का ठंडा रहना और नसों का फूल जाना, नींद न आना, भूख न लगना और अंगों का सोना सा रहना।

सिलीसिया—चित्त विभ्रम, चित्त एकाग्र करना कठिन, चट घबरा जाना और व्यग्र रहना, पढ़ने-लिखने में थक जाना, सोच न सकना, विशेष दुर्बलता जान पड़ना, परन्तु रोगी सावधान हो सकता है, और हिम्मत भी बांधता है, लेकिन झट थक जाता है और आराम करने के लिये लाचार होता है।

काली फ़ास—नष्ट हुई मानसिक शक्ति को फिर ताजा करने के लिये ठीक है। इससे ज्ञानतन्तु संबंधी निर्बलता से उत्पन्न हुई सब बीमारियाँ अच्छी होती हैं।

नेट्रम म्युर—नींद न आती हो, बुरी चिन्ताएं सताती हों, बात करते करते थक जाता हो, दिमाग में गड़बड़ी हो।

दिल के रोग Affections of the Heart

काली फ़ास—गठिया के दर्द के पीछे और सब कठिन रोगों में, जब दिल धड़कता हो, जब चिन्ता "मेलीकोलिया" या मानसिक दुर्बलता से धड़कन हो। ज्ञानतन्तु की कमजोरी हो। दिल अच्छी तरह से काम न करता हो, गर्मी हो, दिल की ख़ास दवा है।

मेगनेशिया फ़ास—जब तशन्नुज होकर दर्द हो, और दिल या दिल के मुकाम पर फैलनेवाला और उछलनेवाला तेज दर्द हो।

नेट्रम म्युर—ऐसे मनुष्य, जिनका खून फीका, पतला और पनीला हो गया है, साथ ही उदासी और उद्विग्नता है। जब दिल धड़कने का रोग हो। शोथ हो।

फेरम फ़ास—दिल ढीला हो गया हो, सोजिश हो, सख्त या धीमा दर्द हो, नब्ज़ सख्त, भरी और तेज हो।

काली सल्फ़—नब्ज तेज हो। छेदने का दर्द हो। चेहरा पीला हो।

केल्केरिया फ्लोर—रुधिर की नालिया फैल गई हो, दिल फैल कर वढ गया हो और ठीक काम न करता हो।

सूचना

दिल की खराबी दिल की ही बीमारी से नही होती, वल्कि किसी दूसरे हिस्से के खराब होने से होता है, जैसे अगर दिल बहुत धडके, तो समझना चाहिये कि आमाशय की खराबी है। जब मालूम हो कि सोज़िश है, तो ऐसी चीज़ नही देनी चाहिये, जिससे दिल पर कुछ असर पडे। सीढी पर नही चढना चाहिये, सख्त मेहनत करना मना है। घबडाहट, अफसोस न करना चाहिये। बहुत आराम करना चाहिये—शारीरिक और मानसिक।

गिज़ा—न हज़म होनेवाली अथवा पेट फुलानेवाली गिज़ा नही खानी चाहिये। खूब आराम करना और अच्छा खाना खाना चाहिये।

दुर्बलता

(कमज़ोरी देखो)

धातु-स्राव Spermatorrhoea

मुख्य औषधि "मेगनेशिया फ़ास", "केल्केरिया फ़ास", "नेट्रम फ़ास" और "काली फास" है।

नेट्रम फास—जब तेज़ाबी कैफियत के साथ धातु क्षीण हो, वीर्य पतला और पनीला हो गया हो, बुरी बू करता हो, स्वप्न-दोष होने के पीछे दुर्बलता बढ जाती हो और हाथ कापते हों।

काली फ़ास—जब बुरी आदतो के नतीजे से धातु गिरने का रोग हो और मानसिक लक्षण पैदा हो गये हों, बुरी आदतो को रोकना चाहिये। रात से धातु दर्द के साथ निकलती हो।

केल्केरिया फ़ास—जबकि शरीर की भीतरी क्रियाओ मे निर्बलता आ गई हो।

मेगनेशिया फ़ास—उस दशा मे बहुत अच्छा है, जबकि बुरी आदतो के नतीजे से रोगी को मृगी रोग हो गया हो।

नेट्रम मुर—धातु निकलती हो, निकलने के बाद ठन्डक मालूम पडे, थकावट हो, ज्यादा ख्वाहिश हो, नामर्दी हो।

केल्केरिया फ़्लोर—धातु बार बार निकलती हो, और अड छोटे हो गये हों।

सूचना

वेरिकोसीलय फोते के नीचे लटकने से यह बीमारी होती है, इसलिये लंगोट बाधना ज़रूरी है। लंगोट नमूने के तौर पर यहाँ से मगा कर वैसा ही दूसरा बनवा ले।

गिजा हलकी हो, मसालेदार गोश्त, अन्डा, शराब व तम्बाकू कम करना चाहिये। अगर बीमार की बुरी आदत हो, तो छोड़ देना चाहिये। सब किस्म के जोश दिलानेवाली चीज़ें, जैसे नावेल पढना, बुरा ख्याल करना, फौरन खा कर सोने जाना बद कर देना जरूरी है।

गर्म पानी से नहाना अच्छा नही है। ठंडा पानी बहुत अच्छा होता है। सादी कसरत करनी चाहिये।

नकसीर फूटना Epistaxis

फेरम फ़ास—बच्चों की नाक से सुर्ख खून टपकता हो।

काली फास—कमजोर, नाजुक तबीअत के आदमियों मे। बुढापे के कारण अथवा निर्वलता से जब तब नकसीर फूटा करती हो। रुधिर काला, पतला, पिसी हुई काफी के रग का और दुर्गन्धित हो।

नसों की बीमारियाँ

(वरीद देखो)

नाखून में फ़ोड़ा Felons

(फोडा देखो)

फेरम फ़ास—सोजिश के दर्जे मे हरारत, दर्द, बुख़ार और खून जमा होने की हालत मे दे।

सिलीसिया—यह दवाई बहुत अच्छी है। मवाद पडना रोकती है और नया नाखून निकल आता है।

सूचना

जब नाखून के नीचे फोडा मालूम हो, उंगली को नमक मिले हुए गर्म पानी मे बार बार भिगोना चाहिये। और हाथ को उठा कर रखना चाहिये। जब जान पडे कि पीप पड रही है, तब पुल्टिस बांधना शुरू करे। नीबू मे छेद करके उंगली को रखने से आराम होगा। यदि चीरने की आवश्यकता हो, तो जर्राह की सहायता लो।

"फेरम फास" और "सिलीसिया" के व्यवहार से १० में से ९ फोडे अच्छे हो जायँगे।

"फेरम फास" नाखून के फोडे में.—

ठीक काम के दिनों में एक दर्जिन की पहिली उंगली के नाखून के नीचे फोडा हुआ। हाथ दाहिना था, उसे ३ X की मात्रा में "फेरम फास" दिया गया। हर दूसरे घंटे पानी में मिला कर तत्काल आराम मालूम हुआ। वह समझी फोडा चला गया। फिर खूब काम करने लगी। फल यह हुआ कि उंगली में ज़ोर-शोर से दर्द शुरू हुआ, सूजन हुई। इस बार मैंने उसे "सिलीसिया" ३ X दिया, और थोडे ही समय में उंगली बिलकुल अच्छी हो गई और फिर न दुखी।

—(सी० आर० एम० डी०)

निद्रा नाश Insomnia

फेरम फ़ास—जब रुधिर की अधिकता के कारण नींद न आती हो, रात के समय बेचैनी रहती हो, बुरे सपने दिखाई देते हों। तीसरे पहर आँखें झपकती हों।

काली फ़ास—नाजुक मिजाज, भडकनेवाले आदमियों में झगडा-फसाद या काम बिगड जाने की चिन्ता से नींद न आती हो। चिडचिडापन और उदासी हो, बार बार पेशाब लगता हो। बच्चों के कावूस में इस दवा का प्रयोग करना चाहिये।

निमोनिया

(ज्वर-प्रलापक देखो)

नींद न आना Sleeplessness

काली फ़ास—जब मानसिक परिश्रम की अधिकता, उत्तेजना सांसारिक चिन्ता, उद्विग्नता आदि से नींद न आती हो, तो इसका व्यवहार करें। "क्लोरल" और "मार्फिया" जो निद्रा लाने के लिये दिये जाते हैं, उनकी अपेक्षा यह दवा बहुत अच्छी है। इससे बिलकुल नुकसान नहीं पहुँचता। जंभाई, सोते में बच्चों का चिल्लाना, चलना, बेचैनी इत्यादि में भी लाभदायक है।

नेट्रम मुर—सोने की ख्वाहिश हो। सुबह के वक्त थका मालूम हो। सोते में लार बहे। खूब नींद लगे।

नेट्रम सल्फ़—तेज़ाबी कैफ़ियत के साथ जंभाई आवे। पीलिया रोग हो।

केल्केरिया फास—सुस्ती बुड्ढो मे, सुबह जल्दी न नींद खुले, जंभाई आवे, बच्चे रात मे रोये।

पित्तोपद्रव Biliousness

काली मुर—पित्त मे जब जुबान सफ़ेद अथवा भूरी या सफ़ेद हो, फ़ीके दस्त हो, दाहिने कधे के पीछे दर्द हो।

नेट्रम सल्फ़—जब बहुत पढने या मानसिक परिश्रम करने मे पित्त का जोर हो।

पिटिका—छोटे फोड़े Boils

(देखो फोडा)

फेरम फास—सोजिश के दर्जे मे हरारत, दर्द, खून इकट्ठा होना, और ज्वर-इनके लिये। इससे पीप नही पडती।

सिलीसिया—जबकि पीप पडना शुरू हो गया है। इससे पीप पड कर फोडा जल्द पक जाता है। चीरना नहीं पड़ता।

सूचना

ज्यो ही सूजन होकर फोडा उठे, सन के बीज की पुल्टिश या रोटी और दूध की उस पर लगावे और कई बार बदले। ऐसा करने से फोडे में मुँह बन जाता है, और कील निकल जाती है। जिन आदमियो के अकसर फोडे निकला करते हों, उनको ठीक भोजन करना चाहिये, शरीर साफ रखना चाहिये और खुली हवा मे रहना चाहिये, तभी आराम होगा।

दूसरी दवाइयो से फायदा न हुआ है।

एक २३ वर्ष के जवान को फुसियाँ उठा करती थी। फोडे चूतड़ और पीठ पर हुआ करते थे, कुछ छोटे, कडे, लाल और बहुत दर्द करनेवाले, और कुछ फूटनेवाले होते थे। ८ महीने तक कितने ही लोगो का इलाज किया, पर आराम न हुआ। पुल्टिश वगैरह से आराम हो जाता था; परतु फोडे फिर निकल आते थे। ठीक नीद भी न आती थी। प्यास बहुत लगती थी, और सर्दी सी मालूम होती थी। उसको "सिलीसिया" 3X की खुराक सुबह शाम दी गई। दो हफ्ते मे फोडे बिलकुल चले गये। प्यास भी न रही, खूब नीद आने लगी, जाडा भी न रहा। दो हफ़्ते तक इलाज और जारी रहा। तब से कई महीने तक फुसियो के निकलने

का समाचार न मिला, और तबीअत बहुत अच्छी रहने लगी। इन औषधियों के गुण का उपयोगी होना, इससे प्रसिद्ध है। —(जे० वी० डेविस, एम० डी०)

पिटिका प्रमेह का

(प्रमेह पिटिका दुष्ट फोडा देखो)

पीठ का दर्द Backache

सिलीसिया— जब रीढ के बीच मे हमेशा दर्द रहता हो, गेठन हो।

केल्केरिया फ्लोर—थकन हो। पीठ मे नीचे की ओर दर्द हो, भरा सा जान पडे, कब्ज हो, जब चलने लगे तब दर्द ज्यादा हो।

नेट्रम मुर—सख्त चीज पर सोने से आराम हो पीठ कमजोर जान पडे, विशेष कर सवेरे। बहुत कमजोरी और थकावट हो। गर्दन पतली और कडी हो। रीढ को छूने से दुखने लगती हो।

नेट्रम सल्फ—रीढ ऊपर नीचे दुखे, सिर्फ दाहिनी करवट सोया जाय।

नेट्रम फास—सवेरे जागने पर कमर में दर्द हो।

काली फास—ऐसा दर्द, जिससे चला न जाय, धीरे चलने मे आराम मिले। बैठ कर उठने मे तकलीफ हो।

मेगनेशिया फास—सख्त दर्द हो, दर्द चुभने का सा हो, उछलता हो, और टीस का सा हो।

पलस्तर करनेवालो की पीठ मे दर्द होने की दशा मे "केल्केरिया फ्लोर" और "नेट्रम मुर" का फायदा —

"जेम्स" नाम का एक मनुष्य, जो पलस्तर का काम करता था, २८ वर्ष की उमर थी। उसकी पीठ मे बडा दर्द रहता था। कभी तीसरे पहर तक, कभी सब रात काम करते मे उससे सीधा खडा न हुआ जाता था, सीधा करने में ऐसा जान पडता था कि टूट जायगी। सामने का काम करते रहने मे और लगातार हाथ चलाने मे आराम रहता था। पाड के किनारे पर लेटने मे उसे आराम आता था, ऊपर की तरफ देखने से गर्दन अकड जाती थी। "केल्केरिया फ्लोर" ३X और "नेट्रम मुर" ३X एक दूसरे के बाद देना तजवीज किया गया, दो हफ्ते तक हर दूसरी रात को एक पुडिया अदल बदल खाने से ही आराम होने लगा, और कुछ हफ्तो मे बिलकुल आराम आ गया। —(चार्लस राइट, एम० डी०)

पेशाब का नींद में गिरना Enuresis

फेरम फ़ास—जो बच्चे बिस्तर में मूतते हैं, मूत्राशय की नसों की कमज़ोरी के कारण ऐसा रात को होता है। अकसर स्त्रियों में भी देखा जाता है। ग्वाँसी के साथ पेशाब निकल जाता है।

केल्केरिया फास—छोटे बच्चों और बुड्ढों के लिये।

"फेरम फास" पेशाब न रुकने की दशा में —

एक ३५ वर्ष की स्त्री ३ वर्ष से दिन के समय पेशाब न रोक सकती थी। तन्दुरुस्ती अच्छी थी। ३x की मात्रा में "फेरम फास" चार बार रोज़ दिया गया। एक हफ्ते पीछे उसने बताया कि उसमें मूत्रावरोधक शक्ति आ गई है। पिछले वर्षों से अब उसकी दशा बहुत अच्छी है। ८ महीने पीछे फिर उसे शिकायत हुई और गर्भिणी होने पर भी "फेरम फास" के व्यवहार से बिना इच्छा पेशाब आना रुक गया। (वाइल्ड)

प्रमेह—औपसर्गिक Gonorrhoea

काली मुर—प्रामुख्य औषधि। गाढा, सफेद, पीला या सफेद मवाद निकलता हो। सूजन के लिये योग्य औषधि है। सुजाक के साथ एगजीमा हो।

फेरम फास—सोजिश के दर्जे में (चलना फिरना बन्द करना चाहिये)।

काली फ़ास—खून मिले मेह का निकलना।

केल्केरिया सल्फ—खून मिले मवाद का निकलना।

नेट्रम मुर—पुराना प्रमेह पानी के सदृश मवाद निकलता हो। जलन के साथ निकले, सुजाक हो। "सिल्वर नाइट्रेट" की पिचकारी प्रयोग के बाद लेना। मूत्र-नली दबाने से दर्द करे।

केल्केरिया फ़ास—खून के अभाव का दर्जा, सुजाक (नेट्रम मुर के साथ) चिपकनेवाला मवाद, पारदर्शक, चिकना मवाद निकले।

काली सल्फ़—चिपकीला, पीला या हरा सा निकले। सुजाक के साथ पीला सा निकले।

नेट्रम सल्फ—पुराना मेह, गाढा, पीला, हरा निकले। मस्से हो प्रोसटेट बढ गये हो।

सिलीसिया—बहुत समय के रोग में गाढा पीप, और व्यायाम करते समय भी सर्दी लगना।

प्रमेह पिटिका—दुष्ट फोड़ा Carbuncles

(देखो फोडा)

फेरम फास—सोज़िश की दशा में दे, जबकि हरारत, दर्द, रुधिराधिक्यता और ज्वर मौजूद हो, इसके देने से अकसर पीप नही पड़ती।

काली मुर—दूसरे दर्जे मे, जब तक पीप न पड़ी हो, "फेरम फास" के साथ बदल कर दे। इससे पीप पडना रुक जायगा।

सिलीसिया—जब पीप पडने लगे, तब बडी उपयोगी होती है, नया रेशा (टिस्सू) जल्दी बनता है।

सूचना

शुरू मे गरम पानी से सेके, अलसी या आटे की पुल्टिश से दर्द को आराम होगा, और कील जल्दी निकल जायगी। सवा सेर पानी मे १० बूंद "कारबोलिक एसिड" को डाल कर उससे धोवे, ऐसा करने से घाव शुद्ध रहता है। भोजन पुष्ट होना चाहिये। "कोडलिवर आइल" दे। मांस का शोरबा पिलावे। अगर कमज़ोरी बहुत हो, तो "ब्रांडी" और अंडे का "मिक्सचर" पिलाना अच्छा होता है।

प्रवाहिका Dysentery

मेगनेशिया फ़ास—जब पेट और आंतो मे ऐठन हो, पेट से गॉठ लगा कर सोने से दर्द को आराम पडता हो। सेकने से भी आराम हो। बार बार टट्टी जाने की ख्वाहिश हुआ करती हो।

काली मुर—आमाशय और उदर मे जबकि दर्द ठहर गया हो। दस्त चिकने, पीले और बदबूदार हो। बार बार दस्त लगे और बहुत काटने का सा दर्द हो।

काली फ़ास—दस्त सडे हुए, बदबूदार हो। जुबान सूखी सी हो, दस्त मे निरा खून गिरता हो। रोगी बकता हो, पेट फूलता हो, और कॉच निकलती हो।

फेरम फ़ास—ज्वर के शुरू होने पर सोजिश हो, मल गर्म और पतला हो।

केल्केरिया सलफ़—मल ज्यादा और रुधिर समेत हो।

सूचना

दर्द, एठन, मरोड—आदि के लिये "मेगनेशिया फास" गरम पानी मे कभी कभी थोडा थोडा देना चाहिये। थोडी दवा पानी मे मिला कर "इजक्शन" देना चाहिये। दिन में कई बार ऐसा कर सकते है। रोगी को बिलकुल आराम से रहना चाहिये। तीक्ष्ण औषधि दे कर दस्त को कभी नहीं रोकना चाहिये। दस्त के रुकने

में कुछ देरी होने पर भी कोई परवाह नहीं। प्रवाहिका के बाद कब्ज होना संभव है। इसलिये थोड़े दिनों तक उदर के बारे में निगाह रखनी चाहिये।

बीमारी की हालत में गिजा बिलकुल हलकी और जल्दी पचनेवाली हो, जैसे कजी, बार्ली, आरा-रूट वगैरह दूध के साथ। बीमार अच्छा होते होते धीरे धीरे ज्यादा खुराक ले सकता है। रोगी को तीक्ष्ण-आहार, शराब, गोश्त वगैरह कभी नहीं खाना चाहिये।

प्लूरिसी Pleurisy

(अर्थात् फेफड़ो के पर्दे की सोजिश)

फेरम फास—ज्वर, दर्द और बगलों की पीड़ा के लिये। ऊपरी खाँसी हो, सांस उथली और कष्ट से ली जाय। दर्द के स्थान पर सेक करे, घंटे घंटे दवाई दे। शीघ्र अच्छा हो जायगा।

काली मुर—पसीना निकलने के बाद दूसरे दर्जे में, जुबान पर सफेदी हो।

केल्केरिया सल्फ—तीसरे दर्जे में, जब मवाद बनता हो। मवाद रोकने के लिए।

नेट्रम मुर—जब पतला मवाद जमा हो, जहां फेफड़े में रोग हो, वहां आवाज हो।

केल्केरिया फास—बीमारी में बीच बीच में देना चाहिये, जब रोगी अच्छा होने लगे।

सूचना

पूर्ण शान्ति से रखे। दलिया खाने को दे। बार बार ठंडा पानी चुसावे, इससे प्यास बुझेगी, आराम आवेगा। पुल्टिश द्वारा गर्मी पहुचाना या फलालेन को गरम पानी में निचोड़ कर दर्द के स्थान को सेकना बहुत अच्छा है। फौरन आराम जान पड़ेगा। खुराक के लिए बुखार देखिये।

प्लेग (ब्यूबोनिक) Plague, Bubonic

जीव रसायन औषधियों द्वारा प्लेग की चिकित्सा:—

मंगलोर में इन औषधियों का प्रयोग किया गया, बहुत फायदेमंद और सरल निकला। पहिले "फेरम फास" ६X, "काली मुर" ६X ज्वर और गिल्टी की सोजिश के लिये दें। उदर-विकार के लिये "नेट्रम सल्फ" ६X या ३X ऊपर लिखी औषधियों के साथ बदल कर दे। उदर विकार के लक्षण, तथा कै होना, भूख न लगना, कब्ज़ होना, इत्यादि। ऊपर लिखी तीनों दवाएं तब तक देते रहे, जब तक

गिल्टी पक न जाय। चाहे वह चीरी जाय या अपने आप खुल जाय। प्लेग मे रोगी जरबरें बकने लगता है। उस समय ऊपर की औषधियो के साथ "काली फास" ३X या ६X का प्रयोग बीच बीच मे करे। दुर्बलता के कारण जो लक्षण उत्पन्न होते हैं, उनको भी लाभ होता है। जब गिल्टी पक जाय, तब "फेरम फास" ६X और "सिलीसिया" ६X बदल बदल कर दे। बीच बीच मे "केल्केरिया फास" ६X देना चाहिये; इससे घाव जल्दी अच्छा हो जाता है।

औषधि प्रयोग—आधा ड्राम औषधि ले कर ४ औंस पानी मे हल करे; और एक बड़ा चम्मच एक खुराक समझें। दवाई हर घंटे देनी चाहिये; परन्तु रोग की तीव्रता मे आध आध या पाव पाव घंटे बाद भी दे सकते है।

मंगलोर,
२५ फरवरी १९०८ एल पी फेरनेंडस,
बी० ए०, एल० एम० ऐण्ड एस०

फ़ालिज होना Paralysis

फालिज के लक्षण ये हैं—स्थान का सुन्न होना, ठडा जान पडना, फीका होना और कुछ फडकने की कैफियत पाया जाना, परन्तु जब रोग अचानक आता है, तो लक्षण नही भी होते या थोडे होते हैं।

काली फ़ास—सब प्रकार के फालिज मे यह ख़ास दवा है। रोग चाहे धीरे धीरे हुआ हो, या एक साथ। जब गले के तारों का फ़ालिज हो गया हो, और आवाज बद हो गई हो। हाथ पैर मे फालिज व जब बच्चो में फालिज हो, आधे बदन मे फालिज हो।

मेगनेशिया फ़ास—इसको "काली फास" के साथ बदल कर देना चाहिये, जबकि तशन्नुज (ऐंठन) के लक्षण वर्तमान हो, जब पजा काम न करे, शिर अपने आप हिलता हो, हाथ हिलते हो। मास पेशियो को लकवा मार गया हो। थका मालूम हो, बैठ न सकता हो।

केल्केरिया फ़ास—अन्य औषधियो के साथ बीच बीच मे इसको भी दे। इससे शीतलता दूर होती है। रेंगने का सा अनुभव और सुनाई को आराम पहुँचता है। पीठ मे चोट लगने का सा दर्द।

फेरम फ़ास—यदि रोग का कारण सोजिश हो, तो अन्य औषधियो के साथ बदल कर दे।

नेट्रम फ़ास—घुटने से नीचे पैर में कमजोरी मालूम हो, चलने मे दर्द हो।

सिलीसिया—कभी रोग से फालिज हो, हाथ पॉव कापते हो, कमजोरी हो, जोडों मे कमजोरी हो, दर्द जगह बदलता रहे।

सूचना

जब अचानक फालिज हो जाय, तो चिकित्सक को दिखाना चाहिये। क्योंकि वह बडा कठिन रोग है। इसमे जीवन की भी शंका हो सकती है। सब प्रकार के फ़ालिजों मे ऊपर लिखी हुई चीजे अन्य सब औषधियों से उपयोगी निकलेगी। जब किसी स्थान का फालिज हो, अथवा फालिज धीरे धीरे होता जाता हो, तो दवाइयों को कुछ समय तक जारी रखना चाहिये, इनसे अवश्य इच्छा पूरी होगी। यदि बिजली का व्यवहार उचित शक्ति से किया जाय, तो अवश्य लाभ होगा। बहुत से रोगियों का आमाशय बिगड जाता है। उसपर खूब ध्यान देना चाहिये; जिसके लिये बदहजमी की चिकित्सा देखो। भोजन बहुत साधारण होना चाहिये। ज्यों ज्यों रोग को आराम होता जाय, त्यों त्यों उसकी मात्रा और शक्ति को बढा देना चाहिये।

फिरंग

(गरमी देखो)

फ़ीकापन–रुधिर फ़ीका पड़ना Anæmia

इस रोग के दूर करने के लिये ऐसी औषधि दी जाती है, जिससे खाना ठीक ठीक पच कर रुधिर में सुर्खी बढती है।

केल्केरिया फ़ास—जब रोग पालन के विकार से हो अथवा कठिन रोग के कारण ऐसा हुआ हो, चेहरा फीका पड गया हो। मानो शरीर मे लोहू नहीं है। हाथ पैर ठडे रहते हो। बच्चे दुबले पतले हो।

फ़ेरम फास—इसको ऊपर लिखी औषधि के पीछे दे। जबकि खून मे सुर्खी न आई हो, क्योंकि इस औषधि मे "आक्सिजन" के खींचने की ताकत है।

नेट्रम मुर—जब रुधिर पतला और पनीला होवे। दुर्बल लडकियां, जिनको मासिक धर्म ठीक ठीक न हो। चमडा मुर्दार मैला सा जान पड़े, कब्ज और उदासी रहे, "केल्केरिया फास" के साथ बदल कर दे।

काली फ़ास—जब मानसिक परिश्रम से व चिन्ता और चित्त की उदासी से रोग हो, कठिन रोगो के कारण रीढ कमजोर पड़ गई हो।

काली मुर—जब इस रोग के साथ ही साथ चर्म रोग अर्थात् फोडे फुसियॉ हो।

नेट्रम फास—जब रोग बदहजमी के साथ हो। खट्टी डकारे आती हो। इस दवा को देने से हाजिमा ठीक हो जाता है। रीढ़ मे दर्द और हाथ पैर सुन्न हो।

सिलीसिया—बच्चो मे यह रोग हो, जो ठीक ठीक पालन न होने के कारण दुबले, पतले और कमजोर हो गये हो। मासिक-धर्म के बदले श्वेत-प्रदर हो।

सूचना

व्यायाम—घोडे पर चढ़ना गाडी हाकना, पैदल चलना, बाइसिकिल पर चढना अच्छा है। ताजी हवा और सूरज की रोशनी लाभदायक है। अच्छे पुष्ट भोजन चाहिये, यथा मास, मछली, रोटी, दूध आदि। गरम पानी से स्नान करके धीरे धीरे ठंडे से करना लाभदायक और शक्ति-वर्धक है।

स्कूल की लड़कियो को "केल्केरिया फासफोरीका" से लाभ—१८ वर्ष की युवती रुधिर के फाके पडने के कारण दुर्बल हो गई थी; जब पढना, लिखना कठिन हो गया, भूख न रही। घर मे लेटी रहती, कही जाने को या कुछ काम करने को मन न करता। शिर-दर्द के कारण पढना छोड दिया, मासिकधर्म ठीक न होता था। कभी महीनो बद और किसी महीने बहुत होता। उसको "केल्केरिया फ़ास-फ़ोरीका" मुख्यता से और "फेरम फासफोरीकम" कभी कभी दिया गया। कुछ महीने पीछे वह फिर पढने लगी, मनमानी जगह जाने लगी और उसका रग भी बदल गया। —(सि० टि० एम०)

फेफड़ों की सोज़िश

(ज्वर-प्रलापक देखो)

फोड़ा Abscess

(नाखून और स्तनो के फोडे, पिटिका वगैरह दूसरी जगह देखो)

फेरम फ़ास—सोजिश मे हरारत, दर्द और खून जमा होने की दशामे। काली मुरीयाटीकम के साथ अदल बदल कर दें।

काली मुर—जब सूजन हो, पीप न पडी हो, इसके व्यवहार से पीप पडना रुक जाता है। कपडे पर रख कर घाव पर लगावे। (२x व ३x)

सिलीसिया—जब पीप पड गई हो, इसके देने से फोडा पक जाता है और बिना चीरे फूट जाता है। यह फोडे को जल्दी पकाने मे फायदेमन्द है।

केल्केरिया सल्फ़—जब फोड़े मे से पीप निकल गई हो, तो इसके देने से जल्दी पुर जाता है। गुदा के पास का दर्दनाक फोडा।

केल्केरिया फ्लोर—जबकि सडन हड्डी तक पहुंच गई हो और किनारे कडे हो गये हो।

नेट्रम सल्फ—पुराने नासूर का फोड़ा और उसमें से पानी निकले, घाव के चारो ओर काला निशान हो।

काली फ़ास—फोडे में से बदबूदार खून समेत मवाद निकले। घिंघले फोडे में।

सूचना

पुल्टिश बडे फायदे की है, दर्द दूर करती है और पीप बनाती है। फोड़ा जल्दी पक जाता है या बैठ जाता है, पुल्टिशो मे गरम पानी काम मे लाना चाहिये। जब फोडा फूट गया हो, मवाद निकल गया हो, तब "कलेनड्यूला' का लोशन. जो चाय के चम्मच भर, टिचर को मेज के तीन चम्मच भर पानी मे मिलाने से तैयार होता है। कपडे के साथ दिन मे चार पाच बार लगावे। इससे घाव जल्दी अच्छा हो जायगा। भोजन पुष्ट खिलाना चाहिये। शराब नही पीना चाहिये।

बदहज़्मी

(उदर विकार देखो)

बवासीर Piles

केल्केरिया फ्लोर—खूनी बवासीर, जिसमे रुधिर का दबाव शिर मे भी जान पड़े। कमर मे दर्द हो, हमेशा कब्ज़ रहता हो। जब बवासीर मे खुजली हो, तो बाहर से भी लगाना चाहिये।

फेरम फ़ास—बवासीर, जिसमें सुर्ख खून गिरता हो। सोज़िश और जख्म हो। बाहर से भी लगावे।

नेट्रम सल्फ़—बवासीर, जिसमे नीचे की आते बहुत गरम जान पडे. और पित्त की कैफियत मालूम हो।

मेगनेशिया फ़ास—जब मस्से बाहर हो, और दर्द होता हो, और तेज काटने का सा दर्द उछलनेवाला हो, तो बाहर भी गरम पानी मे मिला कर लगावे।

काली मुर—जब निकला हुआ खून काला और गाढा हो। जिगर ठीक काम न करे।

सूचना

बवासीर के रोगियो को काफी, मिर्च, मसाले न इस्तेमाल करने चाहिये। जो भोजन शीघ्र न पच सके वह न खाना चाहिये, और शराब न पीना चाहिये। तरकारी खूब पका कर और अच्छे पुष्ट फल खाना बहुत अच्छा है। बहुत देर खडा रहना और थकावट उठना बुरा है। कभी कभी एक "पाइंट" गरम पानी की

पिचकारी लेना बहुत अच्छा है। जुलाब किसी तरह का न देना चाहिये। जब मस्से बहुत दर्द करते हो, तो गरम पानी की भाप लगने दे। जीव-रसायन की चिकित्सा मे चीर फाड़ की जरूरत नही हुआ करती। दवा को गरम पानी या वेसलिन के साथ लगावे। बैठे बैठे नही रहना चाहिये।

"केल्केरिया फ्लोर" का गुण बवासीर मे.—

२५ वर्ष के एक रोगी को कई वर्ष से बवासीर था, खून जाता था, कब्ज रहता था और दस्त निकालने के लिये बहुत कूथना पडता था। शिर तक खून का दबाव पहुॅचता था गरमी जान पड़ती थी, जुबान का रंग ख़ाकी, माइल, सफ़ेद रहता था। मैंने "केल्केरिया फ्लोर" ३X और "काली मुर" ३X अदल बदल कर दिया। चार चार घटे पीछे भोजन का उचित प्रबध किया। कुछ हफ्तो मे वह बिलकुल अच्छा हो गया और उसे फिर तकलीफ नही हुई। मैने एक मरहम बनाया, जिसमे आधा औंस "केल्केरिया फ्लोर" २X और वेसलीन २ औस थी, यह हर रात को मलद्वार पर लगाया जाता था, इससे पीनेवाली दवाएं भी विशेष गुणकारी हुई। —(सी० आर० वोगेल, एम० डी०)

बहुमूत्र (मधुमेह) Diabetes

नेट्रम सल्फ़—मुख्य औषधि।

काली फास—नीद न आना, घबडाहट से क्षीण हो, बहुत भूख लगती हो।

केल्केरिया फ़ास—मूत्र अधिकता से आता हो, दुर्बलता, बहुत प्यास, मुह और जीभ सूखी हो। फैला हुआ डुबा सा पेट हो।

काली मुर—बहुत दुर्बलता और नीद का अमल हो, जुबान सफ़ेद और ख़ाकी रंग की हो।

नेट्रम मुर—प्यास हो, शरीर सूख जाता हो, निद्रा का और भूख का अभाव हो, शक्तिहीन हो, अधैर्य हो।

गिज़ा

शक्कर, जेगरी, आलू, चावल और ऐसी चीजे, जिसमे स्टार्च हो, न खाँय, स्टार्च, आरारुट, साबूदाना, जोन्हार मे ज्यादा होता है। शक्कर के बजाय सैकरीन इस्तेमाल करना चाहिये। मक्खन, घी, गेहू, दाल, मछली और अन्डे खाना उचित है। जौ की खुराक बहुत फायदा करती है। दूध के साथ उबाल कर खाना चाहिये। फल कम खाये। हरी साग, मटर, चने, दूध, मक्खन मिला दूध और दही, चाय, काफी, अकसर खाना चाहिये।

जो लोग शराब के आदी हैं, वे ब्रान्डी, विसकी पीयें, शराब व वीयर न पिया जाय।

यह बड़ी गलती है कि एकदम खाना बदल दिया जाय, खासकर जो लोग गोश्त नहीं खाते, उन्हें नहीं बदलना चाहिये। यह बात जान लेना उचित है कि जब पेशाब और चीनी कम होने लगे, तो खराब खाना नहीं खाना चाहिये, क्योंकि हाजिमा और पेशाब बनाने का औजार खराब हो जाता है, और बुरी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, इसलिये मिलावटदार खाना होना चाहिये, ताकि मरीज को पसन्द हो।

बुखार

(ज्वर देखो)

भगन्दर Fistula-in-ano

केल्केरिया फास—जबकि नासूर चीरा गया हो, जब भगन्दर के साथ ही साथ छाती में भी रोग हो। ऐसे रोगियों को, जिनमें सर्दी से, पानी की आंधी से, जोड़ों में दर्द हो जाता है, ऐसे आदमी यदि लम्बे और दुबले हों। मलद्वार में जलन और चबक हो। दर्द मलद्वार की ओर जाता हो। सवेरे उठते समय मलद्वार में दर्द होता हो।

सिलीसिया—मलद्वार में जब नासूर हो और छाती में रोग हो। चलते में मलाशय दुखता हो। पेट में दर्द, जिसको सेकने से आराम आवे। फोड़े में पीप पड़ना जब खांसी से पीपदार बलगम आवे।

भिटनी (कुचाग्र) दुखना और दरार पड़ना

Nipples, Sore, Cracked

शुद्धि न रखना अथवा शारीरिक विकार से भिटनी का दुखना और तड़कना हुआ करता है। जब ऐसा हो, तब रबर की भिटनी काम में लानी चाहिये, जब तक कि घाव अच्छा न हो जाय, दरार होने और रुधिर निकलने पर "फेरम फास" २X का तेज सोल्यूशन लगावें, और "केल्केरिया फास" खिलावें। बच्चों के दूध पीने के उपरांत भिटनी को शुद्ध करना चाहिये, "फेरम फास" २X वेसलीन में मिलावे। इसके लगाने से घाव अच्छा हो जाता है, और सख्ती आ जाती है। हवा लगने से भी सख्ती रहा करती है।

भुलसना
(जलना देखो)

भूख मर जाना
(अरुचि देखो)

मदात्यय (मदिरा-पान के पागलपन)
Delirium Tremens

नेट्रम मुर—मुख्य दवा है। इससे शरीर में जल प्रबन्ध ठीक रहता है। जब रोगी धीरे बकवाद करता हो, बे-सर-पैर की बातें कहता हो। जुबान पर थूक के झाग लगे हों। ज्ञानतन्तुओं में शक्ति बढाने के लिये "काली फास" के साथ अदल बदल कर दें।

काली फ़ास—रोगी डर डर कर पुकारता हो। नींद न आती हो, सबको सन्देह दृष्टि से देखता हो। ऊटपटांग बकता हो, डर लगता हो। डरावनी शकलें दिखाई देती हों। "नेटम मुर" के साथ दें।

मलद्वार की खुजली Pruritus

केल्केरिया फ्लो ६—जबकि मलद्वार में खुजली हो, या बवासीर का दर्द हो, इस दवाई का लोशन बना कर लगावें या पिचकारी करें।

मलेरिया
(ज्वर-जूडी देखो)

मधुमेह
(बहुमूत्र देखो)

माता
(चेचक देखो)

मानसिक अवस्था Mental Conditions

काली फ़ास—असंतोष हो, अस्थिरता हो, सहनशक्ति न हो, निद्रा न आती हो, याद न रख सकता हो, जो बहुत काम करने से और पढने में वहम आदि उत्पन्न हो। दु.ख हो, मानसिक असौख्य, झूठमूठ मालूम हो। संतोष होने का काम

करने से अच्छा हो, और अकेले रहने को मन करता हो। पागलपन हो। धीरे धीरे बडबडाता हो। रात मे बच्चे डरते हो।

फेरम फ़ास—गुस्से मे रहना, दिमाग मे खून जमा होने से अनाप-शनाप बकता हो।

नेट्रम मुर—दिल धडकने के साथ चिंता और उदासी रहे। कब्ज़ हो। समझाने से रोग बढना, बडबडाता हो।

मेगनेशिया फ़ास—इन्द्रिय विभ्रम हो। कुछ का कुछ देखता हो।

नेट्रम सल्फ़—पित्त के जोर से आत्मघात की इच्छा करता हो।

केल्केरिया फास—सब बीमारियो मे फायदा होता है।

मसूड़े की सोज़िश

(फोडा देखो)

मासिक धर्म Menstruation

फेरम फ़ास—जब मासिक मे दु ख हो। चेहरा सुर्ख हो। नब्ज तेज हो। निकला हुआ रुधिर खूब लाल हो। ऋतुकाल मे बिना पचे खाना कै द्वारा निकल जाता हो। मालूम हो कि पेट मे बच्चा है, और गर्भाशय मे दर्द हो।

काली फास—दुर्बल, नाजुक मिजाज, चिडचिडे स्वभाववाली, रोदनोन्मुख स्त्रियो मे जब मासिक-विकार हो, तब दे। जब रुधिर निकलने के साथ ही अधिक पीड़ा जान पड़ती हो। मासिक देर से होता हो। तबीअत गिरी रहती हो और स्नायुबीय निर्बलता हो।

काली मुर—मासिक देर से होता हो, अथवा सर्दी लगने के कारण मासिक रुक गया हो। जब रुधिर काला, जमनेवाला, टारकोल की तरह हो।

नेट्रम मुर—पतला, पनीला, फीका रुधिर निकले। उन लडकियो के मासिक मे विकार हो, जो दुर्बल, उनींदी, चिन्तित और सुस्त रहती हो। सवेरे शिर मे विपेश दर्द हुआ करता हो। पेट मे दर्द हो, कै भी मालूम हो। दुर्बलता और बेहोशी सी जान पडे।

मेगनेशिया फ़ास—मासिक के दिनो मे दर्द उठा करता हो, जो रुधिर-स्राव होने से पहिले ही जान पडता है। मासिक जल्दी हो, ऐठन हो।

केल्केरिया फ्लोर—अधिक मात्रा मे रुधिर का जाना और गर्भाशय से दर्द का नीचे की ओर जाना।

काली सल्फ—देर में थोड़ा सा मासिक होना, पेट भारी और भरा सा जान पड़ना, जुबान पीला होना।

नेट्रम फास—मासिक रुधिर में खट्टी बू आना, रुधिर के लगने से जलन होना। जीभ पर मलाई सी मैल हो, पेट में तुर्शी हो। जुबान पर मलाई सी तह हो। तेजाबी पेट हो। तीसरे पहर को सिर का दर्द हो।

सिलीसिया—जब मासिक में से बड़ी बू आती हो, कब्ज हो। बर्फ के समान शीतलता का अनुभव हो। स्तन्य-काल में मासिक-धर्म हो।

कष्ट से मासिक होने में "मेगनेशिया फास" का व्यवहार:—

२२ वर्ष की लड़की कद में छोटी, मोटी, ताज़ी, गोलमटोल थी। उसका मासिक बड़ा और कामोदा था, चतुर थी। युवावस्था से ही उसको मासिक प्रारंभ होने से कई घंटे तथा पहिले दिन कष्ट जान पड़ता था। गर्भाशय में पीड़ा होती थी। दर्द इतना ज़ोर का था कि वह दर्द के मारे पागल सी हो उठती थी। पीठ और टांगों में पीड़ा थी। मैंने उसको "मेगनेशिया फास" ३X दिया। आधे घंटे ही में दर्द कम हो गया। फिर दवाई दी, रोगी को आराम आ गया, मासिक होने लगा, और ठीक समय पर समाप्त हुआ। दूसरे महीने रोगी से कहा गया कि मासिक से पहिले दिन दवाई खावे और उस दिन ३ खुराक ले। मासिक के दिन दो दो घंटे पीछे दवाई खावे। इस बार दर्द नहीं हुआ। तीसरे महीने भी ऐसा ही किया गया। फिर दर्द न हुआ। रोगी अब अच्छी है। तीन वर्ष से उसे कोई तकलीफ नहीं है।

—(डाक्टर एच० शूमेन०)

"फेरम फास" अधिक रुधिर में:—

डाक्टर ई० एस० बैली, एम० डी० ने एक रोगी को "फेरम फास" ३X से आराम कर दिया। बहुत रुधिर जाया करता था, जिससे निर्बलता बढ़ती जाती थी। दर्द अथवा दबाने से पीड़ा न थी। दरअसल अन्य कोई कारण न था, केवल रुधिर की दशा फीकी पड़ गई थी।

"सिलीसिया" व्यवहार अधिक रुधिर जाने में:—

एक मोटी, ताजी स्त्री को ६ हफ्ते से तकलीफ थी, वह धोबिन थी। उसे मैंने केवल तीन चार बार देखा था। उसका कहना था कि सर्दी के कारण उसको यह तकलीफ है। "सिलीसिया" ३X देने से तत्काल खून बन्द हो गया। एक हफ्ते ही में उसने इतनी तरक्की की कि शकल ही बदल गई, उसने और कोई दवाई नहीं की।

—(ए० टेसटी०)

मासिकधर्म कष्टदायक Dysmenorrhoea

इसके कई कारण है, प्रथम गर्भाशय मे कुछ रुकावट होना, दूसरे गर्भाशय की नसो के सिकुडने से उसमे सख्ती आ जाना, तीसरे गर्भाशय के बहुत से रुधिर का जाना। और भी कारण है, परतु हमारे काम के लिये यही बहुत हैं। पिछले दो कारण अधिक रोगियो मे देखे जाते हैं, बार बार सर्दी लगने, काम-काज न करने और अच्छा खाना न खाने से गर्भाशय मे रुधिर का जमाव हो जाता है। नसे फूल जाती है और गर्भाशय का मुह सिकुड जाता है। जब रुधिर भीतर से बाहर निकलता है, तो कष्ट होना साधारण बात है।

इस समय गर्भाशय के स्थान पर नाभी से नीचे बच्चा जनने का सा कष्ट होता है, रुधिर बाहर आने से कई घटे पहिले दर्द आरभ हो जाता है। कभी रुधिर निकलते समय भी दर्द मौजूद रहता है। खून जो निकलता है, कभी सुर्ख होता है, कभी काला, कभी कभी उसमे झिल्ली के छिछडे भी पाये जाते है, जिनमे सोजिश की अधिकता सिद्ध होती है। दर्द अकसर शूल की तरह नीचे की ओर खिचता हुआ ऐठने का सा होता है। कभी कभी जी मितलाता, और शिर मे दर्द होता है, परंतु ये बाहरी लक्षण है। हर महीने तकलीफ होती है, और अत को बहुत ही बढ जाती है।

मेगनेशिया फास—जब दर्द और ऐठन हो, बच्चा जनने का सा कष्ट और नीचे की ओर जानेवाला दर्द हो। इससे गर्भाशय की नसे ढीली पड़ जाती है। ३X गरम पानी मे देना चाहिये, सेकने से आराम आता है।

फेरम फास—जब मासिक-धर्म मे क्लेश हो, लाल खून बहे, चेहरा सुर्ख और नब्ज़ तेज हो जाय, खाना बिना पचे उलट जाय। जब झिल्ली के विकार से ऋतुकाल मे कष्ट हो। **समय से पहिले औषधि का प्रयोग करने से रुधिर इकट्ठा नहीं होता।** रोग-काल मे "मेगनेशिया फास" के साथ बदल कर दे।

काली फास—जब रोगी पीले रग का, रुवा सा, चिडचिडा और नाजुक मिजाज का हो, ज्ञानतन्तु पूर्ण शक्तिवाले न हो, खून का रंग बहुत काला लाल हो, "फेरम फास" के साथ बदल कर दे।

केल्केरिया फ्लोर—जब गर्भाशय सख्त हो जाने के कारण मासिक-धर्म मे दिक्कत होती हो।

केल्केरिया फास—अन्य औषधियो के साथ बीच बीच मे इसे दें। जबकि रोगी का रुधिर फीका पड गया हो, और पीठ मे सख्त दर्द हो।

काली मुर—जब ठंड लगी हो, जब खून काला हो, या स्याही माइल लाल हो।

सिलीसिया—सर्दी मालूम हो, मासिक निकलने के शुरू से कुल बदन में जाड़ा लगे।

नेट्रम मुर—मासिक कम हो, होते समय सिर में दर्द हो; गर्भाशय में भी दर्द हो। बहुत अफसोस मालूम हो। मासिक बहुत जल्दी और ज्यादा हो। अकसर सर्दी मालूम हो।

सूचना

"मेगनेशिया फास" दर्द के लिये आधे गिलास गर्म पानी में १५ ग्रेन ३X मिला कर दे। रोगी उसे ठहर ठहर कर चूसे। एक कटोरे में गरम पानी भर कर २० ग्रेन दवाई डाल, उसमें कपड़ा निचोड़ कर गरम गरम गर्भाशय के ऊपर रखें। कपड़ा ठंडा पड़ते ही दूसरा लगा दे। बहुत सा गरम पानी पीने से भी नसें ढीली पड़ जाती हैं। रोग की बारी रोकने के लिये बीच के समय में औषधि का व्यवहार जारी रखना चाहिये। रोगी खुली हवा में खूब काम काज करे। मानसिक शक्ति बढ़ाने के लिये समय पर सोये, जगे। पैर गरम और सूखे रखे, ठंड से बचे। उचित मात्रा में शीघ्र पचनेवाला पुष्टिकारक भोजन करे।

मासिक-धर्म का रुक जाना Amenorrhoea

(मासिक-धर्म भी देखो)

मासिक रुधिर का रुक जाना, जो विशेष चिन्ता करने, जोश बढ़ने, ठंड लगने, पैर भीगने और ख़राब खाना खाने के कारण होता है। क्षयी रोग में तथा अन्य रोगों में भी देखा जाता है। मूल रोग के दूर करने से ही आराम होता है।

केल्केरिया फ़ास—जब भोजन विकार से दुर्बलता के कारण मासिक रुक गया हो, धीरे धीरे बन्द हुआ हो, चेहरा फीका हो, थकावट और सुस्ती हो, उत्साह का अभाव हो।

काली फ़ास—मानसिक चिन्ताओं के कारण मासिक रुका हो। बहुत मिहनत का काम करता हो। मन उदास हो, मानसिक दुर्बलता हो, जुबान पुरानी भरी राई के रंग की हो, सांस से बास आती हो, मुँह का जायका ख़राब हो।

काली मुर—ठंड लगने अथवा पैर भीगने के कारण हो। जुबान पर सफेद मैल हो। शरीर की गिल्टिया काम न करती हों।

नेट्रम मुर—रुधिर पतला पड़ने के कारण रोग हो, शिर में दर्द, सुस्ती और उदासी हो।

काली सल्फ—मासिक रुधिर प्रवाह कम हो, या न होता हो, और पेट भरा मालूम हो।

सूचना

जबकि अन्य लक्षण अभिज्ञता में हों, तो उनके अनुसार [illegible] ऐंठन और बेहोशी में "मेगनेशिया फास्फोरिकम"। [illegible] और [illegible] में [illegible] की विशेषता हो, तो "फेरम फास्फोरिकम"। इन [illegible] देना चाहिये, परन्तु जब केवल रुधिर [illegible] हो। [illegible] हों, तो सादा और पुष्ट भोजन देना चाहिये। गरम पानी में [illegible] के लिये अच्छा है। खुली हवा में व्यायाम करना चाहिये, परन्तु [illegible] चाहिये।

मुँह में छाले Aphthae

काली म्युर —पिलाना और कुल्ली करना चाहिये, [illegible]।

फेरम फास —छोटे बच्चों और दूध पिलानेवाली के मुँह में [illegible] और ज्वर हो।

नेट्रम म्युर—जब छालों से थूक बहुत गिरता हो, [illegible] रोग का कारण हो।

सूचना

खूब सफाई और ताज़ी हवा में रहना ज़रूरी है। यदि माता की [illegible] से बच्चा बीमार है, तो अच्छी दाया लगाना चाहिये, अथवा ऊपरी दूध पिलाना चाहिये। एक कपड़े को सुहागे और शहद मिले पानी में भिगो कर तीन चार बार चुसावे।

मुँहासे Pimples

केलकेरिया सलफ—जबकि फुंसियों से गाढ़ा, पीला मवाद निकलता हो।

काली सलफ—जबकि पीला, सब्ज़ी, मायल, चिपकना या पनीला मवाद निकलता हो।

काली मुर—सयानी लड़कियों के मुँहासे के लिये, जो गर्भाशय के दोष से हो।

"काली सलफ" बार बार होनेवाले मुँहासों में —

यह ५ वर्ष का चर्मरोग था। छोटी छोटी फुंसिया निकला करती थीं। रोग बढ़ने पर फुंसिया मिल कर जगह पर सुर्खी और सूजन आ जाती थी। तेज़ खार की तरह मवाद निकलता था, तेजी दूर होने पर फुंसिया सूख कर भुसी सी उड़ जाती। फुंसियों में बड़ा दर्द होता था। पहिले ठंडा पानी लगाने से आराम होता था और पिछले दिनों में सेकने से। पतझड़ और वसंत के दिनों में जोर होता था। फुंसियां [illegible] मुँह पर तथा बाजू और सीने पर निकलती थीं। कब्ज रहता था। "काली

सल्फ" ३x कुछ दिन देने के पीछे फोड़े निकलने शुरू हुए, और बहुत से निकले। पीछे चमड़ा अच्छा हो गया, और कई वर्षों तक रहा। कब्ज़ भी हट गया।

—(सी० ह्यूजस. एम० डी०)

मूत्राशय की सोज़िश
Inflammation of the Bladder

बार बार दर्द के साथ पेशाब हो, कभी कभी बिलकुल न होता हो, मूत्राशय के स्थान पर जलन हो, दबाने से भरा हुआ जान पड़े और दर्द हो, ज्वर हो, कभी कै हो, पेशाब का रंग लाल हो, कभी खून मिला हो।

फेरम फास--सोजिश, दर्द, हरारत और ज्वर के लिये पहिली दवा है। पेशाब का रंग लाल हो, बराबर इच्छा बनी रहती हो, सोजिश के कारण पेशाब रुक जाता हो।

काली म्युर—दूसरे दर्जे में जब सूजन हो, पेशाब के साथ गाढ़ा मवाद हो, जो कि सोजिश के दूसरे दर्जे का लक्षण है। मूत्राशय में पुरानी सोजिश हो।

काली फास—मूत्राशय की सोज़िश में ज्ञानतन्तुओं की कमजोरी तथा शारीरिक दुर्बलता हो। मूत्र-मार्ग से खून आता हो, तो ख़ास दवाइयों के साथ बदल कर दे।

केल्केरिया सल्फ—मूत्राशय की सोजिश, जिससे पीप निकलती हो। तीसरा दर्जा हो।

सूचना

"फेरम फास" और "काली म्युर" यही अक्सर दरकार होते हैं। गरम, भीगा हुआ कपड़ा मूत्राशय पर लगाने से दर्द को आराम होगा, पेशाब आवेगा; यदि बिलकुल पेशाब न आवे, तो सलाई से पेशाब निकालना होगा, परन्तु पहिले कपड़े का सेक और आंतों में गरम पानी की पिचकारी कर देखें। रोगी काम कुछ न करे। ज्वर का खाना खाय।

मृगी Epilepsy

जबकि मनुष्य बेसुध हो जाय, हाथ पैरों को काबू में न रख सके, ऐंठ जाय। यह कभी कभी बुरी आदतों के नतीजे से होता है। जबकि ज्ञानतन्तु और मांस पेशियों से अधिक मात्रा में "फासफेट्" निकल जाने के कारण होता है। कीड़े विशेषकर दद्रूदाना भी एक कारण है। कारण जानने से औषधि तजवीज करना सफल होता है।

काली मुर—मुख्य औषधि है, जब जुबान सफेद या भूरी सफेद हो। चर्म-रोग रुक जाने से जब रोग हो और जुबान के रंग से उस बात की पुष्टि हो।

केल्केरीया फ़ास—बुरी आदत के रोगियों में, फीके रुधिरवालों में, अन्य औषधियों के साथ बीच बीच में दें।

फेरम फ़ास—जबकि शिर की ओर रुधिर की अधिकता के कारण रोग हो, तो "काली मुर" के साथ देना मुख्य चिकित्सा है।

काली फ़ास—इससे ऐंठन रुक जाती है। हाथ पैर अकड़ते नहीं, न शिर पीछे को खिचता है, न मुट्ठी बंधती और दांत पिसते हैं। बुरी आदतों को छुड़ाना चाहिये। "मेगनेशिया फास" को भी गरम पानी में बदल कर देना चाहिये।

नेट्रम फ़ास—अगर कीड़ों के कारण आंतों के विकार से रोग हो, तो "काली मुर" के साथ अदल बदल कर दें।

सिलीसिया—जबकि रात्रि के समय या अमावस के आसपास रोग आवे, तो अन्य औषधियों के साथ बीच बीच में इसे दें। बारी के पहले सर्दी जान पड़े।

मेह

(प्रमेह देखो)

मोच

(चोट देखो)

रक्तातिसार

(प्रवाहिका देखो)

रुधिर प्रवाह

(खून बहना देखो)

लू लगना Sunstroke

नेट्रम मुर—ख़ास दवा है। शरीर में से तरी दूर होने से भीतर की झिल्लियां सूख जाती हैं। "काली फास" भी दिमागी अलामात रोकने के लिये दिया जाता है। ज्वर हो, तो "फेरम फ़ास" भी देना चाहिये। अगर कै मालूम हो, तो सिलीसिया दें।

सूचना

बचाव के लिये सूर्य की किरनो को न आने दे। ठडा पानी न दिया जाय, जबकि बदन गर्म हो। जब लूह बढे, तो "नेट्रम मुर" और "फेरम फास" एक के बाद बदल कर दिया जाय।

खाने के लिये जो ज्वर मे दिया जाता है, दे।

रोगियो का वर्णन

"नेट्रम मुर" से लाभ—जुलाई के महीने मे एक जवान आदमी को लू लग गई, रोगी बेहोश था, चेहरा सुर्ख, सांस गहरी और कठिनता से, नाडी तेज और कमजोर। एमल नाइट्रेट सुघाने से उसे कुछ चेत हुआ, और उसे "नेट्रम मुर" ३X हर दो घंटे बाद एक हफ़्ते तक दिया गया, वह बिलकुल अच्छा हो गया, और कोई शिकायत बाकी न रही। —(फुन्क ई० मिल, एम० डी०)

वरीद अर्थात् नीली नसों की बीमारियाँ
Diseases of the Veins

फेरम फास—शरीर की जिन नलियो मे काला खून बहता है, और नीली नीली दिखाई देती हैं, उनके लिये यह जोर की दवाई है। जब उनमे खून की रसौली बन जाय, तो "केल्केरिया फ्लोर" के साथ बदल कर दे। फोते मे जब ये नसे फूल जाती है, तब भी यही दवाई दी जाती है, जबकि वहा दर्द हो।

केल्केरिया फ्लोर—नसे फूल जाने मे खास दवा है। जब पैरो की नसे फूल गई हो, नस पर जख्म हो गये हों, इसके लोशन मे "लिट" भिगो कर लगावे, रबर की पट्टियाँ बाधना या रबर के मोजे पहिनना चाहिये।

वायुगोला
(सूतिकोन्माद देखो)

विसर्प Erysipelas

इस मर्ज का खास कारण, बदहजमी, ठड मे रहना और उत्तेजित होना है। ज्यादातर मासिक के वक्त होता है, कुछ आदमियो मे यह बीमारी बापस्ट और झींगा खाने से होती है। इसके लिए गर्मी, तेज दर्द हो, सुर्ख सूजन हो और खिचावट हो। इसके बाद जलन और चीरने का सा दर्द होता है और चलने पर

बढता है। अन्य लक्षण कापना, फिर गर्मी मालूम पडना, नीद लगाना, जुबान सूखी रहना, मतली, सिर दर्द और छाले पडना है। कुछ दिनो बाद रग पीला हो जाता है। जब यह बीमारी चेहरे पर हो, तो खास तौर से दवा करनी चाहिये। कभी कभी पित्त भी रहता है।

फेरम फ़ास—सोजिश के दर्जे मे हरारत, सुर्ख़ी, और दर्द के लिये ख़ास दवा है।

नेट्रम सल्फ़—जब इस रोग मे पित्त की कै हो, चमडा सूज कर चिकना, सुर्ख और चमकदार हो गया हो, दर्द हो।

काली सल्फ़—जबकि छाले पड गये हो। इसके देने से खुरड बन जाते है।

काली मुर—जब फुसियो मे पानी हो, खास दवा है।

नेट्रम फ़ास—चमडा लाल, चमकीला, दर्दनाक और सूजा हो।

सूचना

जबकि बहुत हरारत और जलन हो, महीन मैदा लगा देने से आराम आता है। पीप पड जाय, तो पुल्टिश बाधे। रोग की बढवारी रोक देने के लिये किनारो पर "आयोडीन" से लकीर कर दे। रोग की कठिनता मे पुष्ट भोजन, जैसे शोरबा दे। शराब की भी जरूरत हुआ करती है। नियमित रहना, पौष्टिक चीजे खाना और ताज़ी हवा का सेवन करना रोग से छुटकारा देने मे सहायक होते हैं। रोगी को सर्दी से बचाने से रोग के बिगडने का डर नही।

शिर चकराना

(घुमेर देखो)

शिर दर्द Headache

काली फ़ास—मानसिक परिश्रम से जब शिर मे टीस हो। जुबान भूरी, पीली हो, मुँह से बास आती हो। जब शिर दर्द के साथ पेट खाली सा और थका सा जान पडे। विद्यार्थियो का शिर दर्द करे, नीद न आती हो, बाई का सिर दर्द हो। ऋतुकाल मे औरतो का शिर दर्द करे।

फेरम फ़ास—जब शिर मे चोट लगने का सा दबाव पहुँचानेवाला दर्द हो। हरकत करने और झुकने मे अधिकता हो। रुधिराधिक्यता से शिर मे दर्द हो। चमडा दुखे और छूने से दुखे। बच्चो का शिर दर्द करे।

काली मुर—जब जिगर की सुस्ती से शिर दर्द हो, जुबान पर सफ़ेद या भूरा सफेद गिलाफ हो। कै हो।

नेट्रम मुर—शिर में सख्त दर्द के साथ पतली और साफ कै हो, जवान लड़कियों का शिर दर्द करे, और दर्द सुबह बहुत तेज़ हो। कब्ज हो।

मेगनेशिया फ़ास—शिर में टीस हो, साथ ही छीलने का सा, डंक मारता हुआ, फैलता और उछलना दर्द हो। आंखों के सामने चिनगारियां सी जान पड़ें। बाई का दर्द हो, सेंकने से दर्द कम हो। ठन्डक से बढ़े।

केल्केरिया फ़ास—शिर में दर्द के साथ सर्दी सी जान पड़े, और शिर सुन्न हो। बच्चों का सिर दर्द करे, बदहज़मी से या गठिया से शिर में दर्द हो।

नेट्रम सल्फ़—शिर में दर्द पित्त के विकार से हुआ हो; अथवा विकार के लक्षण वर्तमान हों, शिर चकराता हो, घूमता हो और सुस्ती हो, दिमाग की तह में दर्द जान पड़े।

नेट्रम फ़ास—शिर की चंदिया में दर्द हो, सवेरे जगते समय ज़ुबान भीगी हुई, पीली और उसके पिछले हिस्से पर मलाई सी मैल लगी हो, खट्टी कै होती हो, शिर भरा हुआ जान पड़े। शराब या दूध पीने के बाद शिर में दर्द हो।

सूचना

हर प्रकार के शिर दर्द में लक्षणों के अनुसार दवाई देनी चाहिये। चाय अथवा काफी देना बहुत सी हालतों में मना है। भोजन ठीक समय पर करना चाहिये। व्यायाम के लिये घर से बाहर जाना ठीक है, उत्तेजित न हो, इन सब बातों के परहेज से रोग की तेज़ी घट जायगी या आराम हो जायगा। दर्द के समय यदि वह बहुत देर न रहता हो, तब खाना न खाना चाहिये, अथवा दूध के प्रकार की हलकी चीज खानी चाहिये। दर्द से पहिले बहुत सा गरम पानी पी लेने से दर्द का समय घट जाता है और तीव्रता नहीं रहती।

शिर की टीसों में "काली फास" का फायदा:—

एक स्त्री के शिर में सख्त टीस थी, आवाज़ नहीं सुहाती थी। यह ऋतुकाल के दूसरे दिन हुआ था। "काली फास" ३X ने रुधिर का निकास बढ़ा दिया, और दर्द हटा दिया। —(डब्लू० पी० वेसलहोफ्ट, एम० डी०)

"नेट्रम सल्फ" नियत समय के शिर दर्द में:—

एक १६ वर्ष की लड़की के शिर में समय समय पर दर्द हुआ करता था। पहिले पेट में जलन होती थी, मुँह का जायका कड़ुआ, और सुस्ती आ जाती थी। तब दाहिनी कनपटी में बरसा चलने का सा दर्द होता था। दर्द रात के समय या सवेरे होता था और पित्त की कै होकर आराम आता था। "नेट्रम सल्फ" ३X की मात्रा में रोज देने से पक्का आराम हो गया। —(डाक्टर चेपमेन०)

शिर में सर्दी लगना Cold in the Head

(देखो जुकाम)

फेरम फ़ास—पहिले दर्जे मे देते है। जबकि नाक की झिल्ली मे रुधिराधिक्यता होती है, नाक बहने से पहिले नकुओं मे जलन सी होती है।

नेट्रम मुर—जब नाक से पतला, साफ, झागदार मवाद निकले, झुकने या खासने से नकसीर चले, सूंघने से गन्ध न मालूम दे।

केल्केरिया सल्फ़—गाढा, पीला मवाद वहे, साथ में खून की सुर्खी भी हो।

हर वार मौसिम बदलने मे सर्दी हुआ करती थी —

एक बुड्ढे को यही आदत थी, दो बरस हो गये, कई हकीमो का इलाज किया। पेट मे दवाइया खाई, परंतु विशेष लाभ न हुआ। वह रोग के आरभ मे मेरे पास आया। नाक की झिल्ली लाल थी, और दुखती थी, मैने उसे "फेरम फास" ३x की ३ टिकिया हर दो घंटे बाद खाने के लिये दो दिन को दी। जब वह लौटा, तो "नेट्रम मुर" देने के योग्य लक्षण वर्तमान थे, अर्थात् पनीला, साफ, झागदार मवाद निकलता था। सूंघने से कुछ न जान पडता था। तब उसको "नेट्रम मुर" ६x की तीन टिकिया हर घटे दी गई। कुछ दिन पीछे बहुत अच्छा होकर लौटा और एक हफ्ते मे आरोग्य हो गया। ७ महीने पीछे फिर मुलाकात हुई, तो मालुम हुआ कि अब सर्दी नही हुआ करती, आदत बिलकुल चली गई।

—(एच० बी० शैरीनर, एम० डी०)

शिंग्लस Shingles

फेरम फास—शुरू में सोजिश, हरारत और दर्द दूर करने को देते है।

नेट्रम मुर—जब किसी अन्य रोग के साथ यह बीमारी होती है। छोटी छोटी फुसिया या छाले पैदा हो जाते है, और इनमे सफेद, पनीला मवाद होता है।

शूल

(उदर शूल, टीस, गठिया इत्यादि अलग देखो)

शोथ (जलोदर) Dropsy

यह रोग बढने पर अनेक प्रकार के लक्षण उत्पन्न करता है। पानी के कारण जो सूजन होती है, उसको यदि उगली से दबावे, तो गढ्ढा बन जायगा और वह फिर धीरे भर जायगा। अन्य प्रकार की सूजन मे गढ्ढा करना कठिन है। सूजन

हाथ, पैर, छाती तक या सर्वांग मे होती है। कभी कभी थोडी होती है, और कभी कभी विशेष होती है।

काली मुर—जब दिल, जिगर अथवा गुर्दे की खराबी से शरीर के सब अगो मे पानी रसा जाता है। पानी जो छेद करके निकाला जाता है, सफेदी लिये हो। जुबान पर सफेद मैल हो। सूजा हुआ स्थान सफेदी लिये हुए चमकदार हो। जब पित्त के विकार से जलोदर रोग होता है, तो जुबान सफेद हुआ करती है।

नेट्रम सल्फ़—इस रोग मे बडी दवा है, इससे फालतू पानी दूर हो जाता है। शरीर के किसी भाग मे भीतर या बाहर पानी का जमाव हो। अन्य औषधियो के साथ अदल बदल कर अथवा मध्य मे दे। सब तरह के जलोदर मे दे सकते है।

नेट्रम मुर—नेट्रम सल्फ के साथ बदल कर दे। इससे पानी एक जगह से हट कर सब शरीर में बट जाता है। जुबान की रगत साफ, पनीली, झागदार होगी।

केल्केरिया फ़ास—जबकि रोग का कारण रुधिर का फ़ीका होना, भोजन विकार अथवा रुधिर स्राव हो। "फेरम फास" के साथ बदल कर दे।

केल्केरिया फ्लोर—जबकि दिल के रोगो अथवा उसके ख़ानो के चौड़े होने के कारण रोग हो। इसके प्रभाव से शरीर के कण सिकुडने की शक्तिवाले हो जाते है।

सूचना

जैसे लक्षण दिखाई दें, वैसा इलाज करे। लक्षणो के अनुसार औषधि देने का विधि बताया जा चुका है। दिल धडके, तो "काली फास", यदि दिल और मास पेशियो मे बडा दर्द हो, तो "मेगनेशिया फास", बहुत बदहजमी हो, तो "केल्केरिया फ़ास" या "नेट्रम फ़ास", इस सबध मे यह कहना जरूरी है कि दो प्रकार लक्षण देखने चाहिये। प्रथम मूल रोग से संबंध रखनेवाले, दूसरे पेट में पानी की विशेषता के कारण, यदि पानी बहुत बढ गया हो, तो छेद करके निकालने की जरूरत हो सकती है। परतु यदि औषधि उचित रूप से दी जाय, तो इसकी आवश्यकता नही पडेगी। खाना पुष्टकारक ठीक हो, परतु शीघ्र पालनेवाला चाहिये। रोग जब तीव्र हो और सोजिश के लक्षण वर्तमान हो, तो ज्वर के अनुसार पथ्य तजवीज़ करे।

श्वेतप्रदर Leucorrhoea

केल्केरिया फ़ास—जब अडे के लाले का सा सफेद मवाद निकले, जननेन्द्रिय दुर्बल हो। सफेदी मासिक-धर्म के बाद निकले।

काली मुर—जबकि दूध सा सफेद, जलन न करनेवाला मवाद निकले।

काली सल्फ़—पीला, पतला व चपकीला मवाद निकले, कभी कभी हरा रग हो।

काली फास—जलानेवाला और तेजाबी मवाद निकले जो स्नायु-संबन्धी हो, या दुर्बलता से हो।

नेट्रम मुर—जबकि पनीला, दाह पैदा करनेवाला तेज पानी हो, सिर भारी रहे। बाहिरी अंग पर खुजली चले।

नेट्रम फ़ास—जब मलाई सा, पीला, तेज़ाबी और पनीला, खट्टी बू वाला मवाद निकले।

सिलीसिया—जबकि पानी बहुत गिरे, मासिक-धर्म के समय में भी रुधिर के बदले शूल के साथ मवाद निकले।

सूचना

इस रोग के लिये सफाई बड़ी जरूरी है। प्रत्येक स्त्री के पास पिचकारी होनी चाहिये। और तोले भर फिटकिरी, सवा सेर ठंडे पानी में मिला कर पिचकारी करनी चाहिये, ऐसा करने और दवाई खाने से रोग अच्छा हो जायगा। जब रोग गर्भाशय तक पहुंच जाय, तो डाक्टर से सलाह ले। मरीज को काम नहीं करना चाहिये और अच्छा खाना चाहिये।

श्वेतप्रदर में "केल्केरिया फास" से फ़ायदा —

१७ वर्ष की एक स्त्री को यह रोग था। तेज, सफेद, चिपकनेवाला मवाद आता था, ऋतुकाल में विशेषता हो जाती थी। मासिक-धर्म ठीक न था; हर चौदहवें दिन होता था, कभी आगे पीछे भी। कमर के पीछे दर्द रहता था। गर्भाशय में से दर्द उठता था। तबीअत उदास रहती थी। उत्साह मन्द था, चेहरा पीला पड़ गया था, सूखा सा मुँह फीका पड़ रहा था। इन सब लक्षणों में "केल्केरिया फास" ३X हर चार घटे पीछे देना तजवीज किया। हर तीसरे दिन पिचकारी का व्यवहार किया गया। पहिले नुसखे ही से आराम जान पड़ने लगा, और कुछ दिन पीछे पूर्णारोग्यता आ गई। "फेरम फास" रुधिर बढ़ाने के लिये भी दिया गया।

—(सी० आर० बोगेल, एम० डी०)

संग्रहिणी

(प्रवाहिका देखो)

सन्यास (सकता की बीमारी) Apoplexy

डाक्टर को बुलाओ और उसके आने तक यह दवाई दो —

फेरम फ़ास—खास दवाई है। खून के जमाव के लिये और किसी नस से खून निकलता हो, तो रोकने के लिये। चेहरा सुर्ख हो गया हो या फीका पड़ गया

हो। गर्दन और शिर की नसें फूल गई हों और तड़पती हों, लू लगने का विकार रोकने या उतारने के लिये यह औषधि है।

केल्केरिया फ्लोर—ऊपर लिखी औषधि के साथ बदल कर दे। इससे खून की नालियों के रेशे सिकुड़ते हैं। रोग के आरम्भ में दिया जाय, तो नतीजा अच्छा होता है।

मेगनेशिया फ़ास—जबकि रोगी ऐंठ जाता हो, तो "फेरम फ़ास" के साथ बदल कर दें।

काली फ़ास—यदि फालिज हो गया हो, नींद न आती हो, रोगी समझता न हो, तो "फेरम फास" के साथ बदल कर दें।

नेट्रम सल्फ़—रोग के बुरे लक्षणों से पहिले दे, जबकि शिर में खून का जमाव बहुत हो या पित्त की आधिक्यता के लक्षण वर्तमान हों।

सूचना

रोगी को ठंडे कमरे में रखना चाहिये, शिर को ऊंचा रखे, गर्दन का कपड़ा ढीला कर दें। टांग और पैरों को लटकने दें, पैरों को गरम पानी में रखें या मालिश करें, अर्थात रगड़ें। गरम पानी की बोतलों का व्यवहार करें, जिससे शिर का खून नीचे उतर आवे। खाना हलका और शीघ्र पचनेवाला होना चाहिये, जैसे जौ का पानी, चावलों का पानी थोड़ा थोड़ा दें। दवाई थोड़ी थोड़ी मिनटों के पीछे देनी चाहिये।

सन्निपात ज्वर

(ज्वर-सन्निपात देखो)

सर्दी

(जुकाम देखो)

सुज़ाक

(प्रमेह देखो)

सूतिकोन्माद Hysteria

काली फ़ास—अचानक बहुत उत्तेजित होने के कारण जब रोग की बारी आवे, रोगी हँसने या रोने लगे। गले की ओर गोला उठता हुआ जान पड़े। मरीज बकता हो, बेहोशी हो।

नेट्रम मुर—जब उदासी हो, सुस्ती रहती हो और मासिक-धर्म में विकार हो।

सोते में पेशाब करना

(पेशाब देखो)

स्तनों का फोड़ा

(फोड़ा देखो)

हड्डियों के रोग Diseases of the Bones.

हड्डियो मे रोग कई कारणो से होता है। उनको यहां लिखना जरूरी नहीं है, क्योकि उनका पृथक पृथक वर्णन किया जायगा। इन रोगो की चिकित्सा समझने के लिये उपयोगी औषधियो के समुदाय को पृथक पृथक लिखा जाता है।

केल्केरिया फ़ास—क्योकि "फासफेट आफ लाइम" हड्डी की बनावट मे वहुत है, इसलिये हड्डी के रोगो मे भी उपयोगी होता है। कमजोर और नरम हड्डिया इससे मजवूत होती हैं। टूटी हुई हड्डिया जुडती हैं। बच्चो की हड्डिया टेढी पडने मे और रीढ टेढी पडने मे उपयोगी है। हड्डी की सभी बीमारियों में फ़ायदा होता है।

सिलीसिया—हड्डी की वहुत सी बीमारियो के लिये यह सूचित किया गया है, जवकि गाढा, पीला, बदबूदार मवाद आता हो, हड्डियो मे व्रण हो, कूल्हे मे बीमारी हो, और जवकि मवाद बहुत बदबूदार निकलता हो।

केल्केरिया सल्फ—इसको भी उन्ही दशाओ मे देना चाहिये, जिनमे "सिलीसिया" देते है, सिवाय इसके जबकि मवाद में खून हो। इसके व्यवहार से मवाद रुक जाता है।

केल्केरिया फ्लोर—हड्डी मे से मवाद बहे, सख्त खुर्दरी गाठे हड्डी पर उठे, चोट से, हड्डी मे गांठ पड जाँय। ऐसा जुकाम, जिसका असर हड्डियों तक पहुँचे। बदवू आवे, नये बच्चे के शिर पर खून की गिल्टी हो। हड्डी मे व्रण हो।

काली फ़ास—जव हड्डी दुबली हो गई हो या पतली पड गई हो, जव वदवूदार दस्त जारी हो।

फेरम फ़ास—हड्डी की सब बीमारियो मे, पहिले अथवा सोजिश के दर्जे मे, जवकि हड्डी के नरम हिस्से अथवा उसके ऊपर की झिल्ली मे रोग ग्रसित हो, औषधि को बदल कर दे, जैसा उसके मवाद से उचित जान पडे। कूल्हे मे बीमारी।

हड्डी जल्द जुड गई —

एक ६० वर्ष के भले आदमी थे। उनके जाघ की हड्डी टूट गई, वहुत होशियारी करने पर भी न जुडी। दो महीने पीछे "केल्केरिया फास" ६X दिया गया। पहिले हर रात को, फिर हर दूसरी रात को, शीघ्र ही टूटी हुई जगह मजवूत हो गई, और रोगी अच्छा हो गया। —(जे० सी० मौरगेन, एम० डी०)

बच्चा शीघ्र चलने लगा :—

बच्चा तीन वर्ष का था। अपने आप खड़ा न हो सकता था; हड्डियां मुलायम थीं, खोपड़ी की चंदिया खुली हुई थी, दांत पूरी बढवारी को नहीं पहुँचे, "नेट्रम सुर" और "केल्केरिया फास" अदल बदल कर दिये गये, कई हफ्ते बाद बच्चे का समाचार सुना गया कि वह चलने लगा है। शिर की चंदिया मज़बूत हो गई है। शरीर में बल आता जाता है, सो आप बड़े खुश हुए थे।

"सिलीसिया" से तत्काल लाभ हुआ :—

बच्चा ३ वर्ष का था। बायें हाथ की उंगली में हड्डी की बीमारी थी, जिससे पहिली पोर की हड्डी ग्रसित थी; सफेद मवाद निकलता था, मास सूज रहा था। बुरी शकल थी। उंगली की तरफ देखा नहीं जाता था। डाक्टर की सलाह उंगली काट देने की थी; परंतु रक्षक राजी न हुए। उसको ६X "सिलीसिया" का 'सलूशन' देना शुरू किया गया, तत्काल सफल होने लगा और चन्द हफ्तों में रोगी अच्छा हो गया। (सी० टी० एम०)

"सिलीसिया" के प्रभाव से पैर न काटना पड़ा :—

१४ वर्ष की लड़की थी। "सिलीसिया" ने उसके पैर को कटने से बचा दिया; उसको बहुत दिन से हड्डी की बीमरी थी, डाक्टर ने एक होशियार जर्राह से पैर कटाने का प्रबन्ध किया, दोस्तों ने बहुत दु:खी होकर मेरी सहायता ली, मैंने "सिलीसिया" की एक खुराक घटे घटे दी, लोशन में लिट तर करके घाव के ऊपर लगाई, ५ ही दिन में इतनी तरक्की हुई कि पैर काटने की जरूरत न रही, कुछ दिन तक और इलाज रहा और वह बिलकुल अच्छी हो गई। —(डाक्टर एम० डी० वाकर०)

"केल्केरिया फ्लोरीका" गाठ की हड्डियों में :—

डाक्टर सी० एफ० निकोलस की रिपोर्ट से जान पड़ा है कि इस औषधि को १२X की मात्रा में देने से हड्डी की सख्त गाठें चली गई और रोगियों को आराम पहुचा। —(ओर्गेनोन, १८८०)।

हलक़ की गिल्टियों का सूजना

Inflammation of the Tonsils

सोजिश के किसी कारण से गले की गिल्टियों में हो सकते है, जिसके लिये सोज़िश के साधारण कारण जानना चाहिये।

पहिले रोगी गले में दर्द बयान करता है, गला देखने से एक या दोनो गिल्टिया सूजी और सुर्ख मालूम होती है। निगलने में तकलीफ होती है, और रोग की बढ-

वारी के साथ यह तकलीफ़ भी बढ़ती जाती है। जुबान पर सफ़ेद मैल जमा रहता है, और रोगी को प्यास बहुत लगती है। बुखार बहुत होता है, नाड़ी, तेज़ और भरी हुई होती है। रोग के बढ़ने के साथ ऊपर लिखा [illegible] भी बढ़ जाती है; [illegible] बहुत होता है, और रोगी बकने लगता है; जब पीप पड़ जाती है या एकदम आराम आ जाता है। कभी एक गिल्टी अच्छी होती है, तो दूसरी में रोग शुरू हो जाता है। जब गिल्टियों में सड़न पैदा हो जाती है, तो "टाइफ़स" [illegible] आ जाती हैं, यह दशा बहुत भयानक होती है। चिकित्सा में सावधानी दरकार होती है।

फ़ेरम फ़ास—पहिले दर्जे में। ज्वर के लक्षणों के लिये, गिल्टी [illegible] के लिये, निगलने के दर्द के लिये, इत्यादि सूजन और सोज़िश दूर करने के लिये ख़ास दवाई है।

काली मुर—यह दूसरी दवाई है। जब गले में सूजन हो, गले में [illegible] सफ़ेद धब्बे हों। जुबान पर सफ़ेद मैल हो। इस औषधि के व्यवहार से पीप नहीं पड़ने पाती।

केलकेरिया सल्फ़—जब पीप पड़ कर मवाद निकल रहा हो, इसके व्यवहार से पीप पड़ने की क्रिया शीघ्र समाप्त हो जाती है।

केलकेरिया फ़ास—जबकि सोज़िश पुरानी पड़ गई हो। मुँह फाड़ने और निगलने से दर्द होता हो, जब रोग ज़ोर शोर पर हो, तब इसको अन्य दवाइयों के साथ बीच बीच में देना चाहिये। छोटे बच्चों के गले की गिल्टियां या कमज़ोर [illegible] वाले आदमियों की गिल्टियां, जबकि बहुत काल से दुखती हों।

काली फ़ास—जब दुर्बलता, थकावट, चिन्ता अथवा सड़ांद के लक्षण वर्तमान हों, अन्य औषधियों के साथ बदल कर दें।

नेट्रम मुर—कौवे में सोज़िश हो और ज़ुबान से पानी निकलता हो।

सूचना

अगर "फेरम फास" और "काली मुर" शुरू से अदल बदल कर दिये जायँ, तो सूजन कम होगी, और बुरे लक्षण जोर न पकड़ेंगे। इन दवाइयों के २९ के गरारे गरम पानी के साथ खाये जायँ, तो बहुत लाभ हो। सोज़िश के ज़ोर के अनुसार भोजन का विचार रखना चाहिये। गिज़ा ज्वर का देखो।

हाथ कांपना, लिखनेवालों का Writer's Cramp

मेगनेशिया फास—लिखनेवालों, और बाजा बजानेवालों की उंगलियां कांपने की दशा में यह ख़ास दवा है।

नेट्रम फ़ास—जब रोग का कारण गठिया हो, तो अन्य औषधियों के साथ बीच बीच में इसको भी दें। ("केलकेरिया फास" भी।)

सूचना

जब हाथ कांपे, तो उसे आराम देना उचित है। अकसर हाथ को गर्म पानी में रखना चाहिये।

हैज़ा Cholera

हैज़ा आरम्भ होने में अचानक जी मितलाता और पेट मे दर्द होता है। फिर क़ै और दस्त शुरू हो जाते हैं। रोग ज़ोर पर हुआ, तो शरीर और हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं। बेचैनी और जल्दी स्वास चलने लगती है, प्यास बहुत लगती है। हाथ और टांगों मे ऐंठन और आंतों में दर्द होता है। चेहरा सूख जाता है। आंखें गड जाती हैं। नब्ज़ कमज़ोर हो जाती है, कभी कभी मालूम नहीं होती। दस्त पतले, पनीले, बदबूदार और पित्त मिले हुए होते हैं। कै मे भी काला पित्त मिला माद्दा निकलता है। रोगी ज़ोर करता है। एशिया के हैजे मे ये लक्षण और भी विशेष होते हैं। सिर चकराता है, दर्द होता है, कानों मे राग सुनाई देता है, पेट फूलता है, ऐंठन उठती है, ताकत नहीं रहती, जब रोग बहुत जोर से आक्रमण करता है, तो रोगी बिजली का सा मारा हुआ बेहोश होकर गिर पडता है, अकसर हैजे मे पहिले दस्त लगते हैं। यदि इलाज न हुआ, तो क़ै शुरू हो जाती है, पेट मे दर्द होता है, हाथ पैरो मे ऐंठन होती है। मूर्च्छा होकर कभी कभी चमडे का रंग नीला हो जाता है। इस भयानक रोग की सब दशाओं के लिये नीचे लिखी हुई चिकित्सा उपयोगी पडती है।

फेरम फ़ास—ज्वर के लक्षणों और नाडी विकार मे मुख्य औषधि के साथ बदल कर दें।

काली फ़ास—जब बुखार बहुत हो, और बेहोशी हो। बदबूदार दस्तों मे खास दवाई है, मूर्च्छावस्था में जब चेहरा फीका, नीला पड गया हो, नब्ज कमजोर हो, चावल के माड के से दस्त आते हों, बहुत बदबू हो।

मेगनेशिया फ़ास—जबकि आंत और हाथ पैरों में ऐंठन चलती हो, मूर्च्छा हो, कै और पतला दस्त हो।

नेट्रम सल्फ़—इसके व्यवहार से हैजा नहीं होता, यदि हो, तो रुधिर में जल की अधिकता के लिये दिया जाता है।

काली सल्फ़—इसे अकसर फेरम फास के साथ बदल कर देते है। रोग के आरंभ में पसीना लाने के लिये देते है।

नेट्रम मुर—इसकी आवश्यकता उस समय पड सकती है, जब रोगी प्रलाप करता हो। अन्य औषधियो के साथ व्यवहार मे लाते हैं।

सूचना

फेरम फास, काली फास, मेगनेशिया फास (२X या ३X) रोग की मुख्य दवायें हैं। इनको मिला कर या एक दूसरे के पीछे हर ५ मिनट पीछे देना चाहिये, यदि बीमारी सख्त हो।

रात को गरम पानी पीना चाहिये और इसकी सहायता से मेगनेशिया फास मास पेशियो को ढीला कर देता है और अगो को धो देता है। बहुत से गरम पानी की पिचकारी जल्द जल्द देनी चाहिये, जब तक कि आराम जान पड़े। हाथ पैरों को गर्मी पहुचावे या रगडे। रोगी को गरम जल मे स्नान कराना अच्छा है। आज डाक्टर ठडा पानी पीना और पिचकारी करना बतलाते है, परन्तु मै ऐसा कभी नहीं करता। जब आराम होना शुरू हो, तो रोगी को हलका खाना दे. और इतना थोड़ा कि आतो मे खराश न हो, नही तो, रोग के फिर लौट आने का भय है। गीली चीजें, जैसे साबूदाना, अरारोट, कोका आदि देना चाहिये, और रोगी मे ज्यों ज्यो बल बढता जाय, मात्रा बढाना चाहिये।

हैज़ा, बच्चों का Cholera Infantum

यह रोग २ वर्ष से कमवाले बच्चों मे होता है।

इसकी वजह अच्छा खाना न मिलना व कीडों का होना है।

खास पहिचान इसकी ज्यादा कै होना है। बच्चे को आराम न हो, बिस्तर मे इधर उधर उलटे। सिर गरम हो, नाडी तेज और कमजोर हो; हाथ पैर ठडे हो, आँखे घुसी व आधी खुली हो। पीने की ख्वाहिश ज्यादा हो, बहुत कमजोरी हो। दस्त मैला, पतला, व हरे रग का हो, ज्यों २ बीमारी बढती है, मल पतला और बदबूदार होता है। नाजुक हालत मे बीमार बेहोश हो जाय।

फेरम फ़ास—ज्वर मे, जब पतला वेपचा दस्त हो, कै हो। सिर ख़राब हो जाय।

नेट्रम फ़ास—मल हरा और खट्टी बू करता हो, हाज़िमा ख़राब हो, आत मे कीडे हो, खट्टी कै हो। जबान का रग देखो।

केल्केरिया फ़ास—दात निकले हुए बचो मे आत की शिकायत मे दी जाती है। दस्त गरम, और पतला, बू करनेवाला हो, बाज मर्तबा मल अपचा और रग हरा हो।

काली फ़ास—मल चावल के माड की तरह हो और सडी बू आती हो। बहुत थकावट मालूम हो।

मेगनेशिया फ़ास—आत मे ऐठन हो पाव खिंचते हो। बेहोशी हो। मल आवाज़ करके निकले।

सूचना

केल्केरिया फास, फेरम फास और नेट्रम फास बच्चों के हैजे मे देना चाहिये। बीमार को चुप रखना चाहिये। जब हाथ, पाव व पेट ठंडे हो जॉय, तो गरम कपडे से ढक दे। आंतो मे गरम पानी पहुँचावे और पानी मे ऊपर लिखी दवा मिला ले।

खुराक, पानी मिला दूध होना चाहिये, जो पहिले से उबाला हो। थोडा गरम पानी देना नुकसान नहीं करेगा। माँ का दूध बहुत अच्छा होता है।

क्षयी रोग Consumption

रोगी दुबला होता है। पीछे जाकर बहुत ही लेट जाता है, गाल बैठ जाते हैं। रात को पसीना आता है, ज्वर से एक या दोनो गालों पर सुर्खी आ जाती है, छाती भिच जाती है, कधे झुक जाते हैं, कब्ज़ रहता हैं, हाजमा बिगड जाता है। कभी कभी भूख मारी जाती है, अकसर आवाज़ करनेवाली खॉसी उठती है, जिसमें गवेरे विशेषता देखी जाती हैं, बलगम कई भाति का होता है। रोग की दशा के अनुसार पहिले पतला, फिर गाढ़ा या झागदार होता है। अकसर गर्मी लगा करती है। कभी कभी फेफड़ों मे खून निकलता है, परतु क्षयी मे यह बात आवश्यक नही है।

फेरम फास—शुरू क्षयी रोग में दुर्बलता के लिये, और ज्वर और सुर्ख चेहरे के लिये। साँस न ली जाय, कफ के साथ सीने मे दर्द हो, फेफ़डो मे खून निकले, थूक मे खून मिला हो और खून का रग चमकीला हो।

केल्केरिया फास—क्षयी रोग के शुरू मे, कमज़ोरी और दुबलापन मे। थूक अन्डे की सफेदी के समान हो। पुरानी खॉसी हो, अन्य दवाइयो के साथ बदल कर दे, इससे बदन के टिस्यू बनते हैं। हाजिमा कमज़ोर हो और पसीना बहुत निकले।

सिलीसिया—इस रोग मे खास दवाई है। जब रात को बहुत पसीना आता है, पैरो से पसीना निकलता है, कब्ज रहता है, जब ढीली और बोलनेवाली खाँसी, जिसमें गाढा, हरा सा, पीला, सड़ा हुआ बहुत सा मवाद निकलता है, रोज बुखार होता है, पैर के तलुए जलते है, मुंह मीठा और सीठा रहता है। भूख मारी जाती है।

केल्केरिया सल्फ़—खाँसी का मवाद आसानी से निकालने के लिये, कभी कभी बलग़म में खून भी मिला हो।

काली सल्फ़—जब बलगम पतला, सफेद, पीला हो, और बाहर आने के बदले हलक मे पेट मे चला जाय, शरीर का चमड़ा खुश्क और खुरदुरा रहे, तीसरे पहर ज्वर हो।

काली मुर—बलगम गाढा, सफेद, ज़ुबान के ऊपर भूरी सफेद मल हो।

नेट्रम मुर—बलगम पतला, थरथरानेवाला, पनीला, साफ और झागदार। कभी कभी खून मिला हो। जब फेफड़ो से खून निकले, तब इसको बड़ी मात्रा में फेरम फास के साथ बदल कर दे। जब काम करने से कमज़ोरी बढ़ जाय, नमकीन हवा मे रोग बढ़ जाया करें, खाँसी पुरानी पड गई हो और झागदार बलगम निकलता हो।

काली फ़ास—उथली सांस हो, दुर्बलता हो, बलगम सडा हुआ, दिल धड़कता हो, और बेक़ाइदे चलता हो।

नेट्रम सल्फ़—जब पित्त के लक्षण भी वर्तमान हो। बदबूदार थूक निकलता हो।

सूचना

जो मनुष्य क्षयी रोग से पीडित हो, उसे साफ हवा मे रहना चाहिये। हवा सूखी और आक्सिजनवाली हो, जितना उनसे हो सके, उतना उनको खुली हवा में रहना चाहिये। जिस घर मे वे सोते हो, उसमे हवा की खूब आमद रफ़्त होनी चाहिये। बहुत से वैद्य कहते है कि रात की हवा को भीतर न आने देना चाहिये। परतु मै कमरे की बन्द हवा की अपेक्षा रात की हवा को अच्छा समझता हूँ। रात की हवा मे कम से कम आक्सिजन तो होता है, जो क्षयी रोगवाले मनुष्य के लिये परमावश्यक है। जब आदमी आराम में होता है, तो आक्सिजन सरलता से शरीर में प्रवेश पाता है, परतु काम करते रहने मे उतना नहीं। जिस मकान मे हवा की आमद रफ़्त के लिये अधूरा इंतज़ाम है, उसमे आक्सिजन कम होता है, और हानिकारक वायु अधिक होती है, इनसे शरीर को बड़ी हानि पहुंचती है। क्षयी के रोगी यदि पहाड पर तम्बू लगा कर रहे, व खुली हवा मे सोवे, तो ठीक है, हवा के झोके सर्दी से बचावे। यदि आतो मे कुछ खराबी हो, तो गरम पानी की पिचकारी (अधिक जल) लेना अच्छा है। खुराक हलकी हो और शीघ्र पचनेवाली, परंतु पुष्ट-कारक होनी चाहिये, दिन मे कई बार खावे, परंतु पेट से बढ कर कभी न खाना चाहिये। मलाई, काडलिवर आइल, आदि अच्छे है। इनसे दुबलापन दूर होता है, और तेल भीतर के अंगो को कार्योपयोगी बनाता है, बहुत हलकी कसरत करनी चाहिये। सीधी और सख्त खाट पर सोना उत्तम है। कभी कभी गहरी सास लेना अच्छा है, इससे फेफडो मे आक्सिजन का प्रवेश आता है।

औषधियो का प्रयोग आग्रहपूर्वक जारी रखना चाहिये। उस काल तक, जब तक कि रोग के लक्षण चले जायँ, उससे पीछे भी जारी रखे।



THIRD PART

ALPHABETICAL REPERTORY

तीसरा भाग

वर्णमाला के मुआफ़िक औषधि कोश

औषधियों का कोश और दवाइयों का प्रयोग प्रत्येक लक्षणों के ऊपर इस ग्रंथ संग्रह में, डाक्टर एलन के वोइनिनगौसेन, डाक्टर डेविस के बारह टिस्यू दवाइयाँ, डाक्टर केरि के जीवरसायन औषधियों का प्रयोग, डाक्टर मेड्० एरिक ग्रेफ वोन टर गोल के शरणागत रोगों के कोश और डाक्टर शेनन के टिस्स्यू दवाइयो का वर्णन आदि ग्रंथो की मुख्य सहायता ली है।

संक्षेप संकेत:—

१ कफ़ — केल्केरिया फ़्लोर।	७ कास — काली सल्फ।
२ कप — केल्केरिया फास।	८ मप — मेगनेशिया फास।
३ कस — केल्केरिया सल्फ़।	९ नम — नेटम म्युर।
४ फप — फेरम फास।	१० नप — नेट्रम फ़ास।
५ काम — काली म्युर।	११ नस — नेट्रम सल्फ।
६ काप — काली फ़ास।	१२ स — सिलीसिया।

असली

शुस्लर साहिब की बारह दवाइयाँ

किफ़ायती भाव से!　　　　　　सस्ते भाव से!!

मिलने का पता :—

होमियोपेथिक पूअर डिस्पेन्सरी,

कन्कनाडी, साऊथ इंडिया ।

सूचना:—इन दवाइयो को वेचने के लिए हमारे एजन्टस नही है ।
सूचीपत्र अर्ज़ी देने पर मिलता है ।

REPERTORY
औषधि कोश

अंग Limbs
दुखे, कप।
ठंडे हो, कप।
रो रहे, नम, कप।
थके जान पड़े, स।
खुजावे, काम।
फड़के, नम, नप।
काम न करें, नप।
ज्ञानतंतु संबन्धी पीडा, मप, कास।
सुन्न और ठंडे, काप, कप।
दर्द के कारण एक आसन बैठा न [जा सके, नस।
फालिज, काप।
कंपन, कप, स।
अंड Testicles
दुखते हो, नम।
अंडक्षय, कफ।
कठोरता, कफ।
सूजन, कप, नम, काम।
सोज़िश, नप।
पानी भरना, कस, कप, कफ।
नस का खिचना, नप।
अंड प्रदाह Orchitis
विशेष हो, फप।
किसी अन्य कारण से हो, काम, कास, काप।
पुराना रोग, स, कप।
प्रमेह रुक जाने से हो, काम, कास, नम।

अंधापन Blindness, नम, स।
अकड़ जाना Rigidity
हाथ पैरो के जोड का, नम, स।
अकड़ जाना Opisthotonus
पीछे की ओर शरीर, मप, काप।
अनिद्रा Sleeplessness, नम, स, काप।
आधी रात से पहिले या पीछे, नस, स।
सोने से नींद न आना, नम, स।
कारण उत्तेजना, काप।
थकावट से, मप।
खुजली से, नप।
चिड़चिड़ापन, नम।
चिन्ता से, काप।
रुधिर की अधिकता से, फप।
अपस्मार, मृगी Epilepsy, काम, स, नम, नप, काप, मप, कप।
रात में बारी आवे, स।
फुंसी रुक जाने से रोग हुआ हो, [काम, कप।
भय से, काप।
दुर्व्यसन से, मप, काप, नप।
शिर मे रुधिर के ज़ोर से, फप।
तीसरे महीने बारी हो, कप।
अफीम या मार्फिया की आदत Morphine Habit, नप।
अविश्वास Mistrust, कप, स।
अस्थिरता Unsteadines, नम, स।

आंखे Eyes

भीतर दुखत हो, नम, कफ, कप।

आखे बन्द करने और दवाने से दर्द में आराम आवे, कफ।

मानो कुछ पड गया है, कस, फप,

,, तिनका पडा है, काप। [कप।

,, आखो के सामने पर्दा पडा है, नप, कप, नस।

मानो रेत भरी है, काम, काप, फप, नम, नस।

अचानक दृष्टि वन्द हो जाना, कप।

धुंधला दिखाई पडना, कफ।

नजर ठहरा न सकना, नम, काप, मप।

काले दाग से दिखाई देना, काप, कप।

जलन होना, फप, नम, नप, काप।

सुर्ख रहना, नप, फप, नम।

साफ साफ न दिखाई देना, काप, कफ।

Cataract मोतियाविन्द।

मुख्य दवा, कफ़, स।

तथा, कप, कास, काम, नम।

पैरो का पसीना रुकने से हो, स।

आख का शीशा धुंधला हो, कास, नम।

सामने की झिल्ली (कंजक्टइवा) पीला पड गया हो, नस।

सोजिश हो, कफ, कप, फप, काम।

पुरानी सोजिश, नस।

दाने हो, नप।

आंसू आते हों, नम।

म्यूकस रतूवत हो, नम।

आँव बहे, नस।

पीला मलाई सा, नप।

आंखे Eyes

दृष्टि मे रंग आते हों, मप।

गैस की रोशनी मे आंखे काम न करती हों, कप, मप, नप।

Cornea आंख का पर्दा कोर्निया।

फोडा हो, कस, स, कास, काम।

दर्द के लिये, फ़प, कस।

छाले हो, नम, काम।

सफेदी आ गई हो, कप, स।

धव्वे हों, कफ़, नस, कस, काम, [कप।

सफ़ेद धव्वे हो, नम।

काले दाग़ हो, मप।

सोज़िश के साथ गाढ़ा, पीला मवाद हो, कस।

गहरा व्रण हो, कस, कप, नम, स।

,, चपटा हो तो, काम।

कंठमाला विप हो, कप, नम।

आख के आगे काले दाग हों, मप, काम।

,, विजली सी चमकती जान पडे, नम।

,, मन्द दृष्टि, नम, नप, मप।

,, सामने एक से दो चीज़ दीखे, मप, काप, नम।

गाढा, पीला मवाद, कस, नप, स।

साफ़ आँव हो, नम।

गाढ़ा, साफ आँव, काम।

हरी पीप, नस।

हरा रक्तजल, कास, काम।

सुनहरा पीला मलाई सा मवाद, पतला म्यूकस, नम। [नप।

पीला, कस, कास।

आंखें Eyes.

पीला, हरा लिए मवाद, कास, नस,
पीप सा मवाद, कम, काम। [काम।
चिकना मवाद, काम।
धुंध मप, नप।
खुश्क सोज़िश, फप, कप।
चिनगारियां देखना, मप, नप।
हिलती हुई नजर, कफ।
रोशनी न सही जाय, चकाचौंध, फप, कप, कस, काम, मप, नम, नम।
आंखों के आगे पर्दा सा, नम।

Glaucoma सब्ज मोतियाविन्द, नम।
आधी चीज देखना, कम, नम।
पुतली के परदे की सोजिश, काम,
खुजली चलना, नम, मप। [नम।
दृष्टि में धोखा होना, मप, कप।

Keratitis केरेटाइटिस, कप, कास, कस, स।
,, पीप पड़नेवाली, कस, स।
आंसू बहना, मप, नम, नस।
लगनेवाले, नम।
जलन करनेवाले, नस, नप।
छोटी फुंसी होना, नम।
दर्द होना, नम।
नाइट्रेट आफ सिल्वर लगाने, खुली हवा में फिरने, हवा आंखों मे लगने, ठंड लगने से, नम।
शीशे का धुंधला होना, कास, नम।
पढ़ते मे अक्षरों का मिल जाना, नम, स।
आंख हिलाने से दर्द बढना, फप।

आंखें Eyes.

Muscae volitantes मस्के वोलिटेंटिस, स।
ज्ञाततन्तु सबंधी पीड़ा, नम, कप, मप।
,, दाहिनी आंख के ऊपर, न।
,, समय समय पर, नम।
,, दाहिनी तरफ विशेष, मप।

Ophthalmia आफ्थालिमा (नेत्रपीड़ा)
मलाई सा मवाद, नप।
गाढा, पीला, कस।
हाल के बच्चों मे, कास।
कंठमाला के रोगियों मे, नप, नस।

Photopsia फोटोप्सिया, मप, कफ।
गुलाबी आंखे, फप।
पलक न उठना, काप, मप।
पुतली सिकुड़ी हुई, मप।
,, फैली हुई, काप।
लकड़ी लगने का सा दर्द, कस, फप।
पहिचान न सकना,, काप।
लाल, फप, काम।

Retinitis रेटिना पर्दे की सोज़िश।
आरम्भ हो, फप।
पश्चात्, काम, कास, कस।
फड़कना, नम, स।
तिरछा होना, काप, मप, नप, कप।
कीड़ो के कारण, नप।
छूतदार रोगों से, काप।
डिफथेरिया रोग के पीछे, काप।
दुखने आना, काप।
चिनगारी देखना, मप, कफ, नप,
तशन्नुजी रोग, कप, मप। [नस।

आंख Eyes
दाग धब्बे होना, काम ।
गड जाना, काप ।
त्यौरी चढ जाना, काप, काम ।
रोशनी न सहना, मप, कप ।
नजर कमजोर होना, काप ।
लपक मारना, स ।
Trachoma ट्रैकोमा (आंखो के ऊपरी पर्दे पर फुसी होना), काम ।
मिचकना, मप, कस, काप, काम ।
पीले छिलके उतरना, कास ।
आंख का ज्ञानतन्तु Optic nerve
फालिज हो जाय, नम, स ।
आँख के सामने चिनगारियाँ Sparks before the eyes, मप, नप, काप, कप, नस ।
आंख के डेले Eyeballs
दर्द करना, कफ, कप ।
भीतर दर्द, आखे हिलाने से विशेषता, फप ।
उभरा होना, कस ।
दुखना, काप ।
पीला होना, नस ।
आंते, अतडियाँ Bowels
काम न करती हो, नम ।
अस्तर करनेवाली झिल्ली का निकल आना, काप ।
ढीली पड जाना, बुड्ढों मे, नस ।
दर्द होना, नप, मप ।
आतो से निकली हुई वायु मे गंधक की बू, कास ।
निचली आंतो मे हरारत हो, नस ।
आंते, अतडियाँ Bowels
आतो मे घाव हो, कस ।
आंत उतरना Hernia
पेट मे, कप ।
फोते मे, कप, नम, स ।
आत फंस जाना, सोज़िश होना, फप ।
आंसू बहना Lachrymation, कप, नम, नस, स ।
आमवात—गठिया देखो ।
आमाशय Stomach
मानो भीतर पत्थर का ठडा टुकडा या सीसा रुका है, स ।
मानो भीतर छुरी चल रही है, स ।
मानो पेट मे सूराख पडे, नस ।
मानो पेट रस्से से जकडा जा रहा है, मप ।
तड़प होना, फप, नस ।
छेद करने का सा दर्द, नस ।
जलन करनेवाला दर्द, कप, कस, स, काम, फप ।
आमाशय के ऊपर जलन होना, कप, [स ।
ठडा जान पड़ना, नम, स ।
जुकाम चलना, पुरानी, कास ।
शूल का दर्द, कास, मप ।
ऐठन होना, काम, कप ।
पीडा होना, फप ।
फूल जाना, नम, नस ।
,, और कब्ज होना, मप ।
खाली सा जान पडना, काम, स ।
मूर्च्छा, ऐसा जान पडना कि पेट है ही नहीं, नम, काप, नप ।
फूलना, कप ।

आमाशय Stomach

फूलना साथ ही दिल के पास जान पड़े, काप, कप।
नाभी के पास भरा सा जान पड़े, कास।
खाया हुआ खाना गोला सा जान पड़ना, कप।
बड़ी कमजोरी होना, नम।
फूलना, जिगर का काम न होना, काम, नस।
भारीपन जान पड़ना, नम, कप।
हरारत होना, कास।
ज्ञानतन्तु सबन्धी पीडा, मप।
दबाव जान पडना, नम।
सोजिश होना, फप, काम।
पुराना रोग, कास।
टीस चलना, मप, नप, फप।
खाना खाने पीछे एक जगह मे, नप।
दर्द होना खाने पीछे, नप, नम, कप, फप, नस।
दबाव, मप, कप, काम, कास।
कसना, मरोडना आदि का सा दर्द, स।
भोजन खाने के पीछे फिर मुँह मे लौट आना, मप।
नाभी के पास लाल धब्बे, नम।
मुँह मे खट्टा पानी आना, कप, नम।
सूजन, फप।
ऐठना, शूल करना, मप।
,, दर्द, मप।
सुई सी चुभना, नम।
नाभी के पास फडकना, स।
सुस्त होना, स।

आमाशय Stomach

बड़ा दर्द, फप।
कमज़ोरी होना, कस।
तेज़ाबी कैफियत, नप, नस।
खट्टी चीजो से दर्द बढे, मप।
ठंडी चीजो के पीने मे कष्ट बढना, कप, मप।
खाना खाने से रोग बढना, कप।
तैल पदार्थ से ,, काम।
दबाव से ,, फप।
भूख न बुझना, काप, कप, कस, नस, स।
खड़िया, मिट्टी आदि बुरी चीजे खाने को मन करना, कप, काप, मप।
डकार से खाने का बुरा स्वाद, फप।
डकार से हवा आना, मप।
गुडगुडाना, कप।
नमक या नमकीन चीज खाने को मन करना, नम।
गरम चीजो से घबडाना, कास।
डकार खट्टी, नप, नस, स, काप।
जलन बिना स्वाद, मप।
कडुआ, काप।
हवादार, काप।
चिकनाहट, फप।
पेट मे बहुत हवा भरना, कप।
बहुत भूख लगना, काप, स, कप, नम।
पाचन विकार से पेट फूलना, नप।
,, चक्कर आना, नप।
दिल जलना, स, फप, मप, नप, कप, नम, नस।

आमाशय Stomach

रुधिर आना, कास, फप।
हिचकी आना, मप, कफ, नम।
खाने पीछे भूख रहना, काप।
४ बजे शाम को भूख लगना, कप।
बच्चा सर्वदा दूध पीने को रोवे, कप।
बदहजमी और शूल, मप, कास, काप, [नम, कप।
,, शिर दर्द, कप।
पाइलोरिस, शिर का कठोर हो जाना, [स।
नशा न सहा जाना, स।
जी मितलाना, नप, नस, कास।
,, कलेऊ पीछे, कप।
,, चिकनी चीजों से, काम।
काफी या हुक्का पीने से, कप।
चिकनी चीज अच्छी न लगे, काम।
दुर्बलता, कमजोरी, काप।
पेट में दर्द और कब्ज, काम।
थकावट, काप।
पेट में दर्द और पतले दस्त, फप।
पेट में दर्द ज्वर के पीछे, काप।
तेजाबी कैफियत से, नप।
सर्दी से, फप।
कीडो से, नप।
भय और उत्तेजना से, काप।
आराम आवे, खाने से, काप।
,, ठंडी चीज पीने से, फप।
,, डकार या वायु निकलने [से, कप।
छूने से दुखे, कप।
छुआ न जाय, फप।
घाव हो, नप, नम।
कमर में कसा हुआ कपड़ा न सुहाये, नस, फप।

आराम आना Ameliorations

स्नान करने से, काम।
वायु सरने से, कप।
नाक के दुहरा मुड़ने से, मप।
ठंड से, फप कफ।
खुली हवा से, कास।
मित्रो के साथ से, काप।
ठंडी चीजे पीने से, फप, काम।
गर्म ,, ,, मप, कफ।
पी लेने के पीछे, स।
ऊपर को दुहरा होने से, कफ, मप।
अंधेरे से, नम, स।
डकार से, स।
खुशी के उत्साह से, काप।
शारीरिक परिश्रम से, नम, स।
शाम को, नम।
भूखा रहने से, (उपवास), नम, स।
पेट फूल कर हवा निकलने से, कप, [नम, स।
सेकने से, कफ।
मलने से, मप।
गर्मी से, स, मप, कफ, कप।
बिस्तर पर लेटने से पीठ या करवट से, कफ, कप।
सख्त, चीज पर लेटने से, नम।
दूध से, नप।
तर खुश्की से, स।
साधारण हरकत से, कफ, कास, [काप।
हरकत करते रहने से, स।
,, धीमी करने से, काप।
खुली हवा से, कस।
दबाव से, कफ मप।
दूसरे के पास रहने से, काप।

आराम आना Ameliorations
मल त्यागने के पीछे, कप, नम।
खुश्क, गरम मौसिम से, नम, कप, [कस।
साधारण गर्मी से, स, मप।
सिर ढक लेने से, स।

इच्छा करना Desire for
एल शराब, फप।
शराब, फप, नप।
बीअर, नम, नम, नप।
सूअर का गोश्त, कप।
कडुवी चीजे, नम।
ब्रांडी, फप।
कलेरट, कस।
ठंडा भोजन और पान, नस।
अंडे, कप।
फल, कस।
हेम्, कप।
न पचनेवाली चीजे, कप।
हरी और खट्टी सब्जी, कस।
दूध, नम, स।
खुली हवा, कस।
अचार, कप।
नमक, नस।
नमकीन भोजन, कप, नम।
मिठाई, स।
धुआ लगा हुआ मांस, कस, कप।
शकर, मप।
नशा, फ़प।
चाय, कस।
तमाखु पीना, कप।
सिरका, काप।

इन्फ्लूएन्जा Influen"

उंगलियाँ Fingers
दर्द करे, कप, नम, स।
सूजने के साथ सुर्ख हो, नप, फ़प।
,, नाखूनों में, कप, नम, नस, [म।
सिरे दुखे, स।
छाले हो, नम।
ज़ख्मी जगह जलन करे, स।
तशन्नुज हो, नम।
खुजली चले, फटी जायँ, दर्द से दबी जायँ, जोड अकड जायँ, स।
नाखून के नीचे छेदने का सा दर्द हो, नस।
उंगली के जोड़ो मे गठिया का दर्द [हो, नप।
कडी हुई, कस, नस।
पंजे और उगलियो के जोडों मे दर्द, नम।
व्रण की चुनचुनाहट का सा दर्द, उंगलियो के सिरो पर, नस।

उंगली पर ठेक पड़ना Bunions, काम।

उंगलियो की ठेक Excrescences, स।

उत्तेजना हो Excitement, कप, नम, स।

उत्साह Energy, मन्दता, काप।

उदासी Sadness, कफ, कप, नम, स।

उनींदापन Sleepiness, कफ।
तीसरे पहर, नम, स।
दिन में, कप, नस, म।
शाम को, नम, स।
पहर दिन चढे, म।
सवेरे, नस।

उबकाई आना Retching, नम, स ।

उलटी करने की इच्छा Qualmishness, नम, स ।

उस्तरा फिरना Barber's itch, मप, काप, काम ।

एनथ्रेक्स Anthrax (एक प्रकार का घाव, जो पशुओं से लग जाता है ।)
मुख्य दवा, काप ।
अन्या दवा, स, कस ।

एपेंडिसैटिस Appendicitis, आंत के एक स्थान की सोजिश ।
मुख्य दवा, काम, मप, स ।
जब पेट का गोश्त सख्त हो, मप ।
सदा कब्ज रहता हो, नस ।
दर्द हो, पेट फूला रहता हो, मप ।
मद पडना, नम, कप ।
संध्या को रोग बढता हो, काम ।
जब पेट में नरम गाठ बनती हो, काम ।
,, ,, सख्त ,, (३०) कफ ।

एेंठन Cramps, नम, स, मप ।
बच्चों को बुखार बिना ऐंठन, मप,
,, ,, के साथ, फप । [कप ।
चमड़ा सूखा हो, काम ।
एलोपैथिक इलाज से हो, काप ।
St. Vitus Dance } अव्वल दर्जे में, मप ।
Cramp Tremor } दूसरे दर्जे में, कप, कास, कप ।
लिखनेवाले अथवा बाजेवालों के हाथों में ऐंठन, मप, कप, नप ।
पिंडलियों में, कप, मप ।
पेट में, नम ।
गले में, नप ।

ऐंठन Cramps
फीके खूनवाले रोगियों में, कप, नम, कास ।
हड्डी के रोगवाले बच्चों में, कप ।
आमाशय और पेट, मप, नम ।
बाहर हाथ, उंगली, अंगूठे, टाग और तलुए, स । [पिंडली, नम, कास ।
रात को हाथ पैरों में, कप, मप ।
पिंडलियों में दर्द सहित हो, काप, [मप, स ।

ऐंठ का दर्द Cramping pain, पेट के नीचे हिस्से में, नम ।

ऐंठने का सा खिंचाव Cramplike drawing, काम ।

ऐंठने का सा दर्द Cramp-like pains, टखने, कप ।
पैर के अंगूठे, पैर, भुजा, गर्दन और पेट में ऐंठने का सा दर्द हो, कप ।

ऐंठन का दर्द Crampy pains, हाथ और बाहों में हो, नप, स ।

ऐंठने का सा मालूम पड़ना Crampy, दौडनेवाला, उछलनेवाला, दर्द चेहरे में या वक्षस्थल में या स्त्रियों के उदर में दाहिनी ओर, मप ।

ऐंठ का दर्द Griping pain, नम, स ।

ओष्ठ (होंठ) Lips
सोजिश, फप ।
भूरे घाव, (ज्वर, निर्बलता) काप ।
फटना ठंड में, काम ।
दरार पडना, कफ ।
घाव होना, काम ।
छिलके उतरना, काम, नम ।
ज़ख्म होना, नप, स ।

कंठमाला Scrofula, नप, मप, कप, स।
गिल्टियों और चर्म रोग के लिये, कफ़, स, मप, नप।
कंधा Shoulder, कंधे मे दर्द, फप, नम, नस; स।
कनपटी Temples, कनपटी में दर्द, नम, स।
कनफ़ेर Mumps
मुख्य दवा, काम, नम।
गिल्टी सख्त होना, कफ।
कपड़े Clothing, न सहे जाते हों, नम।
कब्ज़ Constipation, नम, स, नस (बड़ी ताकत का)।
मुँह में पानी भी आता हो, नम।
घुमेर और सिर दर्द, कप।
उनींदापन, नम।
धीमा, बोझिल सिर दर्द, नम, आसू बहुत आना, नम। [कफ।
झागदार बलग़म के करने से, हलके रंग के दस्त, कास। [नम।
रीढ के रोग, स
जुबान मैली, काम।
निचली आतों मे भारीपन, फप।
हेकटिक ज्वर, कस।
आते दुर्बल हो, नम, फ़प।
क्षयी रोग के समय, कस।
बुड्ढे और बच्चे रोगी हो, कप।
कभी कभी दस्त लगते हो, नम, दस्त सूखा हो, नम। [नप।
आत काम न करती हो, नम।

कब्ज़ Constipation
मलाशय काम न करती हो, स।
कब्ज की आदत हो, कास, कस।
बवासीर के कारण, नम।
बच्चो को कब्ज, मप।
सख्त कब्ज, कास, नप।
गुदा मे दरार पड़ जाय, नम।
मुलायम दस्त भी तकलीफ से हो, कप।
कमज़ोरी Weakness, कप, काम, नम, स, नप, फ़प।
जोड़ों की, नम, स।
ज्ञानतन्तु की, नम, स।
फालिज से, स।
गोश्त, काप।
घुटनो मे, पिंडालियों मे, पेट मे, नम।
बांह, पीठ, छाती, धड, पैर, टांग, हाथ, स।
हलक और गला, कप।
कमज़ोरी और थकावट Weakness and fatigue, दिन भर, विशेषकर सवेरे, कफ।
कमर का मुकाम Lumbar region
कमर के मुकाम मे दर्द, कप, नम, स।
कमर का दर्द Lumbago, कप, फ़प, मोच मे, कफ। [कफ।
खिचता दर्द, कफ़।
कर्णशूल Earache
ठंड से अधिक, मप।
वर्षा से ,, नस।
गर्मी से आराम, मप।
तंत्रन्तुज या ज्ञानतन्तु विकार से, मप।

कर्णशूल Earache
कान और गर्दन की गिल्टियां सूजी हुई हों, काम, कस।
सर्दी के कारण सोजिश, फप।
चोट, लपक, सुई चुभने का सा दर्द, मवाद अडे की सफेदी सा, कप। [फप।
गले मे खुलनेवाली नाली की सूजन, काम।
गले की गिल्टी सूजी हो, काम।
जलन सा दर्द, फप।
पीला मवाद, कास।
फडकन, फप।

कलाई Wrist
गठिया का जोर हो, फप।
जोड मे खिचावट, फाडने का सा, चुभने का सा, नम। [काम।
सुई चुभने का सा दर्द, नप, फप, कप।

कस्मावट Constriction, कप, नम, स।

कांच निकलना Prolapsus of anus, फप।

कांपना Shuddering, नम, स।

कांपना Trembling, शरीर का, नप, नस, कप, काप।

कांपना, लिखनेवालो का हाथ Writers' Cramps, मप।

काईदार बद गोश्त Fungous growths, कस।

काटना, विषैले कीड़ो का Stings of insects, काप, नम।

काटना, पशुओ का Bites of animals, फप, काम, स।

काटनेवाला दर्द Cuttig pains
लगाने के लिये, नम, म।
खिलाने के लिये, कप, काम, नम, म।

कान Ears
दर्द भीतर, कप, म।
पास की हड्डी दुखे, कप, क ? ।
रोग के साथ थूक बहुत गिरे, नम।
कान मे से कोई चीज जोर करती हुई बाहर आती जान पडे, नम।
घंटिया बजने का सा शब्द हो, नस।
मानो भीतर कोई जीव है, स।
जलन हो, बाहर कान खुजाता हो, कप, नप, नम, कस।
भिनभिनाने का शब्द, काप, मप, फप, नम, स।
बाहर की ओर फुसियॉ हों, स, ठडा जान पडे, कप। [कप।
चारो तरफ रसौलियॉ हों, स।
मुह में खुलनेवाली नाली से मवाद बहे, नम, काम, कास, स।
मध्य कान, फप, काम।
पर्दे पर चूने के सदृश मैल जमे, कफ।
चटखने का सा शब्द हो, स।
नाक सिनकने या खाना निगलने मे चटखने का शब्द हो, काम।
चबाने मे, नम।
पुरानी सोज़िश, कस।
काटने का दर्द, कास।
सोजिश के कारण बहरा होना, फप।
बहरा हो, गाढा, पीला मवाद बहे, कास, कस।

कान Ears

गले में खुलनेवाली नाली की सूजन, नम, काम, स, कास।
सिर में शब्द हो, काम।
ज्ञानतन्तु संबधी निर्बलता से, काप।
कान बहता हो, काम।
छींकें आती हों, काम, नम।
कान का पर्दा मोटा पड़ गया हो, काम।
गले की सूजन में, कास, काम।
आसपास की गिल्टियों की सूजन ठंड लगने से, स। [से, काम।
बहरापन ज़ुकाम से, कास।
टीके से, स।
ज्ञानतन्तु की अशक्ति से, काप।
गर्म कमरे में, कास।
बहुत शब्द होकर कान खुल जाय, (कभी कभी) स।
कान से मवाद बहे, नम, नस, स।
गाढा, पीला लोहू मिला, स, काप, कस।
पीला व चमकदार, कास, काप।
गाढ़ा, पीला, पतला, लसदार, कास।
पीला, पतला, नम, कास।
गाढा, पीप सा, कस।
पतला मवाद, कास।
मलाई सा, नप।
जलानेवाला, कप।
बदबूदार, स।
छीलनेवाला, दुर्गन्धित, काप।
सड़ा हुआ, मैला, दुर्गन्धित, काप।
तर, नम।

कान Ears

म्यूकस, फप।
पीपदार, कप, कास, फ़प, नम, स।
पछादार, काप।
गाढा, सफेद और तर, काम।
कान के बाहर हड्डी में गांठ, कफ, स।
चारों ओर फुंसियां, काम।
मुश्किल से सुनाई देता हो (कारण अन्दरूनी कान में मवाद से सख्ती आ गई हो), कफ, काम, नम, स।
मुश्किल से सुनाई देता हो (कारण झिल्ली का गद्दा सूज गया हो), स।
,, सिर में आवाज हो, काप।
,, सर्दी के कारण हो, स, कप।
स्नान करने पीछे कान में सोजिश खुजली हो, नप, नम, कप। [हो, स।
कनफेर के साथ में थूक बहे या न बहे, काम, नम।
बाहरी कान सूजा हो, स, काम।
आवाज़ हो, कप, नम, स, कस।
सोते में आवाज़ हो, काप।
पानी बहने की सी आवाज, फप।
बहे, कास, नप, स, काप, फप, नम।
,, टीका लगने से, स।
शब्द न सहा जाय, स, फप, काप, नम।
एक कान लाल, गरम, खुजावे, नप।
आसपास फुंसियों के दाने, कस, फ़प।
पीछे दर्द, कप, फ़प, नम, स।
भीतर दर्द, कप, नम, नस, स।
लौ में दर्द, नम।
मध्य में दर्द, काम, स।
बगल में दर्द, नम, स।

कान Ears

गूंजने का शब्द, काप, म।
बजने का सा शब्द, नम, स, नस, काप।
दहाडने का शब्द, नम, स, फप, काप।
भरा सा जान पडे, म।
तेज़ बिजली जैसा चुभने का दर्द, नम।
बायें कान में दर्द दौडे, स।
हड्डी में चतुर्दिक दर्द दौडे, कप।
भीतर बाहर दुख हो, कप।
छूने से दुखे, नप।
झटका सा लगे, काम।
गठिया सबंधी पीडायें, कप।
नीचे तेज दर्द, काम।
तेज और लपकने का दर्द, फप।
भीतर पीडा, नम, क्रप, नस।
आवाज ऐसा मानो किसी लम्बे बर्तन में ऊपर से पानी गिर रहा है, नप।
कान कडा जान पडे, काम।
थोडी सी आवाज़ से चौंक पडे, काम, काप, स।
ऐसे बच्चे, जिनको कंठमाला विष का रोग हो, दांत देर से निकले, हड्डियों में रोग हो, बहुत दिन से मवाद बहता हो, अकसर बच्चे की जल्द बढने के कारण हो, कप।
तेज दर्द, चपक चले, सोजिश व बुख़ार हो, दिमाग मुब्तिला हो, कान बाहर से जलता हो, हिलने झुलने से बडा दर्द, सीधे बैठे रहने से दर्द से आराम रहे, फप।
तनाव भीतर जान पडे, क्रप।
भीतर घाव हो, काप।

कारण Cause, रोग का

क्रोध, नम।
ठंडी हवा लगना, मौसिम, नप, नम, म।
मौसिम बदलना, नस, म।
कब्ज़, नम, नप, म।
नमी, वर्षा, नम, कप, कक।
निराशा, सांसारिक हानियां, हार, हत सफलता, कप। [कक, नम।
गिरना, चोट लगना, मोच आना, भय, डर, काप। [[illegible], नप।
शोक, चिन्ता, कप, काप।
घर की याद या प्रेम, काप।
बहुत खुशी, काप।
बदहज़मी, नम, नप।
स्वप्न दोष, काप, कप, नप, नस, म।
गाडी या जहाज़ में चलने से, नम, फुंसी गुप्त हो जाना, म। [म।
भीगना, पानी में चलना, कप, नम, दिक होना, कप। [स।

किटिभा Eczema

टीका लगने के पीछे, काम।
कान के पीछे, भौहों पर, जोड़ के मोड पर, बहुत नमक खाने से, नम।
अचानक बन्द हो गई हो, कास।
शाम को खुजली हो, काम।
स्नान से ज्यादा हो, नम।
छिलका पतला हो, नम।
तेज़ाबी लक्षण हो, नप।
सफेद सी फुंसिया हो, काम।
सफेद पानी भरे, नस।
पीला, हरा सा पानी निकले, कास।
पानी भरी फुंसियां, नस।

किटिभा Eczema
सफ़ेद खुरड, कप।
गर्भाशय विकार से, काम।
चिड़चिड़ेपन के स्वभाव से, काप।
पीले छिलके, कप।
कीड़े Worms
मुख्य दवा, नप। (२x)
केंचुए, नम, स।
चिपटे फीते की तरह केंचुए, नम, स।
सूती कीडे, स, नप, काम, फप।
आंतों में, नप, कप, फ़प।
लंबे कीडे, नप।
साथ मे बदहज़मी, फ़प।
कूकर खांसी Whooping-Cough
सोजिश दर्जा, फप।
ज्ञानतन्तु के कारण, मप, काप।
खाना के हो जाना, फप।
कूल्हे Hips
दर्द के स्थान पर दर्द, नम, स, काप।
कूल्हे की हड्डी Hip-bone, में दर्द, [कप।
कूल्हे का जोड़ Hip-joint
दर्द हो, तो प्रारम्भ मे, काम।
ज्वर के लिये, फप।
कूल्हे मे सडन हो, कप।
घुटने ठंडे हों, कप।
पिंडलियों में एठन हो, कप।
चलते मे ,, ,, नम।
खिंचावट का दर्द, नप।
वर्फ सी ठंड हो, कप।
सोजिश हो, फप।
नश्तर चुभने का सा दर्द, मप, कप, [कास।
वाईं तरफ हो, कप।

कूल्हे का जोड़ Hip-joint
चलने मे पहिले दर्द हो, काप।
तलुए सुन्न हों, कप।
पुराना रोगी हो, स, कस।
रात को दर्द अधिक हो, कप।
दर्द का होना और चला जाना, मप, [काप।
चीरफाड़ के पीछे दर्द, फप, काम।
वांई ओर छेदने का दर्द, नस।
दाहिनी ओर चुभने का दर्द, नम।
केंसर Cancer, विषफोड़ा।
पिलाने के लिये, मप।
एपीथीलियल केंसर, कास।
पत्थर के समान सख्ती हो, कफ।
मुर्दारी हो, काप।
बदबूदार पीप निकलती हो, काप।
पीला खुरड हो, कास।
जल सा साफ मवाद हो, नम।
बरछी मारने का सा दर्द हो, मप।
किनारे सख्त हों, कफ।
चेहरे पर हो, कास।
कै होना Vomiting
तेज़ाबी, खट्टा मवाद, नम, फप,
पित्त संबधी, नस। [काप, नस, नप।
कड़ुआ और भूरा मवाद, नस।
पित्त के कारण, नम, स।
पिसी हुई काफी के समान, नप, नम।
रुधिर मिली, स, फप, काम।
सुर्ख रुधिर, फप।
खून काला लिये हुए सुर्ख, न जमनेवाला, काप।
,, काला रंग, चिकना, काम, फप।

कै होना Vomiting

खून झागदार, नम।
,, जमा हुआ, काला, काम, फप।
पीने की चीजें निकलें, नम, स।
खाने की चीजें ,, कप, फप।
नम, स, कफ।
कडुवी चीजों की कै, काप।
बिना पची चीजें, कप, फप, कफ।
खाना और खट्टा पानी निकलना, नम, फप।
गाढा, सफेद बलगम, काम।
खट्टे झाग हों, नप।
कीडे गिरें, नम, स।
नमकीन, हरा सा रंग, नस, काप।
चिपकनेवाला, पतला मवाद, स, नम।
खट्टे दही की सी और पनीर का सा रंग, नप, नम।
साफ सवाद, नम।
ठंडा पानी पीने, बर्फ की मलाई, या ठंडी चीजें पीने से, कप।
कलेवा करने से पहिले, फप, स।
दांत निकलने के दिनों मे, कफ।
दूध पिलाते ही बच्चे को कै, स, कप, फप।
बच्चों मे, कप।
बच्चे फटा हुआ दूध गिरावें, कप, नप।
सवेरे, स।
शराबियों की कै, नम, नस।
गर्भिणी स्त्रियों की (मुख्य दवा), काप, (गर्भावस्था के अनुसार)।
वायुगोला के कारण, काप।
समुद्र यात्रा के कारण, नप, काप।

कोढ़ Leprosy

तांबे के रंग के धब्बे, नाक में घाव, गांठें हों, स। (पानी में घोल लगाने के लिये।)

कौआ Uvula

बढ़ जाना, कफ, नप, नम।
ढीला पड़ जाना, नम, कफ।
सुर्ख, सूजा हुआ, सोजिश, कप।
खांसी आती हो, कफ नम।

क्रूप Croup, (हलक देखो।)

मुख्य दवा, कफ।
जख्म हो, काम।
क्रूप रोग असली, कप।
झाग के मार्ग के द्वार मे हो, कफ।
मंद, काप।
झिल्ली मे पीप के साथ हो, काम, कप।
आखिरी दर्जे में, कम।

क्लेद की गिल्टी Lymphatic glands

पुरानी सोजिश, नम।

क्षयी रोग साधारण रूप से Consumption in general, नम, स।

पीपदार बलगम हो, कम।
बडी कमजोरी हो, स।

क्षयी रोग Tuberculosis, नप, मप, स।

पेट सम्बन्धी, नस।
शोषक गिल्टियों की सूजन, नप, काम।

खंजवात Locomotor-Ataxia,

चलने की शक्ति मे खराबी, मप, काम, काप, नस, स।

खसरा Measles

मुख्य दवा, फप, काम।
जब छिलका उतरने लगे, कास,
जब दाने बैठ गये हो, काम। [कप, स।

खांसी Cough (बलग़म देखो)

साधारण, कप, नम, स, फप।
तेज, काम, फप।
बढ जानेवाली शाम को, कास।
,, ,, गरम कमरे मे, काम।
,, ,, सवेरे, नम।
आराम लेटने से, कप।
,, ठडी हवा से, कास।
खासने मे बहुत आवाज हो, काम।
सिर दर्द हो जाता हो, नम।
गालों तक आमू आ जाय, नम।
पुरानी खासी, क्षयीवालों की, कप, स, नम।
तशन्नुजी, मप, कप, फप, स।
क्रुप खासी, काम।
सूखा ,, फप, मप, नम, कफ, कप, स।
ठडी चीजे पान करने से उठे, स।
हलक मे कौवा बढ जाने और सूज जाने से उठे, लेटने मे खासी की अधिकता हो, नम।
छाती की बीचवाली हड्डी के पीछे सुरसुराहट हो, नम, काम।
सुरसुराहट हलक मे, कफ।
,, स्वास की नाली मे, फप,
,, गले मे, कफ। [काप, स।
काटनेवाली खासी, कफ।
,, खाने के पीछे, कफ।

खांसी Cough

सख़्त, फप, कास।
जोर की, काम।
गला पड जानेवाली, कास।
खासते समय रोगी छाती पकड ले, नस।
किरकिराहट करनेवाली, स, फप।
ढीले बलगम की आवाज़ करनेवाली, कास, स, नम।
सख्त, जोर का शब्द करनेवाली, दूध सा बलगम, काम। [कास।
ज्ञानतन्तु सबन्धी, मप।
सोते समय होनेवाली, मप, कफ, क्लेशकारक, फप। [स।
बारी से उठनेवाली, मप।
समय समय पर उठनेवाली, नम।
बाहर जाये बिना आराम न आवे, कास।
बलगम, गाढा बहुत और पीप सदृश, स।
थोडी देर रहे, फप, काम, नम।
ऐठन के, मप, काम, काप, नम, फप।
सुरसुराहट मे, फप, मप, कप।
कूकर खाँसी, फप, मप, कास, काप, सिर फटा जाय, नम। [कप।
रात को पसीना आवे, स।
खासते खासते पेशाब हो जाय, फ़प, नम।
बाई ओर ,, छाती मे दर्द हो, नस।
छाती मे दर्द हो, नम, फप।
एकाएक ज्वर हो, कस।

खांसी Cough
आसू बहते हो, नम ।
बलगम सवादवाला हो, कस ।
छाती खाली जान पडे, नस ।
बच्चो का दम घुटे, लेटने से आराम मिले, कप ।

खींचना Pulling, खीचने का सा अनुभव, कप ।

खुजली Pruritus, काप, मप, कप ।
खुजानेवाली फुसिया, कास ।
पित्त के समान, कप ।
रात्रि को विशेषता, काप, स ।
तलुओ से, काप, कस ।
हथेली मे, काप ।

खुजली Itching
ज़ोर का काम करने के पीछे, नम ।
कान के पीछे, नस ।
कीडो के काटने की सी, नप ।
उगलियों के बीच, नम ।
चमड़े में, कप, कास, काप, स ।
तलुओ मे, कस, काप, मप ।
हाथ पैरों मे, काप ।
नाक की दीवारो मे, नस ।
स्तनो में, स ।
चेहरे में, नस, स ।
टागो में, काम, काप ।
सूजे हुए स्तन मे, स ।
पैर की उंगलियों में, नस ।
सब शरीर में, काम, नम, स ।
पलको में, नप, नम ।
आखो मे, नम ।
नाक मे, स ।

खुजली Itching
हथेली मे, काप ।
कपडे उतारने पर, नस ।
रेंगने का अनुभव, काप ।
जोर की खुजली, नम ।

खुमीर Drowsiness, नम, सप, काप, नस, नप ।
तीसरे पहर, कप ।
बुड्ढो मे, कप ।

खुरड Crusts, सख्त हो, कफ ।
पीलापन लिये सफेद, कप ।
पीप सहित, स ।
शहद सा, नप ।
बदबूदार चिकना, काप ।

खुरंड, सिर पर Crusta Lactea, कस, नप, काम, स ।

खुश्की Dryness
हलक मे, काम ।
उगलियो के शिर पर, स ।
स्वास द्वार पर, कफ, नम ।
मुँह मे, स ।
रात को गले मे, कप ।
आंखो मे, नस ।
मसूड़ो मे, नस ।
नाक के भीतर, स ।
बाई आख का डेला, नप ।
होठ, स ।
मुँह, काम, नम ।
नाक, नम ।
चर्म, नम ।
गला और सीना, काम ।
गला, काम, नम, नस, स
जबान, काप, नम ।

खून बहना Hæmorrhages
काला रुधिर, काम।
खूब लाल, फप।
जमा हुआ, काम, फप।
काला, काम।
शरीर के भीतरी अंगों में, नम, स।
न जमनेवाला, काप।
जहरीला और पतला, काप।
पतला, काला, सड़ा, काप।
खोदने का सा होना Digging sensation, नम, स।
खोपड़ी Occiput, पिछला भाग दर्द करे, नम, स।
खोपड़ी पर Scalp
प्यासा, फप।
फोड़े, गांठ, या छूने से दर्द, स, नम।
सूजे, फप।
पीप पड़ना, कम, स।
व्रण होना, कम।
खोपड़ी पर से सफेद छिलके और खुरड उतरना, नम, काम, कास।
मवाद भरी फुंसियां, कास।
खोरिया Chorea, हाथ पैर काबू में न रहना, मप, नम, कास।
पेट में कीड़े हों, स, नप।
गठिया Rheumatism, तीव्र, कप, कस, फप, काप, काम, मप।
क्लेश बढना, ऋतु परिवर्तन से, कप।
,, काम की थकावट से, काप।
,, सर्दी, व गर्मी से, कप।
,, हिलने जुलने से, फप।
,, रात को, कप।

गठिया Rheumatism
क्लेश बिस्तर की गर्मी से, काम।
,, सवेरे, काप।
,, सर्दी हो जाने से, फप।
,, बैठे हुए से उठने पर, कप।
आराम आना, धीमी हरकत से, [काप।
,, गर्मी से, फप।
जोड़ की गांठों में, नप।
जोड़ों पर, फप, काम, कप, नप, काप।
पुराना, कप, काम, काप, नम, नस, नप, कास, स, कस।
दर्द, हरकत करने में, फप, काम।
कभी कहीं कभी कहीं, कप, कास।
वातरक्त सदृश, नम।
पैर से चूतड तक जानेवाली ज्ञानतन्तु गोश्त में, फप, काम। [का, मप।
कुछ धीमा, फप।
दौड़ने फिरनेवाला, कास।
साथ में सूजन हो, काम।
तेजाबी लक्षण हों, नप।
सोजिश और ज्वर हो, फप।
पेशाब गहरा लाल हो, फप।
गठिया से दर्द Rheumatic pains, शिर में, मप।
उंगलियों की गांठ और कंधे में, नप।
दांतों में, मप।
दर्द कंधे के पास बाजू में, कप।
जबड़े और दांतों में कनपटी तक, स।
हाथ पैरों में, नस, स।
गर्दन के निचले भागों में, स।
तीव्र गठिया, उंगलियों में, फप।

गठिया से दर्द Rheumatic pains
तीव्र गठिया, घुटना, कधा, कलाई, या दाहिने कंधे के जोड मे, फप।
दाहिने कंधे के मास मे, फप।
जोडो में, काम, मप, नम, कप, नप।
कधो के बीच मे, कप।
ठड के कारण, फप।

गड़गड़ाहट Gurgling, पेट, स।

गर्दन Neck, गर्दन के पीछे, बीच मे तथा पीठ मे दर्द, स।
ऐठन का सा दर्द, कप।
दोनो ओर अकडाहट, नप।
गला सूख जाना, खासकर बच्चों मे, नम।
अकड जाना और दर्द करना, नम।
सर्दी के कारण, फप, कप, नप।
पिछले मध्य भाग मे दर्द, स, मप।
" " " " तेज़ उछलनेवाला, छेदनेवाला, मप।
सुई छेदने का सा दर्द, नस।
पतला पड जाना, रुधिर फीका होना, नम।
" " " बच्चों मे, कप।
पिछले मध्य भाग और शिर में तेज दर्द, नस।

गर्दन के बीच मे Nape of neck, दर्द, नम, स, मप, कास।
खिंचावट का दर्द, नस।

गर्भ और प्रसव Pregnancy and Labour
जनमने के पीछे का दर्द, काप, मप, फप।

गर्भ और प्रसव Pregnancy and Labour
दर्द, कमजोरी, कारण—गर्भाशय का कमज़ोरी मे सिकुडना, कफ, फप।
स्तनो मे जलन, कप।
जच्चाखाने का बुख़ार, काप, नम, काम।
ज़च्चा का ऐठ जाना और टागों मे अकडाहट, मप।
कमजोरी बहुत दिन दूध पिलाने को, [कप।
" बच्चा जनने मे, कप।
" गर्भ के कारण, कप।
बच्चा जनने मे जोर बहुत पड़ना, मप।
पैर दुखना और चला न जाना, स।
स्तनो मे सख्त गाठ, कफ, काम, स।
रुधिर प्रवाह, कफ़।
स्तन बढा हुआ जान पड़ना, कप।
नासूरवाले घाव स्तन मे, स।
गिल्टिया सख्त स्तन मे, कफ, स।
जच्चाओ की बौराई, काप।
स्तनो का सूजना, स, कस, काम, फप, कफ।
" मवाद भूरा और दुर्गन्धित,
दूध का नमकीन स्वाद, नम। [काप।
पनीला स्वाद, नम, काप।
नमकीन और नीले रंग का, कफ, कप।
सवेरे कै होना.—
अनपचा खाना, फप, नम, काम।
झागदार पतला, बलगम, नम,
खट्टा साद्दा, नम, नप, फप। [काम।
पानी, नम।

गर्भ और प्रसव Pregnancy and Labour

खाना, फप।
पित्त कडुआ, नस, नम।
लसदार पीला, काम।
खट्टा फटा दूध, कप।
सफेद बलगम, काम।
पेशाब का गर्मी से जम जाना, काम।
झिटनी फटना, आसानी से, स।
झिटनी दुखना, कप, फप।
गर्भ काल में पैरो का दुखना, स।
प्रसव वेदना झूठे दर्द, व्यर्थ चेष्टा, काप।
लगातार और हलके दर्द, काप।
ऐंठ के साथ दर्द, मप।
स्तन का सूख जाना, स।
गर्भपात का भय, काप, मप।
गर्भ काल मे हाथ पैरों का थक जाना, कप।
साथ ही कब्ज रहना, नम, स।
पित्त बढना, मुँह कडुआ हो जाना, नस।
दिल जलना, नप।
साथ ही थूक आना, नम।
दांत दुखना, मप, कप, कफ।
तेजाबी कैफियत, नप।
घबडाहट, काप।
कमजोरी, कप।
उदासी, नम।
दस्त लगना, मप, नप, नस।
पेशाब रुकना, मप, नम।
अनिच्छा मूत्र त्याग, फप, काप, नम।
पैर सूजना, नस।
साथ ही पैर की नसें फूलना, कफ।
केल्केरिया फ्लोर के व्यवहार से प्रसव आसानी से होता है।

गर्भपात Miscarriage

मुख्य दवा, काप।
साथ ही लाल रुधिर गिरे, फप।
,, काला ,, काम।
,, तेजाबी कै हो, नप।
,, पनीला ,, नम।
,, पित्त की ,, नस।
,, ऐठन हो, मप।
रोकने के लिये, कप, काप।

गर्भाशय Uterus

गर्भाशय और जननेंद्रिय मे दर्द और पीडा, कप।
गर्भाशय मे दर्द, कप, फप, नम, स।
गर्भाशय मे दर्द हो, कपकपी आवे, कप।
पत्थर के समान सख्ती, कफ।
ढीला और नरम पड गया हो, कफ।
गर्भाशय के दर्द के साथ पीठ मे दर्द हो, कप।
टल गया हो, अथवा आगे पीछे बल खा गया हो, कफ, कप, काप।
(सर्जन की सहायता लो।)
गठिया दर्द के साथ टल गया हो, कप, नप।
गिर पडा हो, कफ। (फेसरी व्यवहार करो)।
सोज़िश हो तो, फप।
दर्द नीचे की तरफ़ जाता हो, कफ, फप, नम।
जलन हो, नम।
पुराना रुधिराधिक्य हो, काम, कप।
कटन जान पड़ती हो, नम।
गर्भाशय के स्थान तथा आसपास खिचावट हो, कफ।

गर्भाशय Uterus
बाहर निकल पडना, कफ, कप, काप, नम।
बैठने से गर्भाशय ठीक हो जाता हो, नम।
बाहर गर्भाशय निकलना, तबीअत बुरी हो जाना, कप नप।
गर्भाशय के आसपास, निर्बलता, कप, नप।

गर्भाशय से रुधिर प्रवाह Uterine hæmorrhage, नम, स, काप, कफ।

गरमी (उपदंश) Syphilis
मुख्य दवा, कफ़ काम, कास, नम, [नस।
शाम को अधिकता, कास।
कडे किनारे का घाव, कफ।
नर्म किनारे का घाव, काम।
घाव से पानी सा निकलता, नम।
सफेद मवाद निकलना, काम।
गरमी के कारण गले मे व्रण, कास।
हड्डी मे गांठें, स।
पीप मिला मवाद निकलना, कस।
पुराना रोग, स, नम, काम, कस।

गला बैठना Hoarseness
ठड से, काम।
साधारणतः, कप, कास।
बहुत काम से, काप, फप, काम।
हलक दुखता हो, कफ।
आवाज न निकले, काम।

गॉठ Cysts (पोली), कप, कस।

गिल्टियॉ Glands
सख्त हों, कफ, स, काम, कस।

गिल्टियॉ Glands
सोजिश हो, फप, काम, स।
कठमाला रोग के दूषित हो, काम।
,, बढ रही हो, स, काम, कप।
पसीने की गिल्टियो मे पीप हो, स।
पत्थर सी सख्त हो, कफ।
पीप पड गई हो, कस, स।
सूजन हो, काम, नप, स, कप।
घाव हो, फप, कस।
थूक की गिल्टियाँ, नम, काम, स।
पेट और गोद के जोड में गिल्टी का बढना, स।

गुदा Rectum
दर्द, जलन, खुजली, तड़प, स, नम, फप, मप।
काच निकलना, काप, नम।

गुर्दे Kidneys
सोजिश का पहिला दर्जा, फप।
तथा सूजन, काम।
तीसरा दर्जा, नप।
मूत्र मे एल्ब्यूमिन पाया जाना, कप, कास, काम।
सोजिश का नतीजा, काम।
दर्द होना, फप, काम।
पीप पडना, स।
गुर्दे के स्थान पर तनाव और गर्मी, पेशाब मे लाल रेत, या खून आना, नम।
स्कारलेट बुखार के पीछे गुर्दे में रोग हुआ हो, कास, कस।
चर्म रोग के पीछे हुआ हो, कास।

गुर्दे Kidneys
मूत्रमार्ग में पथरी हो, मप. स, नम।
मूत्र में रेत, स, नप।
गुर्दे में से रेत आती हो, नप।
मैला पीला कीचड़ पेशाब में बैठता
ऊपर दर्द हो, फप। [हो, काम।
गुर्दे के रोग Bright's disease,
कप, काप।
ज्वर और रुधिराधिक्यता सहित, फप।
गुलाबी धब्बे Roserash, नप।
गोला-वायुगोला Ball, नम, स।
गृध्रसी Sciatica
टांग की सियाटिक नस का दर्द, काप,
मप, नस, कस, नम, फप।
ग्रहणी Pancreas
ग्रहणी के रोग, कप।
घट्टा Corns, नम, स।
घबड़ाहट Nervousness
रात को, फप।
घर की इच्छा Home-sickness,
घाव Wounds (ज़ख्म) [काप।
ताजा, फप।
मवाद पड गया हो, स, कस।
मुर्दारी हो, काप।
सूजन के साथ, काम, नप।
गाढ़ा, पीला मवाद, स।
घुटने Knees
दोनों में बडा दर्द हो, फप।
छुरी मारने, फाड़ने, या सुई चुभाने
का सा दर्द हो, स।
भीतर सुई चुभाने का सा दर्द हो,
कस।

घुटने Knees
बाएं घुटने में सुई चुभाने का सा दर्द
हो, नस।
घुटने से पैर तक दर्द का जाना, कप।
,, दर्द टांगों की ओर दौड़े, फप।
,, में सोजिश हो, कफ।
भीतर पानी भर गया हो, बहुत
दिन से, स, कफ कप।
घुटने में पानी भरना Synovitis,
कफ।
घुमेर Vertigo, कप, नम, स।
टपकनेवाला दर्द, चेहरा सुर्ख, फप।
दाहिनी ओर गिरने को होना, नस।
बाईं ओर ,, स।
भूख न लगना, ज़ुबान सुनहरी,
मैल से लदी हुई हो, नप।
गाडी में सवार होकर चलने से, फप।
उठने और ऊपर की ओर देखने से,
काप, कास।
बहते हुए पानी को देखने या पार
करने से, फप, मप।
मस्तिष्क और ज्ञानतन्तु संबंधी
कारण अथवा दुर्बलता से, काप।
उदर अथवा पित्त विकार से, नस,
दृष्टि विकार से, मप। [नप।
मदिरा पान से, नम।
मानसिक चिन्ताओं से, काप, नम।
मुडने या झुकने से, नम, स, काप।
थकावट से, कास, फप।
फीके रुधिरवाले रोगी, कप, काप,
वृद्धों में, स, कप। [नम।
बेहोशी हो जाना, कप, स।

घुमेर Vertigo
चक्कर आना, फप, कप, काप, नम, नस ।
गिर पडने का भय, कप, स, कास ।
पीछे को पैर पडना, स ।
नशे की सी हालत, फप, नम, नस, स ।
हाथ पैर काबू मे न रहे, कप, फप, काप, नम ।
तीव्र हो, नम, नस ।
बहुत दिन से आती हो, काप ।
शाम को आती हो, कास, नम ।
सवेरे ,, नम, नस, स ।
दिन से ,, फप ।
सोते से उठने और खडे होने से, नम ।
लेटने से, फप ।
चलने से, कप, फ़प, नम, स, कस ।
शिर की ओर रुधिर जाने से, फप ।
हरकत करने से, फप ।
खाने के पीछे, कास ।
खुली हवा मे आराम, कास, नम, नस ।
गर्म कमरे मे विशेषता, कास, नम ।
पाचन विकार के साथ, नप ।
खाना खाने पीछे याददाश्त घट जाय, कप ।
मूर्छा हो, नम, काप, कास ।
सख्त मतली के साथ हो, कप, नस ।
बेसुधी, नम ।

घृणा Avertion to
खट्टी चीजे, फ़प ।
शराब, स ।
रोटी, नम, नप ।
काफी, नम, फ़प, मप ।

घृणा Avertion to
घी मिली चीजे और मक्खन, नम, नप, काम ।
सब तरह का खाना, काम, नम ।
गर्म चीज का पीना, कास ।
गोश्त, नस, स, फप ।
दूध, स, फप ।
खट्टी चीजे, फप ।
मिठाई, काप ।
गरम खाना, फप, म ।

घेघा Goitre, कफ, कप, नम, स, नप, मप ।

चकाचौंध Photophobia, कप, नम, स ।

चलना Walk
कठिनता से सीखे, कप ।

चल न सकना Immobility
रोगी अग का, नम, स ।

चलना-हिलना Motion न हो, नम ।
करने की हाजत, स ।
,, मे कठिनता, नम, स ।
,, बेमन हो जाना, नम ।

चर्म रोग Skin Diseases
काटने का, नम, स, कप ।
फफोले पडना, नस, काप, नम ।
खुजाने से लोहू निकलना, कस ।
छाले होना, काप, नम, काम ।
छालो मे पानी होना, नम ।
पंछादार पानी होना, काप ।
जलन, स, कप, नम ।
जब जलने से छाले पड गये हो, नम ।
छाले फूट कर सफेद पानी बहता हो, काम ।
पीप पड गई हो, स ।

चर्म रोग Skin Diseases

घाव लाल हो, दर्द हो, फप।
चमड़ा नीला पड़ गया हो, नम, स।
चर्म छिल कर लाल हो गया हो,
कप, नप, नस, काम, काप, नम, [काम।
फटना, कफ।
ठंड में हाथ फट जाना, फप, कफ।
ठंडा रहना, नम, स।
सिकुड़ जाना, नम, स।
पीले सफेद छिलके उतरना, कप।
,, सुनहरे पीले उतरना, नप।
,, दुर्गन्धि उतरना, काप, कास।
दरारें पड़ना, कफ, नम।
मैला होना, नम
सूखा, कास, कप, नम, स, कफ।
ईरीथीमा फुँसिया, काम, नप।
जलने और खुजानेवाले दाने, कास, काप।
चमड़े पर से भुसी उड़ना, कास, नम, स।
बुरे टीके से फुँसिया उठना, काम।
खुरकी और गर्मी, कास।
चमड़ा बहुत खुश्क हो, नम।
ढीला और सुस्त, नम।
सुनहरे पीले छिलके, नप।
चिकना, नम, काप।
खुरदुरा, कास, कफ।
सख्त दाने, कफ।
ज्ञानतंतु के सिरे में दाद सी सोजिश और फुंसियाँ, नम।
घाव मुश्किल से भरे, स।
फुँसी निकलना, कस।

चर्म रोग Skin Diseases

पानी भरी फुसियाँ, नम, नप, नस।
छोटी लाल फुसियाँ दर्द न करनेवाली, काम।
खुजली करनेवाली, काम नप, नम।
सोजिश, फप, नम, स।
खाज, कप, नस, काप, स, नम।
,, दब जाय, नम, स।
,, तर हो, नम, स।
कपड़ा उतारने पर खुजली चले, नम।
कुछ रेंगता जान पड़े ,, काप।
फुसी न हो पर ,, कप।
शहतूत के से दाने, नम।
पित्ती के समान जलन और खुजली, कप।
पित्ती उछलना, नम, स, कास।
गुठले पड़ना, स।
आंवले पड़ना, स।
पीपदार, कस, स।
दुष्ट घाव, काप, स।
बच्चों का चमड़ा छिल जाना, नप, नम।
,, साथ ही दुर्गन्धित दस्त, काप।
ठोडी पर फुसिया, नम।
मुँहासे होना, फप, काम, कस, नस, कप।
रंग लाल पड़ना, फप, नम, स।
फीका होना, नस।
खुरंड होना, कप, काप।
पीले खुरंड, कस, कप।
छिलके होना, कप, नस, नम, काम, [कास।
,, पीले, नस।
,, सफेद, नम।

चर्म रोग Skin Diseases
छिलके पीला मवाद निकले, कास ।
छूने से लगे, स, नम ।
शिगल्स, नम, काम ।
कंठमाला रोग के दाने, स, कप ।
चुनचुनाहट, नम, स ।
सूजन, स, नस ।
दुख, नम, कप, स ।
अचानक गायब हो जानेवाले दाने, [कास ।
गाठे पडना, कप ।
व्रण होना, नम, स ।
मोती से दाने, कप, नस ।
,, भीतर जमनेवाला आटा सा पानी, काम ।
अडे की सफेदी के समान पीला सफेद छिलका, कप ।
पीपदार, नप, स ।
रुधिर मिले, खुजलीवाले दाने, काप ।
पानी के समान रंग हो, नम ।
उठी हुई लकीरे, नस, नम ।
सूखना, झुरी पडना, काप, कप, [नम ।
पीला होना, नम, नस, स ।
चोट का दर्द, नस ।
पुराना रोग, नस ।

चिन्ता Anxiety, कप, स, काप ।

चिड़चिड़ापन Fretfulness, कप, नम, स ।

चीरफाड़ Surgical operations
करेने के पीछे मुख्य औषधि, फप ।
निर्बलता और भय, काप, नम ।
मुर्दारी के लिये, काप ।

चुटकी Pinching Sensation, काटने का दर्द, नम, स ।

चूतड़ Sacial region
चूतड़ो के पीछे दर्द (कमर मे नीचे), कप, नम, स, कफ, नन ।

चूतड़ की हड्डी Coccyx
चूतड की हड्डी मे दर्द, म, कप ।

चेचक Small-pox
मुख्य दवा, काम ।
हरारत और ज्वर, फप ।
जब दाने नजर आवे, नप ।
मंद स्थिति, काप ।
दाने एक दूसरे से मिले हों, काप ।
जब दाने फूटे, कस ।
सडे हो, काप ।
दाने बैठ गये हों, कास ।
खुमारी हो और लार बहे, नम ।

चेहरा Complexion, फीका, हरा, सफेद, कप ।

चेहरा Face (मुख)
दुखे, कस, काम, स, कास ।
रुधिर फीका पडना, कप ।
धब्बे धब्बे होना, नप ।
जलन, काप ।
काले दाग पड़ना, नम, स ।
फूलना, नम, नस, काम ।
ज्वर बिना फूल जाय, या लाल हो जाय, नम, नप ।
नीला पड जाना, काम, नप ।
केसर होना, कास ।
छिल जाना, कफ ।
गाल सूजना, कस, काम, नम ।

चेहरा Face (मुख)

गाल सख्त सूजन, कफ ।

„ गर्म और दर्द करे, फप ।

ठोडी पर दाने, नम ।

स्त्रियों में रक्तहीन, कप, फप ।

तिरछी होना, काप ।

चमडा चटखना, स ।

मैला मटीला रग, कप, नम, स ।

फुसिया और सूजन, गालो पर मुँह के आसपास, काम, नम, स ।

ठोडी, भौह, माथे, होठ या नाक मे, नम, स ।

दाढी के स्थान पर खुजली होना, भरा होना, फप । [नम, स ।

ठडा और सुन्न लगना, कप ।

साफ पानी भरे दाने होना, नम, नस ।

चेहरा टेढा होना, कास, काप ।

फूला और सुर्ख होना, नप, फप ।

चींटी सी लगना, कप ।

दाग पडना, कप, स ।

पीसने का सा दर्द, मप, कप ।

तेल सा निकलना, कप, नम ।

हरा सा सफेद, कप ।

गर्मी लगना, कप ।

सोजिश और दर्द, फप ।

खुजली, नस, काप ।

बहुत खुजली, विशेषकर नाक पर, [नप ।

पीला पडना, नस, नम, स ।

जबडा Jaw bone ।

नासूर होना, स ।

चेहरा Face (मुख)

सख्त सूजन, कफ ।

सडना, स ।

सीसा वात से होना, नम ।

बिजली के कोंधेवाला दर्द, मप, काम ।

सुर्ख दाना पडना, कफ, स, कप ।

फीका, काप ।

पीला, काप, स, नस, नम, नप, कप, कास, फप ।

सुर्ख, नप, काप, फप, कास ।

काटनेवाला दर्द, मप ।

चेहरे का फालिज, काप ।

होंठ Lips ।

चटखे हुए हो, कफ ।

अच्छे न होनेवाले घाव, कफ, नम ।

सूखे, कास ।

फुंसी और छाले Hydroa, काप, नप, मप ।

चमडा गिरना, काप, कास, काम ।

नीचे सूजन, कास ।

रसौली, स ।

होठ Lips ।

सफेद, कास ।

ऊपर का होठ सूजा हुआ, और दर्द करनेवाला, कप, नम ।

चेहरे की मासपेशियो का काम न करना, काप ।

टीस मारना और आसू आना, नम ।

दर्द का एक जगह से दूसरी जगह हट जाना, मप, कास ।

चेहरा Face (मुख)

गर्म कमरे में तथा संध्याकाल में
रोग का बढ़ जाना, काम्न ।
सर्दी या छूने से ,, मप ।
जबड़े और गाल की हड्डियों पर गाठ
उठना, कफ़ ।
दर्द ठंडी हवा से कम होना, कास ।
सेंकने से ,, मप ।
पीला बीमार सा फीका चेहरा,
काप, कुप, काम, नस, स ।
मुर्झाया हुआ सा पीला, फप ।
झटकेवाला दर्द, मप ।
दबानेवाला दर्द, फ़प ।
दर्द फड़कता हुवा, फप ।
,, सेकने से आराम, मप ।
,, ठंड से ,, काप ।
गठिया में दर्द, कप ।
मैला, चिकना, फुसीदार चेहरा,
कास ।
पीपवाली फुसीया, कस, कप, स,
जवानी में, कस, कप। [नस, काप ।
मवाद भरी फुडिया, स, काम, कस,
माथे पर, नम । [काप ।
चेहरा बैठा हुआ, काप ।
सूजन चेहरे के ऊपर हो, कस ।
चेहरे की सूजन, काम ।
कान के नीचे की गिल्टिया (पराइटेड
ग्लेंडस) सूजी हो, कप ।
डाढी की फुसिया, नम, स ।
मोम सा सफेद, कप ।
मूंछे गिरती हो, नम ।
पीलापन लिये हो, कप, नस, काप ।

चेहरे का दर्द Faceache

दाहिनी ओर का, मप ।
सोने के पीछे हो, मप ।
गर्म कमरे में, काम्न ।
शाम को, काम्न ।
चलने में, फप ।
आराम ठंडी हवा में, काम्न ।
,, ठंड पहुचाने में, काप, फप ।
,, गर्मी से, मप, म ।
नीचे जबड़े में, दाहिनी ओर, नप ।
ज्ञानतन्तु संबंधी, काम, काग, नप ।
बदहजमी भी हो, नम ।
गर्दन का बीच ठंडा रहता हो, फप ।
बड़ी थकावट हो, काप ।
रुधिराधिक्यता हो, फप ।
गाठें हो, म ।
माथे का दर्द भौह के ऊपर, फप ।

चोट Bruises, फ़प, कम्न, काम ।
,, हड्डियों पर, कफ़ ।

चोट का दर्द Bruised pain,
नम, स ।

चोट का ख्याल Bruised feeling,
सब शरीर में, काप ।

चोट लगना Injuries

किसी पदार्थ से कुचल जाना, चाकू
छुरी का ताजा घाव, फप ।
साथ में सूजन भी हो काम ।
लापर्वाही की गई हो स, कस ।
पीपदार या मुर्दारी, काप ।
पीप शुरू हुई हो, नप ।
हड्डी टूट गई हो, कप ।
हड्डियों में बड़ा दर्द हो, कफ़ ।

चोट लगना Injuries
कोमल अंग की सोजिश, फप ।
पीठ की ओर चूतड की हड्डी का अकडना, कफ ।
मनुष्य बेसमझ हो जाय, काप ।

चोटी का स्थान Vertex
चोटी के स्थान पर दर्द, कप, नम, स ।

चौंक पड़ना Startings, नम, स ।

छाती Chest
मानों चतुर्दिक फीता कस दिया है, स ।
मानों भारी बोझा रखा है, नम ।
चोट लगने का सा जान पडना, नम ।
जलन, छिदन, कम्पन, फडकन, फैलन, दुखन, फटन, तथा अत्यंत दर्द, सख़्ती और कमजोरी, स ।
जलन और दुखन, फप ।
गहरी जलन, नस ।
दुख और पैरों मे शीतलता, कप ।
भिचावट, काम, मप, नम ।
तग हो जाना, कप ।
काटने का सा जान पडना, नम ।
धीमा धीमा दर्द होना, कप ।
गहरा दर्द होना, स ।
दौडनेवाला दर्द, मप, नस ।
छाती भरी सी जान पडना, नस ।
ऊपर छाती पर चबाने का सा दर्द, कप ।
निचली छाती में हरारत हो, कप ।
गर्मी जान पडना, फप ।
काटने की सी पीडा, छाती मे बाईं ओर से पीछे की हड्डी तक, नम ।

छाती Chest
दबाव जान पडना, काम, नम ।
तनाव का सा दर्द, नम ।
गहरी सास से दर्द बढना, नप ।
दबाव से दर्द बढना, नप ।
छाती के बीच मे से दर्द कंधे की पिछली बाईं ओर की हड्डी तक जाय, नप ।
छेदने का सा दर्द छाती मे बाईं तरफ, [नम्म ।
छाती के बीच मे दर्द, कस ।
दबाव जान पडना भीतर, काम, नम, नस ।
छाती में दाहिनी ओर दर्द तेज़, नस ।
डक मारने और फाडने का सा दर्द, नम ।
बलगम की आवाज़ आना, कास, नस, नम, काम, फप ।
छूने से दर्द, कप, काप ।
दर्द में दबाने से आराम, नस ।
दम घुटना, कप ।
कमज़ोरी होना, स ।
बोलने मे थकन जान पडना, कास ।
पेट से छाती तक बाईं ओर दर्द होना, [नस ।
बाईं ओर दर्द होना, कप ।
बाईं पसलियो से नीचे सीने का सा [दर्द, नम ।
बगलों मे दर्द, फप ।

छाती के बीच की हड्डी Sternum, मे या आसपास दर्द होना, नम, स ।
दुखना और ऊपर दर्द होना, कप ।

छाले Blisters, काप, नम ।

छींकना Sneeze, इच्छा हो, परन्तु छींक न आवे, नम, स ।

छींकने की क्रिया Sneezing, कफ, कप, नम, स।

छूना Touch, छूने का वहम हो, नम, स।

छेद करने का अनुभव होना Boring sensation, नम, स।

छोटी माता Chicken pox
- मुख्य दवा, फप।
- अन्य दवा, कास।
- छिलके उतरने के लिये, कास।
- इलाज न हुआ हो तो, स।

जगना, तकलीफ़ के कारण Waking in distress, नम।
- विशेषकर रात को, नम, स।

जन्म चिन्ह Nævi, फप।

जबड़ा न खुलना Lock-jaw, मप।

जमुहाई Yawning, लेना, नम, तशन्नुजी, मप, कप। [स।
- वायुगोला से, काप।
- असाधारण, कप।

जल जाना Burns, जल जाने के लिये, फप, काम, कास, कस। (खिलावे और लगावे)
- पीप पड़ने पीछे, कस।

जलनदार दर्द Burning pain, कप, नम, स।

जांघ Thigh, जांघ मे दर्द, कप, नम, स।

जिगर Liver
- रुधिर का जमाव हो, नस, फप।
- सख्त पड गया हो, स।
- जलन हो, नस।

जिगर Liver
- जिगर के स्थान पर काटने का सा दर्द होता हो, जिगर बढ़ गया हो बाईं करवट लेटने से दुख बढ़े, नम।
- दिमागी मिहनत से किरकिराहट बढ़े, फोड़ा हो, स। [नस, काप।
- फोड़ा हो, पीप निकले, कस।
- दाहिनी ओर ऊपर दर्द, काम।
- ऊपर दबाव सा जान पड़े, नम।
- काम न करे, काम।
- दुखे और छूने से दर्द हो, नस।
- तेज़ दर्द हो, कप, नस।
- सुई सी चुभे, नम, नस, कप।
- जिगर का स्थान पीड़ा करे, कस।
- सख्ती से कसावट जान पड़े, काम।
- सुन्न होना, काम।
- दर्द दूर हो जाय, दबाने से, मलने से, गर्मी से, मप।
- जिगर और झिल्ली मे दर्द हो, नम, काप।

जिगर की सोज़िश Hepatitis
- मुख्य दवा, नस।
- अन्य दवा, काम, कास, नम, स।

जीभ Tongue
- तेजाबी स्वाद, नप।
- तेज स्वाद, कस।
- दर्द हो, कप, नम, स।
- खयाल, ऊपर बाल का, नम, नप, स।
- ,, मानो जीभ तालू से चिपक जायगी, काप, नम।
- ,, मानो जल गयी है, मप।
- जलन, छालों मे दुख, कास।

जीभ Tongue

नोक से जलन, कप, नम।
खुजली चलना, काम।
सोजिश और खुश्की, काप।
नोक में घाव हो, कप।
घायल हो, नम, म, कप।
बोलना कठिन, नप।
डंक मारने का दर्द, नम।
नोक पर छाले, नम, कप, नम, नप।
कडुआ स्वाद, नम, काम, कप, कस।
सवेरे बुरा स्वाद, कप, नप।
फीका स्वाद, कास, कस।
तांबे का सा स्वाद, नप।
भूरा रंग, काप, नस, कस।
साफ़ और सूखी, मप।
साफ और तर, नम।
साफ और लाल, फप।
तड़की हुई दरारदार, कफ़।
मटीला रंग, कस, कफ।
मैला, नम, नम, स, कप।
साफ मैल, लसदार, पतली, मलाई सी लगी हुई, नप।
बहुत दिन की सूजन, कफ।
मैली, लाल और सोजिश, फ़प।
मैल से भरी हुई, नस, काप, कास।
खुश्क, काम, काप, नम, कास।
मैली भूरी सी हरी, कडुआ स्वाद, नस।
किनारे लाल और दुखनेवाले, काप।
,, सफ़ेद, कास।
,, झागदार, नम।
फैली हुई, कस, फप।
भूरी सी सफेद, चिपकती हो, काम।

जीभ Tongue

हरी सी भूरी या खाकी रंग की, पिछले हिस्से में, नस।
सुनहरी, पीली, पिछले हिस्से पर, नप।
सोजिश के पीछे सख्त, कफ, स।
वासी घुली राई के समान, (सास से बू) काप।
नकशा सा बना हुआ, नस, काम।
तर, पिछले हिस्से पर चपकीली, नप, नम।
सुन्न और कटी, कप, नम।
,, आधा भाग, नम।
नोक पर फुँसियां, कप।
लाल, फप, मप, नस।
खूब लाल या चमकीला लाल, फप।
चपकीली, काम, नम, नस, काप, [कास।
सूजी हुई, काम, कप।
ऊपर छाले, नम।
जख्म, स।
जबान के ऊपर गिलटी, नम।
सफेद, काम, कास।
सफेद सफेद लकीर हो, कप, काम।
,, किनारे पर, कास।
सफेद झागदार पानी, नम।
बात सीखने में देरी, नम।
थूक के बुलबुले, नम।
पीली, कास, नप।
,, जड़ में, कस।
,, और चपकीली, कास।
पतली पित्त सा स्वाद, नस।
थूक गाढ़ा और लसदार, नस।
सुनहरी, मलाई सा, तेज़ स्वाद, नप।

जी मितलाना Nausea, कप, काम, नम, स।
जुएँ, सिर के Tinea capitis, कास।
जुकाम (नाक से) Catarrh (nose)
सूखा हो, काम।
साथ में कंठमाला रोग हो, नप।
नाक की नोक और किनारे घायल हो गये हो, नम।
ऊपर बन्द हुआ जान पड़े, परन्तु बहता हो, कफ।
बहता हुआ साफ पनीला मवाद, नम।
पीला, चिपकनेवाला मवाद, कास।
गाढा, पीपदार, नप, स।
नाक में पीनस हो, सप, नम।
हरा सा, पीला सा, पनीला मवाद, नस।
जूडी लगना Chill
जब साथ में हरारत भी हो, नम, स।
पीछे हरारत, पीछे पसीना, नस।
जोड़ो की पीड़ा Joints
जब जान पडे कि जोड पर चोट लगी है अथवा उखड़ गया हो, कप।
ऊपर पानी सा टपके, नम।
चरचराहट जान पडे, कफ, नम, नस, नप।
सोज़िश हो, फप, कास, सप, नप, काम।
शीतल जान पडे, नम।
छेदने का तथा उछलता दर्द, कफ।
एक से दूसरे जोड में कठिन दर्द, कास।
गौट (नकरस) से जोड सूज गये हो, कफ।
पागल बना देनेवाला दर्द, मप।

जोड़ो की पीड़ा Joints
मानो हाथ पैर की उगलियां उखड़ गई है, स।
गठिया का दर्द, काम, नम, कप, फप।
घाव की सी दुखन, नप।
कुहनी सूजना, कफ।
पीप पडना, स, कम।
अकड जाना, नम।
आसपास में सूजना, काम।
भीतर तेज दर्द होना, स।
गठिया का दर्द कभी कहीं, कभी कहीं, कास।
पुराना गठिया, नम, कप।
जोड़ो की सोज़िश Arthritis (संधिवात)
नया दर्द हो, नप।
पुराना हो, स।
अन्य औषधियो के साथ दर्द के लिये, मप।
ज्ञानतन्तु सम्बन्धी दर्द Neuralgia (नाड़ी-शूल)
रुधिर का जमाव, फप।
तीव्र वेदना, मप।
सोजिश से, फप।
पसलियो के बीच मे, मप।
दन्त पीडा, मप।
नश्तर लगाने का सा दर्द, मप।
फालिज का, काप।
बिजली के से धक्के, कप, मप।
सब दातो मे दर्द, स।
चूतड से पैर की ओर जानेवाली ज्ञानतन्तु की पीड़ा या गठिया का प्रभाव, काप।

ज्ञानतन्तु सम्बन्धी दर्द Neuralgia

रात्रि मे पीड़ा होना, स, कप, मप,
अच्छा न होनेवाला दुख, स। [कास।
वहुत दिन का रोग, कस।
गुदा मे पीडा, कप।
चेहरे मे दर्द, फप, काप, मप।
गर्भाशय से दाहिनी ओर, मप।
आमाशय मे, मप।
आतो मे, मप।
समय समय पर, मप, नम।
दर्द के साथ शरीर मे शीतलता और शून्यता हो, कप।
थकावट और दिल की धड़कन, कास।
अनिद्रा, काप।
पीठ मे दर्द, कास, नप।
आखो में नम।
शिर में, मप।
दातों में, मप।
हाथ पैरो मे, मप, नप, कास।
मानो हड्डिया दुखती है, कप।
लौट लौट आनेवाला, नम, कप।
कभी कही, कभी कही, काप, मप, कास।
विशेषता ऋतु परिवर्तन से, कप।
,, जोड़ो मे, सवेरे, नम।
,, सध्या को, गर्म घर मे, कास।
,, रात को नियत समय पर, नम, मप।
,, अकेले में, कास।
आराम ठंडी हवा से, कास।
,, ,, चीज़ लगाने से, फप।
,, धीमी हरकत से, काप।
,, चित्त प्रसन्न होने से, काप।

ज्ञानतन्तु संबन्धी दुर्बलता Neurasthenia

आम दवा, काप।
रोगी काम से घवड़ावे, फप, स।

ज्वर Fever

जोडो का, नप।
पित्त सवन्धी, नस, नप, मप।
दिमागी, काप।
आत और आमाशय संबन्धी, कास, काम, फप, काप, नम।
मवाद आता हो, फ़प, काम।
रुधिर मे विष पड गया हो, कास।
सूखी घास की बू से, नस, काप, स।
स्त्रियो का सा, स, कस, कप।
सोजिशी, फप, काम, कास।
वारी से आना, मप, काम, नम, नप, फप, काप, नस, कप, कास, कस।
बहुत पुराना ज्वर, कप।
टागो मे ऐंठन, मप।
सांघातिक और पीप युक्त, काप।
ज्ञानतन्तु संबन्धी, काप।
बच्चा जनमने के पीछे, काम, काप, मप, नस।
चौथिया, नम।
न्यूनाधिक होनेवाला, नस।
गाठिया हो, काम, नम, फप।
स्कार्लेट, कास, काम, नम, फ़प, काप।
टाइफाइड, टाइफस, कास, काम, नम, फप, काप, स।
,, पहिला दर्जा, फप।
,, कब्ज के लिये, काम।
पीला ज्वर, नस।
साथ मे तशन्नुज के लक्षण हो, मप।

ज्वर Fever

हरारत और रुधिराधिक्यता, फप।

पानी निकलता हो, काम।

जूडी तर मौसिम के कारण हो, या बढानेवाला हो, समुद्र किनारे की वायु हो, नस।

पुराना रोग, जिगर, झिल्ली बढे हो, नम।

जिगर और तिल्ली के बढने से, नम।

कुनीन से रुक गया हो, दाहिनी करवट लेट न सकता हो, कारण पसलियो का दर्द, नम।

कभी ज्वर, कभी जाडा, दिन मे कई बार और पसीना न आता हो, नम।

चीटी चलना, ज्वर होना, नस।

ज्वर के समय झिल्ली मे दर्द, जिगर पर दबाव हो, नम।

हरारत, जिगर और झिल्ली मे दर्द, बड़ी सुस्ती और क्षीणता, चेहरा फीका, मटीला पेशाब, जिसमे लाल रेत हो, भूख मर गई हो, मुँह कडुआ हो, हाथ पैर खिचते हो, जिस समय ज्वर की अधिकता होती हो, नम।

सात दिन या अधिक रहनेवाला, जिसके साथ प्यास, खुश्की भूरी जुबान, अनिद्रा, बेचैनी हड्डियो पर गाठे हो, कफ।

होठो पर ज्वर के छाले हो, नम।

सब शरीर मे ठड लगना, माथा गरम होना, प्यास लगना, नम।

निचला धड ठडा, चेहरा गर्म, कप।

ज्वर Fever

सर्दी ८–१० बजे सवेरे, घटे भर रहे, फिर तीन चार घटे बुख़ार, शिर मे तेज दर्द, पसीना होकर बुख़ार उतरना, नम।

ज्वर से पहिले तेज खुजली होना, नम।

१ बजे दुपहर को ज्वर रोज, फप।

भीतरी बुख़ार, हाथ पैर ठंडे, नस।

रात को जगते रहना, दुखी रहना, प्यास लगना, नस।

ज्वर के साथ बर्फ की सी ठंड और चमडे का फूलना, नस।

ज्वर के साथ हाथ और पैर बर्फ से ठडे रहना, विशेषकर शाम को, नम।

,, प्यास न होना, नस, मप।

,, प्यास लगना, बार बार और बहुत सा पानी पीना, सुस्ती, जमुहाई, तेज शिर दर्द, बेहोशी, चेहरा नीला, नम।

,, जुकाम और खासी, कप।

,, पैरो या पीठ से ज्वर चढना, नम।

,, ज्ञानतन्तु सबंधी लक्षण, दात बजना, मप, काप।

,, रीढ से ऊपर व नीचे ज्वर होना, मप।

,, प्यास, उदासी, शिर दर्द पहिले हो, नम।

,, जाडा लग कर सफेद मवाद की कै होने लगे, काम।

ज्वर के पहिले सर्दी लगे, कप।

ज्वर Fever

कमर में सर्दी, नम।

हमेशा भीतर सर्दी, म।

हमेशा सर्दी, हाथ पैर अकड़े रहें, काम।

शाम को सोते समय सर्दी, जिससे रोगी ठर जाय, स।

बहुत जमुहाई के साथ सर्दी लगे, नम।

सर्दी लगे, माथा और हाथ गर्म, तीसरे पहर और [नस।

खुली हवा में सर्दी हो, काम।

सर्दी और शाम को ज्वर चढ़े, नम।

,, बिस्तर में और बाहर, कपकपी चढे, प्यास बढे, नब्ज़ तेज, नस।

,, शाम को सोते समय लगे, नस, स।

शरीर पर चिपकनेवाला पसीना, कप।

चेहरे पर ठंढा पसीना, कप।

कब्ज़ हो, लाल पेशाब हो, पीप पडनेवाले ज्वर के साथ, कस।

बकवाद करे, काप।

नींद आवे, नम।

धीमा भारी शिर दर्द, नम।

शाम को हरारत हो, कास।

ज्वर की दशा, नाडी और हृदय का वेग बढे, काम।

सामने माथे में दर्द, गर्मी की लहर पैर बर्फ से ठंडे, नप। [हो, नप।

रात को जलन, नप, स।

जाडा लगते समय हाथ पैर ठडे रहें, नम।

ज्वर Fever

माथा गरम, शेष शरीर ठडा, नस।

हाथ बिस्तर से बाहर न निकाल सके, स।

सिर की चोटी पर गर्म लगे, नस।

हरारत, तीसरे पहर खुश्की, नस।

बहुत प्यास, नम।

बारी का ज्वर, पिंडलियां दुखें, नप।

,, के हो, और तेजाबी खट्टा मवाद गिरे, नप।

,, के में खाना गिरे, फप।

,, पीछे फालिज हो जाय, नम।

,, का बुखार, कुनीन का बुरा असर, तर जगह में रहना या नयी खुली जगह में, नम।

जोडो में पानी सा टपकता जान पड़े, जबकि खुली हवा में, नम।

शाम को टांगे और पैर बर्फ से ठंडे जान पडे, स।

तिल्ली और जिगर बढ गये हो, नम।

धीरे धीरे बकना, ज्वर में, काप।

नाडी की फ़डकन जान पडती है, सख्या में कम, परन्तु फडक के समय शीघ्रता, कप।

गर्दन के पिछले मध्य भाग में और छाती में बाई ओर नाडी जान पडती है, जब रोगी बैठा हुआ हो, कप।

शीघ्र चालवाली नाड़ी, ज्वर की शिर पर पसीना, स। [विशेषता, फप।

खुजली गुप्त हो जाने से रोज ज्वर हो जाना, नम।

ज्वर Fever

कम और ज्यादा होनेवाला पित्त ज्वर, जिसमे हरे, पीले, भूरे या काले रग की कै होती है, नक्स ।

हरारत और शरीर की गर्मी बढ रही हो, नक्स ।

पेशाब का ठहर जाना, ज्वर होना, कप ।

गठिया बाई का दर्द, जिसमे दर्द एक स्थान मे दूसरे मे चला जाता है, काम ।

पीठ और गर्दन मे कंपकपी चढ़ना, पैर गर्म रहना, काम ।

ज्वर के प्रारम्भ मे कपकपी लगना, कप ।

थूक आना अर्थात् लार गिरना, साफ और पतला, नम ।

वेहोशी, नम, काप ।

पसीना बगल मे, नम, स ।

पसीना हाथो मे बहुत, नम, स ।

,, बडी बू करनेवाला, स ।

,, चेहरे पर, नक्स ।

,, शिर पर, स ।

,, कमर मे, स ।

,, तलुओं में, नम, स ।

,, सिर्फ हाथ और चेहरे पर, स ।

,, कहीं कहीं, रोगी का रात को जग पडना, कप ।

,, बहुत, हैरान करनेवाला, दुर्गन्धित, समय समय पर, काप ।

,, शिर दर्द को आराम आता, दर्द दूर होता, यद्यपि दुर्बलता बढती है, नम ।

ज्वर Fever

,, कठिनता से आती नहीं तो बहुत आती है, नम ।

,, ठंडा, काम, कप ।

,, कमजोर कर देनेवाला, रात का, स ।

,, दुर्बलकारक दुर्गन्धित, बहुत सा, काप ।

पसीना बहुत कमजोर करनेवाला, तेज बूदार, काप, स ।

रात को पसीना सवेरे के लगभग और सवेरे, कप, स ।

रात को बहुत पसीना, कप, स, नम ।

पसीना रात को, गठिया के दर्द को हटानेवाला, बिस्तर में से रोगी को हटा देनेवाला, कप ।

रात को कहीं एक जगह पसीना, कर ।

रात्रि को पसीना, स ।

रात्रि को पसीना, खट्टा, बुरा लगनेवाला, स ।

पैरो मे दुर्गन्धित पसीना, स ।

छाती मे बहुत सा पसीना, कप, स ।

खट्टा, दुबला करनेवाला, नम ।

पसीने से तकिया भीगना, स ।

कपडा न खोलना, नम ।

प्यास न लगना, नक्स ।

जुबान tongue --

बारी के ज्वर से जुबान का पिछला हिस्सा सूखी मिट्टी के सदृश मैलदार होना, कस ।

जीभ का रंग भूरा सा बारी के ज्वर मे, काम ।

ज्वर Fever
जीभ पीली, चिपकना, काम ।
,, सफेद या खाकी, साथ ही हलके पीले दस्त, पेट दुखता और सूजा हुआ, काम ।
टाइफाइड बुखार में कब्ज़, काम ।
ज्वर के साथ कै होना, पेट फूलना, [फप ।
जूड़ी मे पित्त की कै, नस ।
,, खाने की कै, फप ।
खट्टा पानी, भूरा या काला मवाद [कै मे, नस ।
कै मे खट्टा पानी, नप ।
कै मे पानी, नम ।
रात्रि को ज्वर विशेष, स ।
ठडक और ऐठन, मप, फप ।

झटका लगना Jerking, नम, स ।

झिल्ली Mucous membrane (म्यूकस मेम्ब्रेन) की खुश्की, नम ।

टखना Ankles
दर्द हो, फप, नम, स ।
कमज़ोर हो, नप, नम, स ।

टांगे Legs
अपने आप हरकत करे, नम ।
कमान सी मुड जाय, कप ।
पुरानी सूजन हो, काम ।
खुजली चले, काम, काप ।
चलते चलते थक जॉय, नप ।
जाघ थक और निर्बल हो जाय, नस ।

टांग की मोटी हड्डी Tibia, कप, स ।

टीका Vaccination, लगवाने के बाद, काम, नप, नम, स ।

ठंडी साँस Sighing, नप, कप ।

ठूसने का सा ख़याल Plug, नम ।

डकार आना Eructations, नम, स ।

डाढ़ी पर फुसियां Sycosis, नस, काम, कप ।

तड़पन के साथ दर्द Throbbing pain, कप, नम, स ।

तनाव Tension, नम, स ।

तशन्नुज Convulsions, स, नम, [मप ।
बुढापे में, कप ।
जवानी मे, कप ।
बच्चो के दात निकलने मे, फप, कप ।

तलुआ Sole
दर्द करना, नम, स ।
जलन करना, कस, काप, नम, नस ।
खुजाना, कस, काप ।

ताप का बढ़ना Temperature, [शाम को, कास ।

तालू Palate
जलन हो, नस ।
खुश्की हो, फप ।
लाल पड जाय और दुखे, नम ।
सोजिश हो, फप ।
दर्द जान पडे, फप ।
दुख हो, स ।
पीला मैल जमा हो, नप ।

तुतलाना, तशन्नुज से Stammering, spasmodic, मप ।

थकावट Exhaustion, काप, मप ।

थकावट Weariness (उदासीनता), कप, फप, नम, स, नस, काप, नप, कस ।

थूक Saliva
कम आना, नम, स ।
बहुत आना, नम, स, नस, कप ।

थूकने मे दर्द Spitting pain, नम, स।

दम घुटना Asphyxia, काप, नम।

दम रुकना Dyspnoea, फप, नम, कास, कप, काप।

वर्षा-काल मे, नस।

दमा Asthma

मुख्य दवा, काप।

अन्य दवा, मप।

डकार आती हो, रोग के साथ हो, [मप।

दम घुटी खासी हो, मप।

बलगम मुश्किल से निकले, कफ।

सवेरे पतला दस्त आवे, नस।

छाती मे दर्द हो, मप।

छाती में घाव सा ज्ञान हो, फप।

थूक आता हो, नस।

रुधिर फीका पड गया हो, कप, कास।

पतला झागदार बलग़म हो, नम।

पीला सा, चिपकनेवाला बलगम हो, कास।

गाढा, गुठलेदार, चमकदार बलगम, कफ, काप।

गाढा, भूरा सा सफेद बलग़म हो, काम।

हरा सा, पनीला, बलगम, नस।

सुनहला पीला, मलाई सा बलगम हो, नप।

पीपदार बलग़म, स, कस।

उदर विकार हो, काम, नस।

एकाएक ज्वर हो, कस।

एेठन के झटके हो, नम, काम, नस।

विशेषकर रात को, स, कप।

दमा Asthma

तर दमा हो, नम।

सूखी घास की बू से होनेवाला दमा, काप।

रात को बारी आवे और नींद खुल जाय, नम।

हवा की नालियो का दमा, कास, [काम।

बच्चो को हो, नस।

बैठने से आराम आवे, मप।

ज्ञानतन्तु (स्नायु) सम्बन्धी, सप।

पेट फूल जाय, दर्द करे, मप।

ज़रा सा खाने से दमा उठे, काप।

गर्मियो मे हो, कास।

वर्षा होने से अधिकता हो, नस।

सवेरे अधिकता हो, नम।

चलने से अधिकता हो, काप।

दस्त लगना Diarrhoea

चिकनाई खाने पीछे, काम।

कभी कभी कब्ज रहना, नम, नप।

वर्षा होने पीछे, नस, कप।

टीका लगने पीछे, स, काम।

पित्त के दस्त, नस।

काले और भूरे, मप।

खून मिले (भूरी सफेद गाठ), काम।

रुधिर और पीप, स, नप।

फटा दूध सा, नप।

पुराने दस्त, कस, नम, स।

रात के समय, कास।

सीत के कारण, फप।

भय ,, ,, काप।

बहुत खटाई से, नप।

वर्षा ऋतु से, नस, कप, कफ़।

दस्त लगना Diarrhoea

ऋतु परिवर्तन से, कम, कप।
कच्चे फल खाने से, कप।
दिन में, नम।
बड़े सबेरे, नस।
तेज लगनेवाले, नग।
झागदार और पित्त मिले, नम, नम।
झागदार और फुलाव, नम, नम।
हवा और बदबू, कप, काप।
छिछड़ेदार, तेज़ाबी, हरा रंग, नप।
,, वगैरह तेज़ाबी हरा, कप।
हरा, नप, कप, नस।
न रुकनेवाला, पनीला, काप।
वृद्धों में, नस।
न रुक सके, नम।
दांत निकलनेवाले बच्चों में, कप।
बच्चों में, स, कप, नप।
गर्म ऋतु में, नप।
आव मिले, नम।
बच्चों के दस्त, नप।
स्कूल की लड़कियों के, कप।
सड़े हुए बदबूदार, काप, स।
बिना दर्द, काप, नम, म।
पीपदार, कस, कास।
चावल के मांड से, नस, काप।
मवाद, पीप से, कस, काम, नम, [कास।
खट्टी बू, नस।
दर्द होकर पतला दस्त, मप, नम।
पतला, नस, कप, नम, कम, मप, कास, फप, काप।
पतला, दर्द के बिना, काप।
पतला, सफ़ेद, कप।

दस्त लगना Diarrhoea

सफ़ेद, कप, नप, काम, मप।
अनपचा खाना, फप, कफ।
तेज ज्वर भी हो, फप।
कूथना पड़े, नप।
तबीअत सुस्त हो जाय, काप।
थकावट हो, काप, कप।
पीलिया रोग, नप।
दर्द हो, टीस चले, नम।
पिंडली एंठे, मप।
विशेषता हो ठंड में, वर्षा से, नस।
पीले दस्त, कास।

दांत Teeth

गर्भावस्था के रोग, कप।
कीड़ा लगना, कप, कफ।
,, दर्द होना, काप।
नासूर हो, म।
धीरे धीरे बढ़े, कप।
ऊपर का छिलका खुरदुरा, पतला और टूटनेवाला हो, कफ।
उतर गया हो, कफ।
भिंच जाना, मप।
पीसना, मप।
बच्चे रात को सोते में दांत पीसें, काप, नप।
पोला हो जाना, नम, स, कप।
ऊपर भूरी मैल, काप।
दुख हो, काप।
अच्छा पालन न होना, कफ।
दांत हिलना, स, कफ, नम।
,, बच्चों का, कप।
स्नायुवीय दंत बजना, काप।

दांत Teeth

स्नायुवीय पीड़ा, नम।

ठंड के पीछे दर्द, काप।

ठंडी हवा या छूने से दर्द, काप, सप,
कस, नम, कप।

बहुत दर्द, फप, नम।

छूने से दुखे, हिलते हों, कफ।

दांत निकलना Teething

सहायता के लिये, कप, कफ।

दिनों में बच्चे का ऐंठना, सप, फप,

आमाशय विकार, नप। [कप।

[illegible] और ज्वर, फप।

आंखें दुखें, कप, फप।

अन्य रोग, कप।

[illegible] हो, कप।

बहुत थूक टपकना, नम।

दस्त आना, फप।

दांत में दर्द Toothache

जलन, तड़प, छेदन, नस।

ऐंठने का सा दर्द, कप।

जलन और सुई छेदने का सा दर्द
कई दांतों में, स।

स्नायुवीय पीड़ा, सप, स।

दांत में उछलनेवाला दर्द, सप।

[illegible] का सा दर्द, कास, नम,

[illegible] दर्द, सप। [स।

[illegible], नम, स।

[illegible] में दर्द, [illegible] में,

[illegible]। [काप।

[illegible]

[illegible] काप।

[illegible]

दांत में दर्द Toothache

भीगने या वर्षा से, नम, नस।

दांत में कीड़ा लगना दर्द का कारण,
कफ।

पैरों में सर्दी लगने के कारण, स।

यदि दांत से खाना छूते दर्द हो, कफ।

यदि स्नायुवीय रोग हो, सप, स।

कारण गठिया, मप, कस।

कभी कहीं, कभी कहीं, मप।

लोहू की बढवारी से, फप, मप।

ठहर ठहर कर, कास, मप।

सोजिशी, फप, मप।

मसूड़ों में, कास, कफ।

बढवारी रोग की, गर्म चीज या
हरकत से, फप।

,, ठंडी चीज से, मप, नस,

,, जुरा लगने से, मप। [कस।

,, गर्म पानी पीने से, कास,

,, ठंडे पैर होने से, स। [नस।

,, न सोने से, काप।

,, गर्म घर में, कास।

,, शाम को, रात को, कास,
कप, स, नम।

,, सोने के पीछे, मप।

आराम मिले, गर्मी और विश्राम
से, मप।

,, सर्दी और हरकत से, फप,
कास।

,, मुंह में गर्म पानी भरने से,

,, तमाखू पीने से, नम। [सप।

सर्दी लगाने से, कास।

,, ठंडी हवा से, कास, नम।

दांत मे दर्द Toothache

आराम, ठंडे पानी से, फप, काम ।
,, गर्म सेक से, मप ।
,, धीमी हरकत से, कास ।
,, दबाव से, मप ।
दर्द के साथ आंसू और लार, नम ।
दांत मे छेद, स, नम ।
ज्वर, फप ।
मसूडे का सडना, स ।
आंखो मे सोजिश, कप, फप ।
दांतो का हिलना, कफ ।
झट मसूडो से खून गिरना, काप ।
स्नायुवीय या तशन्नुजी दर्द, मप ।
साथ मसूडे दुखे, सख्ती, सोजिश हो, काम, कफ, फप ।
घाव होना, स ।
मसूडे और गाल सूजे, फप, काम, स, कस ।
दांत उखाडना, रुधिर-स्राव, फप ।
पुराना रोग, चिकित्सा न हुई हो, स, कस ।

दांत का सड़ना व नासूर Caries

उपदंश के कारण, स ।

दाग Freckles, पीले, कप ।

दाद Ringworm, नस, (२००) तथा, नम, स ।

दाने, बदन पर Pimples,

पिस्सू काटने के से और खुजली, डाढी के नीचे, कस । [कप, नप ।

दिमाग, मस्तिष्क Brain

दहल जाने की दशा मे मुख्य दवा, [काप ।
,, अन्य दवा, नस ।

दिमाग, मस्तिष्क Brain

,, पागल शराबियो मे, नम, काप ।
,, चक्कर आवे, रुधिर का जोर हो, फप ।
,, ज्ञानतन्तु संबंधी, काप ।
,, आंखो के सामने रोशनी जान पड़े, मप, नप ।
दिमाग ढीला ढीला जान पड़े, नस ।
सोज़िश हो, फप ।
मुलायम पड गया हो, काप ।
दिमाग की तह मे बड़ा दर्द हो, नस ।
पानी हो, काप ।

दिमाग़ी कमज़ोरी Brain-fag, कप, नम, काप, स ।

दिमाग मे खून इकट्ठा होना Congestion to the brain

मुख्य दवा, फप ।
अन्य दवा, नप, नस, काप ।
तशन्नुज, कास, मप ।
वायुगोला के चिन्ह, काप ।

दिमाग की झिल्ली मे सोज़िश Meningitis

मुख्य दवा, फप, काम ।
पीछे, काप ।
रीढ की झिल्ली मे सोजिश, नस ।

दिल Heart

दिल के ऊपर का दर्द, मप, फप, काप ।
,, ठंड जान पडना, नम ।
,, सिकुडा जान पडना, नम ।
,, काटने का सा दर्द, कप ।
रुधिर प्रवाह मे सुस्ती, काप ।

दिल Heart
दिल के पुराने रोग, स।
दुःखानुभव होना, काप।
फैल जाना, फप, कफ।
बढ जाना, कफ।
फडफडाना, नम, नप।
आकार वृद्धि, कफ।
बर्फ सा ठंडा जान पड़ना, नम।
ठहर ठहर कर चलना, काप, नस।
सिरे पर दर्द, नप।
सास लेने मे दर्द, कप।
निचली ओर बडा दवाव हो, नम।
उछलने का सा दर्द, कप।
धडकना, काप, और फप, काम, कास।
,, रुधिर फीका होने के कारण हो, कप, नम।
उदर विकार से हो, नप, नस।
सुई चुभने का दर्द, नम।
साथ मे फालिज हो, काप। (२X)
दिल से उछले, स।
दिल घबडावे, मप, कास।
थरथरी चले, नप।
बेचैनी हो, नस।
दुर्बलता, मूर्छा सा भाव, नम।
साथ मे गठिया का दर्द, नप, स।
रोग के साथ जलोदर भी हो, काम, नम, नस।
दिल के कार्य की निर्बलता से घुमेर सी आवे, काप।
दिल की धड़कन—धडकन देखो।
दिल की सोजिश Carditis, फप।
दिल जलना Heartburn, फप, नम, नस, स, मप, कप, नप।
तथा बदहजमी के अन्य लक्षण भोजन करने के २ घंटे पीछे हों, कप।
दिल के ऊपर की झिल्ली की सोजिश Pericarditis, फप, काम।
दुर्बलता Debility, नम, कप, काप।
ज्ञानतन्तु विकार, काप, नप, मप।
दुर्बलता, तन-मन की Imbecility, [नम, स।
दुष्ट फोड़ा Carbuncle
ज्वर और दर्द के लिये, फप, काम।
पहिले दर्जे मे सख्ती के लिये, कफ।
दूसरे दर्जे में, काप।
जल्दी पीप डालने के लिये, स।
जब गाढी पीप निकलती हो, स, कम।
दृष्टि Vision
चकाचौंध, स।
मन्द, कप, नम, स।
दूर की चीजे दिखाई दे, नम, स।
दृष्टि न जमना, नस, स।
आग सी देखना, कप, नस, स।
साफ साफ न देखना, नम, स।
पढते मे हरफ मिल जाना, नम, स।
अंधेरा सा छा जाना, नम, स।
नजदीक की चीज़ नजर आना, नस।
धब्बे से नजर आना, नम, स।
दूध Milk, दूध माँ का ख़राब हो, कप।
कम हो गया हो, कप, नम, कफ।
बहुत उतरता हो, नस।
नमकीन हो, नम।
पतला हो, नम, कप।
पतला, नीला हो, नम।

धड़कन, दिल की Palpitation, of the heart
रोगारम्भ मे, काप।
पश्चात्, फप, कास, काम।
रुधिर फीका होना, कप, नम।
आमाशय विकार से, नप, नस।
दुर्बलता से, कप।
रोगाधिक्यता में, स, फप, नम।
शरीर के अनेक स्थानो मे नसे फड़कती जान पडे, नप।
बहुत रुधिर निकल जाने के कारण, काम।
मानसिक उत्तेजना और सीढी पर चढने से, काप, नम, नप।
ज्ञानतन्तु तथा अकडाहट से, मप।
चिन्ता के कारण, कप, नम।
अनिद्रा मे, काप।

धनुषवायु Tetanus
मुख्य दवा, मप। (६X)
तथा, काप।

धातु-स्राव, स्वप्नदोष Emissions, नम, स, काप, नप, कप, फप।
शीत के साथ, नम।
विना स्वप्न, नप।

धूप सताना Sunstroke, नम, काप।

नक़रस—वातरक्त देखो।

नकसीर चलना Epistaxis
बच्चो मे, फप।
काला, जमनेवाला रुधिर गिरे, काम।
,, न ,, ,, ,, काप।
लाल, जमनेवाला ,, ,, फप।
,, न ,, ,, ,, नप।

नकुए Nostrils
खुजावे, स।
जख्मी हो, कप, कस।

नफ़रत Loathing, नम, स।

नब्ज़ Pulse
भरी हुई, सख्त, नम, स।
जान न पडे, स, कास।
ठहर ठहर कर चले, काम, नम, काप।
बेतरीके, नम, स, काप।
भरी हुई, शीघ्र गामी, जल्द, फप, कास।
भरी हुई, गोल, रस्सी नहीं, फप।
गति तेज जो गर्दन के पीछे जान पडे, तेज, काम, नम, स, फप। [कप।
सुस्त, काम, स।
धीरे धीरे, काप, कास।
पतली या नरम, काम, नम, स।
कापनेवाली, नम।
शरीर के जुदे जुदे अंगो मे जान पडे, नप।

नस, काले खून की Varices
फूलना, फप, कफ, नस, नम।

नहाना Washing and water
नहाने और पानी से डर लगना, स।

नाक का मवाद Nose
तेजाबी, स।
तेज, नम, स।
अडे की सफेदी के समान, कप।
रुधिर मिला, नम, स।
साफ, नम।
बहुत, कफ।
बिधता हो, स।

नाक का मवाद Nose

दुर्गन्धित, काप, नम, स ।
हरा, सख्त, स ।
हरा, कफ, कास, स ।
धडाधड बहे, सप ।
गुठलेदार, कफ ।
पीप समेत, नस, स, कम ।
कीचड़ सा, नस, स, कास ।
गाढा, नम, नस, कफ, कस, कास, काप, काम ।
गाढा, सफेदी लिये, काम ।
मैला, काम ।
बू करनेवाला, कफ, काप, स ।
एक ओर, कम ।
नमकीन, नम ।
रुधिर मिला, कस ।
लसदार, कास ।
सफेद, काम ।
पनीला, कप, नम, स, कास ।
पीला, कफ, नम, नस, कास, कस, [काप ।
पीला, बदबूदार, स ।
पीला, मलाई सा, नप ।
नाक की हड्डिया ग्रसित हो, कफ, स ।
जलन हो, नम, नस ।
छिलके निकलते हो, नम, स ।
हड्डिया सडती हों, स ।
सूखी रहती हो, नम, स, काम ।
एक ओर सुन्न पड गई हो, नम ।
नाक के पिछले छिद्रों से नजला गिरता हो, नम, कप ।
बहुत सा मवाद आता हो, कफ ।

नाक का मवाद Nose

भीतर की झिल्ली सुन्न पड गई हो, नम, स ।
हलक की ओर गिरके जमा हो, काम ।
नाक के पिछले छिद्रों और [illegible] के बीच उभार पैदा हो गये हों, कफ ।
नथुनों के किनारे लाल पड गये हों, नम ।
[illegible] काटनेवाली [illegible], सर्दी हो, कप ।
नाक बहती हो, नप, काम, कप, स ।
,, पुराना, नम, स ।
,, सवेरे जोर भी ज्यादा हो, नम, [स ।
,, खुश्क सर्दी, काम ।
,, पिछले नथुनों से मवाद बहे, [नप, नम ।
,, खुरखुराहट हो, कप ।
बुखार हो, कप ।
सर्दी से फुसिया उठ आई हों, नम ।
जुकाम पुराना, स ।
साफ पानी से बहे, नम, काप ।
खुश्क, कफ, काम, नम ।
बहुत बहे, कप, नस ।
सूंघने की शक्ति न रहे, नम, सप, स ।
दुर्गन्धित वायु आवे, कफ, काप, नप, नस ।
पीनस, स, कफ, कप, काप, काम ।
उपदंश के कारण हो तो, नस, काम ।
हड्डी के समान उभार, कफ ।
नाक खुजाया करे, नप ।
बढ हो जाय, कास, नस ।
मस्सा बढ गया हो, कप ।
ऊपर दाने उठे हों, नम ।

नाक का मवाद् Nose

सूंघने की शक्ति परिवर्तित हो, मप, कास, नम।

सर्दी से बहने लगे, नम।

सूजी हुई हो, कप।

सुर्ख हो, नम।

छींके आती हो, नम, स, कप, कास, काप।

शाम को, कपडे उतारते समय बहुत, नम।

सर्दी से नाक ठस हो जाय, कफ, कास, नस, कास।

इच्छा होने से भी छींक न आवे, रुक जाय, कफ, नम।

नाक की नोक लाल, स।

,, खुजावे, स, नप।

,, ठडी हो, स, कप।

झट जुकाम हो, फप, कप, नम।

नाक से वात करे, नम।

वाहर की ओर नकुओं मे खुजली, [नस।

नाक से खून बहना Nosebleed, कप, नस, स, कफ, काप, फप, कस।

फीके रुधिरवालो मे, फप, कप।

बच्चो में, फप।

जब नाक से गाढे, पीले छिलके छिनक दिये गये हो, काप।

तीसरे पहर, काम।

सुर्ख रग का खून हो, फप।

ऋतुकाल में, नस।

सामने और झुकने से, नम।

आदत पड जाय, काप, फप।

नाखून Nails

नाखून के रोगो की मुख्य दवा, स, चतुर्दिक घाव, स। [नम।

रोगी होना. कास।

पैर मे नाखून का बढ कर चमडे मे घुसना, काम, स।

नाड़ी-शूल—ज्ञानतन्तु सबन्धी दर्द देखो।

नाभी Navel

दुखना चतुर्दिक, कप।

काटने का सा दर्द, स।

खाली जान पडना, कप।

नाभी से दर्द चारों ओर, पेट और पीठ की ओर, मप।

नजदीक दर्द, काप।

नोचने का सा दर्द, नस, स।

दवाव नाभी से नीचे की ओर, नम।

गढा सा जाना, चारों ओर दुखना, दाहिनी ओर से चीरना, कप। [कप।

नोंचने का सा दर्द, नाभी से पीठ तक, मप।

दवावट का सा दर्द, नाभी से चूतडो तक, नम।

चारो ओर ऐसा दर्द हो, जिससे रोगी रो पडे, मप, कप।

नाभी के चतुर्दिक दर्द Umbilical region, कप, स।

नामर्दी Impotency, नम, काप, [नप।

नासूर Fistula

मलद्वार में, म, कप, कफ।

खाकी रग का पानी निकले, काम, स।

घाव हो और जलन करनेवाला मवाद वाहर आवे, नम, काप, कफ।

नासूर Fistula

पीला, गाढ़ा, पीपदार मवाद, नप, म।
छाती में तकलीफ हो, कप, स।
किनारे कटे हों, कफ।
क्षयी रोग का विष रोग का कारण हो, मप, कप।
बहुमूत्र के रोगियों में, नस।
पतला, पनीला, काटनेवाला, हरा मवाद, नस।
गाढ़ा, चिपकनेवाला मवाद, शाम को विशेषता हो, काम।
दर्द न हो, कप।
आसू की नाली —
मुख्य दवा, नम, स।
दूसरी दवा, काम, कफ, कास।

निगलने में दिक्कत Dysphagia, कप, कास, मप।

निद्रा Sleep

चीख कर जग जाना, काप, कस।
बच्चों का सोते में रोना, कप।
बराबर अकड़ना और जमुहाई लेना, कप, काप।
प्रातःकाल विशेष सोने की इच्छा, नम।
बहुत स्वप्न देखना, नस, कफ।
सवेरे उनींदा होना, नम, मप, कप, कफ।
खुमारी और पित्त के लक्षण, नस।
बहुत नींद, नम।
बैठे बैठे नींद आ जाना, नप, फप।
सवेरे जगने के बाद थकावट, नम, [कफ।
सोते में दांत पीसना, नप।

निद्रा Sleep

सोने की बड़ी इच्छा, नम।
सवेरे जागना कठिन, नप।
स्वप्न में गिरना, आग लगाना, भूत, और चोर देखना, नाप।
भारी चिन्ता के स्वप्न, नम, नप।
जग जाने पर नींद न आना, नम, न।
सोते में हाथ पैर फड़कना, म, नम, मप, नम।
सोते में चलना, पित्त के लक्षण नस, नम, काम, कफ।
सवेरे जगने की इच्छा न होना, काप।
पेट में कीड़े होने के कारण नींद न आना, नप, काम, नम, कप, फप, [नम।
सोते में चीखना, नप।
दिन में नींद आ जाना, रात को नींद न आना, कस।
सवेरे उनींदा होना, नम।
जरा सी आवाज से चौंक पड़ना, काम।
सोते में उछल पड़ना, नस, नम, [कप।
सवेरे बेवकूफ रहना, नम।
सोने पर शरीर का फड़कना, काप।
सवेरे थकावट जान पड़ना, नम, नस।
सुस्ती रहना, नम।
रात में जगते रहना, कस, काप, फप।
झट जग पड़े, नप।
सोते में चलना फिरना मालूम पड़ना, स, काप।

निद्रा नाश Insomnia, फप, स, काप। (२००)

निरासता Despair, नम, स।

नीली नसों की सोज़िश Phlebitis, फप, काम, नप, काप ।

न्यूमोनिया Pneumonia (फैफड़े की सोज़िश), कप, काम ।

दूसरा दर्जा, काम ।

आखिरी दर्जा, कस ।

जब श्वास कष्ट हो और कमजोरी बढ जाय, नम, काप ।

पकड़ने का सा दर्द—ऐंठ का दर्द देखो ।

पथरी पित्त Calculi

गुर्दे की, व मसाने की, मप, कप, कस, काम, स ।

पथरी, पित्त की Gall-stones,

पथरी रोकने को, नप, कप । [कप ।

दर्द के लिये, मप ।

पुराना रोग, इलाज न हुआ हो,

पलक Eyelids [कस, स ।

सवेरे चिपक जाना, नप, स, नम,

चारो ओर फुंसियां, स । [नस ।

जलन, नम, काप ।

चारों ओर रसौली होना, स, फप,

गिर पड़ना, काप, मप । [कफ ।

किनारे जलना, नस, कास, काप ।

दाने होना, नम, फप, काम ।

पीप के दाने होना, काम ।

पीले पीप के छिलके, काम ।

पीले छिलके हो, कास ।

आसपास सख्ती हो, स ।

गर्मी जान पडे, कप, नम ।

तशन्नुज हो, काप, मप ।

गुहेरी हो, स, फप, काप ।

फडकन हो, मप, कप ।

पसीना Perspiration

शिर पर, स ।

ठडा, स ।

बहुत हो, कप, काप ।

कमज़ोरी बढानेवाला, दुर्गन्धित, बहुत सा, काप ।

हाथों पर, रीढ की कमजोरी से, कप ।

खट्टा और तेज़ाबी, नप ।

खाना खाते समय, काप, नम, नस ।

कम हो गया हो, तो बढाने के लिये, [कास ।

पसीना Sweat

साधारण रीति से, कप, फप, नस, स ।

ठडा, स, नम, कास, कप, फप ।

चेहरे पर, कप ।

दिन में, नम ।

सवेरे, नम, नस, स, कप, फप ।

रात में, नम, नस, स, कप, कस ।

बहुत अधिक मात्रा में, कप, काप, नम, स, मप ।

सरलता से, थका देनेवाले, नम, स,

चिकने, नम । [काप ।

क्षयी रोग मे, कप, स ।

बू करनेवाले तेज, नप ।

सर्दी, काप ।

बुरी, स ।

खट्टी, नम, स, नप ।

पैर मे बदबूदार पसीना, स ।

चेहरे पर, नस ।

हाथों पर, नम ।

सिर्फ हाथ और चेहरे पर, स ।

हाथों और पैरो पर, स ।

सिर्फ सिर पर, स, कप ।

पसीना Sweat
कमर पर, स ।
गर्दन पर, स ।
सब शरीर पर, नम ।
कहीं कहीं, नम्म, कप ।
बहुत पसीना रात को, नम, कप, म ।
शिर दर्द और अन्य दर्द कम हो
रुक जाना, नम, स । [जाना, नम ।
खाते में, काप, नम ।
कपडा खोलने की इच्छा न होना,
नम ।

पहचान Comprehension
पहचानने की शक्ति कम, नम, स ।

पाखाना Stools
पित्त समेत, नस ।
काला, कास, नस ।
रुधिर मिला, काम, कस, काप,
फप, नम, नस, स ।
सडी हुई बू, स, कप, नम ।
फीका, पीला, मटीला, काम ।
सर्वदा इच्छा रहना, नप, काम ।
अधिक मात्रा में, फप, कप ।
मलाई सा, नप ।
सूखा, नम ।
मैला, नस, काप ।
रोकना कठिन हो, नप ।
खुश्क, नस ।
निकालने में ज़ोर करना पडे, मप ।
गाठदार होना, काम ।
दुर्गन्धित, बुरा, तबीअत बिगाडने-
वाला, नस, काप, कप, कास, स ।
ज़ोर से, दौडता हुआ, कप, नस ।

पाखाना Stools
बार बार जाना, नप ।
" " परन्तु दस्त न होना,
कप, काप, नप, नम ।
झागदार चमकता हुआ नम ।
हरा, नप, नम्म, मप ।
हरा, सडी बू, नप ।
गरम, छींट मारता हुआ, नप ।
गरम, व्रण करनेवाला, कप, काप, म,
सख्त, नम, नम्म, नप । [साम ।
" गाठदार, नम ।
पहिले सख्त, पीछे नर्म, सप ।
निकाल न सकना, कप, नम, नम्म ।
खुद निकल जाना, नम, नम्म ।
क्षीर के समान, नप ।
गाठदार, नस ।
बडा, नस ।
हलका रंग, काम ।
सवेरे पतला, नम, नम्म ।
आवाज़ करके, कप ।
आवाज के साथ बदबूदार वायु,
दर्द के साथ, फप । [काप, कप ।
पीछे दर्द, कप ।
एक बार निकल कर फिर अन्दर
ज्यादा, नम, म । [जाना, कप ।
पीप मिला, कस, कप ।
केवल रुधिर, काप ।
सडी बू, काप ।
पीप और खून, कस ।
कूथ न सके, नम ।
माड की तरह, काप, कास ।
बहुत कम, नप ।

पाखाना Stools

पहिले साधारण, पीछे पतला, कफ।

लेंडी की तरह, नम, नग, स।

चिकने, हरे, अनपचे, कप।

अल्प मात्रा में, कास, स।

ऊपर खून लगा हुआ, कम, नम।

अचानक, फप, नप, मप।

छोटी, सख्त सुद्दी, स।

निकलना कठिन, स।

बहुत कूथने से, कास, नप, फप।

दस्त निकलने के पीछे मलद्वार फटने का सा अनुभव, नम।

मल ठुसा हुआ सा, नम।

बिना पचा, पनीला, फप, कप, स।

सफेद, कास, नम, नप।

पीला, नस, कास।

खाते खाते दस्त, काप।

पागलपन Hypochondria

दर्द का वहम, नम, स, नस।

पागल कुत्ते के काटने से रोग Hydrophobia, मप, काप।

पार्श्व में (धड़ के) दर्द Side

बाईं ओर, फप, कास, नम, नस, स।

दाहिनी ओर, कप, नम, स।

पिंडलियों की कमजोरी Calves, नम।

पिटिका — फुड़िया देखो।

पिटिके, प्रमेह के — दुष्ट फोड़ा देखो।

पित्त का ज्वर Bilious fever, नस, नम, काप।

पित्ती उछलना Nettle rash, नम, कास।

पित्तोपद्रव Biliousness

साथ ही ज़ुबान भूरी होना, काम।

यदि बहुत ही पित्त हो तो, नस।

पीठ Back

दर्द करे, नम, स।

और कंधा दुखे—पीठ और कंधे पर बोझ जान पड़े, नम।

ऐसा जान पड़े, किसीने मारा है, चोट लगी है, काम न कर सके, नम।

कमर में दर्द हो, चोट सी जान पड़े, टड जान पड़े, नम, कप, स। [नस।

काटने और टपकने का सा अनुभव [हो, नम।

काटने का सा दर्द, कप।

मृत्यु रूप, भारी दर्द, सामने से पीठ की ओर जाय, नस।

पीठ और चूतड़ों में खिचावट सी जान पड़े, नम।

छिलने, टूटने, चोट लगने का सा मालूम पड़े, नम।

खुजली चले, नम।

फड़कन हो, कप।

दर्द गर्दन से पीठ तक हो और पागल सा बना दे, मप, स।

छेदने का सा दर्द, नस।

कमर में दर्द हो, कफ, कप, नम, नरा, स।

पीठ में दर्द हो, कफ़, कप, फप, काप, मप, नम, स।

कमर में फालिज सा दर्द हो, नम।

चीरने का सा दर्द हो, कप।

अत्यन्त दर्द हो, नम।

चूतड़ों के बीच में दर्द उठे, स।

पीठ Back

कमर ऐसी जान पडे कि मुर्दार हो गयी है या चोट लगी है, स।
कमर अकड जाय, स।
सीने का सा दर्द हो, नम।
कमर मे पीप पडने का सा दर्द हो, [नस।
धमक के साथ दर्द हो, स।
कमर मे थकावट का दर्द हो, कफ।
थकावट का अनुभव हो, नम।
रीढ छूने से दुखे, स।
दुर्बलता वा अशक्यता हो, नम।
कमर मे बहुत तेज दर्द हो, स, कप।
हरकत करने से दर्द को आराम हो, कफ।
,, ,, ,, बहुत हो, स।
तेज छेदने का सा दर्द हो, मप।
सोता सा जान पडे, कप।
ठडी ,, ,, नम।
चटखे, फप, कस, कप।
दर्द दौडे, मप।
ज्ञानतन्तु संबंधी पीडा, कास, मप।
झुकने मे दर्द हो, कफ।
दोनो कधो के बीच हो, कप।
हरकत से आराम आवे, काप।
सख्त जगह पर लेटने से आराम आवे, [नम।
गठिया का दर्द हो, कास।
चोट का ,, ,, नस।
घाव का सा ,, ,, नस।
ऐठन हो, नस।
पीठ अकड जाय, फप।
दर्द बदलता रहे, कास, मप।
पीठ और हाथ पैर कमजोर जान पडे, नप।

पीठ का दर्द Backache

,, शाम को बढे, काम्न।
,, गर्म कमरे मे बढे, काम्न।
सवेरे कमर मे बहुत हो, कप।
खुली हवा मे आराम रहे, कास।
दर्द से रीढ मे जलन हो, कफ।

पीठ लगने से घाव होना Bedsores, काप (लगावे और खिलावे)।

पीप Pus

एल्ब्यूमन मिली, कप।
रुधिर मिली दुर्गन्धित, सर्दी, काप।
फाइब्रिन मिली, काम।
हरी, नम्न।
हरी सी पेछादार, काम्न।
सुनहरी पीली, मलाई सी, नप।
लसदार, कास।
गाढी, पीली, गुठलेदार, कस।

पीप पड़ना Suppuration

मुख्य दवा, नप।
पीप पड़ने के लिये, स। (छोटी ताकत)
पीप बू करे, काप।
हड्डी मे, कफ।
गिल्टियो मे, स।
रोकने के लिये, कस। (बड़ी ताकत)

पीलिया रोग Jaundice, नस, काम, नम, कास।

उदर विकार से, कास, नम।
सर्दी से, काम।
मुह कडुआ और कब्ज हो, काम।
निद्रा हो, नम।
तबीअत बिगडने के पीछे, नस।
दस्त लगे, नप।

पुतलियां (आंख की) Pupils
सिकुड़ी हो, म।

Abdomen पेट
भरा हो, काम, मप।
जलन हो, कप, नस।
छूने से ठंडा जान पड़े, काम।
भीतर ठंडा जान पड़े, कास।
पेट सिकुड़ा हुआ दुखे, नम।
पेट के नीचे हिस्से मे शूल सा दर्द हो, म।
नाभी के आसपास में ,, ,, मप।
हवा भर जाने से शूल उठे, नस।
भीतर गुड़न हो, मप, नम, कास।
पेट गड़गड़ावे, दर्द के मारे पेट पकडना पड़े, नस, नम।
तेजाब अधिक हो, नप।
पेट भरा जान पड़े, कास।
सख्त और फूला हुआ हो, मप, स।
बच्चों का पेट बढ जाय, स, कप।
दिल पर जलन हो, नप।
पेट के दर्द में सेकने से आराम हो, मप, म।
मुड जाने या हाथ से दबाने या मालिश से दर्द को आराम आवे, मप।
पेट मे दबाव जान पड़े, कप।
दर्द अदलता बदलता रहे, कास, [नस।
दर्द उछलता हुआ हो, मप।
सूजन हो, काप, काम, मप।
छूने से दर्द करे, काम।
सख्त हो, और हवा भरी हो, कास।
वायु हो, काप, नस।

पेट पर की झिल्ली की सोजिश [Peritonitis
पहिला दर्जा, कप।
दूसरा दर्जा, काम, कास।

पेट फूलना Flatulence, कप, नम, नस, स, मप, काम।
हृदय के पास तकलीफ, काप।
बाईं ओर दर्द, काप।

पेरोटिड गिल्टी Parotid glands (कान के लौ के नीचे)
प्रदाह, स।

पेम्फीगस Pemphigus (शरीर पर छाले पडना), काम, नम, स।

पैर Feet
जलन करते हो, काप।
तलुए जलते हो, कस, नस, स, काप।
दिन में ठंडे, रात को गर्म, नप।
सो जाते हो, नम।
दुर्गन्धित पसीना हो, स।
सोते समय फडकते हो, नस।
तलुए मे खुजली, कस, काप।
दुबले और सूजे हो, नस, नम।
सूजन हो, काम।
छूने से दुखते हो, मप।
तशन्नुज होता हो, स।
दुखते और थके हो, स।

पैर की उंगलियां Toes
दर्द करे, नम, स।
खुजली उठे, नस।
बीच मे दरार पडे, नम।

पैरो की नस Hamstrings
दुखे, नप।
,, सिकुड गयी हो, नम।

प्यास Thirst, नम, नस, स।
न लगना, कास।
जलनेवाली, कास, नम, कस।
लगता रहे, पानी न पिया जाय, नस।
पानी से डर लगे, नस।
मुंह सूखे, जुबान खुश्क, कप।
सन्ध्या में, नस।
ठंडे पानी को, फप, काप, नस।
प्यास न लगना, काप, कास।
प्रवाहिका Dysentery
मुख्य दवा, फप, काम।
खूनी, दुर्गन्धित मल, काप।
दबाने से दर्द में आराम, मप।
ठंड से दर्द में फायदा, फप।
भूरा सफेद मल, काम, कस।
तराश्रुज से मूत न निकले, सप।
पेट फूल जाय, मप, काप।
ज्वर हो, कप।
पीपदार दस्त, कस।
दस्त हो, काम।
केवल रुधिर गिरे, काप।
आव के दस्त, कास।
पंछादार दस्त, कस।
बड़ा दर्द हो, मप।
प्रमेह Gonorrhoea, काम, कस।
पुराना, नम, नस, काप, कप, स।
पीला मवाद, स।
पतला, जलनेवाला, चिपकनेवाला [मवाद, नम।
सूजन हो, काम।
रुक गया हो, नस।
सोजिश हो, फप।
मूर्च्छा हो, कप।
प्रमेह Gonorrhoea
रुधिर निकलता हो, काप, फप।
पीला या हरा मवाद, कास, नस।
मलाई सा, सुनहला, पीला, नप।
हरा सा, नस, कास।
खाकी रंग का सफेद, काम।
शीशे सा चमकदार मवाद, नम।
पीपदार और पछादार, कम, नप, स।
जलानेवाला, नम।
लसदार मवाद, कास, नम।
बद मौजूद हो, काम, कफ।
प्रसव – गर्भ और प्रसव देखो।
प्रसव का सा दर्द Labour-like pains, नम, स।
प्रसूत ज्वर Puerperal Fever, काप, मप।
पेट के फुलाव के साथ, मप, नस।
साथ में मद-स्थिति हो, काप।
साथ में ऐंठन और बहुत दर्द, मप।
न जमनेवाले रुधिर का बहना, काप।
प्लीह Spleen
प्लीह की तकलीफें, काप।
मुकाम पर बड़ा दर्द, काम, स, नम, [कप।
सुई सी चुभना, नम, कप।
फालिज Paralysis
मुख्य दवा, काप।
अन्य दवा, मप, कप।
दुर्बलता सहित, कप।
पैरों का पसीना रुक जाने से, स।
छूतदार रोगों के पीछे, काप।
शरीर के सिकुड़ने से अथवा सूखने [से, काप।
बच्चों में, काप।

फीकापन Anaemia
रुधिर का पतला पड़ना, नम, कप, फप, कफ, काप, काम ।
जब मानसिक उदासी से हो, काप ।
बच्चों में, स ।
साथ में तशन्नुज हो, कप ।
,, आमाशय रोग हो, नप, कास,
,, चर्म रोग हो, काम । [नम ।
पुराना रोग हो, चिकित्सा न हुई हो, स ।
रुधिर पतला और हृदय विकार हो, काप ।
रीढ के कारण रोग हो, काप, नप, नम ।
फीकापन (स्त्रियों में) Chlorosis, नम, कप, फप ।
फुँसी Eruptions (चर्म रोग देखो), [नस, स ।
फुड़िया Boils
फुडिया होना, स, मप, कस, फप,
पीप को रोकना, कस । [काम ।
फुडिया न होने पावे, स ।
गाढी, पीली पीप निकलना, स ।
फूहड़पन Clumsiness, नम, स ।
फेफड़े Lungs
फेफडे में फोडा, म ।
रुधिर का जमाव, फप ।
फेफड़े के गिलाफ़ की सोजिश Pleuritis, फप, काम ।
दर्द, मप ।
फोड़ा Abscess
पीप पडना रोकने के लिये (अच्छी ताकत की) कस, स ।

फोड़ा Abscess
पीप पडने में सहायता देने के लिये, (नीची ताकत की) स ।
नासूर हो, पुराना हो, नस ।
हरारत और दर्द के लिये, फप ।
सोज़िश हो, फप, नप ।
मलद्वार के पास हो, कस ।
गिल्टी सूजी हो, सख्त हो, कफ ।
सफेद, चमकदार गिल्टी हो, (फूटने को तैयार हो) काम ।
मलाई सा पीला मवाद हो, नप ।
गाढा, गुठलेदार पीला सा सफेद मवाद निकले, कस ।
दुर्गन्धित लोहू मिला मवाद निकले, हरा, पानी सा, नस । [काप ।
मुर्दारी हो, काप ।
पुराना हो, कप, स ।
पीप पडने पीछे खून जल्दी निकल आता हो, रा ।
फोड़ा फुंसिया (शरीर के) Tetter
दाने निकलने के समान, नम, स ।
फोते की नस Spermatic cord
दर्द करे, नम ।
फोते में पानी Hydrocele, कफ, स, कप, नम, नप, नस ।
फोते की खुजली Scrotum
ढीलापन, दुख, जलन, कप, म, नप, नम, नस ।
बगल में दर्द Pain in Axilla
बगल में दर्द हो, नम, स ।
बच्चों का सा निर्बुद्ध होना Cretinismus, कप, काप ।

वढ़ना, रोग का Aggravations
अकेला रहने से, कास, काप।
पानी मे काम करने से और धोने से, [कस, नस।
दिन से, नम।
शाम को, कप, स, कास, नप।
दुपहर से पहिले, नम, स।
रात को, कप, स।
सवेरे, कप, फप, नस, नस, काप।
तीसरे प्रहर, नम।
निश्चित समय पर, नम, स, नस।
गहरी सास लेने से, कप, नम, स।
ऋतु परिवर्तन से, कप, स।
तर वर्षा ऋतु और जल से, नस, कप, कफ।
सब तरह की सर्दी से, कप, नम, स, मप।
ठडी हवा से, मप, कास, काप, स।
पैर ठंडे रहने से, स।
लगातार काम करते रहने से, काप।
पेट के बिगाड से, नम, स।
हवा लगने से, मप।
गाडी मे सफर करने से, नम, स।
खाते समय, नम, स।
खाने से पीछे, कप, नस, नस, स।
वीर्यपात से पीछे, स, नप, नम, कप, [काप।
फुॅसिया बैठ जाने के पीछे, स।
हरकत करने से, काप।
समुद्र मे नहाने से, काम।
धीरे छूने से विशेषता, अधिक दबाने से आराम, मप।
शात (मानसिक) शोक से बेचैनी, नम।

वढ़ना, रोग का Aggravations
शोक और निराशी से बेचैनी, कप।
हिलने जुलने से, काप।
खाने और पीने से, नशा, करने से सर्वदा, नम, स।
खाने और पीने से.—
रोटी और मक्खन, नम।
गोभी से, नम, स।
ठडा भोजन करने से, कफ, नम, स, कप।
ठडी चीजे पीने से, कप, मप।
खट्टी चीजे पीने से, मप।
मसालेदार और घी तेल की चीजो से, [काम, नप।
मछली से, नस।
फल खाने से, कप
गर्म भोजन से, नस, नम, स, फप।
मास से, स, फप।
भोजन की गंधि से वा भोजन पकाने [से, नम।
पकवान से, काम।
नमक से, नस।
खट्टी चीजो से, फप, नम।
मिठाई से, काप।
तमाखू से, बम, स।
ठडे पानी से, कप, स।
शराव से, नम, स।
भूख से, स।
गर्म कमरे से, कास।
गिरने से, छिलने से, चोट से, घूॅसे से, नम, स।
नशा होने के पीछे, नम।
हंसने से, नम, काप।
बोझा उठाने से, नम, स।

बढ़ना, रोग का Aggravations

प्रकाश से, नम, स ।

किसी चीज़ की तरफ देर तक देखने से, नम ।

सफेद चीजों की तरफ देखने से, नम ।

ऊपर देखने से, स ।

द्रव निकल जाने से, नम, स, काप, कप, नप ।

लेटने से, कप, नम, नल, स ।

खड़े रहने से, नम, स ।

पीठ पर लेटने से, कप, नम, स ।

बाजू से लेटने से, नम, स ।

बाई करवट से, नम, नम, स ।

दाहिनी करवट से, सप ।

दर्दवाली तरफ़ लेटने से, कफ, स, [नम ।

पारे के विष से, नम, स ।

चांद, अमावस या पूर्णिमा का, स ।

हरकत से, स, कप, काम, फप ।

चलने के शुरू से, स ।

बैठे से उठने से, काप, नम, स ।

दर्द स्थान को हिलाने से, नम ।

गाने से, नम ।

नींद लानेवाली औषधि खाने से, नम ।

नाक के जुकाम रुक जाने से, नम, [स ।

शोर-गुल से, स, काप ।

खुली हवा से, कप, नम, स ।

बाहिरी दबाव से, कप, नम, नल, [स ।

टोपी के बोझ से, स ।

छेद से, स ।

दुष्ट फुंसी, कफ, स ।

बहुत कुनीन खाने से, नम ।

बढ़ना, रोग का Aggravations

पढ़ने से, नम, स ।

बरसात से, नस ।

आराम करने से, कप, नम, स, कफ, [काप ।

घोड़े पर चढ़ने से, स ।

बिस्तर पर से उठने से, नम, स ।

बैठे हुए से उठने में, कप, नम, स, [काप ।

दौड़ने से, नम, स ।

समुद्र की तट से वा नमकीन वायु से, नस, नस ।

बैठने से, नम, स, कफ, काप ।

सोने से पहिले वा सोते में, नम, स ।

तमाखू पीने से, नम ।

छींकने से, नम, स ।

बर्फीली हवा से, स ।

अन्य मनुष्यों के साथ से, नम ।

खड़े होने अथवा देर तक झुके रहने से, नम, स ।

झुकने से, कप, नम, स ।

हाथ पैर फैलाने से, नम ।

बादल गरजने के पहिले या उसी समय, नस, स, नप ।

गर्मियों में, नम ।

निगलने में, काम, नम, स ।

पनीली चीज़ें निगलने से, नस ।

पसीने के पीछे, नम, स ।

पैरों से पसीना निकलना रुक जाने से, [स ।

बात करने से, कप, नम, स ।

अपने रोग का ध्यान करने से, कप ।

छूने से, कप, नम, स, सप ।

बिस्तर में करवट बदलने से या फिरने से, नम, स ।

बढ़ना, रोग का Aggravations
गोधूली के समय, नम ।
कपडे खोलने पीछे, नम, म, मप ।
सिर चकराने से, नम, म ।
कै करने से, नम, स ।
जगने से, कप, नम, न ।
टहलने से, नम, नम, स ।
टहलने के आरम्भ में, नम, म ।
जल्दी चलने से, नम, स ।
खुली हवा में टहलने से, नम, स ।
गरम हवा से, काम, नम ।
गर्म कमरे में, कप, नम, स ।
भीगी चीज लगाने से, स ।
भीगने से, कप, कम ।
पैर भीगने से, नम, स ।
वर्षा मौसिम में, कप, नम, न, कफ ।
आंधी से, कप, स ।
सर्दी से, नम, स ।
लिखने से, नम, स ।
जमुहाने से, नम, स ।

बढ़वारी Indurated enlargements
अंगों में बढवारी और सख्ती, कफ ।

बढ़ाव, अपूर्ण Development defective, कप ।

बद निकलना Bubo
सूजन के लिये, काम, फप ।
मवाद के लिये, कस, स ।

बदहज़मी Dyspepsia, नम ।
ज्ञानतन्तु सबंधी, काप ।
चेहरा सुर्ख हो, फप ।
पेट फूला रहना हो, मप, कप ।

बदहज़मी Dyspepsia
ठंडी चीजें पीने को मन करता हो, फप काम ।
दर्द हो, थूक आवे, पानी आवे, नम ।
खट्टी डकार, नप, न ।
प्राचीन रोग, न ।

वरीद (काले खून की नसें) Veins
सूजना, मुख्य दवा, फप, काम ।
अन्य औषधियां, नप, काप ।
बढ़ी हुई, सूजी हुई, जख्मवाली, फूल जाना, कफ, नस । [कफ ।
ऐसा जान पड़े, मानों रग फट जायगी, कफ ।

बलगम Expectoration
न हो, फप, सप ।
तेजाबी हो, नम, स ।
अंडे की सफेदी जैसा हो, नम, म, [कप ।
कड़ुआ हो, नम ।
लोहू मिला हो, फप, नम, म कम ।
साफ हो नम ।
बलगम बहुत हो, स, कास ।
मुश्किल से खांसी में निकले, नम, मलाई नुमा, नप । [कप, काम ।
दुर्गन्धित, काप ।
झागदार, नम, काप, म ।
दानेदार, स ।
भूरा सा सफेद, काम ।
हरा सा, नस कास, स ।
पतला, नम, कास, स ।
गुठलेदार, कफ ।
दूध सा, काम ।
आंव, कफ, कप ।

बलगम Expectoration

जी मितलानेवाला, नम ।
बू फैलानेवाला, स ।
अधिक मात्रा में, कास, स ।
पीपदार, नस, कस, स, नम, नप, [कप ।
आवाज़ करे, नम, स ।
रस्सी का सा, नस ।
कम रुधिर की, फ़प ।
नमकीन, काप, नम, नस ।
पच्छादार, कस ।
क्लेद, नम. काप ।
चिपकनेवाला, कास नम नस, स ।
खट्टा, नम ।
बलगम पीछे लौट जाय, कास ।
लसीला, कास ।
चिमटनेवाला, स ।
गाढा, नस, स, काम, काप ।
गाढी, पीली, हरी पीप, स ।
छोटे, पीले गुठले, कफ़, स ।
गाढा, सफेद, काम ।
पनीला, नम, कास, स ।
सफेद हो, स, कप, काम ।
ठंडी चीज़ पीना बुरा, गरम अच्छा, स ।
अधिकता हो, सवेरे शीत से, वर्षा से, नस ।
पीला, हरा, चिपकनेवाला, कास ।
पीला सा, कफ, कास, स, कप, काप, नम ।

बवासीर Hæmorrhoids

मुख्य दवा, कफ ।
चपक हो, नम ।
खून चले, काम, फप, कफ ।

बवासीर Hæmorrhoids

खून न चले कास, कफ ।
,, पीठ में दर्द, कफ ।
पुराना रोग, कप ।
बाहर मसे हों, कास, मप ।
सोजिश और दर्द हो, फप ।
केवल दर्द हो, मप ।
दुखते हों, काप ।
रुधिर फीकेवाले रोगियों में, कप ।
मसे भीतर हों, कास, कफ ।
रुधिर रिसता हो, कप ।
मसे निकले हों, कप, कफ, फप, स ।
डंक का सा दर्द, नम ।
जलन हो, नम ।
बहुत दुख हो, स, काप ।
सूजन और जलन, काप ।
अंडे की सफेदी सा मवाद, कप ।
कब्ज हो, नम, कफ ।
काटने का सा दर्द, मप ।
काला, गाढा खून, काम ।
खूब लाल खून, फप, कफ ।
दस्त सख़्त, खुश्क, बिखरनेवाला, [नम ।
जमा हुआ खून, काम ।
खुजली हो, कप, कफ, फप, काप, स ।
शिर की ओर रुधिर का रुख हो, [फप, कफ ।
दर्द और दुख, कफ ।
गाढा, पीला मवाद, स ।
काटने और कोंधनेवाला दर्द, मप ।

बहना, रसना Exudations

अंडे के भीतर की सफेदी के समान, कप ।
घाव करने और लगनेवाला, नप.
खून और पीप, कस । [नम ।

वहना, रसना Exudations
मलाई सा पीला, नप।
जमनेवाला, काम।
बदबूदार, काप।
सख्त, कफ।
शहद के रंग का, नप।
जलन करनेवाला, काप।
दुर्गन्धित, स, काप।
श्राव, विधनेवाला, काप।
पीपदार, कास, कस।
पछादार, कास।
,, रुधिर सहित, काप।
रुधिर के जलांश के समान, कास, नम, कप।
रुधिर जल सदृश, अगियानेवाला, दुर्गन्धित, काप।
जल सदृश, कास, नम, नस।
पीला, नस, नप, कास।
गाढी, पीली पीप, स।
पतला, पीला, पनीला, कास।
दुर्गन्धित, चमकीला, विधनेवाला, कफ़, नम, स।
रुधिर युक्त, पीपदार, कस।
मलाई सा भूरा सा सफेद, साथ खून लिपटा हुआ, कस।
जमनेवाला, सख्त, कुछ गाढा होना, साफ, पनीला, खुजली और [काम। काटनेवाला, नम।
साफ, पनीला, परन्तु खुजली और कटन न हो, कास।
रुधिर मय, रंगदार, लंबे छिछडे, जंग सा, काम।

वहना, रसना Exudations
जलानेवाला, दूधिया सफेद या सफेद भूरा, कप।
पीला सा, हरा सा, पनीला, काटनेवाला, नस।
श्राव, नम।
पीपदार, नप, स।
छीलनेवाला, पनीला, नम, नस।
बुरी बू करनेवाला, काप।
चुपड़ा हुआ खून या रुधिर के जल सा, काप।
सुनहला पीला, चिपकना, नप।
मुर्दे की बदबूदार, स. कफ, काप।
तेज़ाबी बदबूदार, स, नप।
तेज खट्टा, नप।
खट्टा, कास।
गंध रहित, स।

बहरापन Deafness
मुख्य दवा, काम, (कान देखो)।

बाल Hair
शिर से गिरे, नम, स।
डाढी से गिरे, नस, स।
गुच्छे गुच्छे गिरे, कप।
माथे के बाल गिरे, नम, स।
कंघी करने में दर्द हो, नस, फप।

बालों का झड़ना Alopecia, काप।
चोट से, काम, नम, कास।

बाहें Arms
दर्द हो, नम, स, कप।
चोट, गठिया, दबाने से दर्द हो, बांह, कंधा, और कंधे के जोड़ में चोट हो, कप।

बांह Arms

ऐसा जान पड़े कि हाथों से सीसा भर दिया गया है, स ।

बांह और हाथों में खुजली चले, सुन्न से जान पड़े, नम ।

और जांघों की भी यह दशा हो, बांह और जांघों का गोश्त ढीला ढीला जान पड़े, नम ।

जलन, खुजली, दुखन और कार्य-शक्ति हीनता, बांहों के नीचे हो, ठंडी जान पड़े, काम । [कप ।

बांह, हाथ, अंगुली और अंगूठे से ऐंठन हो, नम ।

बाहों में ऐंठन का दर्द और बोझ सा जान पड़े, नम, स ।

थकी हुई जान पड़े, नप ।

पूरी बांह में उछलता हुआ दर्द हो, कप ।

सुई चुभाने और टीस मारने का दर्द, स ।

बांहें गिरी सी पड़ें और कमजोर हो, नम, स ।

हाथ और बांहें कांपें, कप ।

बिस्तर में मूतना Bed-wetting, नस, नप, काप ।

बीमारी सी मालूम पड़ना Sick sensation, फप, नस, स ।

बुद्धि काम न करना Stupefaction, नम, स ।

बेकार जान पड़ना Emptiness, कप, नम ।

बेचैनी Restlessness, नम, स ।

बेफ़िक्री—लापरवाही देखो ।

बेसुधी Coma, नम, काप ।

बेहोशी Unconsciousness, नम, स ।

बैठने की इच्छा रहना Sit, नम, स ।

बोरबोरिज्मी Borborygmi, नम, स, काप ।

भारीपन Heaviness

भारीपन जान पड़ना, नम, स ।

भिटनी Nipples

भिटनी का दुखना, स, कप ।

भूख Appetite

भूख न लगती हो, नम, स, नप, कप, काम, नस, कास, कप ।

भूख न मिटती हो, काप ।

बहुत लगती हो, काप, कप ।

ख़राब चीज़ों पर मन हो, कप ।

गरम चीज़ें पीने से तबीअत बबड़ाती हो, कास ।

भूख Hunger, कप, नम, स ।

चित्त न आना, नम, स ।

बेतहाशा, नम, स ।

भ्यासा Dandruff, कास, नम, काम ।

मदात्यय Alcoholism, मप ।

शराब के विष से बकता झकता हो, उलटी होनी हो, नप । [काप, नम ।

मधुमेह Diabetes

मुख्य दवा, नस ।

अन्य दवा, काम, कप, कस ।

बहुमूत्र, नस ।

बहुत शकर, कप, फप, काम, नप, ज्वर के साथ, फप । [नस, काप ।

मन का भाव Moods
कभी कैसा, कभी कैसा, नम।

मरोड़ Twistings, नम, स।

मलद्वार Anus
जब सिकुडा जान पडे अथवा कोई भारी गाठ सी मालूम हो, स।
दरार पड़ गयी हो, कफ, कप, म, नम।
दर्द मलद्वार की ओर जाय, कप।
छेदने का सा दर्द मलद्वार से मलाशय या अंडस्थान तक जाय, म।
जलन हो, कप, नस, नम।
खुश्की हो, नम।
फुसिया हो, नम।
खुजली हो, कफ, कप, काम, नम, नप, नम।
बरछी मारने का सा दर्द हो, नस।
दर्द करनेवाले फोडे हो, कस।
भीतर दर्द हो, काम।
लपक चलती हो, कप।
काच निकलती हो, कस, काप, नम, नस।
कच्ची पड गई हो, घाव सा जान पडता हो, नप।
उछलता दर्द हो, कप, स।
टीस चलती हो, नम, नस।
फूला हो, नस, नप, नम।
सीने का सा हो, कप।
स्थान फटा जाता हो, नम।
तनावट हो, स।
मसे सी फुसिया निकली हो, नस।

मलेरिया (तप जूड़ी) Malaria
(ज्वर देखो)

मलेरिया Malaria
मुख्य दवा, नम, नम।
पुराना रोग, दवा न की गई हो, काप, कम।

मवाद विशेष आना Mucous secretion increased [नम, म।

मसूड़े Gums
फीके हो, कप।
छाले हो, नम, म।
किनारे लाल हो, काप।
खून निकलने लगता हो, काप, नस, कम।
फोडा हो, काम, म, कम, नम, कफ।
जलन हो, नस।
सोजिश हो, कप।
दर्द करते हो, कप, काम।
दुखते हो, नम, स, काम, काप।
छूने, सर्दी या पानी से पीडा हो, [मप।
मुँह में व्रण हो, मसूडो से खून निकलता हो, काम।
नरम हो गये हो, सिकुड गये हो, व्रण पड गये हो, नम, म। [काप।
सफेद हो, कास।
फोडा हो, कफ, स, कस।

मसा Warts, काम, स, नम, नम।
हथेलियो मे, नम, काम, नस।
मुंह पर, कप।

मस्सा, बड़ा Polypus, नम, म, कप।

मस्से Condylomata, नस, नम, [काम।
उपदंश के, नस।

माथे का दर्द Tic-douloureaux
भौह से ऊपर, फप, मप, कास, काप।

मांसपेशी Muscles

मास की अकडाहट, खिंचना, फडकना, दर्द, नम ।

गर्दन के मांस मे खिचावट, कप ।

मानसिक दशा और रोग Mental States and Affections

नाउम्मीदी के बाद, कप ।

शोक के पीछे, कप, काप ।

परेशानी के बाद, कप ।

डर के बाद, काप ।

उत्साह रहित होना, नप ।

क्रोधी और चिड़चिडा होना, नम, फप, काप, कप ।

चिन्ताग्रस्त रहना, कप, काप, नप ।

धन संबन्धी चिन्ता, कफ, काप ।

भविष्य की चिन्ता, कप ।

शकित चिन्ता, नप, काप, नम ।

ध्यान देना कठिन हो, स ।

फूहड़पन, जल्दबाजी, घबडाहट मे हाथ से चीज गिर जाना, नम ।

काम मे पिछड जाना, काप ।

बडबडाते हुए, कपडे चुनना, नम ।

मन मे तरग उठना और शरमाना, काप ।

कार्य की विशेषता से दिमाग़ का थक जाना, काप, स, नम ।

चीज़े एक जगह से दूसरी जगह ले जाना, मप ।

छोटी सी बात को बडी बनाना, काप ।

समझाने से रोग बढना, नम ।

बच्चो के स्वभाव मे चिडचिडापन होना, काप, नम ।

मानसिक दशा और रोग Mental States and Affections

मुस्तकिल स्वभाव न होना, कस, [काप ।

रोज रो पडना, काप ।

बुरे विचार मे रहना, काप ।

मन गिरा रहना, नम, नस ।

बकना साधारण, फप, काप, नम, नस ।

शराब के कारण, फप, काप, नम ।

धीरे धीरे बडबडाना, काप ।

कभी कुछ, कभी कुछ, नम ।

बहुत बाते करना, जागते रहना, नम, फप ।

झाग भरी ज़ुबान निकालना, नम ।

बुड़बुडाना और ऊटपटाग बकना, नम ।

ज्वरवाले रोग की मौजूदगी में, काप, फप, नम ।

टाइफाइड या टाइफस बुख़ार मे धीरे धीरे बकना, नम ।

मन गिरा हुआ रहना, कफ, कस, काप, नम, कप ।

निरासता, रोग से अच्छा न होने की, व्यापार की चिन्ता, काप, कफ । [नस ।

उदास स्वभाव, नम, नस, स ।

अकेले रहने की इच्छा रहना, नम, [कप ।

हिम्मत हारना, नस ।

बात करने और मनुष्यो मे बैठने से नफ़रत, काप ।

आवाज़ से घबडाना, काप, स ।

सुस्ती रहना, काप, मप, नप ।

अधः पतन का भय, कास ।

मानसिक दशा और रोग Mental States and Affections

उत्साह हीनता, काप ।
डर लगा रहना कि क्या होनहार है, काप, नम ।
,, उसे मागना पडेगा, कफ ।
,, उसकी अकल विगड जायगी, नम, कास ।
,, चोरी हो जायगी, काप ।
,, दिवाला निकल जायगा, [कफ ।
भयभीत रहना, काप ।
भूल जाना, कप, मप, नम ।
खुशी खुशी रहना, नम ।
झट डर जाना, काप, नस ।
उदास और चिन्तित चित्त, काप, नम ।
खयाली चीजो की ओर दौडना, काप ।
शोक का प्रभाव, कप ।
सब्र न हो, काप ।
दृष्टि भ्रम, काप, नप ।
घृणा और बदले की इच्छा, नम ।
पुरानी गढी बातो का देखना, काप ।
रात को आख खुलने पर किसीके आने की आहट जान पडना, नप ।
रात्रि को सोते समय आग लगने का स्वप्न, कप ।
घर से बाहर जाने को मन न करना, काप ।
बच्चो की बदमिजाजी, कप, काप ।
इन्द्रिय विभ्रम, काप, सप ।
मति विभ्रम, मप, काप ।
पचेन्द्रिय विभ्रम, सप ।

मानसिक दशा और रोग Mental States and Affections

घर की वस्तु आदमी का रूप जान पडे, नप ।
यह भ्रम होता है, मानो उनकी दुर्दशा पर सब तरस खाते है, नम ।
रोगी अपने को एक ही समय मे दो जगह समझता है, म ।
याददाश्त का बिगडना, कप ।
नाचने और गाने को मन करना, नम ।
सब बातो से उदासी, फप, कप ।
पागलपन, फप, काप, म ।
अनिच्छा से ठंडी सासे भरना, काप, कप ।
चिडचिडापन, काप, नम, नप, म ।
अच्छा न लगना, काप ।
शोकित रहना, मप ।
हसना, काप, नम ।
जरा सा काम भारी समझना, काप ।
सब कामो का बुरा नतीजा सोचना, काप, कफ ।
याद न रहना, काप, कप, कस, नम, नप ।
,, यदि रोग अचानक हो गया हो तो, कम ।
स्मरणशक्ति कमज़ोर, कप, काप, [मप ।
उन्मत्तता, फप, काप ।
बच्चा जनमने का उन्माद, काप ।
उदासी, काप, नस, नम, स ।
दुश्चिंतित रहना, स ।
अकल का काम करना कठिन हो, कप ।

मानसिक दशा और रोग Mental States and Affections

चिन्ता और उदासी का भाव, काप ।
उन्माद भाव, फप ।
मन बहुत थका हुआ, काप, स ।
मन एक जगह से दूसरी जगह दौड़े, कप ।
गाने बाजे से रोग बढ़े, नस ।
बच्चो का सोते सोते भयभीत होना, काप ।
आवाज से घबड़ाहट बढना, काप, स, काम ।
लिखते मे शब्द या अक्षर भूल जाना, [काप ।
चित्त वेग वृद्धि, नम ।
कर्कश भाव, काप, कास ।
बच्चों का चिड़चिड़ापन, कप ।
मनमानी बकना, काप, नम ।
रात को सोते मे चिन्ता बढना, काप ।
कोपलेन्द्रिय होना, काप ।
विशेष शरमाना, काप ।
नीद न आना, नस, काप ।
चुपचाप बैठा रहना, नप ।
देर मे समझना, कप ।
सिसकना, मप ।
सोते हुए चलना फिरना, काम करना, काप ।
कठिन रोगो मे नीद आना, बेहोश रहना, नम ।
एकान्त रहने की इच्छा, कप, नम ।
चौक पडना, काप, कास ।
,, ज़रा सा शब्द सुनने से, काप, [स ।
बुद्धि हीनता, कप ।

मानसिक दशा और रोग Mental States and Affections

बेसुधी, काप ।
संदेह बढना, काप ।
अपने आप बाते करते रहना, मप ।
सोते मे बाते करते रहना, काप ।
बाते विशेष करना, फप, नस ।
विचार करने मे कठिनता, स, नस, नप ।
विचार एकत्र न कर सकना, कप, फप ।
बुजदिली, काप, नस ।
जीवन से तग, स ।
तिल सा काम पहाड जंचता है, फप ।
,, दिक होना, नप ।
,, से कापना, स ।
प्राचीन काल के दुःख और आपदाओ का स्मरण करना और सोच करना, नम ।
बोलने लिखने मे अशुद्धिया करना, [काप ।
व्यग्रता, नम ।
बच्चा गोद के लिये मचलता है, काप ।
रोने की आदत होना, नस ।
घर से बाहर को मन, बाहर से घर को मन, कप ।
रोग का ध्यान करने से विशेषता होती है, कप ।
अशुद्ध शब्द लिखना, व एक को दो बार लिख जाना, कप ।

मार Blow

चोट का दर्द, नम, स ।

मासिक-धर्म कष्ट

Dysmenorrhoea, कप, काप, मप, नग, फप ।

रोकने के लिये, फप ।
छिछड़ेदार, काम, मप ।
मूतने की इच्छा बार बार, फप ।
गर्मी का लौ उठना, फप ।
उन स्त्रियो से, जिनका रुधिर फीका पड़ गया हो, कप ।
पेट मे दर्द, मासिक रुधिर समेत या रहित, मप ।
पैरो का पसीना रुक गया हो, स ।
भींगने से, कप ।
कब्ज़, जी मितलाता, पेट फूलता हो, नम ।
बर्फ के समान शीतलता हो, स ।
कै मे बिना पचा खाना हो, फप ।

मासिक-धर्म रुक जाना

Amenorrhoea

मुख्य दवा, काप ।
तथा, काम, कास, नम, कप ।
अचानक मानसिक धक्के से, काप ।
ऋतु परिवर्तन से, कप ।
रुधिर फीका पडने से, कप, नम ।
जब पित्त की कै हो, नस ।
,, तेजाबी ,, नप ।
,, पनीली ,, नम ।
,, रोता सा हो, नम, काप, स ।
,, बडी दुर्बलता और उदासी हो, काप ।
कंठमाला रोग का विष शरीर मे हो, नम, काप, नप, मप, स ।

मासिक-धर्म विकार Menses

छीलनेवाला रुधिर, नप, नम, न ।
निर्दिष्ट काल से पीछे, नम, काम ।
काला रुधिर, काम, कप ।
काला सा लाल, काम ।
खून सुर्ख, कप, फप ।
रुधिर जलन करनेवाला, पनीला, रुक गया हो, काम । [काप, नम ।
साथ ही ठंडा हो, नम ।
,, जी मितलाता हो, न ।
रुधिर जम जाता हो, काम, कप ।
घिधनेवाला, नम ।
काला रंग हो, काम, कप, मप ।
गहरा लाल, काप, कम, काम ।
देर से हो और शिर में दर्द, नम ।
दर्द नीचे की ओर जाता हो, कफ, कप, काप, नम ।
दूध पिलाने के दिनों में, कप, स ।
हर दो हफ्ते पीछे, कप ।
हर तीन हफ्ते पीछे, फप, कास, नम ।
बहुत बहना, कफ ।
अधिकता हो, काम, कफ, नस, फप, काप, नम, स ।
फाइब्रिन मिला रुधिर, मप ।
चलते मे बहुत रुधिर आता हो, नम, नस ।
ऐंठन के साथ हो, स ।
रुधिर फीके खूनवालो से, कप, नम ।
अक्रम से होना, काप, नप, स ।
बच्चा जनमने का सा दर्द हो, कप, मप ।
ऐसा दर्द पहिले हो, कप ।
बहुत दिन रहे, काम, कस, नम, स, काप ।

मासिक-धर्म-विकार Menses

हर महीने कम होता जाय, नम।
जमे (रुधिर) नहीं, काप।
बुरी बू करनेवाला, काप, स।
दर्द पहिले हो, मप, फप, काम।
शुरू में रहे, नम, स।
पूरे समय रहे, कप, फप, नम, स।
साथ दर्द हो, कास, मप, कप, नस, [स।
नसों में रुधिर अधिक हो, फप।
कै हो और खाना निकल जाता हो, [फप।
फीका रुधिर, नप, नम।
समय से पहिले, काप, कप।
रुधिर लाल और जल्द जमनेवाला,
भुलसानेवाला, टीसानेवाला, [फप।
रोगी बनानेवाला, नप। [नम।
मूत का सा, मप।
तेज बू करनेवाला, काप।
खट्टी बू करनेवाला, नप, स।
रुका हुआ, कास, काप, कास, नम,
,, ठंड से, फप। [कप, स।
,, ठंड से, और पैरों की नमी से,
,, मानसिक उद्वेग से, काप। [स।
ऋतु परिवर्तन से, कप।
भीगने से, कप।
रुधिर गाढा, सफ़ेद, साधारण, काम।
पतला, काप, नस, नप।
रुधिर पतला, काप, नम।
बहुत जल्द होना, काम, नप, मप,
स, कप, नम।
अक्सर होना, काम, कप।
देर से होना, काम, काप, कास,
कस, कप, नम, स।

मासिक-धर्म-विकार Menses

बहुत अल्प समय होना, स।
कम होना, काप, कास, नस, स।
रुका रहना, काप।
पनीला होना, नस, नप।
कै होना, तेज़ाबी, नप।
कै होना, जिनमें पित्त का माद्दा हो,
पीठ में दर्द हुआ करे, [नस।
[काप, नस, कप।
गर्भाशय की नसें भरी हो, फप।
शूल हो, मप, नस, काप, फप, नम।
कब्ज हो, स, नस।
हाथ पैर ठंडे हों, कप, फप।
,, ऐंठते हो, मप।
दस्त लगे हो, फप, नप, नस, कप।
सवेरे दस्त लगे, नस।
उत्तेजना हो, काप।
पैरों में दुर्गन्धित पसीना आवे, स।
चेहरा भरा हो, कप, फप।
बड़ी कमज़ोरी हो, कस।
शिर में दर्द हो, कास, कस, काप,
नम, फप, कप।
शिर में सामने दर्द हो, नप।
गला बैठ जाय, कप, काम, स।
शरीर बर्फ सा ठंडा हो, स।
प्रदर हो, नम।
मन गिरा रहता हो, नम।
रात को सोता हुआ चलता हो,
नकसीर चलती हो, नस। [काप।
अंग सुन्न हो, कप।
योनि में दर्द हो, फप।
पेट में दाहिनी ओर दर्द, नम।

मासिक-धर्म-विकार Menses

बांई ओर दर्द, मप।

गाठिया का दर्द हो, कप।

उदासी हो, रोगी रोती हो, नम।

पीठ मे दर्द हो, कप।

डोडनेवाला, नश्तर चुभने का सा दर्द, मप।

बहुत ही उदासी हो, नम।

दात से दर्द, कप, नम।

पैर की नसे सिकुड जायँ, नप।

योनि के बाहिरी किनारे सूज गये हो, मप।

उत्तेजना और निद्रा न आना, नप।

नोचने की सी कैफ़ियत हो, कस, नम।

पेट मे बोझ जान पडे, कास।

गाढा, सफेद खून निकले, काम।

पतले मवाद की कै हो, नम।

वायुगोला उठे, काप।

रोगी का रुधिर फीका पड गया हो, कप, नम।

रात्रि को विशेषता हो, स, कप।

शाम को ,, कास।

गर्म कमरे मे ,, कास।

दर्द की तरफ लेटने से आराम जान पडे, कास।

बाहरी हरारत से आराम जान पडे, [स।

मुंह Mouth

खट्टा स्वाद, नप, नम, स।

बुरा स्वाद, नम, मप।

,, सवेरे, कप।

कडुआ स्वाद, नम, काम।

सवेरे बुरा स्वाद, कप।

मुंह Mouth

खट्टा स्वाद, नप, कप।

दात बन्द करके बोलना, मप।

किनारो पर मोती से छाले, नम।

दुर्गन्धित सास निकलना, काप, नम।

मिर्च के समान मुंह मे जलन, नम।

मुरदारी के घाव, काप।

मुह और हलक मे सोजिश होकर खखार निकलना, पतला, नम।

बाछ अर्थात् मुंह के कोनो का ऐठना और फडकना, सप।

पुराने घाव, कफ।

चटखना, नस।

बहनेवाले घाव, नम।

जख्मी मुह, स।

सर्वदा थूकते रहना, नम।

मुह और हलक सूखना, काम, नम, छिल जाना, काम। [स, कफ।

सुन्न और खुरदुरा रहना, नम, नप।

सुनहरे रंग का पीला मवाद आना, नप।

जुबान की सोजिश, शुरू मे लाली और सूजन, फप।

पीप पड़ना और सख्ती आना, स।

जबडो पर सख्त सूजन, कफ।

आवाज बैठना, पेट और हलक से लार जारी होना, नस।

गाढ़ी, हरे रग की सफेद लसदार लार भरी रहना, नस।

गर्मी रहना, कास।

आसपास फुंसी, घाव और खुरड होना, काप।

शिर Head

छूने से दुखे, फप ।
पीप पड़ी हो, कस ।
बच्चो के शिर पर पसीना आना, कप,
बुड्ढों के ,, ,, स । [स ।
कापना, मप ।
पैदा होते समय बच्चे के शिर पर रसौली हो, कफ, काम ।
हड्डी के ऊपर घाव हो, कफ ।
चंदिया पर घाव हो, कप ।
शिर का चमडा पतला और नर्म हो, काप ।
ज़ख़्म, जिनसे गाढ़ी, पीली पीप बहे, [स ।

शिर दर्द Headache

पुराना, कप, नम, स ।
आखों से ऊपर, स, फप ।
आधे आखों पर, माथे और कनपटी पर, काप, कप ।
दिमग की तह मे, नस ।
चंदिया पर, नप, नम ।
माथे पर, कस, फप, नप, कफ ।
शाम को खाना खाने पीछे शिर दर्द और उनीदापन, कप ।
शिर के पीछे की ओर भारी जान पडे, नम, स ।
माथे पर या खोपडी मे, स, कस, नम, कप ।
पिछली हड्डी में, स, काप, मप, नप, नस, कप ।
कनपटियों पर, नप, फप, नम ।
चुटिया के आसपास, फप, नस ।
गर्दन के पीछे और चुटिया पर, स, मप ।

शिर दर्द Headache

बाई कनपटी पर, काम ।
शिर के पीछे की ओर, स, कप, का
चंदिया और कानों के पीछे, कप ।
एक ओर चोट का सा दर्द, स ।
शिर के ऊपरी भाग पर, मप, नम ।
,, ऊपर, फप, नप ।
,, ,, लपकता सा जान पडे, नस ।
शिर के ऊपर गर्म जान पडे, नस ।
,, ,, ठंडी हवा लगने से दर्द हो, फप ।
दाहिनी ओर, फप, नम ।
पूरे शिर मे ऊपर, कफ, मप, नम ।
दाहिनी आख के ऊपर, नम ।
माथे में दर्द, कप ।
पीछे की हड्डी और गर्दन के पीछे, [कप ।
आखो के ऊपर, फप, काप ।
जबडे तक दौडनेवाला दर्द, काम ।
शिर के चारों ओर, शाम को विशेषता हो, कस ।
बाई आख से शिर तक, काप, कास ।
नाक की जड पर, नम ।
साथ मे आसू बहुत आवें, नम ।
साथ मे कब्ज़ हो, कफ, नम ।
कै हो जाती हो, फप ।
सवेरे जगने पर, काप, नम, नप ।
हर शाम को १० बजे, मप ।
सूरज निकलने से अस्त तक, नम ।
शाम को शुरू हो, कास ।
सवेरे ,, नम ।
ऋतुकाल से पहिले और पीछे, नम ।

[शिर] दर्द Headache

[ऋ]तुकाल के दिनों में, कस, नप।

[सबेरे से] दुपहर तक रहे, नम।

[शिर दर्द] ऐसा जान पडे, मानो शिर के भीतर ठंडी हवा घुम रही है, नम।

,, शिर कैंची के बीच में हो, नम।

,, शिर में से पटाखा गुजर गया है, काप।

,, खोपडी की पिछली हड्डी में छुरी सी छिदना, नम।

,, शिर में धक्का लगता है, स।

,, शिर हथोडो से कूटा जा रहा है, नम।

,, शिर खूब भरा हुआ है, नप।

,, मस्तिष्क खोपडी को दबाता है, कप, फप।

,, शिर नंगा नही है, ऊपर टोपी है, कस।

,, आंखो से ऊपर कील गाड दी गई है, फप।

,, शिर मे बाई ओर कील गाड दी है, नम।

,, शिर फट जायगा, नम।

,, शिर के चारो ओर एक पट्टी आंखो मे ऊपर बंधी है, काप।

,, कोई शिर के चतुर्दिक रस्से को कसता जाता है, नम।

,, खोपडी खुल जायगी, नप।

शिर दर्द Headache

ऐसा जान पडना, मानो शिर की चंदिया फट जायगी, नस।

,, शिर अलग गिर पडेगा, स।

,, शिर बहुत बडा हो गया है. स।

शिर मे दाहिनी कनपटी पर पेच कसने का सा दर्द, नस।

शिर के भीतर और मध्य मे, नस।

दर्द अचानक होना और रुक जाना, नम।

सूर्योदय के साथ दर्द आना, अस्त के समय चला जाना, नम।

शिर दर्द साथ जलन के, स।

हथोडो की सी चोटे, नम, फप।

नश्तर चुभाने के साथ, काप।

शिर मे आवाजे आना, कफ।

शिर मे भारीपन और घबडाहट, कप, काम।

साथ शिर दर्द के, पेट दर्द करे, कप, स, नस।

शिर दर्द के साथ शिर मे भारीपन, नम, नस, स।

समय समय पर दर्द, सप।

ज्ञानतन्तु विकार, काप, स, मप।

ज्ञानतन्तुओ की पीडा, काप, मप।

शिर मे धडकन होना, नम, स।

रीढ तक दर्द जाना, मप।

बच्चो मे दर्द, कप, फप।

निर्बल नाजुक मिजाज आदमियो मे, काप।

कंठमालावाले रोगियो मे, स।

मुंह Mouth

लाल और घायल होना, काप।
तालू छूने से दुःख, नम।
मोती से छाले, नस।
लार टपकना, नस।
सफेद घाव होना, काम।
मुँह में पीपदार मवाद बहना, कस।
रोग की दशा में थूक बहुत आना, नम।
दांतों की जड़ ढीली और मसूड़े घायल, काप।
बड़े बड़े छिलके उतरना, काम।
ऐंठन और तुतलाना, मप।
धीरे धीरे बोलना, मप।
छाले पड़ना, काप।
जख्म होना, काम, नम।
होठ या मुँह का फड़कना, मप।
साफ लार टपकना, नम।
राख के रंग के भूरे छाले, काप।
कव्वे की सोजिश, नम।
सफेद मवाद, काम।

मुँह के छाले Aphthae, कप, म, काप।

सफेद या भूरा लिये सफेद हो, काम।
पीले हों, नप।
जब किनारे लाल हों, काप।

मुँहासा Acne, नम, स, कप, नप, काम, फप।

मुर्दारी जान पड़ना Dead feeling, नम, स।

मुर्दारी हालत Gangrenous Conditions, काप।

मूत का गिरना Enuresis

दिन में, कप।
बच्चों में, स. कप।
बुड्ढों में, कप।
रात के समय, मप, काप।

मूत्र Urine

जलन करनेवाला, नम।
एल्ब्यूमिनवाला, काम, स, कस, कास, काप, कप।
रुधिर मिला, कास, नस, कास, काप, फप।
ईंट का सा चूर्ण तहनशीन हो, नस, स, नम।
सफेद मवाद तहनशीन हो, काम,
गहरा रंग हो, काम, नम, स, नप, [कप।
छिछड़ेदार तहनशीन, कप।
शकर आती हो, नस।
रेत (पथरीला) तहनशीन हो, नस, कस, मप, कप, स।
निकलने में दर्द हो, नस, मप।
साथ ही नकरस रोग के लक्षण हो, [नस
रंग गहरा हो, कप, फप।
गर्म, नम, नस, स।
रुधिर मिला हुआ हो, फप, नम।
बुरा लगनेवाला, स, कफ।
पथरीला तहनशीन, नस।
पीला, नम।
सफेद चूर्ण मिले हों, कप।
बहुत आवे, कफ, कप, नम, नस [
पीप मिली हो, नस, स।
बालू तहनशीन हो, नस, मम,

मूत्र Urine

थोड़ा उतरता हो, काम, नम, नस, स, कफ।

सफ़ेद छिछड़े जम जाते हों, कप।

बर्तन की बगलों से चिपक जाता हो, [नस।

शकर मिला, मीठा, नस।

गन्दा, नम, स, काम।

यूरिक एसिड जमता हो, काम, स।

साथ में पित्त, पीप और लस हो, [नस, स।

पीला जाफ़रान सा, काप।

पीला हरा, नस।

गुर्दे की सोजिश, काप, कप, फप।

पेशाब के बाद जलन, मप, नस, स, नम, फप।

,, करने पीछे कटन का सा अनुभव हो, नम।

गुर्दे से जलन का दर्द, फप।

मूत्र मार्ग मे कटने का दर्द, कप, काप।

खट्टी दुर्गन्धि आती हो, कफ।

पेशाब करने की बार बार इच्छा रहती हो, कप, नम, फप, नप, नस, [कफ।

...र पेशाब आना, काप, नम, नम, स, कफ, नप।

पेशाब न रोक सके, काप, नप, कप।

पेशाब न टिकना, बच्चों मे तेजाबी कैफियत हो, नप।

बुड्ढों में, काप, फप।

चलने और खाँसने मे निकल जाय, नम, फप।

बहुत पेशाब आना, कम, कप, नम, फप, नम।

मूत्र Urine

चेष्टा करने पर भी न होना, नम, स।

ठहर ठहर कर हो, नप।

पेशाब स्वत निकल जाना, स, फप, [नम।

मूत्र मार्ग मे खुजली हो, काप।

पेशाब के लिये जोर करने से दर्द हो, मप, फप, काप।

पेशाब की इच्छा के साथ दर्द हो, मूत्र बहुत कम निकले, नस। [मप।

बच्चों मे मूत्र का रुक जाना, फप।

जलानेवाला मूत्र, काप, नस।

पेशाब करते मे टीस चले, फप, नम, कफ।

नसों मे ऐंठन होकर पेशाब रुक जाय, मप, नप।

खासते मे निकल जाय, फप, नम।

पैदा न हो, फप, स।

बहुत निकलता हो, फप, नस, नप।

बच्चे बिस्तर मे मूत करते हो, कप, मप, नप, फप, काप, स।

मूत्राशय मे टीस चले, मप।

दबाव पहुँचने से मूत्रमार्ग दुखे, नम।

मूत्र पिंड प्रदाह Nephritis

पहिला दर्जा, फप।

दूसरा दर्जा, काम।

तीसरा दर्जा, स।

पुराना, कस।

मूत्र-मार्ग की गिल्टी Prostate Gland

मूत्र-मार्ग की गिल्टी की सूजन, नम, स।

,, ,, का बढना, नम।

मूत्राशय Bladder
इसके रोग, कप, फ़प, नम, स।
ऐंठन, कप, काम, नम, स।
निर्बलता में, नप।
फालिज में, काप, नस, फप।
पथरी हो, कप, स, मप।
पथरी बनना रोकने के लिये, कप।
पेशाब न निकलता हो, काप, नम
बच्चो में, फप।
पेशाब की धार पतली पड गयी हो, मप।
फीके खूनवालो में, कास, कप।
सोजिश हो, नप, स।
पहिले दर्जे में, फप, काम।
पुराने रोग में, काम।
पेशाब में जब यूरेट (रेत) अधिक हो,
,, फास्फेट, कप। [स, कस।
फास्फोरिक एसिड हो, काप।
शकर हो, नस।
एल्ब्यूमिन हो (लाला), कास, काम,
कस।
पेशाब मे रुधिर घुला हुआ हो, काप।
,, मिश्रित हो, काम, फ़प।
पेशाब करने में जलन हो, काम,
नस, नम।
मूत्राशय से मवाद आता हो, नम,
काम, कस, काप।
पुरानी सोजिश हो, काम, फप, कस।
मूत्रमार्ग से पीला, चिपकता मवाद
निकले, कास।
गाढा, सफेद मवाद हो, फ
मूत्राशय की गर्दन पर काटने का सा
दर्द हो, कप, काप, फप।

मूत्राशय Bladder
मूत्राशय की गर्दन पर किरकिराहट
जान पडती हो, फप।

मूर्छा Collapse, नम, काप।

मूर्छा से झट गिर पड़ना
Faintness, नम।

मूर्छित होना Fainting, काप।

मृगी Catalepsy
मुख्यौषधि, काप।
अन्यौषधि, काम, कप, नम, कास।

मोच Sprain
बोझ उठाने से, नम, स।

मोच और तनावट Sprains and
Strains, फ़प, काम, कफ।

योनि (जुइन Vagina
दुख और पीडा, कप।
जलन, शीतलता, खुश्की, नम।
दबाव जान पडना, कप, स।
सोजिश होना, फप, काम।
ऐंठना, तग होना, चोट लगना, फप।
स्नायुवीय पीडा, मप।

रक्त-पित्त Scurvy (जो सब्जी न खाने
से, विशेषकर जहाजी यात्रा में
होता है), काम, नस, स, काप।
मुर्दारी साथ में हो, काप।
सख्त जमाव, काम।

रक्त-वमन Hæmoptysis
गिरने या धक्का लगने से, फप।

रगड़ Intertrigo
गर्दन और चड्डो की फुंसिया, जो
बच्चो में रगड से होती है, काप,
नप, नम।

रसौलियां Tumours
साधारणतः, कफ, कप, स ।
थैलीदार, कफ, कस ।
गर्भ सम्बन्धी, कफ, स, (२००)
हड्डी की, कफ, स ।

रीढ़ Spine
दर्द करना, नम, स, काप, कप, नस ।
ऊपर नीचे और गर्दन से दुखना, नस ।
ठंड का चलना, नम, कप ।
झुका होना, कप, स ।
छूने से दुखना, मप, नम, स ।

रीढ़ का ज्वर Myelitis, फप ।
पश्चात, नस, काप, कप, मप ।

रीढ का शोष Tabes, मप, काप, काम, स ।

रीढ में रुधिर का कम होना Spinal anaemia, काप, नप ।

रुधिर की नालियां Blood vessels
रुधिर की नालियों का ढीला पड जाना, कफ, नम, स ।
,, तड़पना, नम, रा ।
नीली नसों का फूलना, कफ, कप, नम, स ।

निकलना Bleeding
गुर्दे से, काप ।
खूब लाल, फप ।
गहरा काला खून हो, काम ।
सुर्ख गुलाबी खून हो, फप ।
पतला पनीला खून हो, नप।
काला, जमा हुआ खून हो, फप,
लाल जमता हुआ हो, फप ।
काला सा, पतला, जमता न हो, नप ।

रुधिर में पीप का विष मिलना Septicaemia, काप, नप, मप

रेंगना Crawling
चूहा सा रेंगता जान पड़े, स ।

रेंगना, चींटी सा Formication, नम, स, कप

रेत Gravel
पित्त के रोगियों में रेत, पेशाब में, नस ।

रोटीवालों की खाज Backer's itch, कफ, कास, मप ।

रोना Cries or weeps
साधारण ही रोवे, आंसू बहावे, काप, नम ।

लगड़ापन Lameness, नप ।
लगडा होना, ठंड से, फप ।
फालिज होना या गठिया होने के कारण हो, काप ।

लड़खड़ाना Reeling, नम, स ।

लापरवाही Indifference, नम, स ।

लाल-ज्वर Scarlatina
प्रारंभ में ज्वर के लिये, फप ।
आराम के लिये, काम, नम, नप ।
बेहोशी के लिये, नम, काप ।
खुरंड उतरने के लिये, कास ।
जब धब्बे दब गये हो, कास ।

लाला मेह Albuminuria
मुख्य दवा, कास, काप ।
अन्य दवाएं, नम, कप ।

लिंग की तुंदी Chordee, नप, मप, काप ।

शिर दर्द Headache

विद्यार्थियों के, काप, मप, स ।
स्कूल की लड़कियों के, कप, नम, मप ।
जवान लड़कियों के, नम, कप ।
गठियावालों के, कप, कास, स ।
समय समय पर, नम ।
चोट लगने का, नम, नस ।
दबाने से, कप, फप, स ।
कभी कहीं, कभी कहीं, उछलनेवाला, मप, कास ।
सुई चुभाने का, फप, नम ।
फाड़ने का, नम, कप, कस, स ।
लपकने का, फप, कप, नम ।
माइग्रेन अर्थात् ऐसा शिर दर्द, जिस में भिनभिनाहट और कै हो, नम, [स ।
शिर में काटने का, नम, मप ।
चटखने, खिंचने और उछलने का सा दर्द, काप, मप ।
बुरी आदत के कारण हो, मप, काप, [स ।
बहुत शराब पीने से, नम ।
मसालेदार खाना खाने से, नम ।
लू लगने से, नम ।
बदहजमी से, नस ।
अधिकता, ऋतु परिवर्तन से, कप ।
ठंड से, कप, मप, स ।
ठंडे जल से शरीर धोने से, कप ।
रात्रि का खाना खाने से, कस ।
शारीरिक परिश्रम से, स ।
संध्या में, कास, काप, कफ, स ।
रात्रि में, कप ।
गर्म कमरे में, कास ।

शिर दर्द Headache

गर्मी से, कप ।
रोशनी से, स ।
वीर्य क्षय से, कप, नम, काप, नप ।
निद्रा न आने से, काप ।
मानसिक परिश्रम से, कप, नस, स ।
प्रातःकाल में, नम ।
चलने फिरने से, नस, फप, कप, नम, स ।
इधर उधर शिर हिलाने से या पीछे को करने से, कास, कप ।
अमावस से, स ।
शोर से, स ।
खुली जगह में, कप, स, नम ।
बहुत हरारत से, स ।
टोपी के दबाव से, कप ।
पढ़ने से, नस, स, नम ।
शिर हिलाने से, फप ।
झुकने से, फप, कप, नम, स ।
सूर्य की गरमी से, फप ।
पैरों का पसीना रुकने से, स ।
शिर खोलने से, स ।
चलने से, कस, नस ।
बातें करने से, नम, स ।
गर्म कमरे में, कास, काप ।
अकेले में, काप ।
१० बजे सवेरे से शाम के तीन बजे तक, नम ।
आराम, शिर दर्द में, खेल तमाशे से, [काप ।
,, ठंड से, फप ।
,, खुली, ठंडी हवा से, कास, [काप ।
,, खाने से, काप ।

शिर दर्द Headache

आराम, बाहरी गर्मी से, मप, स।
,, धीमी हरकत से, काप।
,, अंधेरे में पड़े रहने से, स,
,, नकसीर से, फप। [नस, कप।
,, दबाव से, नस, नप।
,, ख़ामोशी से, नस, कप।
,, चुपचाप बैठने या पसीने से,
,, गर्मी से, मप, कप। [नम।
,, शिर पर गर्म कपड़ा लपेटने
और पट्टी बांधने से, स।

शिर का दर्द Migraine, नम, स।

शीत-पित्त Urticaria, नप, काप, नम, कप, नस।

शुक्र-मेह Spermatorrhoea, कप, काप, नम, नप, कास।

शूल Colic

पेट फूल जाय, काप, कास, मप,
पित्त से, नस। [नस, नप।
ऐंठ से, मप।
बवासीर से, फप, कप।
जिगर से, नस, काम, नप।
डकार से आराम न हो, मप।
दस्त से आराम हो, नस।
सीसे के विष से, नस।
रंगसाजों का शूल, नस।
शाम को बर्फ की मलाई खाने से,
पेट के कीड़ों से, स, नप। [कप।
सर्दी गर्मी की बदली से, कास।
रात में विशेषता हो, कप।
गठिया से, नप, मप, स।
मल की कै हो, नम, नस, स।

शूल Colic

शनीचर का भग हो, नस। (२४)
ऋतुकाल, काप, कप, कास।
बच्चों में, कप, मप, नप।
बच्चे जब दर्द से टांग सिकुड़ लेते हों
डकारें आती हों, मप। [मप
जब मलने, और गर्मी पहुंचाने से
आराम हो, मप।
दर्द में रोगी मुड़ जाता हो, काप,
खाने से दर्द, कप। [मप।
दाहिनी जंघा से शुरू हो, नम।
रोगी दर्द से दोहरा होने को मजबूर
दुर्बलता के लिये, नस। [हो, मप।

शोष-पांडु Addison's Disease

मुख्य औषधि, नस।
अन्य औषधियां, नम, काप, कास।

शोथ-सब शरीर की सूजन Anasarca, नम, नस, काम, [कास।

शोथ Dropsy

लगावे या पिलावे, स, कास, नम, नस, कप।
सख्त हो और चमक हो, काम।
हृदय रोग के कारण हो, कफ, काम।
गुर्दे ,, ,, ,, काम, नम, [कप।
रुधिर प्रवाह से हो, फप, कप।
पित्त की नाली रुकी हो, काम।
स्कार्लेटिना रोग के पीछे, कस, नम, नस।
हृदय और जिगर के रोगों के पीछे, कप।
साधारण शोथ, स, नम, कप।

टिस्यू दवाइयों के दाम

दाम	४ ड्रेम		१ औं.		२ औं		४ औं		८ औं.		१ पौंड	
	रु	आ	रु	आ	रु.	आ	रु	आ	रु	आ	रु	आ
चूर्ण:—												
२x से ६x, ११ व १२, x या c.	०	६	०	११	१	४	२	४	४	४	८	०
२९ व ३०, x या c.	०	८	०	१४	१	१०	३	२	६	०	११	०
१९९ व २००, x या c.	०	१०	१	२	२	०	३	१२	७	४	१४	०
ग्रेन की टिकिया:—												
३x, ६x, १२x	..	..	०	१३	१	८	२	१२	५	४	१०	०
३०x या c	..	..	१	०	१	१२	३	४	६	४	१२	०
ग्रेन की टिकिया:—												
३x, ६x, १२x	..	..	०	१४	१	१०	३	२	६	०	११	०
३०x या c	..	..	१	२	२	०	३	१२	७	४	१४	०
सेलोयड:—												
३x, ६x, १२x	..	..	०	१४	१	१०	३	२	६	०	११	०
३०x	..	..	१	२	२	०	३	१२	७	४	१४	०
लकड़ी की पेटियां:—												
१२ टिस्यू दवाइयों से भरी—३x या ६x या १२x का .. .... चूर्ण	५	०	९	०	१५	१२	२८	०	..	..	..	..
,, ,, ,, ५ ग्रेन की टिकिया	..	.	१०	८	१९	०	३४	०	..	..	..	..
,, ,, ,, ३ ,, ,,	..	..	११	०	२०	८	३८	०	..	..	..	..
,, ,, ,, १ ,, सेलोयड	..	..	११	०	२०	८	३८	०	..	..	..	..
चमड़े की केस:—												
१२ टिस्यू दवाइयों से भरी—३x या ६x या १२x का .... चूर्ण	८	०	..	..	.	..	.	.	..	..	..	..

उपर्युक्त पेटियों के खिसकनेवाले टक्कन होते है। यदि चाहे तो उनमे ताले-कुंजी का इतजाम भी किया जायगा, जिसके लिए परिमाण के अनुसार १॥) या २) अलग देना पड़ता है।

१x ताकत का चूर्ण ३० वी ताक़त की दवा के दाम में ही मिलता है।

टिकिया और सेलोयड को कम से कम १ औन्स मगाना होगा। वे भी तौल कर दिये जायगे, गिन कर नहीं।

एन० बी०—उपर्युक्त किसी पेटी के साथ चाहे, तो एक प्रति हमारी "शुस्लर साहिब की बारह दवाइयाँ" (हिन्दी या अंग्रेज़ी) आधे दाम पर भेजी जायगी।

बारह टिस्यू दवाइयाँ

हमारी टिस्यू दवाइयों के खालिस होने की इसलिए गारन्टी दी जा स है कि वे यूरप और अमेरिका के विश्वस्त तथा विख्यात कारखानों से मंगाई गई बडी ताकत की दवाइयो को तैयार करने का श्रम भी कुछ ज्यादा पडता इसलिए उनका दाम भी नीची ताकतवाली दवाइयो की अपेक्षा कुछ ज होता है।

ये दवाइया चूर्ण, टिकिया और सेलोयड के रूप में मिलती हैं। जीवरसायनिक दवाइयो का सेलोयड तथा टिकिया के रूप में प्रयोग करने से सुविधा होती है कि उनका परिमाण ठीक और सही रहता है।

६x ताकतवाली दवाइयाँ ही आम तौर से इस्तेमाल की जाती है। रोगो मे ३x, पुराने रोगो में १२x, ३०x और २०० वीं जैसी बडी ताक दवाइयां ही बेहत्तर हैं। जहाँ ताक़त का जिक्र नही होता, वहाँ ६x की ही भेजी जायगी।

कमीशन :—सिर्फ दवाइयो के दाम पर निम्न-लिखित कमीशन जायगा। पुस्तको का दाम, पेकिंग और डाक-खर्च अलग देना होगा।

६१/४ %	उन आर्डरों पर,	जिनका मूल्य	२५)	और उससे ज़्यादा हो,
१० %	,,	,,	५०)	,,
१२१/२ %	,,	,,	१००)	,,
१५ %	,,	,,	१५०)	,,

अलग अलग तारीख के दो या ज्यादा आर्डरो की रकम जोड कर कमीशन नहीं दिया जायगा।

एन० वी०—पत्र-व्यवहार (अंग्रेजी मे करना चाहिए) तथा रकम भेजने का पता.

रेवरेंड डैरेक्टर,

होमियोपेथिक पूअर डिस्पेन्सरी,

कंकनाडी, मंगलूर,

दक्षिण हिन्दुस्त

तार का पता.—

'स्पेसिफ़िक" मंगलूर